# उसूले काफ़ी

भाग 2

शेख़ मो॰ याकूब कुलैनी अ.र.




बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

# उसूले काफ़ी

## जिल्द दोवुम
## किताबुल हुज्जत

हज़रत सिक़ातुल इस्लाम अ़ल्लामा–ए–फ़ह्हामा
मौलाना शैख़ बिन मोहम्मद याक़ूब
कुलैनी अलैहिर्रहमा

तरजमा

मुफ़स्सिरे क़ुर्आन आली जनाब अदीबे आज़म
मौलाना सय्यद जफ़र हसन साहब क़िबला

नाशिर

अब्बास बुक एजेन्सी

रुस्तम नगर, दरगाह हज़रत अब्बास अ0,
लखनऊ–3

Presented by: https://jafrilibrary.com

नाम : उसूले काफ़ी (जिल्द दोवुम)

मोअल्लिफ़ : सिक़ातुल इस्लाम मौलाना शैख़ बिन **मोहम्मद याक़ूब** कुलैनी अलैहिर्रहमा

तरजमा : मुफ़स्सिरे क़ुर्आन आलीजनाब अदीबे आज़म मौलाना सय्यद **ज़फ़र हसन** साहब क़िबला

सन–ए–तबाअ़त : जून 2004

मतबूआ : ए.बी.सी. ऑफसेट प्रेस, दिल्ली

ज़ेरे एहतेमाम : मौलाना सय्यद अली अब्बास साहब तबातबाई

नाशिर : अब्बास बुक एजेन्सी

कम्पोज़िंग : सैफ़ी कम्प्यूटर्स, यू0जी0एफ0 8–9, आरिफ़ आशियाना चौक, लखनऊ फ़ोन 0522–2256700 फ़ैक्स 2255977

हदिया : रु0 85/–

**मिलने का पता :**

# अब्बास बुक एजेन्सी

**रुस्तम नगर, दरगाह हज़रत अब्बास अ0**
**लखनऊ–3 फोन: 2647590 मोबाईल: 9415102990**
**फैक्स : 0522–2265419, 2255977**

# अर्ज़े नाशिर

कुरआने मजीद के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम और अइम्मए ताहेरीन अलैहिमुस्सलाम से मन्कूल हदीसें इस्लाम के लिए सरमायए हयात और मुसलमानों के लिए सरचश्मए हिदायत हैं। इत हदीसों के बग़ैर इन्सान न तो तौहीद का फ़लसफ़ा समझ सकता है न कुरआनी अहकाम से आगाह हो सकता है और न दीन से मुकम्मल तौर पर वाक़फ़ियत हासिल कर सकता है।

कुरआन की इजमाली आयात की तफ़सीर, मुतशाबेहात की ताबीर, वाक़ेआत की तौज़ीह, अहकाम की अमली सूरत, नासिख़ व मन्सूख़ और आम व ख़ास का इल्म मासूमीन की हदीसों के सिवा और किसी ज़रिये से नहीं हो सकता।

सिर्फ़ कुरआने मजीद हमारी हिदायत के लिये काफ़ी नहीं है क्योंकि सामित (ख़ामोश) होने की बिना पर वह किसी आयत के ग़लत मफ़हूम समझने वाले को टोक नहीं सकता, उसके अमल की इस्लाह नहीं कर सकता इसलिए पैग़म्बरे इस्लाम ने कुरआन के साथ साथ एक मासूम गिरोह को भी मौअय्यन किया है जिसका नाम अहलेबैत व इतरत है और हदीसे सक़लैन इस पर शाहिद है।

लेहाज़ा मालूम हुआ कि हर ज़माने में एक मासूम ज़ात जो मकतबे, 'इल्मे लदुन्नी' की सनद याफ़ता हो और उसने दुनिया के किसी मदरसे में तालीम न हासिल की हो और उससे किसी ग़लती का इम्कान न हो कुरआन के साथ साथ रहे, ताकि वह गुमराहों को सही रास्ता दिखलाती रहे।

वक़्त का अहम तक़ाज़ा है कि मासूमीन अलैहिमुस्सलाम

की उन हदीसों को हिन्दी लिपि में भी मुन्तक़िल किया जाये जो अरबी फ़ारसी और उर्दू किताबों का सरमाया है।

लेहाज़ा इस ख़्याल के तहत हमारे इदारे ने हज़रत सिक़तुल इस्लाम मौलाना शेख़ मोहम्मद याक़ूब कुलैनी अलैहिर्रहमः की किताब उसूले काफ़ी (जो हमारे मज़हब की बुनियादी किताबों में शामिल है) को जिसका उर्दू तरजमा आली जनाब अदीबे आज़म मौलाना स0 ज़फ़र हसन साहब क़िब्ला ने किया है, जिसको हिन्दी में ब–तदरीज शाया करने का फ़ैसला किया और हम जिल्द दोवुम की इशाअत की सआदत हासिल कर रहे हैं और इन्शाअल्लाह बहुत जल्द बाक़ी तीन जिल्दें भी मन्ज़रे आम पर आ रही हैं। हमें उम्मीद है कि हिन्दी दां तबक़ा भी इस किताब से भरपूर इस्तेफ़ादा करेगा। यहां तक उसकी दुनिया व आख़िरत के चिराग़ रौशन व मुनव्वर हो जायें।

एहक़रुल इबाद
**सै0 अली अब्बास तबातबाई**
अब्बास बुक एजेन्सी,
दरगाह हज़रत अब्बास अ0
रुस्तम नगर, लखनऊ

Presented by: https://jafrilibrary.com

# पेश लफ़्ज़

यह एक हक़ीक़त है कि कुर्आन मजीद रुश्द व हिदायत, इल्म व मअ़रिफ़त का सब से बड़ा सर चश्मा है लेकिन कुर्आन मजीद को समझने के लिए अहादीसे नबवी और अक़्वाले अइम्मा अशद ज़रूरी हैं जिनके बग़ैर कुर्आन समझ में नहीं आ सकता, चूँकि कुर्आन मजीद में आयाते मुहकमात, आयाते मुतशाबिहात में क़िसस हैं, रुमूज़ हैं, नासिख़ व मंसूख़ हैं, क़वानीन हैं, वग़ैरह वग़ैरह। इस लिए ज़रूरी है कि इन को उन ही हज़रात से समझा जाये जो इल्मे लदुन्नी के ह़ामिल हैं, और आँहज़रत के तालीम कर्दा हैं, जिन की ज़बान पर इस्मत का पहरा है और आयते तत़हीर के मिस्दाक़ हैं यानी चहारदा मासूमीन अलैहिमुस्सलाम जिन के घर में कुर्आन नाज़िल हुवा जो रुमूज़े कुर्आन से बख़ूबी वाक़िफ़ हैं।

मेरी और मेरे सब भाईयों ख़ास कर आली जनाब सय्यद शमीमुल हसन साहब नक़वी (मरहूम) जिंहों ने बिस्तरे मर्ग पर भी मुझ से यही सवाल किया था कि जिस तरह तफ़्सीरूल कुर्आन दीदा ज़ेबी में अपना मक़ाम आप रखती है उसी तरह उसूले काफ़ी कब आ रही है। लेकिन अफ़्सोस कि भाई साहब का इंतेक़ाल 30 नवम्बर 1984 ई0 को करोमवेल हस्पताल लंदन में हो गया। और वह यह ख़्वाहिश लिऐ हुये मअ़सूमीन अलैहिमुस्सलाम के जवारे रहमत में तशरीफ़ ले गये।

मैं ने क़ारेईन की आसानी के लिए उसूले काफ़ी जिल्द अव्वल को तीन हिस्सों में तक़सीम कर दिया। पहला हिस्सा ज़ेवरे त़बाअ़त से आरास्ता होकर 1986 ई0 में आ चुका है, जो किताबुल अक़्ल और किताबुत्तौहीद पर मुशतमिल है। दूसरा हिस्सा जिस में किताबुर्रिसालत, नबुव्वत, ख़िलाफ़त, और इमामत है। आप के

सामने है तीसरा हिस्सा किताबुल विलादत मअ़सूमीन (अ0) से ताल्लुक़ रखता है और चौथे हिस्से में किताबुल ईमान वल कुफ़्र है, पाँचवाँ हिस्सा किताबुद्दुआ़ और फ़ज़्लुल कुरआन और किताबुल अशरा पर मुश्तमिल होगा। इस तर उसूले काफ़ी जिस का तर्जुमा वालिदे मोहतरम मुफस्सिरे कुर्आन मौलाना सय्यद ज़फ़र साहब क़िब्ला ने दो हिस्सों में किया था मैंने आप हज़रात की आसानी के लिए इस को पाँच हिस्सों में तक़सीम कर दिया। ताकि किताब के देखने से यह मअ़लूम हो सके कि इस में किस उनवान के तहत अहादीस़ हैं दूसरे यह कि किताब ज़्यादा ज़खीम भी न होने पाये। इंशाअल्लाह अगर मददे बारी–ए–तआ़ला और ताईदे इमामे अस्र अलै0 शामिले हाल रही तो जल्द ही जल्द यह जिल्दें मोमिनीने किराम के सामने होंगी। इसी तरह फुरूए काफ़ी को भी मुख़तलिफ़ जिल्दों में तक़्सीम कर दिया जायेगा।

मैं अपनी और अपने वालिदे बुजुर्गवार आली जनाब मौलाना सय्यद ज़फ़र हसन साहब क़िब्ला की तरफ़ से अरबाबे अक़्ल व उलमाये किराम की ख़िदमत में दस्त बस्ता अर्ज़ करूंगा कि अगर इस तरजुमे में किसी क़िस्म की कमी नज़र आये तो उसे नज़र अंदाज़ फ़रमायें क्योंकि दामने बशरियत, ग़लतियों से पाक नहीं।

व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह।

**डा0 सय्यद नदीमुलहसन नक़वी**
बी0एस0सी0 एम0बी0बी0एस0
कराची

# फेहरिस्त मज़ामीन



बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

## पहला बाब

# इज़्तिरार इलल हुज्जत
# किताबुल हुज्जत
# (बाबुल इज़्तिरार इलल हुज्जत)

1. हशाम बिन अल–हकम से मरवी है कि हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से एक ज़िन्दीक़ (दहरिया) ने कहा। अमंबिया व मुरसिलीन के आने का सुबूत क्या है। फ़रमाया जब हम पर यह साबित हो गया है कि हमारा एक ख़ालिक़ है जो साने–ए–आलम है और हम से और तमाम मख़्लूक़ से बुलन्द व बरतर है और यह सानेअ हकीम सब पर ग़ालिब है और यह भी जान लिया कि मख़्लूक़ में से कोई उसको देख नहीं सकता और न उसको छू सकता है और न वह मख़्लूक़ से मिलता है और न मख़्लूक़ उससे मिलती जुलती है तो साबित हो गया कि उसके कुछ पैग़म्बर उसके बन्दों की तरफ़ आये ताकि वह उसकी बातें और उसके मसालेह़ और मनाफ़ेअ को समझायें और उन चीज़ों को जिनके बजा लाने में उनकी बक़ा और तर्क में उनकी मौत हो पस वह साबित हुये कि खुदा की मख़्लूक़ को अम्र व नही करने वाले और उसके उस काम को बताने वाले वही लोग अम्बिया अ0 हैं जो उसके बरगुज़ीदा बन्दे साहबे हिकमत और अदब आमोज़ हैं और रास्त गुफ़्तार और दुरुस्त किरदार हैं उनकी इस खुसूसियत में कोई उनका शरीक नहीं बावजूद

कि वह ब लेहाज़ ख़िलक़त वह लोगों के शरीक हैं और वह खुदाये हकीम व अ़लीम की तरफ़ से मोअय्यिद बिल हिकमह हैं।

यह भी साबित है कि ज़माने के हर हिस्से में अम्बिया व मुरसलीन, दलायल व बराहीन के साथ आते रहे ताकि ज़मीन किसी वक़्त हुज्जते खुदा से ख़ाली न रहे और हर हुज्जत के साथ इल्म होता है। जो दलील होता है उनकी रास्त गुफ़्तार और साहबे अद्ल व इंसाफ़ होने की।

2. मंसूर इब्ने हाज़िम रावी हैं कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा अल्लाह तआ़ला अजल व अकरम है इससे कि मख़लूक़ को अपनी मअ़रेफ़त कराये बल्कि मख़लूक़ को चाहिए कि अल्लाह की मअ़रेफ़त हासिल करे। फ़रमाया ठीक है मैंने कहा जो कोई इतनी बात समझ ले कि उसका कोई रब है तो उसको चाहिए कि ये भी जाने कि उसके लिये रज़ा और गुस्सा भी है पस उसकी रज़ामन्दी और नाराज़ी को नहीं जाना जा सकता, मगर वही से, या रसूलुल्लाह (स0) से। लिहाज़ा जिस के पास वही नहीं आती उसे चाहिए कि रसूलों को तलाश करे और जब मिल जाये तो ये जान ले कि ये लोग हुज्जते खुदा हैं उनकी इताअ़त फ़र्ज़ है लोगों ने कहा कि हुज्जते ख़ुदा तो कुरआ़न है मैंने कहा कुरआ़न से तो मर्जिया, क़दरिया और वह ज़िन्दीक़ जो कुरआ़न पर ईमान नहीं रखते अपने मक़सद व अक़ीदे के मुताबिक़ दलील लाते हैं यहां तक कि अपने मुक़ाबिल को मग़लूब कर लेते हैं लिहाज़ा मालूम हुआ कि कुरआ़न हुज्जत नहीं है। मगर अपने एक हाफ़िज़ के साथ ताकि उसके बारे में जो कुछ बयान करे वह हक़ हो। मैंने उन लोगों से

पूछा–तुम्हारे नज़दीक मुहाफ़िज़े कुरआन कौन है उन्होंने कहा कि इब्ने मसऊद कि वह आलिम हैं, हुज़ैफ़ा कि वह भी आलिम हैं। मैंने कहा कि क्या ये सब कुरआन के आलिम हैं उन्होंने कहा कि नहीं। मैंने कहा फिर मैं किसी को ये कहते क्यों नहीं पाता कि पूरे कुरआन का इल्म रखने वाला और कोई नहीं। मैं तो उनके सिवा एक को भी ऐसा नहीं पाता। अगर क़ौम में आलिमे कुरआन होता तो ऐसा क्यों होता।

एक कहे मैं यह नहीं जानता, दूसरा कहे मैं ये नहीं जानता और अली (अ0) कहें मैं जानता हूँ पस मैं गवाही देता हूँ कि अली (अ0) आलिम व मुहाफ़िज़े कुरआन और लोगों पर हुज्जत हैं। रसूल (स0) के बाद और जो कुछ उन्होंने कुरआन के मुताबिक़ बताया है वह हक़ है ये सुनकर इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह तुम पर रहम करे।

3. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में असहाब की एक जमाअत हाज़िर थी जिन में हुमरान बिन अईन व मुहम्मद बिन नोअ़मान व हश्शाम बिन सालिम और तय्यार और हाशिम बिन हकम भी थे। हश्शाम बिन हकम एक नौजवान आदमी थे। हज़रत अबू अब्दुल्लाह (इमाम) ने फ़रमाया ऐ हश्शाम ज़रा बताओ तो उमर व बिन उबैद और तुम ने क्या गुफ़्तगू की थी और क्या क्या सवाल किये थे। हश्शाम ने कहा या इब्ने रसूलुल्लाह (स0) आपका एहतराम मेरी नज़र में बहुत ज़्यादा है। हया मानिअ़ है और आपके सामने बोलने की जुर्रत नहीं होती। हज़रत ने फ़रमाया जो मैंने हुक्म दिया है उसको बजा लाओ। हश्शाम ने कहा मुझे पता चला कि अम्र बिन उबैद मस्जिदे बसरा में वअ़ज़ किया करता है और यह अम्र मुझ पर बड़ा शाक गुज़रा। मैं कूफ़े से

चला और जुमे के रोज़ बसरा पहुंचा फिर मस्जिदे बसरा में आया मैंने देखा एक बहुत बड़ा हल्क़ा–ए–जमाअत है और अम्र बिन उबैद मोतज़ली उनमें बैठा है। सियाह अमामा बांधे हुए और ऊनी चादर ओढ़े हुए लोग उससे सवाल कर रहे हैं। मैं लोगों को हटाता बचाता आगे बढ़ा और आखिरी हिस्से में दो ज़ानू हो कर बैठा। मैंने कहा ऐ आलिम मैं मर्दे मुसाफ़िर हूँ तुझसे कुछ पूछना चाहता हूँ। उसने कहा पूछो। मैंने कहा तुम्हारे आंख है? उसने कहा बेटा यह कैसा सवाल है तुम देखते हो और फिर यह सवाल करते हो? मैंने कहा मेरा सवाल ऐसा ही है। उसने कहा ख़ैर पूछो अगर्चे यह अहमकाना सवाल है। मैंने कहा जैसा भी है आप जवाब दीजिये। उसने कहा बेहतर है पूछो।

मैंने कहा – आपके आंख है?

अम्र – है।

मैं – उससे आप क्या काम लेते हैं?

अम्र – रंग और अजसाम को देखता हूँ।

मैं – आपके नाक भी है?

अम्र – है।

मैं – उससे क्या काम लेते हैं?

अम्र – खुशबू बदबू सूंधता हूँ।

मैं – आपके कान भी हैं?

अम्र – हैं।

मैं – उनसे क्या काम लेते हैं?

अम्र – आवाज़ सुनता हूँ।

मैं – आपके ज़बान है?

अम्र – है।

मैं – उससे क्या काम लिया जाता है?

अम्र – खाने का ज़ायक़ा मालूम होता है।

मैं – आपके दिल भी है?

अम्र – है।

मैं – यह क्या काम करता है?

अम्र – जब मुझे हवास की मुदरेकात में शक वाक़ेअ़ होता है तो दिल की तरफ़ रुजूअ करता हूँ जिससे यक़ीन हासिल हो जाता है और शक दूर हो जाता है।

मैं – तो ख़ुदा ने दिल को हवास का शक दूर करने के लिए बनाया है?

अम्र – बेशक

मैं – तो बग़ैर क़ल्ब के अअज़ा का शक दूर नहीं हो सकता?

अम्र – बेशक

मैं – ऐ अबू मरवान जब ख़ुदा ने इन चन्द हवास को बग़ैर इमाम नहीं छोड़ा कि उनका इल्म सही रहे और यक़ीन हासिल होकर शक दूर हो तो भला अपने तमाम बन्दों को हैरत, शक और इख़्तिलाफ़ की हालत में कैसे छोड़ दिया और कोई ऐसा हादी न बनाया कि उनके शक व हैरत को दूर करे और उनके इख़्तिलाफ़ को मिटाये। यह सुनकर वह साकित हो गया और कुछ न कहा। और फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जे हुआ और कहने लगा तुम हश्शाम बिन हकम हो? मैंने कहा नहीं। कहा उनके मुसाहिबों में से हो? मैंने कहा नहीं। उसने फिर कहा तुम कहां के रहने वाले हो? मैंने कहा कूफ़े से हूँ।

उसने कहा बस तुम वही हो। फिर मुझे अपने पास बिठाया और जब तक मैं बैठा रहा ख़ामोश रहा। इमाम यह

सुनकर हंसे और फ़रमाया ऐ हश्शाम! यह तुम्हें किसने सिखाया? मैंने कहा कि यह तो आपही से अख़्ज़ करके तरतीब दिया है। फ़रमाया यही दलील इब्राहीम व मूसा के सहीफ़ों में है।

4. यूनुस बिन याकूब से मरवी है कि मैं इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) की ख़िदमत में एक रोज़ हाज़िर था कि एक शामी आया और कहने लगा मैं शाम का रहने वाला हूँ और इल्मे कलाम व फ़िक़्ह व फ़रायज़ का आलिम हूँ इसलिये आया हूँ कि आपके असहाब से मुनाज़िरा करूं।

हज़रत ने फ़रमाया तेरा कलाम रसूल (स0) के कलाम से होगा या तेरी तरफ़ से? उसने कहा कुछ रसूल (स0) का कलाम होगा और कुछ मेरी तरफ़ से होगा हज़रत ने फ़रमाया तो इस सूरत में तू रसूलुल्लाह का शरीक बन गया उसने कहा नहीं। फ़रमाया क्या तूने अल्लाह की वही सुनी है जिसमें कि यह ख़बर दी है उसने कहा नहीं। फ़रमाया क्या तेरी इताअ़त रसूल (स0) की तरह वाजिब है। कहा नहीं।

हज़रत ने मेरी तरफ़ मुतवज्जे होकर फ़रमाया कि यूनुस बिन याकूब देखो। उसने मुकालिमे से पहले ही अपने को मुल्ज़िम बना लिया फिर हज़रत ने फ़रमाया कि अगर मेरे कलाम को तूने अच्छी तरह समझ लिया है तो उससे कलाम कर, फिर फ़रमाया ऐ यूनुस अफ़सोस है इसपर कि तूने इल्मे कलाम को अच्छी तरह हासिल नहीं किया मैंने कहा आपने चूंकि कलाम से रोक दिया है और फ़रमाया है कि वाए हो अहले कलाम पर कि वह कहते हैं कि यहां इख़फ़ाये दलील है यहां नहीं है यहां ज़हूर दलील है यहां नहीं है। यह हमारी समझ में आता है यह नहीं आता। यानी मुजादिला और

मुकाबिरा करते हैं और कुरआन व हदीस से रूगर्दानी करके कुछ को कुछ कहते हैं पस ऐसे कलाम से मना किया है हज़रत ने फ़रमाया – वाए हो उन लोगों पर जिन्होंने मेरे क़ौल को तर्क किया और दूसरे लोगों की बातों को बयान करने लगे।

फिर मुझसे फ़रमाया – दरवाज़े पर जाओ और देखो मुतकल्लिमीने शिया में से जो नज़र आये उसको बुलाओ पस मैंने बुलाया हमरान बिन अईन को ये इल्मे कलाम खूब जानते थे। फिर अहवल को बुलाया। इल्मे कलाम के ये भी माहिर थे। फिर हश्शाम इब्ने सालिम को बुलाया, ये भी इल्मे कलाम से खूब वाकिफ़ थे। फिर मासिर आये। मेरे नज़दीक ये उन सबसे ज़्यादा क़ाबिल थे क्योंकि उन्होंने हज़रत अली इब्नुल हुसैन (अ0) से हासिल किया था।

उसके बाद हम सब बैठ गये उस ज़िमन में ये भी कह दूं कि इमाम अलैहिस्सलाम ने क़ब्ले हज कुछ दिन हरम के पास एक पहाड़ के दामन में गुजारे थे वहां आपके लिए एक छोटा सा ख़ेमा नस्ब कर दिया गया था आपने उसमें से सर निकाल कर देखा तो एक ऊंट बलबलाता नज़र आया। फ़रमाया ख़ुदा की क़सम ये हश्शाम आ रहा है।

हमको मालूम हुआ था कि हश्शाम औलादे अक़ील इब्ने अबू तालिब से हैं और बड़े शदीदुल मेहनत इन्सान हैं। पस हश्शाम इब्नुल हकम आ गये वह सब्ज़ए आग़ाज़ थे और हम सबसे कम सिन थे। इमाम अलैहिस्सलाम ने उनको अपने पहलू में जगह दी और फ़रमाया हमारी मदद करो। अपने क़ल्ब और ज़बान और हाथ से।

फिर फ़रमाया ऐ हुमरान उस शामी से मुनाज़िरा करो

वह उस पर ग़ालिब आ गए। फिर फ़रमाया ऐ ताक़ी अब तुम बहस करो, वह भी उस पर ग़ालिब आऐ फिर हश्शाम बिन सालिम से फ़रमाया अब तुम उसकी खबर लो उन्होंने दोनों से अलग बहस की फिर इमाम अलैहिस्सलाम ने कैस यासिर को हुक्म दिया। हज़रत उन दोनों के मुकालिमे से हंसे। शामी को उनके मुक़ाबिल कामयाबी न हुई और उसको इज़्तिराब लाहिक़ हुआ।

शामी ने कहा—ऐ लड़के मुझसे इनकी इमामत में गुफ्तगू करो। हश्शाम को यह सुनकर गुस्सा आया और इन्तेहाई ग़ैज़ में थर थर थर थर कांपने लगे और फ़रमाया – ऐ शख़्स तेरा रब मख़लूक की कारसाज़ी ज़्यादा कर सकता है या मख़लूक खुद, शामी ने कहा अल्लाह ही बेहतर कारसाज़ है बनिस्बत मख़लूक के।

हश्शाम ने कहा – खुदा ने मख़लूक़ की बेहतरी के लिये क्या किया? उसने कहा उनके लिए दलील और हुज्जत को क़ायम किया ताकि वह मुतफ़र्रिक न हों और इख़्तिलाफ़ उनमें पैदा न हो और उल्फ़त से रहें और उनकी कजरवी दुरुस्त हो जाये हश्शाम ने कहा वह कौन है? शामी ने कहा रसूलुल्लाह (स0)। पूछा रसूलुल्लाह (स0) के बाद, कहा किताब व सुन्नत, क्या किताब व सुन्नत ने हमारे इख़्तिलाफ़ को दूर कर दिया। शामी ने कहा ज़रूर। हश्शाम ने कहा फिर हमारे तुम्हारे दरमियान इख़्तिलाफ़ क्यों है? और तुम हमारी मुखालिफ़त में शाम से क्यों आये हो। यह सुनकर वह शामी चुप हो गया। इमाम ने फ़रमाया बोलते क्यों नहीं? उसने कहा क्या बोलें। अगर कहता हूँ इख़्तिलाफ़ नहीं तो झूठ है और अगर यह कहूं कि किताब व सुन्नत इख़्तिलाफ़ को दूर करने वाले हैं तो भी सही नहीं और अगर कहता हूँ कि हममें

इख्तिलाफ़ है और हममें हर शख़्स अपने हक़ पर होने का मुद्दई है तो ऐसी सूरत में किताब व सुन्नत ने हमें फ़ायदा क्या दिया? बेशक उसकी यह हुज्जत मुझ पर क़ायम हुई। हज़रत ने फ़रमाया! ऐ शामी अब यही सवाल तू हश्शाम से कर तो उसको पूरा पायेगा। यह सुनकर शामी ने कहा ऐ हश्शाम! यह बताओ कि खुदा बन्दों का ज़्यादा साज़गार है या बन्दे खुद अपने लिए? हश्शाम ने कहा – उनका रब उनके लिए उनसे ज़्यादा कारसाज़ है। शामी ने कहा पस उसने कोई ऐसी चीज़ बन्दों के लिए की है जिससे वह एक मरकज़ पर जमा हो जायें उनकी कमी दूर हो जाये और उनको अपने हक़ से आगाही हो। हश्शाम ने कहा रसूलुल्लाह (स0) के वक़्त में बताऊं या अब? उसने कहा अब के लिए बताओ। हश्शाम ने कहा अब हुज्जत खुदा ये हैं जो तेरे सामने बैठे हैं। दूर दूर से लोग आकर इन्हीं से ज़मीन आसमान की ख़बरें मालूम करते हैं ये अपने बाप दादा के उलूम के वारिस हैं उसने कहा मैं ये कैसे जानूं, हश्शाम ने कहा जो तेरा दिल चाहे इनसे सवाल कर ले? शामी ने कहा तूने मुझे क़ायल कर दिया। अब मुझे सवाल करना है। हज़रत ने फ़रमाया ऐ शामी! क्या मैं तुझे तेरे सफ़र के हालात बता दूं। सुन यह वाक़िआत तुझे राह में पेश आये उसने कहा आपने सच फ़रमाया। मैं अब अल्लाह पर इस्लाम ले आया। क्योंकि इस्लाम क़ब्ले ईमान है। इस्लाम लाने के बाद मीरास मिलती है, मुनाकिहत सही होती है और ईमान के बाद आमाल का सवाब मिलता है, हश्शाम ने कहा – आपने सच फ़रमाया। फिर उसने कहा मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल (स0) हैं। और आप वसीउल औसिया हैं फिर हज़रत ने हमरान से फ़रमाया

तुमने अपने कलाम को बिना बर असर जारी किया है और इसमें इसलिये कामयाब हुए कि आपकी सनद मुहकमात से थी। फिर अहवाल से फ़रमाया तुमने क़यास से काम लिया और बातिल को बातिल से तोड़ा लेकिन तुम्हारा बातिल ज़्यादा ज़ाहिर था फिर क़ैस मआसिर से फ़रमाया तुमने जो कुछ कहा वह अहादीसे रसूल (स0) से ज़्यादा क़रीबतर था और अहादीसे मुख़ालिफ़ान से कम। यानी तुमने उन अहादीसे शिया को पेश किया जिनको मुख़ालिफ़ नहीं मानता। तुमने हक़ व बातिल को मिलाकर पेश किया हालांकि कम हक़ बातिल कसीर पर ग़ालिब आता है तुम और अहवल कूद फांदकर किनारे पर आने वाले हो। यूनुस ने कहा कि मेरा गुमान यह था कि हश्शाम के बारे में भी कुछ ऐसा ही कहेंगे जैसा कि उन दोनों के बारे में कहा है लेकिन आपने फ़रमाया ऐ हश्शाम तुम मुख़ालिफ़ों के क़रीब में कभी न आओगे और पाये सिबात में तज़लजुल और इज़्तिराब न होगा जब तुम कसदे बहस करते हो तो ज़मीन से बुलन्द होकर उसके एतराफ़ पर खूब नज़र कर लेते हो। पस अल्लाह ने चाहा तो उसके बाद हर लग़्ज़िश से महफ़ूज़ रहोगे।

5. अहान से मरवी है कि ख़बर दी मुझे अहवल ने कि ज़ैद बिन अली बिन अलहुसैन ने किसी को उनकी तलाश में भेजा। उस ज़माने में ज़ैद छिपे हुए थे पस मैं उनके पास आया। उन्होंने मुझसे कहा – ऐ अबू जाफ़र अगर हममें से कोई आने वाला तुम्हारे पास आए तो क्या तुम उसके साथ खुरूज करोगे मैंने कहा अगर आपके बाप या भाई होंगे तो मैं उनके साथ ज़रूर खुरूज करूंगा। उन्होंने कहा मेरा इरादा है कि मैं उस क़ौम से जिहाद करने निकलूं लिहाज़ा तुम मेरे साथ हो। मैंने कहा मैं ऐसा न करूंगा। उन्होंने कहा क्या तुम

मुझसे नफ़रत करते हो। मैंने कहा मेरी एक अकेली जान है (आपको उससे क्या फ़ायदा पहुंच सकता है। अगर रूए ज़मीन पर ख़ुदा की कोई हुज्जत मन्सूस (मिन अल्लाह इमाम) है तो आपसे रूगर्दानी करने वाला नाजी है और आपके साथ निकलने वाला हलाक होने वाला है और अगर रूए ज़मीन पर कोई हुज्जते ख़ुदा न हो तो आपसे रूगर्दानी करने वाला और आपके साथ खुरूज करने वाला दोनों बराबर हैं उन्होंने कहा ऐ अबू जाफ़र तुमको मालूम होना चाहिए कि जब मैं दस्तरख़्वान पर खाना खाता था तो मेरे पदरे बुजुर्गवार मेरे मुंह में लुक़्मे देते थे और उम्दा गोश्त की बोटियां मुझे खिलाते थे ।

और गरम लुक़्मों को फूँक कर ठण्डा करते थे ताकि गर्म न खाओ, यह शफ़क़त थी मेरे हाल पर, तो जब खाने की गर्मी मेरे लिए न बर्दाश्त करते थे तो क्या दोज़ख़ में जाना बर्दाश्त कर लेते थे बई तौर कि ज़िस अम्र से तुम को आगाह किया। मुझे इसकी खबर न दी मैं ने कहा कि यह भी उसी शफ़्क़त के लेहाज़ से था जो उन को आप (अ०) पर थी इस लिये आप को ख़बर न दी कि अगर आप ने इसकी इमामत को कुबूल न किया तो जहन्नम का सामना होगा और मुझे इस लिए आगाह किया कि अगर मैं ने उसकी इमामत को कुबूल कर लिया तो नजात हो जायेगी और अगर कुबूल न करूँगा तो उन्हें मेरे दोज़ख़ में जाने की परवाह न होगी। फिर मैं ने कहा कि यह तो बताईये आप अफ़्ज़ल हैं या अम्बिया? उन्हों ने कहा अम्बिया, मैं ने कहा।

याकूब (अ०) ने अपने बेटे यूसुफ़ से कहा था कि अपने ख़्वाब अपने भाईयों से न बयान करना वरना कोई चाल तुम्हारे साथ चल जायेंगे। ग़रज़ उनको न ख़बर द्री ताकि

मक्र न करें और यह ख़बर उनसे छुपाये ही रखी ऐसे ही आप के पदरे बुजुर्गवार ने छुपाया क्योंकि उन को आप से ख़ौफ़ था। उन्हों ने कहा कि जो कुछ तुम ने कहा मैं उस से रूकने वाला नहीं हूँ क्योंकि तुम्हारे साहब (इमाम जाफ़र सादिक़[अ0]) ने मदीना में लोगों को बताया कि मैं कनासा में क़त्ल किया जाऊँगा उन के पास एक सहीफ़ा है जिस में मेरे क़त्ल होने और सूली दिये जाने का ज़िक्र है। इसके बाद मैंने हज किया और इमाम अलैहिस्सलाम से यह हाल बयान किया आप (अ0) ने फ़रमाया तुमने तो सामने से पीछे से दायें बायें उपर नीचे हर तरफ़ से उन को घेरा मगर वह अपनी राह न छोड़ेंगे।



## दूसरा बाब

## तबक़ाते अंबिया व रुसुल व अइम्मा (अ०)

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अंबिया व मुरसलीन के चार तबक़े हैं एक नबी वह है जिस के नफ़्स को बज़रिया–ए–वह्‌ी ग़ैब से आगाह किया गया है। दूसरे से उस की आगाही का तअ़ल्लुक़ नहीं यानी फरिश्ता उस पर नही आयां तीसरे वह है जो ख्वाब में फरिश्ते को देखता है उसकी आवाज़ सुनता है और जागते में नहीं देखता और किसी की तरफ मबऊस नहीं किया गया बल्कि उस का

एक इमाम होता है जैसे इब्राहीम अलैहिस्सलाम लूत अलैहिस्साल पर इमाम थे और एक वह नबी है जो ख्वाब में देखता है और फरिश्ता की आवाज़ सुनता है और उस का ज़ाहिर बज़ाहिर देखता है और उस को भेजा जाता है एक गिरोह की तरफ़, कम हो या ज़्यादा की तरफ़ और वह ज़्यादा से ज़्यादा तीस हज़ार में और उस पर भी इमाम होता है और चौथे वह नबी जो बहालते ख्वाब फरिश्ते को देखता है उसका कलाम सुनता है उसका वुजूद बहालते बेदारी देखता है वह इमाम होता है जैसे अंबिया ऊलुलअज़्म हजरत इब्राहीम पहले नबी थे इमाम नहीं थे फिर खुदा ने उनको इमाम बनाया उन्हों ने कहा और मेरी जुर्रियत से भी इमाम बनायेगा फ़रमाया उस ओहदा–ए–इमामत को ज़ालिम ना पायेंगे यानी जिस ने बुत परसती की होगी वह इमाम नहीं होगा।

2. ज़ैद शहाम से मरवी है कि मैं ने हज़रत इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना है कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को पहले अब्द बनाया फिर नबी उसके बाद रसूल उसके बाद खलील और खलील के बाद इमाम बनाया पस जब यह फ़ज़ाएल जमा हो गये तो फ़रमाया कि मैं तुम लोगों का इमाम बनाने वाला हूँ चूँकि नज़रे इब्राहीम में अज़मते इमामत थी लेहाज़ा अर्ज़ की और मेरी औलाद से भी इमाम बनायेगा। फ़रमाया मेरे अहदे इमामत को ज़ालिम नही पा सकेंगे बेवकूफ़ इंसान इमाम परहेज़गार नही हो सकता।

3. रावी कहता है कि मैं ने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से सुना कि अंबिया में पाँच सरदार हैं वही ऊलुलअज़्म रसूल हैं। वही मरक़ज़ हैं हज़रत नूह अलैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहीम

अलैहिस्सिलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि वसल्लम और इसी पर तमाम अम्बिया की तालीमात हैं।

4. जाबिर से मरवी है कि हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है।

(तर्जुमा वही है जो इससे पहले गुज़रा है)।



## तीसरा बाब

# नबी व रसूल व मोहद्दिस का फ़र्क़

1. ज़ुरारह से मरवी है कि मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से आयत काना रसूलन नबीया के मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया और पूछा कि नबी व रसूल में क्या फ़र्क़ है फ़रमाया नबी वह है जो फरिश्ते को ख्वाब में देखता है और उसकी आवाज़ सुनता है ज़ाहिर बज़ाहिर हालते बेदारी में नहीं देखता और रसूल वह है जो आवाज़ भी सुनता है और ख्वाब में भी देखता है और ज़ाहिर में भी मैंने पूछा इमाम की मंज़िलत क्या है फ़रमाया फ़रिश्ते की आवाज़ सुनता है मगर देखता नहीं फिर यह आयत पढ़ी और हम ने नहीं भेजे तुम से पहले न रसूल और न नबी और न मोहद्दिस मगर (अल अख़)।

2. हसन अब्बास मारूफी ने इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम को लिखा मैं आप पर फिदा हूँ क्या फर्क़ है रसूल, नबी, और इमाम में? आपने जवाब में फ़रमाया रसूल वह है जिस पर

जिब्रईल नाज़िल हों और उनका कलाम सुने और उस पर वही नाज़िल हो और कभी ख्वाब में भी देखे जैसे इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ख्वाब और नबी वह है कि कभी कलाम सुनता है और कभी फरिश्ते के वुजूद को देखता है और इमाम वह है कि कलाम सुनता है और वुजूद को नहीं देखता।

3. अहवल से मरवी है कि मैं ने इमाम मोहम्मद्र बाक़र अलैहिसल्लाम से रसूल व नबी व मोहद्दिस का फ़र्क़ पूछा फ़रमाया रसूल वह है जिस के पास जिब्रईल आते हैं ज़ाहिर बज़ाहिर उनको देखता है और कलाम करता है, और वह नबी है जो ख्वाब में देखा फिर उनके पास खुदा की तरफ़ से रिसालत ले कर आये और जब मोहम्मद मुस्तफ़ा (स0) पर नबुव्वत व रिसालत जमा हुई जो जिब्रईल ने उनके पास आकर ज़ाहिर बज़ाहिर कलाम किया और बाज़ अंबिया ऐसे हैं कि जब नबुव्वत उनको मिली तो उन्होंने ख्वाब में देखा और रूहे फरिश्ता उनके पास आया और उनसे कलाम किया और हदीस बयान की लेकिन उन्हो ने हालते बेदारी में उसको न देखा और मोहद्दिस वह है जो मलायका से हमकलाम होता है उनका कलाम सुनता है लेकिन उसे देखता नहीं और न ख्वाब में नज़र आता है।

4. रावी कहता है हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र और इमाम जाफ़र सादिक़ से आयत वमा अरसलना (इला आखिरिल आयत) की तिलावत करके पूछा क्या यह हमारी क़िराअत नहीं पस क्या फर्क़ है। रसूल व नबी जो ख़्वाब में देखता है और बसाऔक़ात नबुव्वत व रिसालत शख़्से वाहिद में जमा होती हैं और मोहद्दिस वह है कि आवाज़ सुनता है और

सूरत नहीं देखता है मैं ने कहा अल्लाह आप की हिफ़ाज़त करे वह कैसे जानता है कि ख्वाब में जो देखा वह हक़ है और यह फ़रिश्ता कह रहा है, फ़रमाया बतौफ़ीक़े इलाही वह जान लेता है तुम्हारी किताब पर खुदा की किताबें खत्म हो गईं और तुम्हारे नबी पर अम्बिया खत्म हो गये।



## चौथा बाब

## खुदा की हुज्जत बन्दों पर बग़ैर इमाम तमाम नहीं होती

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने कि बगैर इमाम की मारिफ़त कराये खुदा की हुज्जत बन्दों पर तमाम नहीं होती।

2. फ़रमाया इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने खुदा की हुज्जत बन्दों पर बग़ैर इमाम की मअ़रिफ़त कराये पूरी नहीं होती।

3. इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह की हुज्जत किसी मखलूक़ पर तमाम नहीं बगैर मअ़रिफते इमाम।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि हुज्जत ख़ल्क से पहले भी थी उस के साथ भी उसके बाद भी।



## पाँचवाँ बाब

# ज़मीन हुज्जते खुदा से ख़ाली नही रहती।

1. रावी कहता है कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा ऐसा हो सकता है कि ज़मीन पर कोई हुज्जते खुदा न हो फ़रमाया नहीं मैं ने कहा दो इमाम भी एक वक़्त में हो सकते हैं फ़रमाया नहीं मगर एक उन में से सामित हो सकता है।

2. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम को फ़रमाते सुना। ज़मीन हुज्जते खुदा से खाली नही रहती इस में एक इमाम ज़रूर रहता है ताकि मोमिनीन अगर अम्रे दीन में कोई ज़्यादती कर दें तो वह रद कर दे और अगर कोई कमी कर दें तो उस को उन के लिये पूरा कर दे।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ज़मीन में कोई न कोई हुज्जते खुदा ज़रूर रहता है वह लोगों को हलाल व हराम की मअ़रिफत कराता है और उनको राहे खुदा की तरफ़ बुलाता है।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ज़मीन बगैर हुज्जते खुदा के बाक़ी नही रह सकती।

5. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद (स0) ने खुदा ने बगैर आलिम के ज़मीन को नहीं छोड़ा और अगर ऐसा न होता तो हक बातिल से जुदा न होता।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ज़ाते बारी इस से अजल व आज़म है कि वह ज़मीन को बगैर इमामे आदिल के छोड़ दे।

7. फ़रमाया अमीरुल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने खुदावन्द तो ज़मीन को बग़ैर अपनी हुज्जत के अपने बन्दों पर ख़ाली नहीं छोड़ता।

8. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने कि खुदावन्द तआला ने ज़मीन पर जब से आदम का इंतेक़ाल किया कभी अपनी ज़मीन को बगैर इमाम के नही छोड़ा। यह इमाम लोगों को अल्लाह की तरफ़ हिदायत करता है और उसके बन्दों पर उस की हुज्जत होता है ज़मीन किसी वक़्त वुजूदे इमाम से ख़ाली नहीं रही। यह हुज्जते खुदा होता है उस के बन्दों पर।

9. ख़ुदा ने कभी ज़मीन को अपनी हुज्जत से खाली नहीं छोड़ता और हम उसकी हुज्जत हैं।

10. रावी कहता है कि मैं ने इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम से कहा क्या ज़मीन बग़ैर इमाम के बाक़ी रहती है। फ़रमाया नहीं मैं ने कहा हम इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से यह रवायत करते हैं कि बग़ैर इमाम ज़मीन बाक़ी नही रहती। मगर जब अल्लाह अहले अर्ज़ और बन्दों से नाराज़ हो ऐसी सूरत में वह बाक़ी न रहेगी और वीरान हो जायेगी।

11. इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ज़मीन के तबक़ बग़ैर इमाम के नही रह सकते, यही हदीस नक़ल हुई है रावी के बाप दादा से इमाम जाफ़र सादिक़ से।

12. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम ने अगर एक साअत के लिए भी इमाम रूऐ ज़मीन पर न हो तो ज़मीन मअ़ अपने अहल के इस तरह हरकत में आयेगी जिस तरह कश्ती वालों के लिए दरिया में तमव्वुज पैदा होता है।

13. रावी कहता है मैं ने इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम से

पूछा क्या बगैर इमाम के ज़मीन बाक़ी नही रह सकती। फ़रमाया नहीं मैं ने कहा हम रवायत करते हैं कि ज़मीन बे इमाम न रहेगी। मगर जब खुदा अपने बन्दों से नाखुश हो। फ़रमाया उस वक़्त वह इज़्तेराब में आयेगी।



## छठा बाब

## अगर रूये ज़मीन पर सिर्फ़ दो आदमी होंगे तो उन में एक हुज्जते खुदा होगा।

1. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को कहते हुऐ सुना अगर रूऐ ज़मीन पर सिर्फ़ दो आदमी बाक़ी रह जायेंगे तो उनमें से एक हुज्जते ख़ुदा होगा।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अगर रूए ज़मीन पर दो आदमी भी होंगे तो उन में एक दूसरे पर हुज्जत होगा।

3. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अगर दो आदमी भी बाक़ी रहेंगे तो एक उन में इमाम होगा और सब से आखिर में मरने वाला इमाम होगा ताकि बन्दों की खुदा की यह हुज्जत न हो कि उस को बे हुज्जते खुदा छोड़ दिया गया है।

5. हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अगर रूऐ ज़मीन पर सिर्फ़ दो आदमी बाक़ी रहेंगे तो उनमें एक हुज्जत होगा।



## सातवाँ बाब

# मअ़रफ़ते इमाम और उसकी तरफ़ रुजूअ़

1. अबू हमज़ा से मरवी है कि इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। इबादते खुदा वह करता है जो अल्लाह की मअ़रिफ़त रखता है और जो मअ़रिफत नही रखता वह ज़लालत के साथ इबादत करता हैं मैं ने पूछा अल्लाह की मअ़रिफ़त क्या है फ़रमाया अल्लाह की और उस के रसूल (स0) की तसदीक़ और अली–ए–अलैहिस्सलाम से दोस्ती और उनको और दीगर अइम्मा–ए–हुदा को इमाम मानना और उनके दुश्मनों से इज़्हारे बराअत करना। इस तरह मअ़रिफ़ते इलाही बारी–ए–तआ़ला हासिल होती है।

2. इब्न उज़ैना से मरवी है कि एक से ज़्यादा लोगों ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम या इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से नक़ल किया है कि आप ने फ़रमाया कोई बन्दा मोमिन नहीं हो सकता जब तक अल्लाह और उस के रसूल और तमाम अइम्मा को न पहचाने और अपने इमामे ज़माना को भी और अपने मुआमेलात उनकी तरफ़ रुजूअ़ करे और अपने को उनके सुपुर्द करे फिर फ़रमाया जो अव्वल से जाहिल है वह आख़िरत को क्या जानेगा।

3. ज़रारह से मरवी है कि मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम से कहा कि मुझे मअ़रिफते इमाम के मुतअ़ल्लिक़ बताइये कि क्या वह वाजिब है तमाम मख्लूक़ पर? फ़रमाया अल्लाह तआ़ला नें मोहम्मद मुस्तफ़ा को भेजा तमाम लोगों की तरफ़ रसूल (स0) और अपनी हुज्जत बना कर तमाम मख्लूक़ पर।

पस जो अल्लाह और मोहम्मद रसूलुल्लाह पर ईमान

लाया और अल्लाह की पैरवी की और तस्दीक़ की तो इस पर हम में से हर इमाम की मअ़रिफ़त वाजिब है। और जो अल्लाह और रसूल पर इमान न लाया और न उन का इत्तेबाअ़ किया और न रसूल की इताअ़त की और न उन दोनों के हक़ को पहचाना तो मअ़रिफ़ते इमाम उन पर कैसे वाजिब होगी। रावी कहता है कि मैं ने पूछा आप इसके बारे में क्या कहते हैं? जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया और जो कुछ रसूल पर नाज़िल हुआ है उसकी तस्दीक़ की हो तो क्या आप लोगों का हक़्क़े मअ़रिफ़त उन पर वाजिब है? फ़रमाया हाँ यह लोगों को पहचानते हैं मैं ने कहा हाँ। फ़रमाया अल्लाह ने उन के दिलों में मअ़रिफ़त डाली है अल्लाह ने तो मोमिनीन के दिलों में हमारे हक़ का इल्हाम किया है।

4. जाबिर से मरवी है कि मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना कि जो खुदा की मअ़रिफ़त रखता है और उस की इबादत करता है वह हम अहलेबैत में से अपने इमाम को भी पहचानता है और जो अल्लाह की मअ़रिफ़त नहीं रखता और हम अहलेबैत की मअ़रिफ़त रखता है तो ग़ैर ख़ुदा की इबादत करता है और यह खुली गुमराही है।

5. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही वसल्लम के बाद अइम्मा के मुतअल्लिक़ पूछा। फ़रमाया हज़रत के बाद अमीरुलमोमिनीन इमाम थे। फिर इमाम हसन (अ0) फिर इमाम हुसैन (अ0) फिर अली इब्नुल हुसैन (अ0) फिर मोहम्मद इब्ने अली (अ0) इमाम हुए। जिस ने इंकार किया उन से उस ने मअ़रिफते बारी–ए–तआ़ला से इंकार किया। उस ने

रसूल की मअ़रिफ़त का इंकार किया, मैं ने कहा कि इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम के बाद आप इमाम हैं, मैं ने इसका एआदा तीन बार किया। फ़रमाया मैं ने तुम से सिलसिला बयान कर दिया। (अब मेरे सिवा कौन होगा?) यह इस लिए बयान किया है कि रूए ज़मीन पर तुम अल्लाह के गवाहों में से हो जाओ।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने तुम सालिहीन में से नही हो सकते जब तक खुदा की मअ़रिफ़त हासिल न करो। और मअ़रिफ़त नहीं होगी बगैर नबी की तसदीक़ किये और यह तसदीक़ नहीं होगी बग़ैर चार बातों के तसलीम किये और नहीं दुरूस्त होगा पहला बगैर आखिर के जिस ने सिर्फ तीन को माना वह गुमराह हो गया और बहुत हैरान (सरगर्दा) फिरा। खुदा नहीं कुबूल करता मगर अमले सालेह को और खुदा नहीं कुबूल करता मगर वफ़ा को जो शर्त व उहूद के साथ हो। पस जिस ने शर्ते अहद को पूरा किया और उन उमूर को बजा लाया जो दाखिले अहद थे तो उसने अपने वादे को पूरा कर लिया। खुदावन्दे आ़लम ने बन्दों को आगाह किया है हिदायत के तरीक़ों से। और क़ायम किये उन के लिए हिदायत के मिनारे और आगाह किया उन को कि शरीअ़त की राह में कैसे चलें और फ़रमाया मैं गुनाहों को बख़्शने वाला हूँ उसके जो तौबा करे और ईमान के साथ अमले सालेह बजा लाये और हिदायत कुबूल करे और फ़रमाया खुदा मुत्तक़ियों के अमल को कुबूल करता है। पस जो अल्लाह से डरा उस अ़मल में जिसका उसने हुकम दिया है तो वह मोमिन हो कर अल्लाह से मिलेगा। अफ्सोस सद अफ्सोस उस कौम पर जो हिदायत हासिल करने से

पहले मर गई और उसे मोमिन होने का गुमान रहा और उन्होंने शिर्क किया इस सूरत से कि उन्हें पता भी न चला, बेशक जो घरों में दरवाज़े से आया उस ने हिदायत पाई और जिस ने ग़ैर से लिया उस ने हलाकत का रास्ता तै किया खुदा ने अपने वलीये अम्र की इताअ़त को अपने रसूल की इताअत से मिलाया और अपनी इताअत को अपने रसूल[स०] की इताअ़त से जिसने वलियाने अम्र की इताअ़त तर्क कर दी उसने अल्लाह की इताअ़त की न रसूल की और यह इताअ़त इक़रार है मा जाअ बिहिंन्नबी का यानी जो अहकाम आँहज़रत पर नाज़िल हुये हर नमाज़ के वक़्त ज़ीनत करो और उन घरों को तलाश करो जिन को बुलन्द किया है और जिन में ज़िकरे खुदा होता है। इस लिए कि तुम को ख़बर दी है कि वह ऐसे लोग हैं कि न बैअ़ न फरोख़्त उन को ज़िकरे ख़ुदा से ग़ाफ़िल करती है और न तिजारत और वह नमाज़ को कायम करने वाले और ज़कात को देने वाले हैं और डरते हैं उस रोज़ से जिस में दिल पलट जायेंगे और आँखें खुदा ने मख़सूस किया अपने रसूलों को अपने अम्र के लिए और खालिस किया उनको उसकी तसदीक़ करने के लिए अपने अन्दाज़ में जैसा कि फ़रमाया है कि कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई जिस में डराने वाला न आया हो हैरान व परेशान हुआ हो जो इस से जाहिल रहा और हिदायत याफता हो जिस ने गौर किया और अक़ल से काम लिया।

खुदा कहता है कि जिहालत आँखों को अंधा नहीं करती बल्कि वह उन दिलों को अंधा बना देती है जो सीनों के अन्दर हैं। क्यों कर हिदायत पायेगा। वह जिस ने समझा नहीं और क्यों कर समझेगा वह जिस ने गौर नही किया।

अल्लाह के रसूल का इत्तेबाअ़ करो और उनके अहलेबैत का इत्तेबाअ़ करो और आसार हिदायत का कि वह अमानत और तक़वा के निशान हैं और समझ लो अगर कोई ईसा इब्ने मरयम (अ0) का इंकार करे और उनके सिवा दूसरे रसूलों का इक़रार करे तो वह ईमान नहीं लाया जो हिदायत के मिनारे हैं। उन तक पहुँचो और पर्दों के पीछे आसारे कुदरत तलाश करो ताकि तुम्हारे दीन का मुआमेला पूरा हो जाये और तुम अपने रब पर ईमान लाने वाले बन जाओ।

7. इमाम ज़ाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया खुदा ने तमाम अश्या को असबाब से जारी किया है और हर शै का एक सबब क़रार दिया है और हर सबब की एक शरह है और हर तशरीह के लिए एक इल्म है और हर इल्म के लिए एक बाबे नातिक़ है जिस ने इन को जाना उन से मअ़रिफ़त हासिल कर ली और जो जाहिल रहा और यह इल्म वाले रसूल अल्लाह हैं और हम।

8. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने जो शख्स अल्लाह से कुर्बत चाहे और इबादत में मशक़्क़त उठाये और इसका मंसूस मिनल्लाह इमाम न हो तो उस की यह कोशिश ग़ैर मक़बूल है वह गुमराह और अमरे दीन से मुतहय्यर है और खुदा उसके आमाल का दुश्मन है इसकी मिसाल उस बकरी की सी है जो अपने चरवाहे से जुदा हा गई हो और अपने गल्ले को उसने छोड़ दिया हो और अपनी गुमशुदगी के दिन अपनी आमद व रफ़्त के दिन मुज़तरिब हो इस हालत में कि जब रात ने उन को आ लिया तो उस ने बकरियों के एक गल्लें को अपने चरवाहे के साथ देखा पस वह धोके में अपने चरवाहे की तरफ़ चली और रात को उन

ही के थान पर रही सुबह को जब गल्लाबान अपने गल्ले को चलने लगा तो उसको यह बकरी गैर मालूम हुई। लेहाज़ा अपने गल्ले से उसे जुदा कर दिया अब वह हैरान होकर अपने चरवाहे और गल्ले को ढूंढने लगी अब उस ने एक बकरी को उसके चरवाहे के साथ देखा पस धोका खा कर उस के साथ हो ली चरवाहे ने कहा तू अपने चरवाहे और गल्ले के पास जा यहाँ कैसे आ गई? यहाँ कैसे आ गई तू अपने चरवाहे और गल्ले से अलग हो कर हैरान व परेशान फिर रही है अब वह इस हालत में मुजतरिबुल हाल और गुम करदा राह थी कि कोई चरवाहा उसका न था नागाह एक भेड़िये ने उसकी गुमशुदगी को ग़नीमत जान कर चीर फाड़ डाला। पस ऐ मोहम्मद (स0)! (रावी) यही हाल इस उम्मत के उस शख़्स का है जिसका कोई इमाम मंसूस मिनल्लाह नहीं जो ज़ाहिर व आदिल हो। ऐसी सूरत में वह गुमराह हो कर हैरान व परेशान फिरता है अगर वह इस हालत में मर गया तो कुफ्र की मौत मरा और निफाक़ की हालत में मरा। ऐ मोहम्मद (स0)! जान लो कि अइम्मा कुफ़्र और उनके ताबेईन दीन से अलग हैं और खुद गुमराह हैं और दूसरों को गुमराह करने वाले। उनके आमाल उस राख की तरह हैं जिसको आँधी का झोंका उड़ा कर ले जाये जो कुछ उन्हों ने किया वह उसकी किसी चीज़ पर कुदरत नहीं रखते बस इसी का नाम खुली गुमराही है।

9. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि इब्नुल कुआ अमीरुल मोमिनीन अलैहिस्सलाम के पास आया और कहने लगा अमीरुल मोमिनीन अलैहिस्सलाम क्या मतलब है इस आयत का। अअ़राफ़ पर कुछ लोग होंगे जो सब को

उन की पेशानियाँ देख कर पहचानेंगे फ़रमाया अअ़राफ़ हम हैं हम अपने अंसार को उनकी पेशानियों से पहचानेंगे हम ही वह अअ़राफ़ हैं कि अल्लाह की मअ़रिफत नहीं होती मगर हमारी मअ़रिफत की राह से और हम ही वह अअ़राफ हैं जिन की मअ़रिफत खुदा रोज़े कयामत पुलेसिरात पर करायेगा। पस जन्नत में दाखिल न होगा मगर वह जिस ने हमें पहचाना होगा और जिस को हम ने पहचाना होगा और दोज़ख़ में नहीं दाखिल होगा मगर वह जिस ने हमारा और हम ने उस का इंकार किया होगा। अगर खुदा चाहता तो अपने बन्दों को अपनी मअ़रिफ़त खुद करा देता। लेकिन उस ने हम को अपने दरवाज़े अपनी सिरात और अपना रास्ता करार दिया और वजह बनाया जिस से उसकी तरफ तवज्जोह की पर जिस ने हमारी विलायत से उदूल किया और हमारे ग़ैर को हम पर फज़ीलत दी तो ऐसे लोग सिरात़ से ढकेल दिये जायेंगे जो लोग गैरों से तमस्सुक करें और मुकद्दर चश्मों से सेराब हों वह कैसे बराबर होंगे उनसे जो हमारी तरफ रूजूअ़ करें और ऐसे चश्मों से सेराब हों जो अमरे रब से जारी हैं उन के लिए खत्म होना है और न कतअ़ होना।

10. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने ऐ अबू हमज़ा अगर तुम में से कोई चन्द फरसख जाता है तो अपने लिए एक रहनुमा तलाश करता है और तुम आसमानी रास्तों से ब निस्बत ज़मीन के रास्तों के ज़्यादा बे खबर हो तो ऐसी सूरत में इस के लिए भी एक रहनुमा तलाश करो।

11. फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इस आयत के मुतअल्लिक जिसको हिकमत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई इस हिक्मत से मुराद अल्लाह की इताअ़त और मअ़रिफते इमाम अलैहिस्सलाम है।

12. अबू बसीर से इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुमने अपने इमाम को पहचाना मैंने कहा खुदा की कसम मैंने कूफ़ा से निकलने से पहले यह किया यानी आप की ख़िदमत में इसी लिये आया हूँ। फ़रमाया तो ठीक है।

13. बरीद से रवायत है कि मैंने इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना आयत जो मय्यित की तरह था हम ने उनको ज़िन्दा किया और उसके लिए एक नूर क़रार दिया कि वह उसकी रोशनी मे लोगों के दरमियान चले उसके मुतअल्लिक़ फ़रमाया मय्यत से मुराद वह शख्स है जो अपनी मुशकिलात को नही पहचानता है और नूर से मुराद इमाम है जिस की इक़तिदा की जाये मुशकिलात में और जो पैरवी न करे वह उसकी मानिंद है कि शुबहात की तारीकियों में इस तरह लिपटा हुआ हो कि इससे न निकल सके। यह वह है जो इमाम की मअ़रिफत नहीं रखता।

14. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने अबू अब्दुल्लाह दजली अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुआ। फ़रमाया हज़रत ने कहा क्या खबर दूं तुझे उस आयत के मुतअल्लिक़ जिसने नेकी की खुदा की तरफ़ से बेहतर नेकी उस के लिए हैं और वह क़यामत के दिन की बेचेनी से अमन पायेगा और जिस ने बदी की वह औंधे मुँह जहन्नम में धकेल दिया जायेगा यह बदला उस अ़मल का है जो उस ने किया था। मैं ने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम जरूर आगाह कीजिये। फ़रमाया हसना से मुराद मअ़रिफ़त विलायत और हम अहलेबैत अलैहिस्सलाम की मुहब्बत और सय्या से मुराद इनकारे विलायंत और हम अहलेबैत से बुग्ज़।



## आठवाँ बाब

# फ़र्ज़ इताअ़ते अइम्मा अलैहिस्सलाम

1. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फरमाया बुलंदी अमरे दीन और उसकी शान व शोकत और उसकी मिफ्ताह और तमाम चीजों का दरवाज़ा खुदा की रिज़ा मंदी और मअ़रिफत के बाद इमाम की इताअ़त है। अल्लाह तआ़ला फरमाता है जिस ने रसूल (अ0) की इताअ़त की उस ने खुदा की इताअ़त की और जिस ने रूगरदानी की तो ऐ रसूल सल्लल्लाहुअलैहि व आलेहि वसल्लम हम ने तुम को उनका निगहबान बना कर नहीं भेजा।

2. रावी कहता है कि मैं ने इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम को कहते हुये सुना कि अली इमाम हैं खुदा ने उन की इताअ़त को फर्ज़ किया है और हसन अलैहिस्सलाम इमाम है खुदा ने उन की इताअ़त को फर्ज़ किया है और हुसैन अलैहिस्सलाम इमाम है खुदा ने उनकी इताअ़त फर्ज़ किया है और अली अलैहिस्सलाम इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम इमाम हैं खुदा ने उनकी इताअ़त को फर्ज़ किया है और मोहम्मद बिन अली इमाम हैं खुदा ने उनकी इताअ़त को फर्ज़ करार दिया है।

3. मैंने इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम को कहते हुये सुना कि हम वह लोग हैं जिनकी इताअ़त अल्लाह ने फर्ज की है और तुम ने इमाम बनाया है उस को जो अपनी जिहालत की वजह से लोगों को मअ़जूर नहीं बना सकता।

4. आयत : और हम ने उनको मुल्के अज़ीम दिया–(निसा 4/54) के मुतअ़ल्लिक़ इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम

ने फ़रमाया कि इस से मुराद हमारी वह इताअ़त है जो लोगों पर फर्ज़ की गई है।

5. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को यह कहते हुये सुना कि औसिया व मुरसलीन की इताअ़त में मैं शरीक हूँ।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हम वह हैं कि जो खुदा ने हमारी इताअ़त को फर्ज़ किया है हमारे लिये माले ग़नीमत है और हर क़िस्म का पाक व साफ़ माल हम रासिख़ून फिल इल्म हैं और हम ही वह महसूद हैं जिन के मुतअ़ल्लिक़ खुदा ने फ़रमाया है क्या वह हसद करते हैं (निसा 4/58) उस चीज़ पर जो अल्लाह ने उनको अपने फ़ज़ल से दे रखी है।

7. मैंने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से ज़िक्र किया अपने उस क़ौल का कि औसिया की इताअ़त फ़र्ज़ है हज़रत ने फ़रमाया हाँ वही वह लोग है जिनके मुतअल्लिक़ खुदा ने फ़रमाया अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल[स०] की और उनकी जो तुममें उलिल अम्र हैं और वही वह लोग हैं जिन के मुतअल्लिक़ खुदा ने फ़रमाया तुम्हारा वली अल्लाह है और उसका रसूल[स०] और वह लोग जो ईमान लाये हैं। (माएदा 5/54)

8. एक ईरानी ने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से सवाल किया क्या आप अलैहिस्सलाम की इताअ़त फ़र्ज़ है? फ़रमाया बेशक उस ने पूछा क्या इताअ़ते अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम की तरह? फ़रमाया हाँ।

9. अबू बसीर से मरवी है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा क्या तमाम अइम्मा अलैहिमुस्सलाम अम्र व इताअ़त में एक ही जैसे हैं? फ़रमाया हाँ।

10. रावी कहता है मैं खुरासान में इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर था और हज़रत के पास उस वक्त कुछ बनी हाशिम भी बैठे थे उन में इस्हाक़ बिन मूसा बिन ईसा अब्बासी भी था। फ़रमाया ऐ इस्हाक! मुझे खबर मिली है कि लोग कहते हैं कि हमारा गुमान यह है कि यह लोग हमारे ग़ुलाम हैं क़सम है क़राबते रसूल की, मैं ने कभी ऐसा नही कहा और न अपने आबा व अजदाद से ऐसा कहते सुना और न मुझे किसी से मअ़लूम हुआ कि उन्हों ने ऐसा कहा है लेकिन मैं यह ज़रूर कहता हूँ कि वह इताअ़त में हमारे गुलाम हैं और अम्रे दीन में हमारे मवाली हैं लोगों को चाहिये कि वह यह बात ग़ायब लोगों तक पहुँचा दें।

11. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हम वह हैं जिन पर अल्लाह ने अपनी इताअ़त फर्ज़ की है लोगों को बेदूँ हमारी मअ़रिफत के चारा नहीं और हम से ज़ाहिल रहना क़ुबूल न होगा जिस ने हम को पहचाना वह मोमिन है और जिस ने इकरार न किया वह काफ़िर है और जिस ने हम को न पहचाना लेकिन इंकार न किया वह गुमराह है जब तक उस हिदायत की तरफ़ न लौटे जिस को अल्लाह ने हमारी इताअ़ते वाजिबा की सूरत में फर्ज़ किया है पस अगर वह उसी गुमराही में मर गया तो अल्लाह जो सज़ा चाहेगा उसे देगा।

12. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा। बन्दे के लिए तक़र्रुब इलल्लाह का बेहतरीन ज़रिया क्या है? फ़रमाया खुदावन्दे आलम की इताअ़त उस के रसूल की इताअ़त और ऊलिल अम्र की इताअ़त। फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने हमारी मोहब्बत ईमान है और हमारा बुग़्ज़ कुफ़्र है।

13. मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से कहा मैं अपना अक़ीदा जिस पर खुदा बदला देगा आप के सामने पेश कर दूँ फ़रमाया बयान करो मैं ने कहा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं वह वहदहू ला शरीक हैं और मोहम्मद उसके अब्द व रसूल हैं और इक़रार करता हूँ उन तमाम बातों का जो खुदा की तरफ़ से लेकर आये और यह कि अली इमाम हैं अल्लाह ने उनकी इताअ़त फ़र्ज़ की है उसके बाद हसन अलैहिस्सलाम इमाम हैं और उनके बाद आप अलैहिस्सलाम इमाम हैं और उन सब की इताअ़त अल्लाह नें फ़र्ज़ की है हज़रत ने फ़रमाया यही अल्लाह और उसके मलायका का दीन है।

14. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जान लो सोहबते आलिम और उसकी पैरवी वह दीन है जिस की जज़ा अल्लाह देगा और उस की इताअ़त से नेकियाँ हासिल होंगी और बदियाँ दूर होंगी। और ज़खीरा-ए-हसनात है मोमिनीन के लिये और उनके दरजात की बुलन्दी है उनकी ज़िन्दगी में और रहमते खुदा है बाद उनके मरने के।

15. मंसूर बिन हाज़िम से मरवी है कि मै ने इमाम ज़ाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि अल्लाह की ज़ात उस से बुलन्द व बरतर है कि अपनी मख़लूक़ से पहचानी जाये बल्कि मखलूक़ अल्लाह से पहचानी जाती है फ़रमाया तुम ने सच कहा मैं ने कहा जो यह जान ले कि उसका रब है इस को यह भी जानना चाहिये कि उस के लिए रिज़ा व ग़ज़ब है और इस का पता नहीं चलता, मगर वही से या रसूलुल्लाह से पस जिसके पास वही न आये उस को चाहिये कि रसूलों को तलाश करे और जब उन से मिले तो उन के हुज्जत होने की मअ़रिफ़त हासिल करे और यह समझे कि

उनकी इताअ़त फर्ज़ है। मैंने लोगों से कहा कि क्या तुम नहीं जानते कि रसूलुल्लाह हुज्जत थे अल्लाह की तरफ से उसकी मखलूक़ परं उन्हों ने कहा बेशक, मैंने कहा जब मैंने कुरआन के मोताअल्लिक़ ग़ौर किया तो मैंने देखा के इसी से मुनाज़रे में दलील में दलील लाते हैं मर्रहबया क़दरिया और ला मज़हब तक जो रसूलुल्लाह का इंतेक़ाल हुआ तब कौन हुज्जत था उन्हों ने कहा कुर्आन, मैं ने कहा कुर्आन पर ईमान भी नही रखते और अपनी दलीलों से लोगों पर ग़ालिब आ जाते हैं पस जब मैं ने समझ लिया कि कुर्आन हुज्जत नहीं है मगर अपने आलिम के साथ ताकि जो कुछ वह इस के बारे में कहे सच हों मैंने उन लोगों से पूछा कि कुरआन का आलिम कौन है उन्होंने कहा इब्ने मसअूद आलिम थे उमर आलिम थे हुज़ैफ़ा आलिम थे मैं ने कहा क्या कुल कुरआन के आलिम थे उन्हों ने कहा नहीं मैं ने कहा मैं ने तो किसी को कभी यह कहते नही सुना कि कोई कुल कुरआन का आलिम है सिवाये अली अलैहिस्सलाम के। जब कौम में कोई मसअला उलझता है तो एक कहता मैं नहीं जानता, दूसरा कहता मैं नही जानता। मगर अली अलैहिस्सलाम कहते हैं मैं जानता हूँ पस मैं गवाही देता हूँ कि अली अलैहिस्सलाम कुरआन के आलिम हैं और उनकी इताअ़त फ़र्ज़ है और रसूलुल्लाह के बाद हुज्जते खुदा हैं और कुरआन के मुतअल्लिक़ जो कुछ उन्हों ने बताया वह ज़्यादा हक़ है और दुनिया से नहीं गये जब तक कि अपने बाद रसूलुल्लाह की हुज्जत को कायम नहीं कर दिया। उनके बाद हुज्जते खुदा हसन अलैहिस्सलाम इब्ने अली अलैहिस्सलाम हुये और जब वह दुनिया से जाने लगे तो अपने बाप और जद् की तरह उन्हों ने हुसैन इब्ने अली अलैहिस्सलाम को हुज्जत छोड़ा और मैं गवाही देता हूँ

कि उन्हों ने अपने बाद अली इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम को हुज्जत छोड़ा और उनकी इताअत फ़र्ज़ हुई और उनके बाद मोहम्मद अलैहिस्सलाम इब्ने अली अलैहिस्सलाम अबू जाफ़र हुज्जते खुदा हुये और उनकी इताअत फर्ज़ हुई। फ़रमाया अल्लाह तुझ पर रहमत नाज़िल करे मैं ने हज़रत के सरे मुबारक को बोसा दिया। आप अलैहिस्सलाम हँसे, मैं ने कहा अल्लाह आप की हिफ़ाज़त करे मैं जानता हूँ कि आप अलैहिस्सलाम हुज्जते खुदा हैं और आप की इताअत फर्ज़ है फ़रमाया अल्लाह तुम पर रहम फरमाये। मैंने कहा अपना सरे मुबारक बढ़ाईये कि मैं बोसा दूँ तो हज़रत हंसे और फ़रमाया अब पूछ जो पूछना चाहता है इसके बाद कभी इंकार नहीं करूँगा।

16. रावी कहता है कि मैं ने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा औसिया की इताअ़त फर्ज़ है, (निसा 5/59) फ़रमाया हाँ, यह वह है जिन के लिए खुदा ने फ़रमाया है तुम्हारा वली अल्लाह है और उसका रसूल[स०] और वह लोग जो ईमान लाये हैं नमाज़ को क़ायम करते हैं ज़कात देते हैं हालाँकि वह रूकूअ़ में होते हैं और अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल की इताअ़त करो और उूलिल अम्र की जो तुम में से हो। (5/54)

17. रावी कहता है मैं ने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम को फरमाते सुना हिदायत का सुनना और इताअ़त करना नेकियों के दरवाज़े हैं वह सामेअ़ जो फरमबरदार हो उस पर रोज़े क़यामत हुज्जत न होगी। और जो सुनने वाला ना फ़रमान है उसके लिये उज़्र न होगा इमामे मुस्लिमीन तमाम करेगा अपनी हुज्जत को जब वह रोज़े कयामत खुदा से मुलाकात करेगा। और खुदा फरमाता है रोज़े क़यामत हम हर गिरोह को उसके इमाम के साथ बुलायेंगे। (बनी इसराईल 17211)



## नवाँ बाब

# अइम्मा गवाह हैं खुदा के उसकी मखलूक़ पर

1. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया रोज़े क़यामत हम हर गिरोह को उसके गवाह के साथ बुलायेंगे और ऐ रसूल[स०]! तुम को बनायेंगे उन सब पर गवाह। फ़रमाया यह आयत उम्मते मोहम्मदिया के बारे में खास तौर पर नाज़िल हुई है इन में से हर फ़िरक़ा अपने इमाम के साथ होगा हम उन पर गवाह होंगे। और मोहम्मद[स०] हम पर गवाह होंगे। (निसा 4/41)

2. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा इस आयत के मुतअल्लिक़ हमने तुमको दरमियानी उम्मत बनाया है ताकि तुम लोगों पर गवाह हो जाओ। फ़रमाया वह उम्मते वस्त हम हैं और हम अल्लाह की तरफ़ से उस की मखलूक़ पर गवाह हैं और उसकी ज़मीन में उस की बरहक़ हुज्जतें हैं (बक़रा 2/41) मैंने आयते (मिल्लत अबीकुम (इब्राहीमा) के मुतअल्लिक़ पूछा फ़रमाया इस से मुराद हम हैं खास तौर पर हम वही हैं जिनका नाम मुसलमान पहली किताबों में भी था और इस कुरआन में भी ताकि रसूल[स०] तुम पर गवाह हों पस रसूलुल्लाह! हम पर गवाह हैं इस अम्र के मुतअल्लिक़ जो अल्लाह की तरफ़ से हम तक पहुँचा है पस जिस ने हमारी तसदीक़ की रोज़े कयामत हम उसकी तसदीक़ करेंगे और जिस ने हमारी तकज़ीब क़ी रोज़े कयामत हम उसकी तकज़ीब करेंगे।

3. रावी कहता है मैं ने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से आयत अ–फ़–मन काना (अल्अख) के मुतअल्लिक़ सवाल किया, फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह की रिसालत के गवाह है और रसूलुल्लाह की तरफ से बइयिना हैं।

4. मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से कहा क्या मुराद है इस आयत से व कज़ालि–क जअ़लनाकुम उम्मतन वसतन (ले तकूनू शोहदाआ अलन्नासे व यकूनर्रसूलो अलयकुम शहीदा) फ़रमाया उम्मते वसत हम हैं और हम अल्लाह के गवाह हैं और उस की मखलूक़ पर और हम अल्लाह की हुज्जत हैं उसकी ज़मीन में मैं ने कहा क्या मुराद है इस आयत से या अय्युहल लज़ीना (ऐ ईमान वालो! रूकूअ़ करो और सजदा करो और अपने रब की इबादत करो और नेकी करो ताकि तुम फलाह पाओ, और राहे खुदा में डट कर जेहाद करो उस ने तुम को चुन लिया है। फ़रमाया इस से मुराद हम हैं कि उस ने चुना है और फ़रमाया उस खुदा ने दीन में मसायल के समझने में कोई इशकाल नही रखता। पस मसायल में जिरह होना, दिल तंगी से ज़्यादा बुरा है। मिल्लता अबीकुम इब्राहीम से खास कर हम मुराद हैं औस सम्माकुमुल मुस्लेमीन से मुराद हम हैं हमारा ही यह नाम कुतुबे साबिका में आ चुका है और इस कुरआन में भी है ताकि रसूल[स०] हम पर गवाह हों और हम तुम लोगों पर। पस जिस ने दुनिया में हमारी तसदीक़ की हम रोज़े कयामत उसकी तसदीक़ करेंगे और जिस ने हमें झुठलाया हम उसे झुठलायेगें।

5. अमीरिल मोमिनीन अ० ने फ़रमाया – अल्लाह ने हमें पाक किया है और मअ़सूम बनाया है और अपनी मख़्लूक़ पर

हमको गवाह बनाया है और ज़मीन पर अपनी हुज्जत क़रार दिया है और कुरआन को हमारे साथ किया है और हमको कुरआन के साथ न हम उससे जुदा होंगे न वह हम से।



## दसवाँ बाब

# अइम्मा अलैहिस्सलाम हादी हैं

1. आयत लिकुल्ले क़ौमिन हाद के मुतअल्लिक़ इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हर इमाम अपने ज़माने के लोगों के लिए हादी होता है।

2. 13/7 आयत इन्नामा अन्ता मुंज़िरून लिकुल्ले क़ौमिन हाद के मुतअल्लिक इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम मुंज़िर हैं और हर ज़माने में हममें से एक हादी होता है जो लोगों को मा जाअ बिहिन्नबी की तरफ़ हिदायत करता है। हज़रत रसूले खुदा के बाद हादिये खल्क हज़रत अली[अ०] हैं और उनके बाद औलिया में एक के बाद दूसरा।

3. अबू बसीर से रिवायत है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से आयत अन्त मुंज़िरून व लिकुल्ले क़ौमिन हाद के मुतअल्लिक पूछा फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम मुंज़िर हैं और अली अलैहिस्सलाम हादी हैं। ऐ अबु मोहम्मद! बताओ इस ज़माने में भी कोई हादी है। मैं ने कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ आप हज़रात में से हर ज़माने में एक के बाद दूसरा हादी रहा है। फ़रमाया ऐ अबू मोहम्मद! अल्लाह तुम पर रहम करे। अगर आयत किसी

मंज़िल पर नाज़िल हुई फिर यह शख़्स मर जाये (और उस के बाद कोई हादी न हो) तो यह आयत (मुतशाबेह) भी मर जायेगी। और वह किताब भी (क्यों कि आयाते मुतशाबिहात की तावील करने वाला कोई न होगा) लेकिन वह ज़िन्दा रहता है और वह अपना क़ायम मक़ाम उसी को छोड़ता है जिस तरह इस से पहले ने छोड़ा था।

4. आयत अन्ता मुंज़िरून व लिकुल्ले क़ौमिन हाद के मुतअल्लिक़ इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मुंज़िर (डराने वाले) रसूल हैं और हादी अली अलैहिस्सलाम हैं वल्लाह हमसे अमरे हिदायत कभी नहीं और न क़यामत तक जायेगा।



## ग्यारहवाँ बाब

## अइम्मा अलैहिस्सलाम वालियाने अम्र और ख़ाज़िने इलाही हैं।

1. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना हम वालियाने अम्रे इलाही हैं हम उलूमे इलाही का खज़ाना हैं और मर्क़ज़े असरारे इलाहिया हैं।

2. इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया वल्लाह हम ज़मीन व आसमान में अल्लाह के ख़ज़ाना दार हैं मगर सोने चाँदी के ख़ज़ाने दार नहीं बल्कि इल्मे इलाही के।

3. रावी कहता है मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम से पूछा आप क्या हैं फ़रमाया हम इल्मे अल्लाह के खज़ाना दार हैं हम वही–ए–इलाही के तर्जुमान है हम खुदा की

हुज्जते बालिग़ा हैं इन पर जो आसमानों के ऊपर हैं और इन पर जो ज़मीन के ऊपर हैं।

4. रावी कहता है मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम को कहते सुना कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया (बहदीसे कुदसी) मुझ से अल्लाह तआला ने फ़रमाया तुम्हारी उम्मत में मेरी हुज्जत तमाम होगी उन अशक़िया पर जिन्हों ने विलायते अलीअलैहिस्सलाम को तर्क किया और तुम्हारे बाद तुम्हारे औसिया को छेड़ा बेशक उन में तुम्हारी और तुम से पहले अंबिया की सुन्नत क़ायम है वह मेरे इल्म के ख़ज़ीना दार हैं। तुम्हारे बाद फिर रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया जिबरइल ने मुझे उन के और उनके आबा के नाम बताये।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इब्ने अबी यअफ़ूर से अल्लाह वाहिद है और अपनी वहदानियत में अकेला है और अपने हुकम में मुनफ़रिद है उस ने मखलूक़ को पैदा किया और अम्रे दीन को उन के लिये मुक़द्दर किया। ऐ इब्ने अबी यअफ़ूर हम अल्लाह के बन्दों पर उसकी हुज्जतें हैं और उसके इल्म के ख़ज़ाने हैं और उस इल्म पर क़ायम रहने वाले हैं। (नूर 24/55)

6. फ़रमाया इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने कि फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला ने हम को बेहतरीन ख़िलक़त के साथ पैदा किया और हमें बेहतरीन सूरत दी और हम को आसमान व ज़मीन का खज़ाना दार बना दिया हमने दरख़्तों से कलाम किया हमारी इबादत से अल्लाह की इबादत हुई। हम न होते तो अल्लाह की इबादत न की जाती।



## बारहवाँ बाब

## अइम्मा खुलफ़ाउल्लाह हैं ज़मीन पर और वह अब्वाब हैं जिन से आया जाता है।

1. हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अइम्मा अल्लाह के खलीफ़ा हैं उसकी ज़मीन पर।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम ने औसिया अल्लाह के वह अब्वाब है जिन से (सवाब की तरफ या खान–ए–हिदायत के अन्दर) आया जाता है। अगर वह न होते तो अल्लाह की मअ़रिफ़त न होती। उनसे खुदा ने अपनी मख़लूक़ पर हुज्जत कायम की है।

3. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से इस आयत के बारे पुछा। अल्लाह ने वअ़दा किया है उन लोगों से जो तुम में से ईमान लाये हैं और अमले सालेह किये हैं कि वह उन को रूए ज़मीन पर उसी तरह ख़लीफ़ा बनायेगा जिस तरह उन से पहलों को ख़लीफ़ा बनाया था। फ़रमाया उन से मुराद अइम्मा हैं।



## तेरहवाँ बाब

## अइम्मा अलैहिमुस्सलाम नूरे खुदा हैं

1. अबू खालिद से मरवी है कि मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से आयत फ़ आमिनू बिल्लाहि व रसूलिहि वन्नूरिल लज़ी अनज़लना के मुतअल्लिक़ पूछा, फ़रमाया ऐ

अबू खालिद। नूर से मुराद नूरे अइम्मा हैं। आले मुहम्मद अलैहिस्सलाम से क़यामत तक होने वाले और वही वह नूर हैं जो नाज़िल किया गया और वही अल्लाह के नूर हैं आसमान व ज़मीन में। वल्लाह! ऐ अबू खालिद! नूरे इमाम कुलूबे मोमिनीन में है वह निस्फ़ुनहार के सूरज से ज़्यादा रोशन होता है और वह (अइम्मा) कुलूबे मोमिनीन को मुनव्वर कर देते हैं और अल्लाह उन के नूर को जिस से चाहता है छुपाता है उन के कुलूब तारीक हो जाते हैं वल्लाह! ऐ अबू खालिद! हम से नहीं मुहब्बत करता कोई बन्दा और नही दोस्त रखता हम को, मगर यह कि अल्लाह उसके क़ल्ब को पाक करता है और पाक नहीं करता किसी के दिल को जब तक वह हमें न माने और हम से सुलह न करे, पस जब हम से सुलह करता है तो खुदा उस को सख़्त अज़ाब से और रोज़े कयामत के खौफ़े अज़ीम से महफ़ूज़ रखता है।

2. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया आयत—वह लोग जिन्होंने इत्तिबाअ किया रसूल व नबीये उम्मी का जिस का ज़िक्र उन्हों ने लिखा हुआ तौरेत व इंजील में पाया है जो उनको नेकी का हुक्म देता है और बुराई से रोकता है और पाक चीज़ों को उनके लिए हलाल करता है और नापाक को हराम, इला कौलिहि और उन्हों ने इत्तेबाअ़ किया उस नूर का जो उसके साथ नाज़िल किया गया है वही लोग फलाह पाने वाले हैं फ़रमाया नूर से मुराद यहाँ अली अमीरूल मोमिनीन और अइम्मा अलैहिस्सलाम हैं।

3. अबू जारूद से मरवी है कि मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि अल्लाह ने अहले किताब को ख़ैरे कसीर दिया है यह क्या बात है फ़रमाया खुदा फरमाता है वह लोग हैं जिन को हम ने कुरआन से पहले किताब दी है वह उस पर ईमान रखते हैं वही लोग हैं जिन

को उनके सब्र के बदले में दोहरा अज्र दिया जायेगा और यह भी फ़रमाया है तुम को अल्लाह ने उसी तरह दिया है जैसे उन को दिया था फिर यह आयत पढ़ी ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर, ईमान लाओ उसने रहमत के दो टुकड़े तुम को दिये हैं और तुम्हारे लिये एक नूर करार दिया है कि तुम उन के सहारे चलो यानी इमाम जिस की तुम इक़्तेदा करो।

4. अबू खालिद काबुली से मरवी है कि मैं ने इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम से इस आयत के मुतअल्लिक़ सवाल किया। ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर, इत्तेबाअ़ करो उस नूर का जो हम ने नाज़िल किया है। फ़रमाया ऐ अबू खालिद वल्लाह नूर से मुराद अइम्मा अलैहिमुस्सलाम हैं। ऐ अबू खालिद नूर इमाम है कुलूबे मोमिनीन नूर हैं और दिन में चमकने वाले सूरज से ज़्यादा रोशन हैं वह अइम्मा वह हैं जो कुलूबे मोमिनीन को रोशन करते हैं और उसको रोक देता है अल्लाह जिस से चाहता है पस उन के कुलूब तारीक हो जाते हैं और उर पर पर्दे पड़ जाते हैं।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने (आयत) अल्लाहो नूरुस्समावाते वल अर्ज़े म–स–लो नूरेहि क मिशकात में मिश्कात (चरागदान) से मुराद फ़ातिमा हैं और फीहा मिसबाह (उसमें चिराग़) में मिस्बाह से मुराद इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम हैं और वह चिराग़ शीशेह में है और शीसा से मुराद हुसैन अलैहिस्सलाम हैं और फ़ातिमा ज़नाने आलम के दरमियान रोशन सितारा हैं और वह चिराग़ रोशन है शजरे मुबारका इब्राहीम से। तेल उस चिराग़ का ज़ैतून है जो न शरकी है न ग़रबी यानी न यहूदी न नसरानी है इसका

रोग़न रोशन है यानी क़रीब है कि इल्म इससे फूट निकले। और अगरचि आग मस न करे तब भी नूरुन अला नूर है यानी इमाम के बाद इमान, खुदा उस नूर से जिसको चाहता है हिदायत करता है यानी अइम्मा के ज़रिये और अल्लाह ऐसी ही मिसालें बयान करता है। मैंने पूछा और ज़ुलुमात से क्या मुराद है फ़रमाया अव्वल उसका साहिब जिसको ढाँप लिया सालिस ने तारीक मौजें एक दूसरे पर चढ़ी हुई हैं और वह मुआ़विया और उसके ज़माने के फितने हैं और इस में लम यजअलिलल्लाहु लहु नूरा से यह मुराद है जिसको औलादे फ़ातिमा ज़हरा अलैहसस्सलाम के नूर से हिदायत न हुई उसके लिये रोज़े कयामत नूर न होगा और आयत में जो यह उन का नूर उनके सामने और दाहिनी तरफ़ दौड़ता होगा तो इससे मुराद अइम्माए मोमिनीन हैं जिन का नूर मोमिनीन के सामने और दाहिनी तरफ़ दौड़ेगा और वह उनको मनाज़िले जन्नत की तरफ़ ले जायेगा।

(ऐसी ही हदीस हज़रत इमाम मूसा अलैहिस्सलाम से भी मरवी है।)

6. अबुल हसन इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम से मैं ने आयत "वह चाहते हैं कि नूरे खुदा को अपनी फूँकों से बुझा दें और इस आयत के मुतअल्लिक़ खुदा अपने नूर का तमाम करने वाला है। पूछा यह क्या फ़रमाया वह कहता है कि अल्लाह इमामत का तमाम करने वाला है इमामत नूर है और ऐसा ही है क़ौले बारी–ए–तआ़ला और उसके रसूल स0 पर ईमान लाओ और उस नूर पर जो हम ने नाज़िल किया है फ़रमाया नूर से मुराद इमाम है।



## चौदहवाँ बाब

# अइम्मा अलैहिमुस्सलाम अरकाने अर्ज़ हैं

1. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो कुछ अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया उसको लो और जिस से मना किया है उससे बाज़ रहो, फ़ज़ीलत का यह वही तरीक़ा है जो हज़रत रसूले खुदा के लिए तमाम मखलूक़ पर था अहकामे शरअी में। हज़रत अली अलैहिस्सलाम की ऐब जोई करने वाला शख्स ऐसा ही है जैसे खुदा और रसूल की ऐब जोई करने वाला और किसी पर छोटी या बड़ी बात को उनकी रद करना शिर्क बिल्लाह है। अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम अल्लाह के वह दरवाज़े थे जिस से आया जाता है और वह रास्ता थे जिस को छोड़ कर चलने वाला हलाक होता है यही तरीक़ा जारी रहा तमाम अइम्मा–ए–हुदा के लिए यके बाद दीगरे खुदा ने उनको अरकाने अर्ज़ क़रार दिया है ताकि वह अपने साकिनों के साथ मुज़तरिब न हो, वह ज़मीन के उपर और नीचे खुदा की हुज्जते बालिग़ा हैं और अमीरूल मोमिनीन अक्सर फ़रमाया करते थे मैं अल्लाह की तरफ़ से जन्नत व दोज़ख का तक़सीम करने वाला हूँ मैं फ़ारूक़े अकबर हूँ मैं साहिबे असा यानी इजतेमाए मुस्लिमीन का सबब हूँ मैं साहिबे मीसम यानी वह आयत हूँ जो दलीले इमामत हूँ मेरी विसायत का इक़रार किया है तमाम मलायका रूह और मुरसलीन ने जिस तरह इकरार किया है मोहम्मद स० के मुतअल्लिक़ और सवार किया गया हूँ मनसबे इमामत पर जैसे आंहज़रत स० (नुबूवत पर) और यह मंसब हमारा खुदा की तरफ़ से है रोज़े कयामत रसूलुल्लाह स० को बुलाया जायेगा

पस वह लिबासे इमामते खल्क़ पहने हुऐ हूँगा और मैं बुलाया जाऊँगा पस मैं भी लिबासे इमामत पहने हुये होगा वह कलाम करेंगे मैं भी उन्हीं की तरह कलाम करूंगा। मैं दिया गया हूँ चार खस्लतें कि मुझ से पहले किसी को नहीं दी गयीं मुझे इल्म दिया गया है मौतों का बलाओं का अंसाब का और क़ज़ाया के फैसल करने का और नहीं ग़ायब हुआ मुझसे पहले हो चुका और नहीं दूर है मुझसे जो पोशीदा है बिइज्ने इलाही मैं लोगों को बशारत देता हूँ लोगों को बिइज्ने इलाही और यह सब कुछ खुदा की तरफ़ से मुझे सुपुर्द किया गया है और अपने इल्म में मुझे इसमें कुदरत दी है।

2. सईद अअ़रज से मरवी है कि मैं और सुलेमान आये खिमदत में अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम के हम ने कलाम शुरू किया फ़रमाया ऐ सुलेमान जो अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है वह लेना चाहिये और जिससे मना किया गया है उसे तर्क करना चाहिये। अली अलैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत वैसी है जैसे रसूल की और रसूलुल्लाह अफ़ज़ल हैं अल्लाह की तमाम मख़लूक़ से जिसने अमीरुल मोमिनीन के अहकाम मे से किसी हुक्म पर भी ऐब लगाया उसने खुदा को ऐब लगाया उसके रसूल को ऐब लगाया और छोटी या बड़ी किसी चीज़ में उनकी बात को रद करना शिर्क बिल्लाह है और अमीरूल मोमिनीन बाबुल्लाह हैं नही आया जाता खुदा की तरफ़ से मगर उसी दरवाज़े से और खुदा का वह रास्ता हैं कि जो उसके खिलाफ़ चला हलाक हो गया और यही तरीक़ा अइम्मा के लिए रहा। यके बाद दीगरे खुदा ने उनको अरकाने अर्ज़ करार दिया है ताकि वह उन से साथ कायम रहे और वह खुदा की हुज्जते बालिग़ा हैं उन लोगों पर जो

ज़मीन के उपर हैं और जो ज़मीन के नीचे हैं और अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया मैं जन्नत व नार का खुदा की तरफ से तक़सीम करने वाला हूँ मैं फारूके अकबर हूँ मैं साहिबे असा व मीसम हूँ तमाम मलायका और रूह ने मेरा इकरार इसी तरह किया है जिस तरह मोहम्मद[स०] का इकरार किया है और मेरे ऊपर वही बार रखा गया है जो मोहम्मद मुस्तफा[स०] पर रखा गया है और वह बार खुदा की तरफ से है और रोजे़ कयामत हजरत मोहम्मद मुस्तफा[स०] को बुलाया जायेगा पस आप लिबासे नबुव्वत पहने होंगे और कलाम करेंगे और मैं बुलाया जाउंगा और लिबासे इमामत पहने हुऐ हूँगा पस मैं भी कलाम करूंगा उन्हीं की तरह और चार फज़ीलतें ऐसी दिया गया हूँ कि किसी को नहीं दी गई मुझे मौतों का बलाया का अंसाब का और फैसले क़ज़ाया का इल्म दिया गया है पस नही मुन्तही होगी वह चीज़ जिस ने मेरी तरफ़ सबक़त की और जो चीज़ मुझ से गायब है वह मुझ से दूर न रही मैं अल्लाह की तरफ़ से बशारत देने वाला हूँ और खुदा की तरफ़ से तमाम के तमाम अहकाम का पहुँचाने वाला हूँ। मैं अल्लाह की तरफ से बशारत देने वाला हूँ और खुदा की तरफ़ से तमाम अहकाम का पहुँचाने वाला हूँ खुदा ने अपने इज़्न से मुझे कुदरत दी है।

3. इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से मरवी है कि फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन[अ०] ने जो रसूलुल्लाह[स०] पर नाज़िल हुआ वह उस पर अमल करने वाले है और जिस चीज़ को मना किया गया उससे बाज़ रहने वाले हैं रसूलुल्लाह[स०] के बाद मिस्ल उनकी इताअ़त का हुक्म भी है। और उन पर तक़द्दुम करने वाला ऐसा है जैसे खुदा और रसूल स0 पर सबक़त की

और उन पर फज़ीलत चाहने वाला ऐसा है जैसे रसूल स० पर फ़ज़ीलत और छोटे या बड़े हुक्म को उनके न मानना शिर्क बिल्लाह है रसूलुल्लाह वह बाबुल्लाह थे जिसमें दाख़िल होना था और वह एक ऐसा रास्ता था कि जो इस पर चला वह अल्लाह से मिल गया और ऐसे ही अमीरूल मोमिनीन थे उनके बाद यके बाद दीगरे तमाम अइम्मा के लिए यही सूरत है खुदा ने उनको अरकाने अर्ज़ क़रार दिया ताकि ज़मीन अपने साकिनों के साथ कायम रहे और वह अइम्मा सूतूने इस्लाम हैं और राब्ता–ए–इलाहिया हैं उसके दीन में जिसकी वह हिदायत करने वाले हैं नहीं हिदायत करता है कोई हादी मगर उनकी हिदायत से और कोई दायरए हिदायत से ख़ारिज नहीं होता मगर जबकि कोताही करे उनका हक़ अदा करने में वह खुदा के अमीन बन्दे हैं उस अम्र के मुतअल्लिक़ जो उनको दिया गया है इल्म से कुबूले उज्र से और अज़ाबे इलाही से डराने वाले के मुतअल्लिक़ वह अल्लाह की हुज्जते बालिग़ा हैं उन लोगों पर जो रूऐ ज़मीन पर हैं उनके आखिर के लिये भी खुदा की तरफ से वही है जो उनके अव्वल के लिये है और इस मरतबे तक नहीं पहुँचता कोई मगर खुदा की मदद से और अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं अल्लाह की तरफ़ से तक़सीम करने वाला हूँ ज़न्नत और दोज़ख़ का और नही दाखिल होगा जन्नत व दोज़ख में कोई मगर मेरी इजाज़त से, मैं हक़ व बातिल में सब से बड़ा फर्क़ करने वाला हूँ मैं अपने बाद वालों का भी इमाम हूँ और पहचानने वाला हूँ उस चीज़ का जो मुझ से पहले लोग लाये थे हज़रत मोहम्मद स0 से सिवा कोई मुझ पर सबक़त नहीं ले गया और मैं और हज़रत रसूले खुदा एक ही रास्ता पर हैं

मगर यह कि वह पुकारे जाते हैं अपने नाम से और मुझे छ चीज़े अता की गई हैं मौत का इल्म, बला का इंल्म, औसिया–ए–अंबिया का इल्म, कज़ाया फ़ैसल करने का इल्म और मुसलमानों को फतह पाने का कुफ्फार पर और हुसूले सलतनत का और मैं साहिबे असा–ए–इमामत हूँ और निशाने इमामत हूँ और रूए ज़मीन पर चलने वाला हूँ जो रोज़े कयामत लोगों से कलाम करेगा।



## पंदरहवाँ बाब

# फ़ज़ीलते इमाम और उसकी सिफ़ात

1. अब्दुल अज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया है कि हम मक़ामे मर्व में इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से साथ बैठे थे हम रोज़े जुमा अपने आने के आग़ाज़ में जामा मस्जिद में जमा थे हम ने इमामत का जिक्र छेड़ा और उसके बारे में जो इख़तेलाफ़ात बकसरत है उसका ज़िक्र किया मैं इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में आया और इमामत के बारे में लोगों के ग़ौर व फ़िक्र को बताया हज़रत मुस्कुराये और फ़रमाया ऐ अब्दुल अज़ीज़! यह कौम जिहालत का शिकार है और उन्हों ने अपनी राय में धोका खाया है ख़ुदावन्दे आलम ने अपने नबी की रूह को उस वक्त तक कब्ज़ नही किया जब तक दीन को कामिल नहीं किया और कुरआन को नाज़िल किया जिस में हर शै का बयान है और उसमें हलाल व हराम और हुदूद व अहकाम को बताया गया है और वह तमाम बातें भी जिनकी तरफ़ लोग मुहताज हैं और उस ने फ़रमाया हम ने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी और

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि वसल्लम की आखिर उम्र में यह आयत नाज़िल की कि आज हम ने तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया और अपनी नेअ़मत को तुम पर तमाम कर दिया और तुम्हारे लिये दीने इस्लाम को पसंद किया और अम्रे इमामत तमाम दीन से है और नहीं रेहलत फरमाई हज़रत ने यहाँ तक ज़ाहिर कर दिया कि अपनी उम्मत पर दीन के अहकाम को और उनका रास्ता वाज़ेह किया और उनको हक की राह पर लगा कर छोड़ दिया और अली अलैहिस्सलाम को उनके लिये निशाने हिदायत और इमाम बनाया और नहीं किसी ऐसे अम्र को छोड़ा जिसकी तरफ़ उम्मत मुहताज थी मगर यह कि उसको बयान कर दिया पस जिसने यह गुमान किया कि खुदा ने अपने दीन को बेतमाम किये छोड़ दिया तो उस ने किताबे खुदा को रद् कर दिया और जिस ने ऐसा किया उसने इससे इंकार किया क्या लोग क़दरे इमामत और महल्ले इमामत को पहचानते हैं क्या उनको इसके मुतअल्लिक अख़्तियार दिया गया है इमामत अज़ रूये कद्र व मंज़िलत बहुत अजल व अरफ़अ़ है और अज़ रूये शान बहुत अज़ीम है और बलिहाज़ महल व मक़ाम बहुत बुलंद है और अपनी तरफ ग़ैर को आने से मानेअ है और इसका मफ़हूम बहुत गहरा है लोगों की अक़लें इस तक पहुँच नहीं सकतीं और उनकी राहें इन को पा नही सकतीं वह अपने अख़तियार से अपने इमाम को नहीं बना सकते। अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम खलील को इमामत से मख़सूस किया नबुव्वत और ख़ुल्लत के बाद इमामत का तीसरा मतर्बा है खुदा ने इब्राहीम को इसका शरफ़ बख्शा और इसका यूँ ज़िक्र किया मैं तुमको लोगों का इमाम बनाने वाला हूँ खलील

ने खुश होकर कहा और मेरी औलाद को इमाम बनायेगा फ़रमाया ज़ालिम मेरे अहद को न पा सकेंगे।

इस आयत ने कयामत तक के लिए हर ज़ालिम की इमामत को बातिल कर दिया और उसको अपने बरगुज़ीदः लोगों में करार दिया और फिर इब्राहीम को अल्लाह तआला ने शरफ़ बख्शा इस तरह कि उनकी औलाद में साहिबे सफूफ और तहारत लोग पैदा किये और फ़रमाया हम ने इब्राहीम को इस्हाक़ व याकूब अ़ता किये जैसा कि उन्हों ने तलब किया और उन सब को सालेह बनाया और इमाम बनाया कि वह हमारे अम्र की हिदायत करते और हम उनकी तरफ़ नेक कामों की, नमाज़ को क़ायम करने की, ज़कात देने की वही की, पस अहदे इमामत उनकी जुर्रियत में बतौर मीरास एक दूसरे की तरफ़ चला, सदियों तक यहाँ तक कि फिर उसके वारिस नबी स0 हुये जैसा कि फ़रमाया है तमाम लोगों में बेहतर वह हैं जिन्होंने इब्राहीम का इत्तेबाअ़ किया और यह नबी और जो लोग इस पर ईमान लाये हैं और अल्लाह मोमिनों का वली है पस यह चीज़ आँहज़रत के लिये खास़ हो गई फिर यह ओहदा मखसूस हुआ। अली अलैहिस्सलाम से बअमरे खुदा इस रस्म की बिना पर जो अल्लाह ने फर्ज़ की है पस उनकी औलाद में वह असफिया हुये हैं जिनको अल्लाह ने इल्म व ईमान दिया।

जैसा कि फरमाते हैं यह लोग वह हैं जिन को इल्म व ईमान दिया गया और रोज़े कयामत उनसे कहा जायेगा तुम किताबे खुदा के साथ रहो रोज़े कयामत तक। क्योंकि मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही वसल्लम के बाद कोई और नबी आने वाला नहीं, पस इस सूरत में इन

जाहिलों को इमाम बनाने का हक़ कहाँ से हासिल हो गया, इमामत मंज़िले अंबिया है और मीरासे औसिया है इमामत अल्लाह की खिलाफ़त है और रसूल स0 की जानशीनी है और मक़ामे अमीरूल मोमिनीन है और मीरास हसन व हुसैन अलैहिमस्सलाम हैं।

इमामत ज़मामे दीन है और निज़ामे दीन है और इससे उमूरे दुनिया की दुरुस्ती है और मोमिनीन की इज़्ज़त है।

इमामत तरक़्क़ी करने वाले इस्लाम का सर है और उसकी बुलंद शाख है इमाम ही से नमाज़, रोज़ा, ज़कात, सौम, हज, व जिहाद का तअ़ल्लुक़ है वही माले ग़नीमत का मालिक है वही सदक़ात का वारिस है वही हुदूद व अहकाम का जारी करने वाला है वही हुदूद व अतराफ़े इस्लाम की हिफ़ाज़त करने वाला है।

इमाम हलाल करता है, हलाले खुदा को और हराम करता है हरामे खुदा को हुदूदुल्लाह को और दफ़ा करता है दुश्मनों को दीने खुदा से और बुलाता है लोगों को दीने खुदा की तरफ़ हिकमत और उम्दा नसीहत के साथ और वह खुदा की पूरी पूरी हुज्जत है।

इमाम चढ़ता सूरज है जो अपनी रोशनी से आलम को जगमगाता है वह ऐसे मक़ामे बुलंद पर है कि लोगों के हाथ और उनकी निगाहें वहाँ तक नहीं पहुँच सकतीं।

इमाम रोशन चाँद है और ज़ियाबार चिराग़ है और चमकता चिराग़ है जगमगाता नूर है हिदायत करने वाला सितारा है ज़लालत की तारीकियों में, शहरों के दरमियान जंगलों और समंद्रों की गहराईयों में राह बताने वाला।

इमाम चश्म–ए–आबे शीरीं है प्यासे के लिए, रहनुमाई

करने वाला है (बयाबानों में)।

और हलाकत से नजात देने वाला है और हर उस आग की मानिंद है जो किसी बुलंदी पर लोगों का रास्ता दिखाने के लिए रोशन की जाये। और मुहलिकों में सहीह रास्ता बताने वाला है जो इससे अलग रहा हलाक हुआ।

इमाम बरसने वाला बादल है और ज़ोर की रौ डालने वाला अर्ब है वह आफताबे दरखशाँ है वह साया फिगन आस्मान है वह हिदायत की कुशादह ज़मीन है वह उबलने वाला चश्मा है वह तालाब है वह बाग़ है।

इमाम मोमिन के लिए मेहरबान साथी है शफीक़ बाप है और सगा भाई है और ऐसा हमदर्द व मेहरबान जैसे नेक माँ अपने छोटे बच्चों पर और बंदों का फ़रयाद रस है मसायब व आलाम में।

इमाम खुदा का अमीन है उसकी मखलूक में उसकी हुज्जत है उसके बन्दों पर और खुदा का खलीफा है शहरों में और अल्लाह की तरफ से दावत देने वाला है और हरमे खुदा से दुश्मनों का दूर करने वाला है।

इमाम गुनाहों से पाक होता है जुमला उयूब से बरी वह इल्म से मख्सूस और इम्ल से मौसूम होता है वह दीन के निज़ाम को दुरूस्त करने वाला है मुसलमानों की इज़्ज़त है, मुनाफिक़ों के लिए ग़ज़ब और काफिरों के लिए हलाक़त।

इमाम अपने ज़माने में वाहिद व यगाना होता है कोई फ़ज़्ल व कमाल में उसके नज़दीक भी नहीं होता और न कोई आलिम उसके मुक़ाबले का होता है न उसका बदल पाया जाता है न उसका मिस्ल व नज़ीर है वह बगैर इकतेसाब और खुदा से तलब के साथ हर क़िस्म की

फ़ज़ीलत से मखसूस होता है यह इखतिसास उसके लिए खुदा की तरफ से होता है पस कौन है कि मअ़रिफते ताम्मा हासिल कर सके या इमाम बनाना उसके अख़्तियार में हो। हाये हाये लोगों की अक़्लें गुमराह हो गई हैं और फहम व इदराक सर गशता और परेशान है और उकूल हैरान हैं और आँखें इदराक से क़ासिर हैं और अज़ीमुल मरतबत लोग इस अम्र में हक़ीर साबित हुये हैं और होकमा हैरान हो गये हैं और ज़ी अक़्ल चकरा गये हैं और ख़तीब लोग आजिज़ हो गये हैं उकूल पर जिहालत का पर्दा पड़ गया और शुअरा थक कर रह गये है और अहले अदब आ़जिज़ हो गये और साहिबाने बलाग़त आजिज़ आये। इमाम की किसी एक शान को बयान न कर सके और उसकी किसी एक फ़ज़ीलत की तअ़रीफ न कर सके उन्होंने अपने इज्ज़ का इक़रार किया और अपनी कोताही के क़ायल हुये। पस जब इमाम के एक वस्फ का यह हाल है तो उसकी तमाम सिफ़ात को किस की ताक़त है कि बयान कर सके और उनके हक़ायक़ पर रोशनी डाले। या उस अम्रे इमामत के मुतअल्लिक़ कुछ समझ सके या कोई आदमी ऐसा पा सके कि वह अम्रे दीन से उसे बेपरवाह कर सके ऐसा कैसे हो सकता है? हालांकि इमाम का मरतबा सुरय्या सितारा से बुलन्द है पकड़ने वाला उसको कैसे पकड़ सकता है और वस्फ़ ब्यान करने वाले क्योंकर उसकी वस्फ़ बयान कर सकते हैं ऐसी सूरत में इमाम साज़ी में बन्दों का अख़्तियार कैसा और अक़्लों की रसाई के बारे में कहो और इमामत जैसी चीज़ और कौन सी है?

क्या तुम यह गुमान करते हो कि यह इमामत आले रसूल (स0) के गैर में पाई जाती है वल्लाह लोगों के नफसों

ने उनको झुठलाया है और उनके नफसों ने उनको इंतेहाई बातिल उमूर में फांस रखा है वह उपर को चढ़े सख़्त चढ़ाई फिर उसके क़दम पस्ती की तरफ़ फैले, उन्हों ने इमाम बनाने का इरादा किया अपनी तबाह करने वाली नाक़िस अक़्लों से और गुमराह करने वाले रावियों से। पस हक़ीक़ी इमाम से उनको बुअद बढ़ता ही गया खुदा उनको हलाक करे यह कहां बहके जा रहे हैं उन्हों ने सख़्त काम का इरादा किया और इफतरा परदाज़ी की और बहुत खैफनाक गुमराही में पड़ गये और हैरत के भंवर में फंस गये जब कि उन्हों ने इमाम को बसीरत से लेना तर्क किया और शैतान ने उनके अअ़माल को उनकी निगाहों में ज़ीनत दे दी और उनको सही रास्ते से हटा दिया और वह साहिबाने अक़्ल थे उन्हों ने नफरत की, इंतेखाब खुदा और रसूल और अहलेबैते रसूल (स0) से और अपने इंतेखाब को पसंद किया। हालांकि कुरआन उनसे पुकार पुकार कर कह रहा है कि तेरा रब जो कुछ चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है इंतेखाब करता है लोगों को इसमें दख़ल नहीं लायक़े तस्बीह है अल्लाह शिर्क से पाक है और फरमाता है जब अल्लाह और उसका रसूल (स0) किसी अम्र को तै फरमा दें तो किसी मोमिन व मोमिना को अपने मुआ़मले में कोई अख़्तियार हासिल नहीं और अल्लाह ने फ़रमाया तुम्हें क्या हो गया तुम खुद कैसा हुक्म लगाते हो।

आया तुम्हारे पास कुरआन के अलावा कोई और किताब है जिसका तुम दर्स लेते हो क्या तुम्हारे लिये इस में कोई ऐसी चीज़ है जिसकी तुम खबर देते हो या तुम्हारा हम से रोज़े कयामत तक के लिए कोई मुआ़हिदा है कि तुम उसके

मुतअ़ल्लिक़ हुक्म करते हो ऐ रसूल (स0) तुम उनसे पूछो कि कौन उनमें उन ओहदों का ज़ामिन है क्या उनके लिए खुदा के शरीक हैं पस अगर तुम सच्चे हो तो अपने उन शरीकों को बुलाओ फ़रमाता है क्या यह लोग आयाते कुरआनी में तदब्बुर नहीं करते या उनके कुलूब पर ताले पड़े हुये हैं या उनके दिलो पर मुहर लगी हुई है कि वह नहीं समझते, क्या वह कहते हैं कि हम ने सुन लिया है हालांकि वह सुनते नहीं। खुदा के नज़दीक रूये ज़मीन पर बदतरीन चलने वाले लोग गूंगे बहरे हैं जो समझते ही नहीं अगर अल्लाह जानता कि उनमें कोई बेहतरी है तो ज़रूर उनको सुनाता है लेकिन अगर वह सुनते तो अलबत्ता रू गरदानी करके भाग जाते।

या उन्होंने कहा। हमने सुना और नाफ़रमानी की, बल्कि यह तो खुदा का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है अता करता है।

पस इस सूरत में इमाम के मुतअ़ल्लिक उनका अख्तियार क्या।

इमाम आलिम होता है किसी चीज़ से जाहिल नहीं।

उमूरे दीन की रिआ़यत करने वाला होता है तवक़्कुफ़ नहीं करता।

मअ़दने कुद्स व तहारत होता है।

साहिबे इबादत व जुहद होता है।

साहिबे इल्म व इबादत होता है।

दुआ़ये रसूल (स0) से मखसूस होता है।

नसले सय्यदा ताहिरा व मअ़सूमा से होता है।

उसके नसब में खोट नहीं होती।

कोई शराफते नसब में उसके बराबर नहीं होता।

वह खानदाने कुरैश से होता है।

और खानदान बनी हाशिम में से सब से बुलंद मरतबा होता है।

वह इतरते रसूल (स0) से होता है।

वह मर्ज़ी–ए–इलाही का चाहने वाला होता है।

वह तमाम अशराफ़ का अशरफ होता है।

वह अब्दे मनाफ़ की शाख होता है।

वह इल्म को तरक़्क़ी देने वाला होता है।

वह हिल्म से पुर होता है।

वह जामे शरायते इमामत होता है।

वह सियासते इलाहिया का आलिम होता है।

उसकी इताअ़त लोगों पर फ़र्ज़ होती है।

अम्रे खुदा का कायम करने वाला होता है।

खुदा के बन्दों को नसीहत करने वाला होता है।

दीने खुदा का निगहबान होता है।

अंबिया व अइम्मा अलैहिस्सलाम मुवफ़्फ़क़ मिनल्लाह होते हैं और इल्म व हिकमते इलाहिया के खज़ाने से वह चीज़ उनको दी जाती है जो उन के ग़ैर को नहीं दी जाती, पस उनका इल्म तमाम अहले ज़माना के इल्म से ज़्यादा होता है जैसा कि फ़रमाता है कि जो हक़ की तरफ़ हिदायत करता है वह ज़्यादा हक़दार पैरवी है उससे जो मोहताजे हिदायत है पस तुम्हें क्या हो गया है यह कैसा हुक्म करते हो और यह भी फ़रमाया जिसे हिकमत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई (क़ौले बारी तआ़ला तालूत के बारे में) बेशक अल्लाह ने तुम पर तालूत का इस्तफा किया और उसको इल्म व जिस्म (कुव्वत) में तुम पर फ़ज़ीलत दी और अल्लाह जिसे

चाहता है मुल्क का मालिक बना देता है और वह बड़ा वुसअ़त वाला बड़ा जानने वाला है।

और अपने नबी से फ़रमाया तुम्हारे उपर किताब और हिकमत को नाज़िल किया गया और जो तुम नहीं जानते थे उसकी तालीम दी और यह तुम्हारे उपर खुदा का बड़ा फ़ज़्ल था और अपने नबी की अहलियत व इतरत व जुर्रियत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया क्या लोग हसद करते हैं उस चीज़ पर जो हमने उनको अपने फ़ज़्ल से दी है पस हम ने औलादे इब्राहीम को किताब व हिकमत दी और उनको मुल्के अज़ीम दिया पस उन में से बाज़ ईमान ले आये और बाज़ ईमान से बेनसीब रहे और उनके लिये जहन्नुम के शोले काफी हैं जब खुदा किसी बन्दे को अपने बन्दों के उमूर की इस्लाह के लिये मुंतखब कर लेता है तो उस काम के लिये उसके सीने को कुशादा कर देता है और हिकमत के चश्मे उसके कल्ब में वदीअ़त फरमाता है अैर इल्म का इल्हाम करता है पस वह किसी सवाल के जवाब में आजिज़ नहीं होता और न वह राहे स़वाब में हैरान होता है वह मअ़सूम है मोअय्यद मुवफ्फ़क मिनल्लाह है हिदायत याफ़ता है वह गुनाहों लग़ज़िशों ओर ग़ल्तियों से महफूज़ होता है खुदा उसे इन उमूर से मखसूस करता है ताकि वह उसके बन्दों पर उसकी हुज्जत हो और उसकी मखलूक़ पर उसका गवाह हो।

यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है अ़ता करता है और अल्लाह साहबे फज़ल अज़ीम है पस आया लोग ऐसा इमाम बनाने पर क़ादिर हैं कि वह उसको इंतेख़ाब कर लें और उन सिफात वाले पर वह किसी और को मुकद्दम कर दें। कसम है खाने कअ़बा की। उन्हों ने किताबे खुदा को पसे

पुश्त डाल दिया है गोया वह जानते ही नहीं हालांकि किताबे खुदा में हिदायत और शिफा है उन्हों ने उसे पसे पुश्त डाल कर अपनी खाहिशों का इत्तेबाअ़ किया। खुदा ने उनकी मज़म्मत की है और उनको दुश्मन रखा है और उनके लिय हलाकत है उस ने फ़रमाया है कि इससे ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो हिदायते खुदा के बगैर अपनी ख़ाहिशात का इत्तेबाअ़ करे बेशक खुदा ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं करता और फरमाता है हलाकत हो उनके लिये उनके अअ़माल अकारत गये और खुदा ने फ़रमाया खुदा और ईमान वालों की इससे सख़्त दुश्मनी है खुदा ने हर मुतकिब्बर व जब्बार के दिल पर मुहर लगा दी है और बकसरत दरूद व सलाम हो मोहम्मद (स0) और उनकी औलाद पर।

2. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अपने एक खुतबे में अइम्मा अलैहिमुस्सलाम का हाल और उनकी सिफात को बयान फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला ने हमारे नबी के लिये अइम्माए हिदायत के ज़रिये से अपने दीन को वाजेह किया और उनकी राहों को उनके वजूद से रोशन किया और अपने इल्म के चश्मों को उनके लिये खोला। पस उम्मते मोहम्मद में से जिसने इनको पहचाना और हक़्के इमामत को कुबूल किया उसने ईमान का ज़ायक़ा चखा और इस्लाम की फ़ज़ीलत को जाना, क्यांकि अल्लाह तआ़ला ने इमाम को मुक़र्रर किया है एक निशान अपनी मखलूक के लिए और हुज्जत करार दिया अहले इताअत के लिये और तमाम अवाम के लिये और पहनाया उसको ताजे वक़ार और ढांप लिया उसको ऐसे नूर से जो निगाह रखने वाला है आसमान व ज़मीन का और ज़्यादा होता है उसका इल्म उस वसीले से

जो आसमान तक खींचा हुआ है ताकि वही–ए–इलाही का सिलसिला मुंकतअ़ न हो और जो अहकाम मिनल्लाह हैं वह नहीं हासिल होते मगर बवसीला–ए–इमाम और खुदा अपने बन्दों के अअ़माल को कुबूल नहीं करता जब तक मअ़रिफते इमाम न हो वह दफअ़ करने वाला है शुकूक की तारीकियों और फितनों के शुबहात को और खोलने वाला है सुनन की गुथ्थियों को, खुदा ने अपनी मखलूक़ की हिदायत कि लिये औलादे हुसैन (अ0) से इंतेखाब किया और एक के बाद दूसरे का इस्तफ़ा और इजतबा किया और राज़ी हुआ अपनी मखलूक की हिदायत पर और उनको उनके लिये चुन लिया जब उनमें से कोई इमाम दुनिया से गया तो उसके बाद ही दूसरा इमाम मुअय्यन किया जो उसकी वहदानियत का रोशन निशान और रोशनी फैलाने वाला हादी और दीन को कुव्वत बखशने वाला इमाम था और आलिमे हुज्जते खुदा था जो अइम्मा[अ0] खुदा की तरफ से इमाम हैं वह हक की तरफ हिदायत करते हैं और मुआमेलात में अदल व इंसाफ से काम लेते हैं वह खुदा की हुज्जतें हैं और उसकी मखलूक़ पर उसकी तरफ़ से निगहबान हैं वह खुदा के बन्दों के लिये बाइसे हिदायत हैं उनके नूर से शहरों में रोशनी है और लोगों की औलाद उनकी बरकत से नमू हासिल करती है खुदा ने उनको लोगों के लिये ज़िन्दगी करार दिया है वह अंधेरों की रोशनियां हैं वह कलामे इलाही की कुजियाँ हैं वह इस्लाम के सुतून है उनके लिये अल्लाह का इरादा उनके मुतअल्लिक़ जारी हुआ है इमाम खुदा का मुंतख़ब व पसंदीदा होता है। बरगुज़ीदा और मक़बूले खुदा और रसूल (स0) है और ऐसा हादी हैं जो महल्ले इसरारे इलाहिया है और क़ायम रहने

वाली उम्मदीगाह है खुदा का मुंतखब बन्दा है उन सिफात के साथ और कमाले नज़र इल्तेफात से खुदा ने उनको अपने लिये बनाया या जब कि आलमे ज़र में उसको पैदा किया और ख़ल्क़ के पैदा करने से पहले उनको पैदा किया अपने अर्श के दाहिनी तरफ और उनको अपनी हिकमत की नेअ़मत अता फरमाई थी अल्लाह तआ़ला ने अपने गैब के इल्म में इमाम का इतेखाब किया और उसको तहारत से मखसूस किया वह बक़िया औलादे आदम और ज़ुर्रियते नूह (अ0) से है और आले इब्राहीम का बरगुज़ीदा है और आले इस्माईल का खुलासा है और मोहम्मद (स0) का जिगर पारा है हमेशा खुदा की आँख उसकी हिफ़ाज़त करती है (ताकि उसकी इस्मत बरक़रार रहे) और अपने पर्दे में उसकी निगहबानी करती है और शैतान उसके जाल से उसको दूर रखती है और शुबहात की तारीकियों से बचाता है और हर फासिक़ की सरकशी से महफूज़ रखता है और हर बुराई के इरतेकाब से दूर रखता है ऐबों से बरी रखता है आफात से बचाता है लग़ज़िशों से हिफाज़त करता है फवाहिश से महफूज़ रखता है अव्वल उम्र से हिल्म और नेकी से मुत्तसिफ़ होता है और आखिर उम्र तक इफ्फते इल्म और फज़्ल से तअल्लुक़ रखता है अपने बाप के अम्र पर कायम है और बाप की जिंदगी में गोयाई से ख़ामोश रहता है जब उसके बाप की मुद्दते हयात खत्म होती है और उसकी इमामत का ज़माना आता है और इरादा–ए–इलाही से उसकी हुज्जत करार देने से मुतअल्लिक होता है और उसके बाप की मुद्दते हयात खत्म होती है और उसकी इमामत का ज़माना आता या और इरादा–ए–इलाही से उसके हुज्जत करार देने से मुतअल्लिक़ होता है और

उसके बाप की मुद्दते हयात इंतेहा को पहुँच जाती है तो उसके बाद अम्रे इलाही उसके मुतअल्लिक़ होता है और दीन के मुआमले में उस से रुजूअ़ की जाती है खुदा उसको अपने बन्दों पर हुज्जत क़रार देता है।

और अपने शहरों में उस से अपने दीन को कायम किया और अपनी रूह से उसकी ताईद की और अपना इल्म उसको अता किया और हक़ व बातिल में फैसल करने वाले बयान से आगाह किया और अपना राज़ उसके सुपुर्द किया और उसको अम्रे अज़ीम अंजाम देने के लिये बुलाया और उस बयान की फज़ीलत से उसको आगाह किया और अपनी मखलूक़ के लिए उसको अपना निशान क़रार दिया और अहले इल्म पर उसको हुज्जत क़रार दिया और अहले दीन के लिये उसे रोशनी बनाया और अपने बन्दों पर इसको एक रुक्ने मुस्तहकम करार दिया और अल्लाह ने लोगों के लिये उसका इमाम होना पसंद किया अपना भेद उसके सुपुर्द किया और अपने इल्म का उसे मुहाफिज़ बनाया और अपनी हिकमत को उसके अन्दर पोशीदा रखा और निगाह रखा और उसको अपने दीन के लिये बुलाया उसको अम्रे अज़ीम के लिये और अपने दीन के तरीक़ों को उससे जिन्दा किया अपने फरायज़ व हुदूद को उससे बाकी रखा पस इमाम ने अदल से उस वक़्त काम किया जब साहिबाने जिहालत हैरत में थे और झगड़ालू लोग हैरान थे यह हिदायत एक चमकदार नूर से की और यह बयान अमराज़े क़ल्बी को शिफ़ा देने वाला है और हक़ वाजेह और बयान रोशन है और हिदायत उसी नहज पर थी और जो तरीक़ा उनके आबाये ताहिरीन व सादिक़ीन का है पस ऐसे आलिम के हक से जाहिल न होगा

मगर और न इंकार करेगा मगर गुमराही और न रूगरदानी करेगा उससे मगर खुदावन्दे आलम पर जुरअत करने वाला।



## सोलहवाँ बाब

## अइम्मा अलैहिमुस्सलाम वालियाने अम्र और महसूद हैं जिनका ज़िक्र कुरआन में है

1. बरीद अजली से मनकूल है कि मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से पूछा इस आयत के मुतअल्लिक़ कि अल्लाह की इताअ़त करो और इताअ़त करो रसूल की और जो तुममें उलिल अम्र हैं उनकी। हज़रत ने जवाब में फ़रमाया खुदा फरमाता है क्या तुमने उन लोगो को नहीं देखा जिनको किताबे खुदा का एक हिस्सा दिया गया था कि वह ईमान लाये बुत और शैतान पर और वह कहते हैं कि यह लोग जो काफिर हैं उन लोगों से ज़्यादा राहे खुदा पर चलने वाले हैं जो ईमान लाये हैं यानी अइम्मा–ए–ज़लालत और आतिशे जहन्नम की तरफ बुलाने वाले, आले मोहम्मद अलैहिस्सलाम से ज़्यादा हिदायत याफता हैं यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लअ़नत की है और जिन पर अल्लाह की लअ़नत है ऐ रसूल (स0)! तुम उनका कोई मददगार न पाओगे क्या उनके लिये कोई हिस्सा है मिल्क यानी इमामत व खिलाफ़त से तो वह लोगों का एक रेशा भी देने वाले नहीं । इमाम ने फ़रमाया अन्नास से मुराद हम हैं और नक़ीर वह रेशा है जो खुर्मे की गुठली के वसत में होता है और खुदा ने फ़रमाया है क्या वह हसद करते हैं उन चीज़ों पर जो अल्लाह ने अपने

फज़ल व करम से लोगों को दी हैं फ़रमाया इमाम ने इस आयत में महसूदीन से मुराद हम हैं कि इस बिना पर कि अल्लाह ने हमको इमामत अता की है और अपनी तमाम मख़लूक़ में और किसी को नहीं दीं। फिर फरमाता है कि हम ने औलादे इब्राहीम को किताब और हिकमत दी और हम ने उनको मुल्के अज़ीम दिया यानी हम ने उन में रसूल और अंबिया व अइम्मा बनाये। पस कैसी अजीब बात है कि इन फज़ायल का औलादे इब्राहीम में तो इक़रार करते हैं और आले मोहम्मद (स0) की फ़जीलत से इंकार है फिर खुदा फरमाता है बाअ़ज़ उनमें से ईमान ले आये और बाअ़ज़ ने रुगरदानी की और जहन्नम के शोले उनके लिये काफी हैं जिन लोगों ने हमारी आयात से इंकार किया हम उनको जहन्नम की आग में डालेंगे और जब उनके बदन की खालें गल कर छूट पड़ेंगी तो उनके बदले और जिल्द बदल देंगे ताकि वह अच्छी तरह अ़ज़ाब का मज़ा चख लें बेशक अल्लाह बड़ी इज़्ज़त वाला है और हिकमत वाला है।

2. हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से मरवी है कि आयत अम यहसुदुनन्नास में हम वह महसूद हैं जिन से लोग हसद करते हैं।

3. हुमरान बिन अअ़ईन कहते हैं मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा हम ने आले इब्राहीम को किताब और हिकमत दी और फ़रमाया किताब से मुराद नबुव्वत है और हिकमत से मुराद फहम और क़ज़ाया को फैसल करना और आतैनाहुम मुलकन अज़ीमा से मुराद इताअत है।

4. रावी ने इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से आयत अम यहसुदूनन्नास के मुतअ़ल्लिक़ पूछा फ़रमाया

वल्लाह महसूद हम हैं।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम ने आयत फ़क़द आतैना आ+ला इब्राहीम के मुतअल्लिक़ इससे मुराद यह है कि अल्लाह ने औलादे इब्राहीम में नबी रसूल और इमाम बनाये पस कैसी अजीब बात है कि औलादे इब्राहीम में तो यह फ़ज़ीलत मानते हैं और आले मोहम्मद में इंकार करते हैं। और इस आयत में मुल्के अज़ीम से मुराद यह है कि औलादे इब्राहीम में खुदा ने इमाम बनाये जिस ने उसकी इताअत की उस ने खुदा की इताअत की और जिस ने उनकी नाफ़रमानी की उसने खुदा की नाफरमानी की। पस यही मुल्के अज़ीम है।



## सतरहवाँ बाब

## अइम्मा अलैहिमुस्सलाम वह अलामात हैं जिनका ज़िक्र खुदा ने अपनी किताब में किया है।

1. रिसालत मआब (स0) ने फ़रमाया वह सितारे जिन से हिदायत हासिल की जाती है वह रसूल स0 और अलामात हम अइम्मा हैं

2. इस्बात इब्ने सालिम रावी है कि अबा अब्दिल्लाह ने फ़रमाया रिसालत मआब फरमाते हैं कि वह सितारे और अलामात (जिन से हिदायत हासिल की जाती हैं) हम हैं।

3. इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया रसुलुल्लाह नज्म हैं और हम अलामाते इलाहिया हैं।

4. रावी कहता है कि मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा आयत वमा तुग़निल आयात के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया आयात से मुराद हम अईम्मा हैं और नज़ूर (डराने वाले से मुराद) अंबिया अलैहिमुस्सलाम हैं।

5. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अऐहिस्सलाम ने आयत "उन्हों ने हमारी तमाम आयात की तकज़ीब की इस से मुराद तमाम औसिया हैं।

6. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अऐहिस्सलाम से कहा मैं आप पर फिदा हूँ, शिया आप से सवाल करते हैं आयत अम्मा यतसाअलू–न अनिन न–बइल अज़ीम के मुतअल्लिक फ़रमाया, हाँ इस की तफसीर मेरे पास है अगर तुम चाहो तो बयान करूँ, फिर फ़रमाया तम्हें इसकी तफसीर बताता हूँ मैं ने कहा अम्मा यतसाअलून से क्या मुराद है? फ़रमाया वह अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम हैं। अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि खुदा के लिए मुझ से बड़ी कोई आयत नहीं और न मुझ रो बड़ी कोई खबर है।



## अठारहवाँ बाब

## अल्लाह इज़्ज़ोजल ने अइम्मा (अ०) के साथ होने को फ़र्ज़ क़रार दिया है।

1. रावी कहता है मैं नें इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने पूछा आयत वत्तकूल्लाहा व कूनू मअस्सादिक़ीन के मुतअल्लिक़

फ़रमाया सादिकीन से मुराद हम हैं।

2. इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से रावी ने पुछा आयत या अय्योहल्लज़ीन आमनूत्तकुल्लाह व कूनू मअस्सादिक़ीन में सादिकीन कौन हैं? फ़रमाया वह अइम्मा हैं और उनकी इताअ़त की तस्दीक़ करने वाले।

3. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया जो चाहता है कि ऐसी जिन्दगी बसर करे जो अंबिया की ज़िन्दगी है और ऐसा मरना चाहे जो शहीदों का सा हो और उस जन्नत में रहना चाहे जिसको खुदा ने बनाया है और उसको चाहिये कि अली अलैहिस्सलाम को दोस्त रखे और उसके बाद अइम्मा की इक़तिदा करे क्योंकि वह मेरी इतरत हैं और मेरी तीनत से ख़ल्क़ किये गये हैं। या अल्लाह उनको मेरी सी फ़हम और मेरा सा इल्म दे और वाये हो उन पर जो मेरी उम्मत में से उनके मुख़ालिफ है खुदावन्दा मेरी शफ़ाअ़त उनको नसीब न हो।

4. अबू हमज़ा समाली से मरवी है कि मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम को फरमाते हुऐ सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ाला फरमाता है ऐ रसूल! तुम्हारी उम्मत में मेरी हुज्जत तमाम हुई इस पर जिसने विलायते अली को तर्क किया और उनके दुश्मनों को दोस्त रखा और इंकार किया उनकी फ़ज़ीलत से और उनके बाद वाले औसिया की फ़ज़ीलत से बेशक तुम्हारी फ़ज़ीलत उनकी फ़ज़ीलत है और तुम्हारी इताअ़त उनकी इताअ़त है तुम्हारा हक़ उनका हक़ है और तुम्हारी मअ़सियत उनकी मअ़सियत है और हिदायत करने वाले अइम्मा हैं तुम्हारे बाद जारी हुई उन में तेरी रूह

और तुझ में जारी हुई तेरे रब की तरफ से और तेरी वह इतरत हैं और उनकी तीनत तेरी तीनत और उनका गोश्त व खून तेरा गोश्त व खून है खुदा ने जारी किया उन में तेरी सुन्नत को और उन अंबिया की सुन्नत को जो तुझ से पहले हुये हैं यह अइम्मा तेरे बाद इल्म का ख़ज़ाना हैं मेरे लिये, हक़ यह है कि मैं ने उनका इस्तफ़ा किया उनका इजतबा किया उनको खालिस बनाया (अपने लिये) उनको बरगुज़ीदा किया, नजात पाई उस ने जिस ने उनसे मोहब्बत की उनको दोस्त रखा और उनकी फ़ज़ीलत को तसलीम किया, जिबरईल मेरे पास उनके, आबा के और उनके अहिब्बा के नाम लाये और उन लोगों के भी जिन्हों ने उनकी फ़ज़ीलत को तसलीम किया।

5. मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि वसल्लम ने फ़रमाया जो कोई मेरी सी ज़िन्दगी बसर करना चाहता है और मेरी सी मौत मरना और दाखिले जन्नते अदन होना जिसको खुदा ने अपने यदे कुदरत से तैयार किया है उसको चाहिये कि वह अली को दोस्त रखे और उसके दोस्तों को भी दोस्त रखे और उसके दुश्मन से दुश्मनी रखे और उनके बाद आने वाले औसिया को तसलीम करे बेशक वह मेरी इतरत हैं मेरा गोश्त और खून हैं अल्लाह ने उनको मेरा फहम और मेरा इल्म दिया है मैं अपनी उम्मत की शिकायत अल्लाह से करता हूँ उन्हों ने मेरी इतरत की फ़ज़ीलत से इंकार किया है मेरे सिला-ए रहम को उनके बारे में कतअ़ किया। खुदा की कसम यह मेरे बेटे को क़त्ल करेंगे खुदा मेरी शफाअत उनको नसीब न करे।

6. जाबिर जअ़फ़ी ने अबू जअ़फ़र अलैहिस्सलाम से

रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम ने फ़रमाया है जो इस बात से खुश है कि मेरी सी ज़िन्दगी बसर करे और मेरी सी मौत मरे और जन्नत में दाखिल हो जिसका वअ़दा मेरे रब ने मुझ से किया है और उस शाख से तमस्सुक करे जिसको अल्लाह ने अपने यदे कुदरत से लगाया है तो उस को चाहिये कि अली अैहिस्सलाम और उनके बाद आने वाले औसिया से मोहब्बत करे वह तुमको ज़लालत के दरवाज़े में दाखिल न करेंगे और बाबे हिदायत से खारिज़ न होने देंगे। तुम उनको तालीम न दो वह तुम से ज़्यादा जानने वाले हैं और मैं ने अपने रब से दरखास्त की कि उनके और कुरान के दरमियान फर्क़ न डाले यहाँ तककि वह दोनों हौज़े कौसर पर मेरे पास आयेंगे इसके बाद आप ने दोनो उंगुलियों को मिलाया कि इस तरह और फ़रमाया कि हौज़े कौसर की चौड़ाई इतनी है जितनी सनआ़ से ईला तक की मसाफ़त और इस पर बकद्रे अददे नुजूम सोने चांदी के प्याले होंगे।

7. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने रूह व राहत की कुशादगी और मददे नजात, और बरकत व करामत व मग़फ़िरत दरगुज़र तवंगरी और बशारत और रज़ाये इलाही और कुर्बे खुदावन्दी व उम्मीद और मोहब्बते इलाही उसके लिये है जो अली को दोस्त रखे, मेरे ज़िम्मे फ़र्ज़ है कि उनको अपनी शफाअ़त में दाखिल करूँ और अल्लाह के लिये सज़ावार है कि वह मेरी इस ख़्वाहिश को उनके हक़ में कुबूल करे क्योंकि वह मेरे पैरो हैं और जिस ने मेरी पैरवी की वह मुझ से है।



## उन्नीसवाँ बाब

# वह अहलज़्ज़िक्र अइम्मा अलैहिमुस्सलाम हैं जिनसे पूछने का हुक्म खुदा ने दिया है

1. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने आयत फसअलू अहलज्जिक्र के मुतअल्लिक फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहे व आलेही वसल्लम ने फ़रमाया मैं जिक्र हूँ और अइम्मा अहलज़्ज़िक्र है और खुदा ने फ़रमाया है यह जिक्र तुम्हारा और तुम्हारी कौम का और अनक़रीब तुम से पूछा जायेगा यानी लोग मामूर हैं इस पर कि तुम से सवाल करें और इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया रसूल (स0) की कौम हम मे हैं और हम ही वह हैं जिन से लोगों को अहकामे दीन के मुतअल्लिक सवाल करना चाहिये।

2. अब्दुर्रहमान इब्ने कसीर कहते हैं कि मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से आयत (फसअलू अहलज़्ज़िक्र) के मुतअल्लिक सवाल किया। फ़रमाया मोहम्मद[स0] जिक्र हैं और हम अहलज़्ज़िक्र हैं जिन से सवाल करने का हुक्म है मैं ने आयत इन्नहूलज़्ज़िकरूल लाक के मुतअल्लिक पूछा तो फ़रमाया इससे मुराद हम हैं और हम ही वह अहलज़्ज़िक्र है जिन से सवाल करने का हुक्म है।

3. रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से सवाल किया मैं आप पर फिदा हूँ आयत फसअलू अहलज़्ज़िक्र के मुतअल्लिक फ़रमाये। फ़रमाया हम अहले ज़िक्र है और हम ही हैं जिन से सवाल करने का हुक्म है। मैंने कहा आप मसऊल हैं और हम सायल, फ़रमाया हाँ, मैंने कहा क्या हम

पर फ़र्ज़ है कि हम आप से सवाल करें? फ़रमाया जरूर करो। मैं ने कहा क्या आप पर फ़र्ज़ है कि हमारे हर सवाल का जवाब दें। फ़रमाया हमें अख्तियार है जिस बात का चाहें जवाब दें और जिसका चाहें न दें क्या तुम ने यह आयत नहीं सुनी। यह हमारी बखशिश है पस या तो दे कर एहसान करो या रोक लो जिसका हिसाब न होगा।

4. अबू बसीर से मरवी है फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने आयत व इन्नहूल जिकरून ला–क के अलख़ मुतअल्लिक रसूलुल्लाह जिक्र हैं और अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम मसऊलों में हैं वही अहले जिक्र हैं।

फ़रमाया हज़रत इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने आयह व इन्नहुल जिकरून ला–क के मुतअल्लिक़ कि ज़िक्र से मुराद कुरआन है और हम रसूल[स०] की कौम ही वह हैं जिनसे सवाल करने का हुक्म है।

6. अबू बकर खजरमी से मंकूल है कि मक्का मुकर्रमा में हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाजिर था कि वरदुबुर और कुमेत हाजिरे खिदमत हुआ और कहने लगा मैं आप पर फिदा हूँ। मैंने आप से दरयाफ्त करने के लिये सत्तर मसअले रखे थे उन में से एक भी याद नहीं। फ़रमाया एक भी याद नहीं मैं ने कहा हां एक मसअला याद आया। फ़रमाया वह क्या है मैं ने कहा वह आयत फस्अलू अहलज़्ज़िक्र फ़रमाया वह हम हैं मैं ने कहा हमारे लिये दरयाफ्त करना ज़रूरी है। फ़रमाया हां मैं ने कहा क्या आप के लिये जवाब देना लाज़िम है फ़रमाया यह हमारी मरज़ी पर है।

7. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से मनकूल है

कि लोग यह गुमान करते हैं कि आयत फस्अलू अहलज़्ज़िक्र में अहलुज्जिक्र से मुराद यहूद व नसारा हैं फ़रमाया अगर ऐसा है तो वह लोग तुम को अपने दीन की तरफ़ बुलायेंगे अपने सीने पर हाथ रख कर फ़रमाया हम हैं अहलुज्जिक्र और हम हैं मस्ऊलून।

8. इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैंने सुना कि हज़रत अली बिन हुसैन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अइम्मा पर वह फ़र्ज़ है जो उनके शियों पर फ़र्ज़ नहीं और हमारे शियों पर वह फर्ज़ है जो हम पर नही, खुदा ने उनको हुक्म दिया है कि वह हमसे सवाल करें फ़रमाया अहलज़्ज़िक्र से पूछो अगर तुम नहीं जानते हो उनको सवाल का हुक्म दिया, हमारे लिये जवाब देना लाज़िम नहीं है अगर हम चाहें जवाब दें चाहें बाज़ रहें।

9. अबू नसर से मरवी है कि मैंने इमाम रिज़ा[अ०] को एक खत लिखा इस में आयत फस्अलू अहलज़्ज़िक्र के मुतअल्लिक पूछा। फ़रमाया अल्लाह तआला फरमाता है मोमिनों के लिये यह मुनासिब नहीं कि वह सब के सब निकल खड़े हों उनमें से हर गिरोह की एक जमाअत अपने घरों से क्यों नहीं निकलती ताकि इल्मे दीन हासिल करे और जब अपनी क़ौम की तरफ़ पलट आये तो उनको अज़ाबे आख़रत से डराये, लोगों पर सवाल करना फर्ज़ है और तुम पर जवाब देना फर्ज़ नहीं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है पस अगर वह तुम्हारे अम्र को कुबूल न करें तो समझ लो कि वह अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करने वाले हैं और जो अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे उससे ज़्यादा गुमराह कौन है?



## बीसवां बाब

## कुरआन मजीद में अइम्मा अलैहिमुस्सलाम का वस्फ़ इल्म से किया गया है।

1. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने आयत हल यसतविल लज़ी न के मुतअल्लिक़ फ़रमाया हम हैं वह जो लोग इल्म रखते और हमारे दुश्मन हैं और हमारे शिया साहिबाने अक़्ल व फ़हम हैं।

2. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने आयत हल यसतविल लज़ीना के मुतअल्लिक हम हैं वह जो इल्म रखते हैं और हमारे दुश्मन इल्म नहीं रख़ते और हमारे शिया साहिबाने अक़्ल हैं।



## इक्कीसवां बाब

## रासेखून फिल इल्म अइम्मा अलैहिमुस्सलाम हैं

1. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने हम हैं रासेखून फिल इल्म और हम हैं तावीले कुरआन के जानने वाले।

2. हजरत इमाम मोहम्मद बाक़िर या इमाम मोहम्मद जाफ़र सादिक अलैहिमुस्सलाम ने आयत वमा यअ़लमू

तावी–ल–हु इल्लल्लाह वर्रासिखून फिल इल्म के मुतअल्लिक़ फ़रमाया रसूलुल्लाह रासेखून फिल इल्म में अफज़ल हैं खुदावन्द तआला ने उनको उन तमाम चीज़ों का इल्म दिया था जो उन पर अज़ किस्म तंज़ील व तावील नाज़िल की थीं और खुदा ने आंहजरत (स0) पर कोई ऐसी शै नाज़िल नही की जिसकी तावील न बता दी हो और आंहजरत[स0] के बाद उनके औसिया उन तावीलात के जानने वाले हैं वह लोग जो नहीं जानते (शिआने अहले बैत) तो आलिमे आले मोहम्मद जब उनको आगाह करता है तो वह कहते हैं कि हम इस पर ईमान ले आये। यह सब हमारे रब की तरफ़ से है और कुरआन खास व आम और मोहकम व मुतशाबेह और नासिख व मंसूख है और रासेखून फिल इल्म इसको जानते हैं।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने रासेखून फिल इल्म अमीरूल मोमिनीन हैं और उनके बाद अइम्मा अलैहिमुस्सलाम।



## बाइसवां बाब

## कुरआन में दो इमामों का ज़िक्र है एक अल्लाह की तरफ बुलाने वाले दूसरे जहन्नम की तरफ

1. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है जब यह आयत नाज़िल हुई उस रोज़ हम हर गिरोह को उसके

इमाम के साथ बुलायेंगे तो मुसलमानों ने कहा या रसूलुल्लाह क्या आप अलैहिस्सलाम सब लोगों के इमाम नहीं। फ़रमाया मैं अल्लाह का रसूल होकर आया हूँ तमाम लोगों की तरफ़, और मेरे बाद इमाम होंगे मेरे अहलेबैत से, वह लोगों के दरमियान रहेंगे पस लोग उनको झुठलायेंगे और अइम्मये कुर्फ उन पर जुल्म करेंगे और अइम्मए ज़लाल और उनके ताबेईन भी सतायेंगे पस वह लोग जिन्हो ने उनसे मुहब्बत की और उनका इत्तेबाअ़ किया और उनकी तस्दीक़ की कि वह मुझ से हैं और मेरे साथ हैं और अनक़रीब मुझ से मुलाक़ात करेंगे और जिन्हों ने उन पर जुल्म किया और उनको झुठलाया वह मुझसे नहीं हैं मैं उनसे बरी हूँ।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि किताबे खुदा में दो किस्म के इमामों का ज़िक्र है एक के मुतअल्लिक़ है हम ने उनको इमाम बनाया वह हमारे हुक्म के मुताबिक़ हिदायत करते हैं नह लोगों के हुक्म के मुताबिक़ वह अमरे खुदा को बन्दों के हुक्म से मुकद्दम रखते हैं और अमरे खुदा को बन्दों के अम्र पर तरजीह देते हैं। और दूसरे गिरोह के मुतअल्लिक़ फ़रमाया कि हम ने उनको इमाम क़रार दिया वह जहन्नुम की तरफ लोगों को बुलाते हैं और उनके अम्र को अम्रे खुदा से मोकद्दम जानते हैं और बन्दों के हुक्म को हुक्मे खुदा से ज़्यादा जानते हैं वह अपनी उन खाहिशों पर अमल करते हैं जो किताबे खुदा के खेलाफ हैं।



## तेइसवां बाब

# अइम्मा अलैहिमुस्सलाम को खुदावन्द तआला ने इल्म दिया और उनके सीनों में साबित रखा।

1. रावी कहता है मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़िर<sup>अ०</sup> से सुना आयत बल हु व आयातुन बय्यिनातुन यह वह रोशन आयात हैं जो उन लोगो के सीनों में हैं जिन को इल्म दिया गया है पस अपने सीने की तरफ इशारा करके फ़रमाया कि यह हैं वह सीने।

2. इमाम जाफ़र सादिक़<sup>अ०</sup> ने आयत बल हु व आयातुन बय्यिनातुन के मुतअल्लिक फ़रमाया वह अइम्मा<sup>अ०</sup> हैं जिन के सीनों में आयाते बय्यिनात हैं और जिन को इल्म दिया गया है।

3. इमाम मोहम्मद बाक़िर<sup>अ०</sup> ने आयत बल होवा आयातुन बय्यिनातुम के मुतअल्लिक़ फ़रमाया ऐ अबू मोहम्मद (रावी) दो दफीनों के दरमियान जो मुस्हफ है खुदा ने क्या कहा है मैं ने कहा इस आयत से कौन मुराद है फ़रमाया क्या हमारे अलावा कोई और भी हो सकता है।

4. इमाम जाफ़र सादिक़<sup>अ०</sup> से मरवी है कि आयत बल होवा आयातुन बय्यिनातुन में ऊतुल इल्म से मुराद खास तौर पर अइम्मा हैं।

5. रावी ने इमाम जाफर सादिक़<sup>अ०</sup> से पूछा आयत बल होवा आयातुन बय्यिनातुन के मिस्दाक़ के मुतअल्लिक़ फ़रमाया वह अइम्मा<sup>अ०</sup> हैं खास कर।



## चौबिसवां बाब

## अइम्मा अलैहिमुस्सलाम वह हैं जिनका अल्लाह इज़्ज़ोजल ने इस्तफ़ा किया और अपनी किताब का वारिस बनाया।

1. सालिम से मरवी है मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से आयत—फिर हम ने वारिस बनाया अपनी किताब का उन लोगों को जिन्हें हम ने चुन लिया है अपने बन्दों में से, पस उन में बाज़ ज़ालिमुन लेनफ़सिहि हैं बाज़ मियाना रू और बाज़ नेकियों की तरफ सबक़त करने वाले, बेइज़्ने खुदा इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया साबिक बिल ख़ैरात इमाम है मुक़तसिद आरिफ़ इमाम और ज़ालिमुन लिन फ़सिहि इमाम को न पहचानने वाला।

2. सुलेमान इब्ने खालिद ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा सुम्मा औरसनल—किताब के मुतअल्लिक़ फ़रमाया तुम (ज़ैदिया) क्या कहते हो। मैं ने कहा यह आयत तमाम बनी फातेमा के लिये है। फ़रमाया तुम्हारा ख्याल सहीह नहीं इसमें दाखिल नहीं वह इशारा किया अपनी तलवार की तरफ़ यानी जो तलवार से जंग करे और लोगों को हुक्मे खुदा के खिलाफ दावत दे मैं ने कहा फिर ज़ालिमुन लेनफ़सिहि कौन है फ़रमाया जो अपने घर में बैठे और हक़्क़े इमाम का पहचानने वाला न हो और मुक़तसिद वह है जो हक़्क़े इमाम को पहचाने और साबिक़ बिल खैरात इमाम है।

3. रावी ने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से आयत सुम्मा औरसनल—किताब के मुतअल्लिक़ सवाल किया फ़रमाया वह

औलादे फातिमा अलैहिमुस्सलाम हैं और साबिक़ बिल खैरात इमाम हैं और मुक़तसिद वह हैं जो इमाम का आरिफे और ज़ालिमुन लेनफ़सिहि वह जो आरिफे इमाम नहीं।

4. रावी ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से इस आयत के मुतअल्लिक़ दरयाफत किया वह लोग जिन को हम ने किताब दी है इस की अच्छी तरह तलावत करते हैं वह इस बात पर ईमान रखते हैं फ़रमाया वह अइम्मा<sup>अ०</sup> हैं।



## पचीसवां बाब

# कुरआन इमाम के वास्ते से हिदायत करता है

1. रावी ने इमाम अलैहिस्सलाम से पूछा आयत–और हर एक को हम ने वारिस बनाया उस चीज़ का जो माँ बाप ने और रिश्तेदारों और जिनसे अहदोपैमान हो गये है उन्हों ने छोड़ा है। फ़रमाया इससे मुराद अइम्मा अलैहिमुस्सलाम हैं उन्हीं से खुदा ने तुम्हारे अहदों को बांधा है यानी बगैर इमाम इक़रारे रबूबियत बारी तआला तुम से मुम्किन न होता जिस तरह तरका के लिये नसली तअल्लुक़ माँ बाप या अज़ीज़ो से होता है इस तरह इमानी तअल्लुक़ात की वाबस्तगी के लिये इमाम से तअल्लुक रखना ज़रूरी है।

2. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया–आयत इन्ना हाज़ल कुरआन के मुतअल्लिक़ कि यह कुरआन इमाम की तरफ़ हिदायत करता है। क्योंकि बे इमाम के तअल्लुक रखे हिदायत मुम्किन नहीं।



## छब्बीसवां बाब

# अइम्मा अलैहिमुस्सलाम नेअ़मते इलाहिया हैं।

1. फ़रमाया अमीरुल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने क्या हाल होगा उस कौम का जिन्होंने सुन्नते रसूलल्लल्लाह स0 को बदल दिया और उनके वसी की रूगरदानी की वह उससे नहीं डरते कि उन पर खुदा का अज़ाब नाज़िल हो और फिर आयत तिलावत फरमाई उन्हों ने अल्लाह की नेअ़मत को कुफ़्र से बदल दिया और अपनी कौम को हलाकत के जहन्नम में जा उतारा जो उस ने लोगों पर इनआ़म की है फिर हज़रत अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया रोज़े कयामत कामयाबी हमारे ही ज़िम्मे होगी।

2. मुअ़ल्ला इब्ने मोहम्मद (स0) ने ब तवस्सुत सफ़रा इमामे ज़माना से या किसी दूसरे इमाम से रिवायत की है कि आयत फ बि अय्यि आ ला इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़ेबान में जिस नेअ़मत का ज़िक्र है वह नबी है या वसीये नबी, यह आयत सूरह रहमान में है।

3. रावी कहता है इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने आयत याद करो अल्लाह की नेअ़मतो को फ़रमाया क्या तुम जानते हो अल्लाह की नेअ़मत क्या है? मैं ने कहा नहीं फ़रमाया वह मखलूक़ पर नाज़िल की हुई तमाम नेअ़मतों से बड़ी है और वह है हमारी विलायत।

4. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से आयत अलम त र इलल ल ज़ी न बद्दलू के मुतअल्लिक़

पूछा क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हों ने नेअ़मत को कुफ़्र से बदल डाला, फ़रमाया इस से मुराद तमाम कुरैश हैं जिन्हों ने रसूलुल्लाह (स0) से दुश्मनी रखी, उनसे जंग की और उनके वसी के मुतअल्लिक वसीयत से इंकार किया।



## सत्ताइस्वां बाब

## वह मुतवस्सिम जिनका जिक्र कुरआन में है अइम्मा अलैहिमुस्सलाम हैं और सबील इन्हीं में कायम है।

1. रावी कहता है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर था कि एक शख्स अहलेबैत से दाखिल हुआ उस ने कहा अल्लाह आप की हिफ़ाज़त करे आप क्या फरमाते हैं उस आयत के बारे में बेशक इसमें खुदा की निशानियां हैं साहिबाने फ़ेरासत के लिये, फ़रमाया वह हम हैं एक दायमी राह पर हैं जो क़यामत तक मुंकतअ़ न होगी।

2. रावी कहता है मैं इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पास था एक शख़्स ने इस आयत के मुतअल्लिक़ सवाल किया बेशक इसमें खुदा की निशानियां हैं साहेबाने फेरासत के लिये और यह एक क़ायम रहने वाला रास्ता है फ़रमाया वह साहेबाने फेरासत हम हैं और हम में है वह दवामी रास्ता।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम ने

इस आयत के मुतअिल्लक़ बेशक इसमें साहिबाने फेरासत के लिये निशानियां है कि इस से मुराद अइम्मा अलैहिमुस्सलाम हैं रसुलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमाया फेरासते मोमिन से डरते रहो कि वह नूरे खुदा से देखता है खुदा ने फ़रमाया बेशक इसमें अहले फेरासत के लिये निशानियां हैं।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने आयत इन्ना फी ज़ालिक के मुतअल्लिक़ के मुतवस्सिमीन से मुराद अइम्मा हैं और सबील मुकीम का मतलब यह है कि हम में से कोई अबदुल आबाद तक इस रास्ते से अलग न होगा।

5. जाबिर ने हज़रत इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम से रवायत किया है कि फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन ने आयत इन्ना फ़ी ज़ालिक ल आयातिन लिल मुतवस्सिमीन के मुतअल्लिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम मुतवस्सिम (साहिबे फेरासत) थे और उनके बाद मैं हूं और मेरी जुर्रियत और एक दूसरे नुसखे में यह रवायत अहमद इब्ने मेहरान वग़ैरह से नक़ल की गई है।



## अट्ठाईसवां बाब

# नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम और अइम्मा अलैहिमुस्सलाम पर अअ्‌माल का पेश होना

1. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया रसूलुल्लाह (स0) पर तमाम लोगों के अअ्‌माल ख़्वाह नेक हों या बद हर सुबह को पेश किये जाते है पस तुम इससे डरते रहो (बद अअ्‌माली न करो) अल्लाह तआला ने फ़रमाया है अमल करो मगर यह समझते हुऐ कि अल्लाह तुम्हारे अ़मलको देखता है और उसका रसूल (स0)। यह फ़रमाकर खामोश हो गये यानी आयत का आखरी लफ़्ज़ वल मोमिनून फ़रमाया यानी रसूल (स0) और कुछ खास मोमिन भी अअ्‌माल को देखते हैं। (मुराद अइम्मा) क्योंकि लोग अइम्मा के अअ्‌माल को देखने के मुनकिर थे।

2. रावी कहता है मैं नें इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पुछा कि आयत वअ्‌मलू में मोमिनों से कौन मुराद हैं फ़रमाया वह अइम्मा हैं।

3. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को फरमाते हुये सुना कि तुम को क्या हो गया है कि रसूलुल्लाह (स0) को आजुर्दा करते हो, एक शख़्स ने कहा

हम कैसे आजुर्दा करते हैं फ़रमाया क्या तुम्हें नहीं मअ़लूम कि हुज़ूर (स0) पर तुम्हारे अअ़माल पेश किये जाते है जब बुरे अअ़माल देखते हैं तो हज़रत को रंज होता है पस रसूलुल्लाह (स0) को आजुर्दा न करो बल्कि उनको खुश करो।

4. रावी कहता है मैं ने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से कहा मेरे और मेरे घर वालों के लिये दुआ फरमाइये। फ़रमाया मैं ऐसा नही करता तुम्हारे अअ़माल हर शब व रोज़ मेरे सामने पेश किये जाते है। रावी कहता है मैं ने इस को अम्र अज़ीम समझा, हज़रत ने मुझसे फ़रमाया क्या तुम ने किताबे खुदा में यह आयत नहीं पढ़ी अमल करो पस तुम्हारे अमल को अल्लाह देखता है उसका रसूल और मोमिनीन, फिर फ़रमाया वल्लाह इस से मुराद अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम हैं।

5. हजरत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने आयत वअ़मलू फ स यरल्लाहु अंअ़–म–ल–कुम व रसूल हू वल मोमिनून से मुराद अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम हैं।

6. रावी कहता है मैं ने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से सुना कि अअ़माल रसूलुल्लाह के सामने नेकों और बदों सब के लिये पेश किये जाते हैं।



## उन्तीसवां बाब

# विलायते अली अलैहिस्सलाम ही वह रास्ता है जिस पर क़ायम रहने की तरफ़ रग़बत दिलाई गई है

1. हजरत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने आयत अगर वह तरीक़ए हक पर कायम रहेंगे तो हम उनको बहुत ज़्यादा पानी से सेराब करेंगे के मुतअल्लिक फ़रमाया इससे मुराद यह है कि वह विलायते अली अलैहिस्सलाम और उनके औसिया के रास्ते पर कायम रहेंगे। और उनकी इताअ़त कुबूल करेंगे उनके अम्र व नही में तो अलबत्ता हम उनको (रोज़े कयामत) बहुत ज़्यादा पानी से सेराब करेंगे। इसका मतलब यह कि हम उनके दिलों को ईमान से भर देंगे और तरीक़े से मुराद ईमान लाना है विलायते अमीरूल मोमिनीन और उनके औसिया अलैहिमुस्सलाम पर।

2. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा आयत अल्लज़ीना क़ालू रब्बुनल्लाह के मुतअल्लिक फ़रमाया हज़रत ने इस से मुराद अइम्मा की इमामत पर यके बाद दीगरे ईमान लाना, मलायका उन पर नाज़िल होते हैं और कहते हैं न आइंदा को खौफ करो न पिछली बातों का ग़म करो उस जन्नत की बशारत दी जाती है जिसका तुम से वादा किया गया है।



## तीसवां बाब

# अइम्मा अलैहिमुस्सलाम मअ़दिने इल्म शजर–ए–नबुव्वत और मुख्तलेफ़ मलाइका हैं।

1. अबुल जारूद ने हज़रत अली इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम से रिवायत की है कि हज़रत ने फ़रमाया लोग हमारी फज़ीलत के क्यों मुंकिर हैं हम वल्लाह शजरे नबुव्वत हैं इल्म की कान हैं और मलायका के आने जाने की जगह हैं।

2. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अपने पदरे बुजुर्गवार से रिवायत की है कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हम अहलेबैत शजर–ए–नबुव्वत मक़ामे रिसालत और मलायका के आने जाने की जगह, रहमत का घर और इल्म की कान हैं।

3. ख़ेसमा से मरवी है कि इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने मुझ से फ़रमाया ऐ खेस्मा हम शजर–ए–नबुव्वत हैं और बैते रहमत है और बाबे हिकमत की कुंजियां हैं इल्म की कान हैं और रिसालत का मक़ाम हैं और मलायका के उतरने की जगह हैं मकामे सिर्रे इलाही हैं और हम अल्लाह की वदीअ़त हैं उसके बन्दों में हम अल्लाह के हरमे अकबर हैं हम अल्लाह की तरफ़ से उसके दीन की बक़ा के जिम्मेदार हैं हम अल्लाह के अहद हैं पस जिसने हमारे अहद को पूरा किया उसने खुदा के अहद को पूरा किया और जिस ने उसे तोड़ा उसने अल्लाह के जिम्मे और अहद को तोड़ा।



## इकतीसवां बाब

# अइम्मा अलैहिमुस्सलाम वारिसाने इल्म हैं यके बाद दीगरे

1. हजरत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अली आलिम थे और यह इल्म बतौर मीरास चला उनकी नसल में जब उन में से कोई आलिम मरा तो उसके बाद इल्म का दूसरा वारिस हो गया और जितना इल्म खुदा ने उसे चाहा दिया।

2. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया वह इल्म जो आदम ले कर आये थे उठा नहीं लिया गया। इल्म मीरास में चलता है अली अलैहिस्सलाम इस उम्मत के आलिम थे और हम हैं और हम में से कोई आलिम जब मरता है तो उसके खानदान से दूसरा उसकी जगह पर आता है जिसका इल्म भी वैसा ही होता है या खुदा जितना चाहे और दे दे।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने इल्म मीरास में चलता हैं जब कोई आलिम मरता है तो वैसा ही आलिम जैसा अल्लाह चाहे अपने बाद छोड़ता है।

4. रावी कहता है हम ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को कहते सुना अली अलैहिस्सलाम अंबिया में हज़ार नबियों की आदत रखते थे जो आलिम आदम के साथ आया था वह उठा नही लिया गया और ऐसा इल्म नही मरा कि इसका इल्म चला गया हो इल्म मीरास में चलता है।

5. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि वह

इल्म जो हजरत आदम के साथ नाज़िल हुआ वह इल्म न दुनिया से उठाया जायेगा न ख़त्म होगा कि वह इल्म ही चला जाये।

6. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने लोग तरी को चूसते हैं और नहरे अज़ीम को छोड़ते हैं किसी ने पुछा नहरे अज़ीम क्या है? फ़रमाया रसुलल्लाह और वह इल्म जो अल्लाह ने उन्हें अता किया अल्लाह ने आँहज़रत (स0) में जमा किया था तमाम अंबिया की सुन्नतों को, आदम से लेकर आंहजरत (स0) तक जितने अंबिया गुजरे हैं किसी ने कहा यह सुनन क्या हैं फ़रमाया अंबिया का कुल इल्म। और रसूलुल्लाह ने वह सब का सब हज़रत अली[अ0] को तालीम किया। एक शख़्स ने कहा या इब्ने रसूलुल्लाह आया अमीरूल मोमिनीन ज़्यादा आलिम थे या बाज़ अंबिया, इमाम ने फ़रमाया सुनों खुदा क्या कहता है अल्लाह जिसके चाहता है कान खोल देता है मैं ने बयान किया कि अल्लाह ने तमाम नबियों का इल्म मोहम्मद मुसतफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में जमा कर दिया था और उन्हों ने वह सब इल्म अमीरूल मोमिनीन[अ0] को तालीम कर दिया ऐसी सूरत में यह शख़्स पूछता है अली[अ0] ज़्यादा आलिम थे या बाज़ अंबिया[अ0]।

7. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया बेशक इल्म में तवारूस होता है कोई आलिम (मुराद इमाम) नहीं मरता जब तक उसी जैसा या जैसा अल्लाह चाहे उस जगह पर कायम न हो जाये।

8. मैं ने इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना कि जो इल्म आदम अलैहिस्सलाम के साथ नाज़िल हुआ था वह उठाया नही गया। नही मरता कोई आलिम जब तक कि

उसके इल्म का वारिस उसकी जगह न हो जाये जमीन बगैर आलिम के बाकी नही रह सकती।



## बत्तीसवां बाब

## अइम्मा[अ०] आँहुजूर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम और तमाम अंबिया व औसिया के वारिस हैं।

1. अब्दुल्लाह इब्ने जंदब से मरवी है कि इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने उसे लिखा कि हजरत रसूले खुदा अमीने खुदा थे उसकी मखलूक पर जब उनकी रूह क़ब्ज़ की गई तो हम अहलेबैत उनके वारिस हुए पस हम अल्लाह के अमीन हैं उसकी ज़मीन में हमारे पास इल्मे बलाया और मौत और अंसाबे अरब का इल्म है इस्लाम के पैदा होने की जगह, हम जब किसी को देखते हैं तो उसकी हक़ीक़ते ईमान या हकीकते निफाक को पहचान लेते हैं और हमारे और उनके आबा व अजदाद के नाम लिखे हुये हैं खुदा ने हम पर और उन पर एक मीसाक रखा है वह वारिद होंगे हमारे वारिद होने की जगह और दाख़िल होगे हमारे दाख़िल होने की जगह, मिल्लते इस्लाम में हमारे और उनसे सिवा कोई नहीं, हम नजीबुत्तरफैन हैं हम नजात देहिन्दा हैं हम औलादे अंबिया हैं, हम अबनाये औसिया है हम मखसूस हैं किताबे खुदा में हम सबसे मुक़द्दम व औला हैं किताबे खुदा में हम औला व अफज़ल हैं रसूलुल्लाह के नज़दीक, और हम वह हैं कि अल्लाह ने वाजेह किया हम पर अपने दीन को जैसा कि

उसने अपनी किताब में फ़रमाया वाजेह किया तुम पर (ऐ आले मोहम्मद (स0)) उस अम्र को जो वही की हम ने नूह अलैहिस्सलाम पर (यानी जो नूह अलैहिस्सलाम को तालीम दी थी वही हम को तालीम दी) और ऐ मोहम्मद स0! हम ने उसकी वही तुम पर भेजी और यह वही है जिसकी वही हम ने इब्राहीम मूसा ईसा अलैहिमुस्सलाम को की थी। (पस हम को वही इल्म दिया गया जो उन तमाम अंबिया को दिया गया था हम उुलूल अज़म रसूलों के वारिस हैं) यह कि तुम दीन को (ऐ आले मोहम्मद अलैहिस्सलाम) कायम करो और उस में तफ़रक़ा न डालो (और एक जमाअत बने रहो) यह अम्र शाक़ है मुशरिकीन पर (जो विलायते अली अलैहिस्सलाम में दूसरों को शरीक करते हैं) जबकि बुलाते हो तुम उसकी तरफ (यानी विलायत अली की तरफ) ऐ मोहम्मद अल्लाह हिदायत करता है उस की तरफ उसी को जो अल्लाह की तरफ रूजुअ़ करे (जो कुबूल करे विलायते अली अलैहिस्सलाम को)

2. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम ने रूऐ जमीन पर सब से पहले वसी हबतुल्लाह इब्ने आदम थे कोई नबी ऐसा न था जिसका कोई वसी न हो तमाम अंबिया की तअ़दाद एक लाख 20 हज़ार थी उन में से पांच ऊलुल अज़म थे नूह अलैहिस्सलाम, इब्राहीम अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम, ईसा अलैहिस्सलाम, और हज़रत मोहम्मद अलैहिस्सलाम और अली अलैहिस्सलाम मोहम्मद अलैहिस्सलाम के हेबतुल्लाह थे और वारिसे इल्मे औसिया थे और उनके भी इल्म के वारिस थे जो उन से पहले हुये और हज़रत रसूले खुदा[स0] अपने से पहले तमाम अंबिया व मुरसलीन के इल्म के

वारिस थे कायमा अर्श पर लिखा था, हमज़ा शेरे खुदा हैं और असदे रसूल[स०] हैं और सय्यदुश्शुहदा हैं और अर्श के अअ़ला हिस्से पर लिखा है कि अली अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम हैं पस यह हमारी हुज्जत है जिसने हमारे हक का इन्कार किया वह हमारी मीरास से मुंकिर हुआ। और जिन्हों ने हक़ बात कहने से हम को रोका (मा म न अ ना में मा जायद हैं) दरहालांकि हमारे पेशे नज़र अपनी हक़्क़ानियत का यक़ीन है पस कौन सी हुज्जत इससे ज़्यादा अच्छी हो सकती है।

3. फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने सुलेमान वारिस हुये दाउद के और मोहम्मद स0 वारिस हुये सुलेमान के और हम वारिस हुये मोहम्मद मुस्तफा स0 के, बेशक हमारे पास तौरेत व इंजील व जुबूर का इल्म है और अल्वाहे मूसा का बयान है। रावी कहता है मैं ने कहा इल्म इसी का नाम है, फ़रमाया यह वह इल्म नहीं, इल्म वह है जिसका तअल्लुक हर रोज़ हर घड़ी के वाकेआ़त से है।

4. रावी कहता है मैं इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुआ। अबू नसीर भी मौजूद थे हजरत ने फ़रमाया दाउद वारिस हुये इल्म अंबिया[अ०] के और सुलेमान वारिस हुये दाउद के और मोहम्मद वारिस हुये सुलेमान के और हम वारिस हुये हजरत मोहम्मद मुस्तफ़ा स0 के और उनकें पास इल्म था सुहुफे इब्राहीम और अलवाहे मूसा का इल्म वह है जो रात दिन रोज़ ब रोज़ और साअ़त बढ़ता है।

5. रावी ने सुहुफे इब्राहीम अलैहिस्सलाम और मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त किया कि यह अलवाह (किताब) थीं। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हां ऐसा ही था।

6. इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से किसी ने आयत लकद कतबना फिज़्ज़ुबुर के मुतअल्लिक़ पूछा ज़ुबूर क्या है और जिक्र किया है फ़रमाया जिक्र खुदा के पास है और ज़ुबूर वह है जो दाउद अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई वह अहले इल्म के पास है और वह हम हैं।

7. रावी कहता है मैं ने इमाम मूसा काज़िम[अ०] से कहा मुझे खबर दीजये इस से आंहजरत स0 क्या तमाम अंबिया के उलूम के वारिस थे फ़रमाया हां मैं ने कहा आदम से लेकर अपनी ज़ात तक, फ़रमाया खुदा ने जिस नबी को भी भेजा, मोहम्मद उस से ज़्यादा आलिम थे। रावी कहता है कि मैं ने ईसा इब्ने मरयम बिइज़्ने खुदा मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया करते थे। फ़रमाया सच है मैं ने कहा सुलेमान इब्ने दाउद जानवरों की बोली समझते थे, क्या रसूलुल्लाह के लिए भी यह मनाज़िल थीं? फ़रमाया, सुलेमान ने जबकि हुद हुद को न पाया और उसके मुआमले में शक हुआ तो फ़रमाया यह क्या मुआमला है कि मैं हुद हुद को नहीं देखता क्या वह ग़ायब हो गया है? उसको न पाकर इस पर गज़बनाक हुये और फ़रमाया मैं उसे जरूर सख़्त सज़ा दूंगा या ज़बह करूंगा वरना वह मुझे कोई माकूल वजह (गायब होने के मुतअल्लिक) बयान करे, यह गुस्सा इस लिए था कि वह रहनुमा था चश्म–ऐ–आब तक ले जाने का, पस इस तायर को वह चीज़ अता की गई थी जो सुलेमान को नही मिली थी हालांकि हवा, इंसान, जिन्, शैतान और सरकशों को उनका ताबेअ व फरमान बना दिया था लेकिन वह हवा के नीचे पनी का हाल मअ़लूम न कर सके और एक परिंदा उस को जानता था और खुदा कुरआन में फरमाता है अगर कोई किताब ऐसी हो सकती है कि उसके पढ़ने से पहाड़ चल निकलें और ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो और मुर्दे बोलने लगे तो वह यही किताब है और हम इसी कुरआन के वारिस हैं जिससे पहाड़

चल निकलें शहरों के टुकड़े हो जायें और मुर्दे जी उठें हम हवा के नीचे पानी को जानते हैं किताबे खुदा में ऐसी आयात हैं जिसका इरादा नही किया जाता है बेइजने खुदा और वह मुल्हिक़ है उन चीज़ों से जिसको पहले लोगों ने लिखा खुदा ने वह हमारे लिये उम्मुल किताब में रखा है खुदा फरमाता है आसमान व ज़मीन कोई पोशीदा चीज़ ऐसी नहीं जो किताबे मुबीन में न हो, फिर फ़रमाया हम ने इस किताब का वारिस उन लोगों को बनाया जिन को हम ने अपने बन्दों में से चुन लिया पस हम हैं वह लोग जिनका अल्लाह ने इस्तफ़ा किया और हम को वारिस बनाया उस किताब का जिस में हर शैय का बयान हैं।



## तैंतीसवां बाब

## अइम्मा अलैहिमुस्सलाम के पास वह तमाम किताबें हैं जो खुदा ने नाज़िल कीं वह उन सब की ज़बानों को जानते हैं

1. हश्शाम बिनिलहकम से हदीसे बुरैहा (आलिमे नसारा) में मंनकूल है कि हश्शाम उसके साथ इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से मिलने चले, राह में इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, हश्शाम ने बुरैहा का हाल बयान किया जब वह बयान कर चुके तो इमाम मूसा काज़िम[अ०] ने फ़रमाया ऐ बुरैहा इंजील के मुतअल्लिक तेरा इल्म कैसा है उस ने कहा मैं उसका आलिम हूँ फ़रमाया तुझे कैसे इस पर एतमाद है कि जो तावील तू बयान करता है वह वही है जो ईसा ने बयान

की थी उस ने कहा मैं अपने इल्म पर एतमाद रखता हूँ पस हजरत से इंजील पढ़नी शुरू की, उस ने कहा आप ही वह हैं जिन को मैं पचास साल से तलाश कर रहा था इस के बाद वह ईमान ले आया और उसका ईमान अच्छा था और वह औरत भी ईमान ले आई जो उसके साथ थी हश्शाम मअ़ बुरैहा (और उस औरत के) इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम की खिदमत में आये और वह गुफ्तगू बयान की जो इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम और बुरैहा के दरमियान हुई थी हजरत ने यह आयत तिलावत फरमाई बाअ़ज़ की औलाद बाअ़ज़ से है, बुरैहा ने कहा तौरेत व इंजील वग़ैरह का इल्म आप को कहां से हासिल हुआ, फ़रमाया वह विरासतन हम को उन से पहुंचा है हम इसी तरह पढ़ते हैं जिस तरह वह पढ़ते थे और हम वही कहते हैं जो वह कहते थे खुदा ऐसे शख्स को अपनी हुज्जत करार नहीं देता है जिस से कोई सवाल किया जाये और वह यह कह दे कि मैं नहीं जानता।

2. मुफज्ज़ल बिन उमर से मरवी है कि हम इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम के दरवाज़े पर आये। इज़्ने बारयाबी चाहते थे नागाह मैं ने हज़रत से ऐसा कलाम सुना जो अरबी न था, मैं ने खयाल किया सिरयानी है फिर हजरत रोये आप के गिरया करने से हम भी रोये फिर हमारे पास एक लड़का आया और हमें अन्दर आने की इजाज़त मिली, हम दाखिल हुये, मैं ने कहा खुदा आप की हिफ़ाज़त करे हम इज़्ने बारयाबी तलब कर रहे थे कि आप से ऐसा कलाम सुना जो अरबी न था ख़्याल किया शायद सरयानी है फिर आप रोये तो आप के रोने से हम भी रोये। फ़रमाया हां मैं इल्यास नबी अलैहिस्सलाम को याद कर रहा था वह बनी इस्राईल के बड़े इबादत गुजार नबी<sup>स०</sup> थे मैं ने पूछा वह अपने सजदे में

क्या कहते थे हजरत ने सिरयानी जबान में बयान फ़रमाया वल्लाह मैं ने किसी यहूदी या नसरानी आलिम को इस से ज़्यादा अच्छे लहजे में पढ़ते नहीं सुना था, फिर हज़रत ने अरबी ज़बान में इसका तर्जुमा किया फिर फ़रमाया वह अपने सजदों में कहते थे क्या तू देखेगा मेरा मुअ़ज़्ज़ब किया जाना हालांकि मैं गर्म वक्तों में तेरी मुहब्बत में प्यासा रहा हूँ क्या तु मुझे अज़ाब में देखेगा दर हालांकि मेरा चेहरा तेरी इबादत मे खाक पर रहा है क्या तू मुझे मुअ़ज़्ज़ब देखेगा दर हालांकि मैं ने तेरी मुहब्बत में गुनाहों को तर्क किया है क्या तू मुझे अज़ाब में देखेगा दर हालांकि मैं तेरी मुहब्बत में रातों को जागा हूँ। खुदा ने वही की कि अपना सर सजदे से उठायें तुझे मुअ़ज़्ज़ब न करूगां उन्हों ने कहा अगर तूने कहा है कि मैं अज़ाब न दूंगा तो फिर क्या तू मुझे अज़ाब देगा दर हालांकि मैं तेरा बन्दा हूं और तू मेरा रब है, खुदा ने वही की कि अपना सर उठायें मैं तुझे अज़ाब न दूंगा।

## तौजीह

जनाब इलयास[अ०] को पहली नफी से यह खयाल पैदा हुआ कि वह वादए इलाही है न कि मुसतक़बिल से लेहाज़ा इतमीनाने कल्ब हासिल करने के लिये दोबारा इसकी तौसीक़ चाही, यह अम्रे मनाफी इसमते अंबिया नही मआज़ल्लाह उन्हों ने इस खयाल से नहीं कहा था कि उन को वादा इलाही पर एतमाद न था बल्कि अपनी बन्दगी का खयाल करते हुये यह खदशा पैदा हुआ कि अगर आइंदा कोई अम्र बाइसे खलल पैदा हुआ तो ऐसा न हो कि मैं मोरिदे अज़ाब बन जाऊँ लेहाज़ा मैं दोबारा सवाल कर बैठा।



## चौतीसवां बाब

# अइम्मा अलैहिमुस्सलाम के सिवा किसी ने पूरा कुरआन जमा नहीं किया उनके पास कुल कुरआन का इल्म था।

1. जाबिर से मरवी है कि इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया सिवाये झूठे के और किसी ने मुवाफिके तन्ज़ील पूरे कुरआन जमा करने का दावा नहीं किया सिवाये अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम और उनके बाद अइम्मा अलैहिमुस्सलाम के मुवाफिक़ तन्ज़ील न किसी ने इसको जमा किया और न हिफ्ज़ किया।

2. हजरत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया किसी की यह ताक़त नहीं कि यह दावा करे कि उसके पास ज़ाहिर व बातिन कुरआन का पूरा का पूरा इल्म है सिवाये औसिया अलैहिमुस्सलाम के।

3. रावी कहता है मैं ने हजरत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि जो इल्म हम को दिया गया है वह तफसीरे कुरआन और उसके अहकाम के मुतअल्लिक है और ज़माने के तग़य्युरात और हवादिस के मुतअल्लिक़ है जब खुदा किसी क़ौम से नेकी का इरादा करता है तो उसको अपनी आयात के मुतअल्लिक समझाता है और जो सुनता नहीं और उसके समझने से रुगरदानी करता है गोया उस ने सुना ही नहीं फिर इमाम आली मक़ाम

कुछ देर के लिये खामोश रहे फिर फ़रमाया अगर हम कुछ ऐसे लोग पाते हैं जो ज़बान बन्द रखते हैं या आराम तलबी में हैं तो हम उनको समझाते हैं अगरचे उन पर बात का असर न हो यह महज़ इतमामे हुज्जत के लिये होता है और अल्लाह से मदद चाहते हैं।

4. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम को फरमाते हुये सुना कि किताबुल्लाह का अव्वल से आखिर तक जानने वाला हूं गोया वह मेरी मुठ्ठी में है इस में ज़मीन व आसमान की खबर है और जो कुछ हो चुका है और जो होने वाला है खुदा फरमाता है इस में हर शैय का बयान है।

5. रावी कहता है इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने आयत क़ालल्लजी इंदहू इल्मो मेनल किताब के मुतअल्लिक पूछा गया तो आप ने अपनी उंगुलियों को खोल कर सीने पर रखा और फरमाया हमारे पास कुल किताब का इल्म है।

6. रावी कहता हैं मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से आयत कुल कफा बिल्लाहि शहीदन में इंदहू इल्मुल किताब (जिसके पास पूरी किताब का इल्म है) से कौन मुराद है फ़रमाया इससे मुराद हम हैं अव्वल व अफ़ज़ल हैं और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम के बाद सब से बेहतर।



## पैंतिसवां बाब

# अइम्मा अलैहिमुस्सलाम को इस्मे आज़म दिया गया

1. हजरत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से मंनकूल है कि आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया इस्मे आज़म इलाही के 73 हुरूफ हैं आसिफ़े बरखिया वजीरे सुलेमान अलैहिस्सलाम के पास सिर्फ एक हरफ था इसी से उन्हों ने कलाम किया पस उनके और तखते बिलकीस के दरमियान ज़मीन सिमट गई यहां तक कि उन्हों ने तखत को अपने हाथ से उठा लिया और तरफतुल ऐन में ज़मीन जैसी थी वैसी ही हो गई हमारे पास इसमे आज़म के 72 हुरूफ़ हैं और एक हरफ अल्लाह के पास है उसी से मुमताज़ हुआ वह इल्मे गैब़ में और नहीं है ताक़त व कुव्वत मगर अज़ीमुल मरतबत खुदा से।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ईसा अलैहिस्सलाम इब्ने मरयम के पास दो हुरूफ थे इन्हीं दोनों से वह ऐजाज़ दिखाते थे और मूसा अलैहिस्सलाम को सिर्फ 4 हुरूफ दिये गये थे और इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आठ हुरूफ और नूह अलैहिस्सलाम को पन्द्रह और आदम अलैहिस्सलाम को पचीस और हजरत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम के लिये खुदा ने यह सब जमा कर दिये, खुदा के इसमे आज़म में 73 हुरूफ हैं उन में से आंहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम को 72 दिये गये और एक हरफ पोशीदा रखा गया।

3. इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के पदरे बुजुरगवार इमाम अली नकी अलैहिस्सलाम से मरवी हैं कि हजरत ने फ़रमाया कि इसमे आज़म के 73 हुरूफ हैं उन में से आसिफ़ के पास सिर्फ एक हर्फ़ था जिस से उन्हों ने कलाम किया जमीन उनके और शहरे सबा के दरमियान सिमटी और उन्हों ने तख़्त को उठा लिया फिर वह तरफतुल ऐन में सिमट गई और हमारे पास 72 हुरूफ हैं अल्लाह के पास वह एक हरफ है जिस से वह आलिमे ग़ैब हैं।



## छत्तीसवां बाब

## अइम्मा अलैहिमुस्सलाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम की आयात में से हैं।

1. अबू जाफ़र अलैहिस्सलाम से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्ल्म ने फ़रमाया असाये मूसा अलैहिस्सलाम पहले आदम अलैहिस्सलाम को मिला था फिर शुऐब अलैहिस्सलाम को मिला फिर उन से मूसा अलैहिस्सलाम को मिला और वह हमारे पास है और इस असा से हमारा तअल्लुक़ उस वक़्त से है जब वह हरा था और अपनी असली सूरत अपने दरखत से जुदा हुआ था और वह बोलता है जब उसे बुलाया जाता है और यह हमारे कायम के लिये मुहय्या किया गया है वह वही काम उस से लेगा जो मूसा अलैहिस्सलाम ने दिखाया था वह मुलहिम होगा ब इल्हामे इलाही और निगल जायेगा उनके फरेब के असबाब

को और जो उसे हुक्म दिया जायेगा वह वही करेगा वह जब आयेगा तो हड़प कर जायेगा उन चीज़ों को जिन से लोग धोखा देने वाले होंगे उसके दो होंट होंगे एक ज़मीन पर होगा दूसरा छत पर और उनके दरमियान चालीस गज़ का फासला होगा और अपनी ज़बान से निगल जायेगा असबाबे फरेब को।

2. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना कि अलवाह मूसा अलैहिस्सलाम के पास हैं असाये मूसा हमारे पास है और हम अंबिया के वारिस हैं।

3. फ़रमाया अबू जाफर अलैहिस्सलाम ने कायमे आले मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम जब मक्के में जुहूर फरमायेंगे और कूफा जाने का इरादा करेंगे तो एक मुनादी निदा देगा तुम में से कोई खाना और पानी साथ न ले। हजरत मूसा वाला पत्थर उठायेंगे जिसका वज़न एक ऊँट के बार के बराबर होगा पस जब अपनी मंज़िल पर उतरेंगे वहां चश्मा फूट निकलेगा जो कोई भूका होगा उससे सेर होगा और जो प्यासा होगा वह सेराब होगा यही उन के लिये जादे राह होगा जब तक वह पुश्ते कूफा से नजफ नें दाखिल हों।

4. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से मरवी है कि एक रात अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम कुछ रात गये यह फरमाते हुये घर से निकले कि जो कुछ मैं कहता हूं यह एक खुफिया राज़ है तारीक रात में मैं तुम्हारा इमाम किस तरह निकला कि वह क़मीसे आदम पहने हुये है उसके हाथ में खातमे सुलेमान और असाये मूसा है।

## तौजीह

हजरत का मतलब यह था कि मुझे खुदा के फ़ज़्ल से अपने दुश्मन पर काबू पाने की पूरी कुदरत है बहुत आसानी से मैं उनको जेर कर सकता हूं मगर मसलेहते दीन मुझे इजाज़त नहीं देती।

5. मुफ़ज़्ज़ल इब्ने उमर से मरवी है कि मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को फरमाते हुये सुना क्या तुम जानते हो कि कमीज़े यूसुफ अलैहिस्सलाम क्या थी? मैं ने कहा नहीं फ़रमाया इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए जब आग रोशन की गयी तो जिब्रईल जन्नत का कपड़ा लाये वह उनको पहनाया जिस की वजह से आग की गर्मी ने उन को नुकसान न पहुँचाया। जब इब्राहीम रेहलत फरमाने लगे तो उन्हों ने इसका तावीज़ बना कर इसहाक के गले में डाला और इसहाक़ ने याकूब को दिया और जब यूसुफ अलैहिस्सलाम पैदा हुये तो उनके बाजू पर बांधा गया उसके बाद जो वाकिआ पेश आया जब यूसुफ मिस्र में इस तावीज़ को निकालते थे तो हजरत याकूब अलैहिस्सलाम उसकी खूशबू महसूस करते थे और फरमाते थे कि मैं युसुफ अलैहिस्सलाम की बू सूंघ रहा हूँ, अगर तुम मुझे सठयाना समझो यह वही कमीस थी जो जन्नत से आई हुयी थी मैं ने कहा मैं आप पर फिदा हूं वह कमीज़ फिर कहां गई फ़रमाया उनके खानदान में रही फिर फ़रमाया हर नबी इल्म वगैरह का वारिस हआ उसकी इंतेहा आले मोहम्मद अलैहिमुस्सलाम पर हुई।



## सैंतीसवां बाब

# रसूल अल्लाह (स०) के हथियार और सामान से अइम्मा (अ०) के पास क्या क्या था

1. सईद रोग़न फरोश से रिवायत है कि मैं अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर था कि ज़ैदिया फिर्के के दो आदमी आप के पास आये और कहने लगे क्या तुम में कोई इमाम मुफ़—त—र—जुत्ताअ़त है हजरत अलैहिस्सलाम ने (मसलहिते वक़्त पर नज़र रख कर) कहा कोई नहीं उन्हों ने कहा हमें मोतबर लोगों से खबर मिली है कि आप फतवे देते हैं इकरार करते हैं और क़ायल है अगर कहो तो हम उन गवाहों के नाम बता दें वह फुलां फुलां हैं जो झूठ बोलने वाले नहीं हैं और साहबे जुहद व वरअ़ हैं। हज़रत को गुस्सा आया फ़रमाया मैं ने उन को ऐसा करने का हुक्म नहीं दिया। जब उन दोनों ने आपको गज़बनाक देखा तो वहां से चल दिये हज़रत ने मुझ से कहा क्या तुम उन दोनों को जानते हो? मैं ने कहा हां यह हमारे बाज़ार के रहने वाले हैं और ज़ैदिया फिरक़े के हैं वह गुमान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही वसल्लम की तलवार अब्दुल्लाह इब्ने हसन (इब्ने इमाम हसन) के पास थी। फ़रमाया वह दोनों झूठे हैं खुदा की उन पर लअ़नत हो। न अब्दुल्लाह इब्ने हसन ने उसको अपनी दोनों आंखों से देखा था न एक आंख से (आखिर उम्र में उनकी एक आंख जाती

रही थी) और न उनके बाप (हसन मुसन्ना) ने देखा था। खुदाया न देखा हो उन्हों ने उसको देखा था। अली इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम ने, अगर वह दोनों सच्चे हैं तो ज़रा बतायें हज़रत की तलवार के कब्ज़े पर क्या निशान था और उसकी धार पर क्या निशान था? बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम की तलवार मेरे पास है, बेशक मेरे पास रायते रसूल है जिसका नाम मिग़लबा है मेरे पास अलवाहे मूसा अलैहिस्सलाम और उनका असा है और खातमे सुलेमान इब्ने दाउद है और मेरे पास वह तश्त है जिससे मूसा अलैहिस्सलाम नज़दीकीये इलाही हासिल करते थे और मेरे पास वह इस्मे इलाही है कि जब उसको रसूलुल्लाह स0 मुशरिकों और मुसलमानों के दरमियान रख देते थे तो मुशरिकीन ब–क़द्र एक तीर के फासले के भी उन तक नहीं पहुंच सकते थे मेरे पास भी ऐसी चीजें हैं जैसी मलायका लाया करते थे हमारे पास जो हथियार हैं वह ऐसे ही हैं जैसे बनी इस्राईल के पास ताबूते सकीना था कि बनी इस्राईल जिस खानदान से तअल्लुक़ रखते वह ताबूत उनके दरवाज़ों पर होता, उनको नबुव्वत दी गई और हम को रसूलुल्लाह स0 के हथियारों के साथ इमामत भी दी गई है मेरे पदरे बुज़ुर्गवार ने जब ज़िरहे रसूल स0 पहनी तो उसने ज़मीन पर एक हलका सा खत दिया। मैं ने भी पहनी पस वही सूरत मेरे लिये भी हुई और हमारा क़ायम वह है कि जब उसे पहनेगा तो इंशा अल्लाह उसे पूरा कर देगा। यानी ज़्यादा हिस्सा न रहेगा ब लेहाज़ क़द्द मुनासिब हो जायेगी।

2. रावी कहता है मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को कहते सुना कि रसूलुल्लाह के हथियारों के बारे में मेरा

किसी से झगड़ा नहीं, फिर फ़रमाया असलहा रसूल मदफ़ूअ़ अंन्हु है यानी अगर बद तरीन खल्क़ के सामने रखे जायें तो वह नेक बन जायें यह अम्र पहुंचेगा उस शख़्स तक कि कज हो जायेंगे लोगों के ज़हन और ठोड़ी उस के लिये (यानी मुखालिफ़ लोग वुजूदे इमामे अस्र से इन्कार करेंगे) पस जब मशीयते इलाही होगी और हज़रत खुरूज करेंगे तो मुखालिफ़ कहेंगे यह क्या हो गया और अल्लाह इमामें ज़माना का हाथ उसकी रअ़ीयत के सर पर रखेगा।

3. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि रसूलुल्लाह स0 ने अपने तरके में छोड़ा एक तलवार एक ज़िरा एक छोटा नेज़ा एक पालाने शुतुर एक चितकबरा खच्चर और इन सब के वारिस हुये अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम।

4. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि मेरे पदरें बुजुर्गवार ने रसूलुल्लाह स0 की ज़िरह ज़ातल फुजूल पहनी तो वह आपके क़द से इतनी ज़्यादा थी कि ज़मीन पर खत देती थी और जब मैंने इसको पहना तो इससे ज़्यादा बड़ी मअ़लूम हुई।

5. रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा[अ0] से पूछा कि जुलफिक़ार (शमशीर) कहां से आई फ़रमाया जिबरईल[अ0] आसमान से लाये थे और उसका कब्ज़ा चांदी का था और वह मेरे पास है।

6. इमाम मूसा काज़िम[अ0] से मंन्कूल है कि रसूलुल्लाह[स0] के हथियार हमारे पास हैं दफ़ा किया जाता है (शर) उन से अगर वह बद तरीन खल्क के पास हों तो उनको नेक बना दें। मेरे पदरे बुजुर्गवार ने फ़रमाया जब आप ने एक ज़ने

सकीफा से शादी की और रात में उसके पास आये तो दीवार में हथियारों के लिए एक जगह बनायी गई थी और ऊपर से उसकों सजाया गया था जब सुबह हुई तो आप[अ0] ने दीवार पर नज़र डाली तो आप[अ0] ने तलवार के बराबर पनदरा कीलें ठुकी हुई देखीं अनदेशा हुआ कि उन्होंने तलवार को नुक़सान पहुंचाया है ने उरूस से फ़रमाया तुम बाहर जाओ मैं अपने गुलामों को एक जरूरत के लिये बुलाता हूं पस आप[अ0] ने तलवार के ऊपर के परदा हटाया तो देखा कि वह सब कीलें तलवार से हटी हुई हैं और तलवार पर उनके ठोंके जाने का कोई असर नहीं (यह सुबूत दिया गया इस अम्र का कि सलाहे रसूल[स0] दाफ़ऐशर हैं।

7. इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ0] से रावी ने पूछा लोग कहते हैं कि उम्मे सलमा को आंहज़रत ने एक मुहर शुदा सहीफा दिया था फ़रमाया जब रसूल स0 का इंतकाल हुआ तो हज़रत अली[अ0] उनके अलम और हथियार और उन तमाम चीजों के जो अंबिया से आप[अ0] तक पहुंची थीं मालिक हुये आप[अ0] के बाद इमाम हसन[अ0] वारिस हुये और उनके बाद इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और जब उन को करबला में उन तबर्रुकात के ज़ायअ़ होने का खौफ हुआ तो यह अशया उम्मे सलमा के सुपुर्द कीं उनके बाद वह सब चीजें अली[अ0] इब्ने हुसैन[अ0] को मिलीं उन से मुझको (इमाम जाफ़र सादिक़[अ0]) ने फिर फ़रमाया मेरे बाद तुम को मिलेंगी।

8. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक[अ0] से कहा लोग कहते हैं हजरत रसूले खुदा ने एक मुहर शुदा सहीफा उम्मे सलमा के सुपुर्द किया था फ़रमाया जब रसूलुल्लाह[स0] का इंतकाल हुआ तो हज़रत अली[अ0] के अलम और हथियार

और जो कुछ हज़रत के पास था उसके वारिस़ हुये अली अलैहिस्सलाम, फिर हसन फिर हुसैरन अलैहिमिस्सलाम, मैं ने पूछा फिर फ़रमाया अली अलैहिस्सलाम इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम, उसके बाद उनके फरज़ंद (इमाम मोहम्मद बाकर अलैहिस्सलाम) फिर यह चीज़ तुम्हारी तरफ़ आई यानी मैं वारिस हुआ यानी मैं वारिस हुआ, रावी ने कहा दुरूसत है।

9. हज़रत इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जब हज़रत रसूले खुदा की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप ने अब्बास इब्ने अब्दुल मुत्तलिब के ज़रिये अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम को बुलाया और अब्बास से फ़रमाया, चचा! आप मेरी मीरास लें मेरा करज़ा अदा करें और मेरे वादे पूरे करें उन्हों ने कहा मैं बूढ़ा कसीरूल अयाल और क़लीलुल माल हूं आप मुझसे इतनी सखावत का मुक़ाबला करते हैं यानी आपका करज़ा कैसे अदा कर सकता हूं और आपके वादे कैसे पूरे कर सकता हूं फिर फ़रमाया मैं यह चीजें उसे दूंगा जो उनका हक़दार होगा फिर फ़रमाया ऐ अली अलैहिस्सलाम मोहम्मद अलैहिस्सलाम के वादे पूरे करोगे उसका करज़ा अदा करोगे उसकी मीरास पर क़ाबिज़ होगा? आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया! हां, मेरे मां बाप आप पर फ़िदा हों यह क़रजा मेरे ऊपर है और यह मीरास मेरे लिये है इसके बाद मैं हज़रत की तरफ़ देखने लगा हज़रत स० ने अपनी उंगुली से अंगूठी उतारी और फ़रमाया लो इसको मेरी ज़िन्दगी में पहन लो, मैं ने उंगुली में पहनते वक़्त इसको देखा मैं ने खयाल किया कि यह अंगूठी तमाम तरके से ज़्यादा कीमती है फिर हज़रत बिलाल को बुलाकर फ़रमाया मेरा खुद, ज़िरह, रायत, क़मीज़, ज़ुलफ़िकार (तलवार) व

अमामा, सहाब और चादर अबरक़ा और छड़ी लाओ, मैंने अबरका को इससे पहले नहीं देखा था यह कपड़े का एक टुकड़ा था जिसकी चमक से आंखें चौंधियाती थीं वह जन्नत के कपड़ों में से था मुझसे फ़रमाया या अली अलैहिस्सलाम यह जिब्रईल मेरे पास लाये थे और मुझसे कहा इसको अपनी ज़िरह के हलकों पर रख कर कमर से बांधो। फिर आप[स०] ने अपने अरबी जूते का जोड़ा मंगाया एक उनमें पेवन्द दार था दूसरा बे पेवन्द, और दो क़मीज़ें मंगाईं एक वह जो शबे मेअ़राज पहने हुये थे, दूसरी वह जो जंगे उहद में पहने हुये थे और तीन टोपियां मंगाईं एक सफर वाली दूसरी ईदैन और जुमा वाली, तीसरी वह जिसे पहन कर असहाब के दरमियान बैठते थे फिर फ़रमाया ऐ बिलाल दो खच्चर लाओ एक शहबा नामी और दूसरे दुलदुल और दो नाक़े लाओ नाका गज़बा और नाक़ा कस्वा और दोनो घोड़े एक जनाह नामी जो मस्जिद के दरवाज़े पर खड़ा रहता था ताकि अगर किसी ज़रूरत से किसी को कहीं भेजना पड़े तो इस पर सवार होकर चला जाये, दूसरे हैज़ूम नामी था यह वह था जिससे हज़रत फ़रमाया करते थे आगे बढ़ ऐ हैज़ूम और ओफ़ैर नामी गधा था जब रसूल का इंतकाल हुआ तो उसने अपनी रस्सी तोड़ी और वहां से भाग कर कुबा में बनी खतमा के कुऐं पर आया और अपने को उसमें डाल दिया वहीं उसकी क़ब्र बनी, अमीरूल मोमिनीन से मरवी है कि इस गधे ने हज़रत रसूले खुदा से कहा था कि मेरे मां बाप आप अलैहिस्सलाम पर फिदा हों मेरे बाप ने अपने बाप से और उसने अपने दादा के और उसने अपने बाप से रिवायत की है कि नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती में एक गधा था नूह अलैहिस्सलाम उसके पास

आये और उसके पुट्ठे पर हाथ रख कर कहा इस गधे की नसल से एक गधा पैदा होगा जिस पर सय्यदुंनबिय्यीन और खातिमुल मुरसलीन सवारी करेंगे पस हम्द है उस खुदा के लिये जिस ने इस गधे का मालिक मुझे बनाया।



## अड़तीसवां बाब

# रसूलुल्लाह (स०) के तबर्रुकात मिस्ले ताबूते बनी इस्राईल थे।

1. रावी कहता है कि मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहते हुए सुना कि सिलाहे रसूल स० की मिसाल हममें ताबूते बनी इस्राईल की है कि वह जहां होते थे ताबूत उनके दरवाज़े पर होता था उनको नबुव्वत दी गई पस जहां तबर्रुकाते रसूल स0 हैं उनको इमामत मिली।

2. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से सुना तबर्रुकाते रसूल स0 की मिसाल हम में ताबूते बनी इस्राईल के है जहां ताबूत जाता था वहीं हकूमत व सलतनत भी जाती है पस जहां तबर्रुकाते रसूल स0 हैं वहीं दारूल इल्म है।

3. इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से मरवी है कि इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हममें तबर्रुकाते रसूल स0 की मिसाल ताबूते सकीना की सी है बनी इस्राईल में जहां ताबूत होता था नबुव्वत भी वहीं होती थी पस इसी तरह जहां तबर्रुकाते रसूल स0 हैं इमामत भी वहीं है मैंने कहा क्या तबर्रुकात मफारिके इल्म हैं फ़रमाया नहीं।

4. इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि हमारी मिसाल ताबूते सकीना की सी है बनी इस्राईल में इसी तरह जहां तबर्रुकाते रसूल स0 हैं वहीं इमामत है वहीं इल्म है।

## तौज़ीह

ताबूते बनी इस्राईल के जहां कहीं जाने का मतलब यह है कि बग़ैर कहर व जब्र गया हो जालूत जबरन ले गया था लेहाज़ा नुबूवत का इससे ताअल्लुक़ नहीं हो सकता।



## उंतालीसवां बाब

# ज़िक्र सहीफ़ा व ज़फ़र व जामिआ व मुसहफ़े फ़ातिमा अलैहिस्सलाम

1. अबू बसीर से मरवी है कि मैं इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की मैं आप पर फिदा हूं आप से एक मस्अला पूछना चाहता हूं यहाँ मेरा कोई कलाम सुन नहीं रहा है हज़रत ने वह पर्दा उठाया जो उस मकान और दूसरे कमरे के दरमियान था, मैं ने झांक कर देखा, हज़रत ने फ़रमाया अब जो तुम्हारा दिल चाहे पूछो, मैंने कहा मैं आप पर फिदा हूं आप अलैहिस्सलाम शिया कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व आलिहि व सल्लम ने अली अलैहिस्सलाम को एक बॉब इल्म का तालीम दिया जिससे हज़ार बाब इल्म के आप पर और मुकशिफ हो गये। हज़रत ने फ़रमाया ऐ अबू मोहम्मद (कुन्नीयत बसीर) रसूलुल्लाह स0 ने अली को हज़ार बाब इल्म के तालीम किये

और उनपर हर बाब से हज़ार बाब और ज़ाहिर हुये मैं ने कहा वल्लाह इल्म इसका नाम है पस हज़रत कुछ देर खामोश रहे फिर फ़रमाया ऐ अबू मोहम्मद! हमारे पास जामिआ़ है लोग किया जानें जामिआ़ क्या है, हुजूर बतायें जामिआ़ क्या है? फ़रमाया वह एक सहीफ़ा है सत्तर हाथ लम्बा रसूलुल्लाह स0 के हाथ से, और रसूलुल्लाह ने उसको अपने दहने मुबारक से बयान फ़रमाया और हज़रत अली ने अपने हाथ से इसको लिखा है इसमे तमाम हलाल व हराम का जिक्र है और उस शैय का जिसकी एहतियाज लोगों को होती है यहां तक कि हलके से खराश की दियत का भी जिक्र है फिर आप ने अपना दस्ते मुबारक मेरे उपर रखा और फ़रमाया ऐ अबू मोहम्मद मुझे इजाज़त है मैंने कहा मैं आप अलैहिस्सलाम पर फ़िदा हूँ मैं आप अलैहिस्सलाम का हूं जो चाहे कीजिये। हज़रत ने अपनी दोनों उंगलियों से चुटकी ले कर फ़रमाया इसकी दियत का भी जिक्र है आप अलैहिस्सलाम ने ज़रा तुन्द लहजे में कहा मैं ने कहा वल्लाह इल्म यह है हज़रत ने फ़रमाया सिर्फ़ इतना ही नहीं है फिर थोड़ी देर खामोश रह कर फ़रमाया हमारे पास मुसहफे फ़ातिमा भी है लोग क्या जानें कि वह क्या है? फ़रमाया तुम्हारे इस कुरआन से (बलेहाज़ तफ़सील व तौजीहे अहकाम) वह मुसहफ तीन गुना ज़्यादा है। तुम्हारे कुरआन में एक हर्फ है यानी इजमाल है। मैंने कहा वल्लाह इल्म ये है। फ़रमाया सिर्फ यही नहीं, फिर ख़ामोश रहकर फ़रमाया। हमारे पास इल्म का मा काना वमा यकून है क़यामत तक के वाक़ेआत का। मैंने कहा वल्लाह इसको इल्म कहते हैं। फ़रमाया – हां, इसके अलावा भी हैं। मैंने पूछा वह क्या है फ़रमाया – जो हादसे रात और दिन में

होते हैं और जो एक अम्र दूसरे के बाद और एक शै दूसरी शै के बाद दुनिया में होती है और क़यामत तक होती रहेगी हमें उसका भी इल्म है।

2. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को फ़रमाते सुना कि 128 हिजरी में फ़लासेफ़ा (बअ़हदे बनी अब्बास) ज़ाहिर होंगे (जो मुनकिरे इस्लाम व तौहीद होंगे) यह मैंने मुसहफ़े फ़ातिमा में देखा है। मैंने पूछा मुसहफ़े फ़ातिमा क्या है? फ़रमाया जब रसूल अल्लाह का इन्तक़ाल हो गया तो जनाबे फ़ातिमा पर हुजूम ग़म व बन्दोह हुआ ऐसा कि जिसको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। खुदा ने उनके पास इस ग़म में तसल्ली देने के लिए एक फ़रिश्ता भेजा जिसने उनसे कलाम किया। हज़रत फ़ातिमा (स0) ने यह वाक़िआ अमीरुलमोमिनीन अलैहिस्सलाम से बयान किया। हज़रत ने फ़रमाया–अब जब ये फ़रिश्ता आये और तुम उसकी आवाज़ सुनो तो मुझे बताना। चुनान्चे जब फ़रिश्ता आया तो हज़रत फ़ातिमा ने आगाह किया। अमीरुलमोमिनीन अलैहिस्सलाम फ़रिश्ते की तमाम बातों को लिखते जाते थे यहां तक कि वह बातें उस मुसहफ़ में लिखी गयीं फिर फ़रमाया उसमें हलाल व हराम का ज़िक्र नहीं बल्कि आइन्दा होने वाले वाक़िआत का ज़िक्र है।

3. रावी कहता है इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) ने फ़रमाया मेरे पास सन्दूक़ सफ़ेद है। मैंने पूछा – इसमें क्या है, फ़रमाया जुबरे दाऊद, तौरेते मूसा, इन्जीले ईसा, सोहफ़े इब्राहीम, हलाल व हराम और मुसहफ़े फ़ातेमा है। नहीं गुमान करता मैं कि इसमें कुरआन है। इसमें हर वह चीज़ है कि जिससे लोग हमारी तरफ़ मुहताज हों हम किसी की तरफ़

मोहताज नहीं इसमें (सज़ा के लिये) एक कोड़े, निस्फ़ कोड़े और रूबअ् कोड़े तक का ज़िक्र है और ख़राश की देयत का भी और मेरे पास सन्दूक़े सुर्ख भी है मैंने कहा वह क्या शै है? फ़रमाया उसमें हथियार हैं वह खूंरेज़ी के लिए खोला जायेगा, खोलेगा उसको साहबे जुलफ़िकार (मुराद क़ायमे आले मोहम्मद (स0)) अब्दुल्लाह अबी याफूर ने कहा—अल्लाह आपकी निगरानी करे। औलादे इमाम हसन उसको जानती है फ़रमाया इसी तरह जैसे रात को जानते हैं कि वह रात है और दिन को जानते हैं कि वह दिन है लेकिन हसद उन पर सवार है और तलबे दुनिया ने उनको इन्कार पर आमादा कर दिया है अगर हक़ को सच्चाई के साथ तलब करते तो ये उनके लिए बेहतर होता।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि (औलाद हसन (अ0) मुराद फ़िरक़ा ज़ैदिया) जिस जफ़र का वह ज़िक्र करते हैं कि उनके पास है वह चीज़ जो उन्हें आजुर्दा करती है वह हक़ बात नहीं कहते, हालांकि उसमें हक़ है उन से कहो अगर तुम सच्चे हो तो अली (अ0) के कज़ा को निकालो, उनके मीरास के मुतअ़ल्लिक मसायल निकालो और तुम उनसे खालाओं और फूफियों की मीरास के मुतअ़ल्लिक सवाल करो और उनसे कहो वह मुसहफ़े फ़ातिमा निकाल लायें उसमें फ़ातिमा की वसिय्यत है और उस मुसहफ़ के साथ तबर्रुकाते रसूल (स0) हैं। ख़ुदा ने फ़रमाया है कि अगर तुम सच्चे हो तो पहली किताब लाओ और इल्मी आसार लाओ।

5. बाज़ असहाब ने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) से पूछा कि जफ़र क्या चीज़ है फ़रमाया वह बैल की खाल है जो

मसायले इल्मिया से भरी होती है। पूछा जामिआ़ क्या है? फ़रमाया वह एक सहीफ़ा है जिसका तूल सत्तर हाथ है औंर जो लपेटे जाने के बाद ऊंट की रान के बराबर हो जाता है उसमें वह तमाम बातें हैं जिनकी लोगों को एहतियात होती है। कोई फ़ैसला नहीं जो उसमें न हो यहां तक कि हल्के से ज़ख्म की देयत का भी ज़िक्र है फिर पूछा मुसहफ़े फ़ातिमा क्या है कुछ देर खामोश रहे फिर फ़रमाया उसमें हर वह चीज़ है जिसको तुम तलाश करते हो। करने के लिए या न करने के लिए हज़रत फ़ातिमा बादे वफ़ात रसूल (स0) 75 दिन ज़िन्दा रहीं और उन पर बाप का शदीद ग़म तारी था। जिबरईल उनके पास आते थे और ताज़ियत करते थे और उनका दिल बहलाते थे और उनके पदरें बुजुर्गवार को हाल सुनाते थे और उनकी जगह बताते और वह तमाम वाकिआ़त सुनाते थे जो उनको पेश आने वाले हैं हज़रत अ़ली उन वाकिआ़त को लिखते जाते थे पस यह मुसहफ़े फ़ातिमा (अ0) है।

6. रावी कहता है मैंने हज़रत इमाम ज़फ़र सादिक़ (अ0) को फ़रमाते हुए सुना है कि हमारे पास वह चीज़ है कि हम उसकी वजह से लोगों के मोहताज नहीं बल्कि लोग हमारे मोहताज हैं हमारे पास एक किताब है जिसको रसूलुल्लाह (स0) ने लिखवाया। हज़रत ने लिखा उसमें हलाल और हराम का ज़िक्र है हम जानते हैं उस अम्र को जिसे तुम शुरू करते हो और जानते हैं जब तुम ख़त्म करते हो।

7. रावी ने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) से कहा कि ज़ैदिया और मुअतज़िला (कुर्के) मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (बिन हसन बिन अली) के गिर्द जमा हो गये हैं पस क्या उनके

पास इमामत की कोई दलील है फ़रमाया वल्लाह हमारे पास दो किताबें हैं जिनमें हर नबी का नाम लिखा है और हर बादशाह का जो रूए ज़मीन पर किसी इलाक़े का हुक्मरान हो, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह उन दोनों गिरोहों में से एक भी नहीं।

8. फ़ुज़ैल से मरवी है कि मैं इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) की ख़िदमत में आया तो आपने फ़रमाया तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे आने से पहले क्या देख रहा था। मैंने कहा नहीं। फ़रमाया मैं मुसहब के फ़ातिमा देख रहा था उसमें तमाम बादशाहों के नाम मअ़ उनके बाप के नामों के लिखे हैं मैंने उनमें औलादे इमाम हसन का कोई नाम न देखा।



## चालीसवां बाब

# शाने इन्ना अन्ज़लनाहो फ़ी लैलतिल क़द्र और उसकी तफ़सीर

1. हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी अ0 से मरवी है कि फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) ने कि जब मेरे पदरे बुज़ुर्गवार ख़ान–ए–काबा का तवाफ़ कर रहे थे नागाह एक शख़्स सर और चेहरे को ढापे हुए आया और आपसे कुछ कहना चाहा। हज़रत ने तवाफ़ क़तअ़ किये और उस शख़्स ने आपको एक घर में जो कोहे सफ़ा के पहलू में था दाख़िल किया और किसी को मुझे बुलाने के लिए भेजा अब हम तीन शख़्स वहां हो गये। उसने कहा—मरहबा यब्ना रसूलुल्लाह, फिर मेरे सर पर हाथ रखकर कहा। ऐ अपने आबाओ

अजदाद के बाद खुदा के अमीन। अल्लाह तुम्हें बरकत अता फ़रमाये। ऐ अबू जाफ़र अगर आप चाहते हैं तो मुझे बतायें या चाहें तो मैं आपको ख़बर दूँ। अगर आप चाहें तो मुझसे सवाल करें वर्ना मैं आपसे सवाल करूं। अगर आप चाहें तो मेरी तसदीक़ करें वर्ना मैं आपकी तसदीक़ करूं। फ़रमाया मुझे सब मन्जूर है। उसने कहा अपने आपको इस बात से बचाइये कि मेरे सवाल के जवाब आप मुझसे वह बात कहें जिसका ग़ैर आप के दिल में हो। हज़रत ने फ़रमाया ऐसा तो वह करेगा जिसके दिल में दो इल्म हों एक दूसरे के मुख़ालिफ़, खुदा ने मना किया है ऐसे इल्म से जिसमें इख्तिलाफ़ हो। उसने कहा मेरा यही सवाल था जिसका एक पहलू मैंने नुमाया कर दिया अब आप मुझे वह इल्म बतायें जिसमें इख्तिलाफ़ न हो उसके जानने वाले के लिए फ़रमाया। पूरा पूरा इल्म तो खुदा के पास है लेकिन जितना इल्म बन्दों के लिए ज़रूरी है वह औसिया रसूल (स0) के पास है यह सुनकर उसने अपने मुंह पर से कपड़ा हटाया और ठीक होकर बैठ गया और चेहरा चमक उठा। कहने लगा यही मेरा मक़सद था और इसी लिए मैं आया हूँ। आपका दावा है कि वह औसिया हैं जिनके इल्म में कोई इख्तिलाफ़ नहीं पस उनको यह इल्म क्योंकर हासिल होता है। फ़रमाया जैसे रसूलुल्लाह को होता है। फ़र्क़ यह है कि वह उस चीज़ को नहीं देखते जिसको रसूलुल्लाह देखते हैं क्योंकि वह नबी हैं और औसिया मुहद्दिस हैं, रसूलुल्लाह (स0) बज़रीए वही खुदा से लेते हैं औसिया पर वही नाज़िल नहीं होती। उसने कहा या बिन रसूलुल्लाह आपने सच कहा है। अब एक मुश्किल मसला मेरे सामने है उसको भी हल कीजिए। वह

इल्म जिसमें जमीअ मोहताज इलैह के साथ कोई इख़्तिलाफ़ नहीं होता। औसिया उस इल्म से क्यों नहीं ग़ल्बा हासिल करते उस तरह जिस तरह रसूलुल्लाह (स0) हासिल किया करते थे। यह सुनकर मेरे पदरे बुजुर्गवार हंसे और फ़रमाया अल्लाह ने मना किया है इससे कि उसके इल्म पर मुत्त—लअ किया जाये मगर उसको जिसके ईमान का इम्तिहान लिया गया हो। यह ऐसे ही है जैसे रसूलुल्लाह (स0)को हुक्म दिया गया था कि वह क़ौम की अज़िय्यत पर सब्र करें और बग़ैर उसके हुक्म के उनसे जिहाद न करें। रसूलुल्लाह ने अम्रे हक़ को पोशीदा रखा। फिर खुदा का हुक्म हुआ जो तुमको दिया गया है उसे ज़ाहिर कर दो और मुशरिकों से रूगर्दानी करो। खुदा की क़सम अगर इससे पहले भी ज़ाहिर कर देते तो अमन में रहते लेकिन उन्होंने इताअत को पेशे नज़र रखा और खुदा के खिलाफ़ करने से डरे इसलिए रुके रहे। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी नज़र उस उम्मत के महदी की तरफ़ लगी रहे और उन मलायका की तरफ़ जो आले दाऊद (यानी सुलेमान रजि0 की तलवार जिसने तमाम आलम को मुसख़्ख़र कर लिया था) तलवारों की तरह माबैन आसमान व ज़मीं होंगे, मुअज़्ज़ब होंगी। उस वक़्त मुर्दा काफ़िरों की रूहें और मुलहिक़ होंगी उनसे इन ज़िन्दों की रूहें भी जो कुफ्र में उनसे मुशाबे होंगी फिर हज़रत ने अपनी तलवार निकालकर फ़रमाया यह भी उन्हीं तलवारों में से है। फिर फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसने इन्सानों में से मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0) का इन्तख़ाब किया (यह वही है)। उसके बाद उस शख़्स ने नक़ाब उलट दी और कहा मैं इलियास (नबी) हूँ मैं ने जो सवालात आपसे किये वह अज़रूए जिहालत न थे बल्कि मैं

यह चाहता था कि इस गुफ्तगू से आपके असहाब को कुव्वत पहुंचे अब मैं आपसे बयान करता हूँ वह आयत है आप जानते हैं कि अगर मुखसिमा करें इससे तो अपने मुख़ालिफ़ पर ग़ालिब आयें। हज़रत ने फ़रमाया – मेरे पदरें बुजुर्गवार ने उससे कहा अगर तुम चाहो तो मैं इस आयत को खुद बयान कर दूं। उसने कहा ज़रूर। फ़रमाया – हमारे शियों को चाहिए कि अपने अहल के ख़िलाफ़ से कहें कि ख़ुदा अपने रसूल (स0) से फ़रमाता है कि इन्ना अन्ज़लनाहु फ़ी लैलतिल क़द्र। पस रसूलुल्लाह पहले से जानते थे जिसे नहीं जानते थे उस रात को जिबरील उनके पास कोई नई चीज़ लेकर आए थे अगर वह कहें नहीं तो उनसे पूछा जाये कि शबे क़द्र में जो चीज़ लाई गई थी वह क्या ऐसी थी कि उसका ज़ाहिर करना ज़रूरी था। अगर वह कहें नहीं तो उनसे पूछा जाए आया जो रसुलुल्लाह (स0) ने इल्म खुदा से ज़ाहिर किया उसमें और इसमें कोई इख्तिलाफ़ था। अगर वह कहें नहीं तो उनसे कहें जो शख्स हुक्म करता है हुक्में ख़ुदा में इख्तिलाफ़ के साथ तो वह मुख़ालिफ़ते रसूल (स0) करता है या नहीं, पस वह कहेंगे हां और अगर नहीं कहेंगे तो उन्होंने अपने पहले कलाम के खिलाफ़ कहा पस उनसे कहो (इस सूरत में तुमने इस आयत का मतलब नहीं समझा पस अब यह तसलीम करो।) उसकी तावील नहीं जानते। अब मगर अल्लाह वर्रासिख़ून फ़िल इल्म, अगर वह पूछें रासिख़ून फ़िल इल्म कौन हैं तो कहो जिनके इल्म में इख्तिलाफ़ नहीं। अगर वह कहें वह कौन है तो कहो रसूलुल्लाह (स0) ऐसे थे पस आया उन्होंने तबलीग़ की या नहीं अगर वह कहें कि है, तो कहो जब रसुलल्लाह (स0) का इन्तिकाल हुआ तो उनका ख़लीफ़ा

ऐसा होना चाहिए कि उसके पास भी वह इल्म हो कि उसमें इख़्तिलाफ़ न हो अगर वह कहें कि ऐसा नहीं तो कहो कि ख़लीफ़ए रसूल मुअय्यद मिनल्लाह होता है और रसूल मुअय्यद मिनल्लाह होता है और रसूल ख़लीफ़ा उसको बनायेंगे जो उनके हुक्म के मुताबिक़ हुक्म करे और सिवाये नुबुव्वत हर शै में वह रसूल (स0) की मिस्ल हो और अगर रसूलुल्लाह (स0) ने अपने इल्म में किसी को अपना जानशीन न बनाया होता तो हज़रत के बाद आने वाली नस्लें ज़ायैअ हो जातीं। पस अगर वह कहें कि इल्मे रसूलुल्लाह कुरआन से था तो यह आयत पढ़ो – हा–मीम। क़सम है किताब मुबीन की। हमने कुरआन को मुबारक रात (शबे क़द्र) में नाज़िल किया। हम उसमें डराने वाले हैं इला क़ौलेही। हम रसूलों को भेजने वाले हैं पस अगर कहें कि खुदा तो अपने पैग़ाम हर नबी के पास भेजता है तो उनसे कहो कि ख़ुदावन्दे हकीम का अम्र (जो शबे क़द्र में होता है) उससे अलग है जो कुरआन में है। ये बताओ कि क्या यह अम्र मलायका आसमान से आसमान की तरफ़ ले जाते हैं या आसमान से ज़मीन की तरफ़ अगर कहें आसमान से आसमान की तरफ़ तो पूछो आसमान में वह कौन है जो ताअ़त से मासियत की तरफ़ लौटता है? अगर वह कहें कि फ़रिश्ते आसमान से ज़मीन पर आते हैं क्योंकि ज़मीन वाले सबसे ज़्यादा मोहताजे हिदायत हैं तो तुम उनसे कहो कि ला मुहाला उनको ऐसे सरदार की ज़रूरत होगी जिससे वह अपने मुआमलात में फ़ैसला करा सकें।

अगर वह कहें कि ख़लीफ़ा का हुक्म है तो उनसे कहो खुदा फ़रमाता है अल्लाह उन लोगों का वली है जो ईमान वाले हैं। वह उनको तारीकियों से निकालकर नूर की तरफ़

लाता है। क़सम खुदा की आसमान व ज़मीन में कोई खुदा का वली नहीं मगर यह कि वह मुअय्यद मिनल्लाह है और जो मुअय्यद मिनल्लाह है वह ख़ता नहीं करेगा और रूए ज़मीन पर कोई खुदा का दुश्मन नहीं। मगर ज़लील और जो रुसवा है वह राहे सवाब पर नहीं हो सकता जिस तरह अम्र की तन्ज़ील आसमान से ज़रूरी है ताकि उसके मुताबिक़ अहले ज़मीन के दरमियान हुक्म किया जाये। इसी तरह ज़रूरी है एक वली का होना ताकि लोगों के मामलात का फ़ैसला करे अगर वह कहे कि हम उसे नहीं पहचानते तो कहो तुमने उसे दोस्त नहीं रखा। खुदा को यह बात पसन्द नहीं कि बादे मुहम्मद वह अपने बन्दों को इस तरह छोड़ दे कि उनपर कोई हुज्जत न हो।

इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) फ़रमाते हैं फिर मेरे वालिदे माजिद ख़ामोश रहे। इलियास रज़ि0 ने कहा या रसूलुल्लाह (स0) अब एक और मुश्किल का सामना है। ग़ौर कीजिए। अगर वह कहें हुज्जते खुदा कुरआन है तो क्या जवाब होगा। फ़रमाया मैं उनसे कहूंगा कि कुरआन अम्रोंनही के मुतअ़ल्लिक़ बोलने वाला नहीं बल्कि कुरआन के लिए कुछ अहल जो हैं जो अम्र करते हैं और नहीं करते हैं और मैं कहूंगा बाज़ अहले ज़मीन को ऐसे मुश्किल सवालात का सामना होता है जिनका जवाब अहादीस में नहीं और कोई हुक्मे रसूल ऐसा नहीं मिलता जिसमें इख़्तिलाफ़ न हो और कुरआन में भी कोई सरीह हुक्म नहीं (तो कुरआन क्योंकर हुज्जत होगा) और खुदा को यह नापसन्द है कि रूए ज़मीन पर ऐसा फ़ित्ना हो कि जिसका उसे इल्म है और उसका कोई फ़ैसला करने वाला न होता कि अहले अर्ज़ की दिल तंगी दूर हो और

दुरुस्त फ़ैसला करके लोगों को मासियत से बचाये।

उस शख़्स ने कहा (मुरादे इलियास) इस बाब में आपने हुज्जत पूरी कर दी इससे इन्कार न करेगा मगर तुम्हारा वह दुश्मन जो अल्लाह पर इफ़्तेरा करते हुए कहे कि ख़ुदा ने हुज्जत का ज़िक्र कुरआन में नहीं किया। अब आप मुझे इसकी तफ़सीर बताइये "ताकि तुम मायूस न हो उस चीज़ पर जो फ़ौत हुई" ये अली से मख़सूस है और मत इतराओ उस पर जो तुमको दिया गया है। "यह किस से मुतअल्लिक है?" हज़रत ने फ़रमाया यह फ़लां उसके साथियों के मुतअल्लिक़ है जो ख़िलाफ़त पर उतर आए और ला तासौ अला मा फ़ातकुम "अली के बारे में है और आयत का एक हिस्सा मुक़द्दम है और एक मुवख़्ख़र है पहले हिस्से से मुराद यह है कि तुम खुश न हो उस फ़ितने से जो तुमको बादे रसूल पेश आने वाला है।

इस पर (इलियास अ० ने) कहा मैं गवाही देता हूं कि आप उन असहाबे हुक्म में से हैं जिनके फ़ैसलों में इख़्तिलाफ़ नहीं यह कहकर वह शख़्स उठ खड़ा हुआ और चला गया और फिर किसी ने उसको न देखा।

इस हदीस के आग़ाज़ में सूरः इन्ना अन्ज़लना से इस्तिदलाल किया गया है उसकी तौज़ीह यह है –

## तौज़ीह

अल्लाह तआला ने लैलतुल क़द्र में कुरआन रसूलुल्लाह (स०) पर नाज़िल किया। मलायका और रूह शबे क़द्र में हर अम्र को बयान व तावील के साथ लेकर हर साल नाज़िल होते हैं जैसा कि तनज़्ज़ुल के फ़ेअ़ले मुस्तकबिल से ज़ाहिर होता है कि ज़मानए आइन्दा में से उसकी तजदीद होती

रहती है। अब हम कहते हैं क्या रसूलुल्लाह (स0) के पास उस इल्म के हासिल करने का जिसकी तरफ़ उम्मत मोहताज हो। सिवाये उसके जो मिन इन्दल्लाह आसमान से उन तक पहुंचता था। कोई और भी तरीक़ा था ख़्वाह शबे क़द्र में हो या उसके अलावा या कोई और तरीक़ा न था। पहली बात तो तसलीम नहीं। क्योंकि इजमाइए उम्मत इस पर है कि उनका इल्म न था मगर मिन इन्दल्लाह जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है – इन्न हुवा इला वहियुन यूहा। पस दूसरी बात साबित हुई। अब सवाल यह है कि आया जायज़ है रसूल के लिए यह अम्र कि वह ऐसे इल्म को जिसकी तरफ़ उम्मत मोहताज है ज़ाहिर न करे या करे। पहली सूरत – बिल्कुल बातिल है क्योंकि हज़रत पर वही इसलिए होती थी कि वह लोगों तक पहुंचायें और ख़ुदा की तरफ़ आने की लोगों को हिदायत करें पस दूसरी सूरत साबित हुई अब सवाल यह है कि जो इल्म रसूलुल्लाह (स0) को ख़ुदा की तरफ़ से दिया गया था क्या उसमें इख़्तिलाफ़ था कि एक वक़्त एक मामले का हुक्म दें और दूसरे वक़्त दूसरा, दर आन हालांकि मस्अला बेऐनेही वही है या ऐसा न हो पहली सूरत बातिल है क्योंकि रसूलुल्लाह (स0) जो हुक्म देते हैं वह अल्लाह की तरफ़ से होता है और ख़ुदा के हुक्म में इख़्तिलाफ़ कैसा? वह फ़रमाता है अगर यह कुरआन ख़ुदा के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो लोग उसमें इख़्तिलाफ़ कसीर पाते।

फिर हम यह सवाल करते हैं जो शख़्स अपने अहकाम में इख़्तिलाफ़ बयान करता हो तो आया उसने अपने उस फ़ेल व हुक्मे रसूल की मुख़ालिफ़त की या नही पहली सूरत बातिल है क्योंकि रसूलुल्लाह (स0) के हुक्म में इख़्तिलाफ़ न

था। पस दूसरी सूरत साबित हुई, अब हम पूछते हैं जिसके हुक्म में इख़्तिलाफ़ तो नहीं आया उसके इल्म के लिए मिन ग़ैर जेहतिल्लाह कोई और तरीका भी है वास्ता या बिलवास्ता और इल्म आयात मुतशाबे जिनसे इख़्तिलाफ़ होता है ख़ुदा के सिवा और तरीके से हासिल होता है या नहीं। पहली सूरत चूँकि बातिल है लिहाजा दूसरी सूरत साबित हुई पस अब सवाल यह है कि इन आयाते मुतशाबिहात का इल्म जो सबबे इख़्तिलाफ़े हुक्म होती है और तावील, उनकी तावील क्या, अल्लाह और रासिख़ून फ़िल इल्म के सिवा वह लोग भी जानते है जिनके इल्म में इख़्तिलाफ़ है या नहीं पहली सूरत बातिल है क्योंकि ख़ुदा फ़रमाता है वमा यअ़लमू तावीलोहु इलल्लाह वर्रासिख़ून फ़िल इल्म, पस अब हम कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) जो रासिख़ून फ़िल इल्म से थे जब मर गये तो यह इल्म उनके साथ चला गया और उनके बाद मुतशाबिहात के इल्म का तरीक़ा उनके जानशीन तक पहुँचा या नही यह तो बातिल है कि वह इल्म रसूल के साथ गया। क्योंकि अगर ऐसा हो तो फिर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम के बाद आने वाले लोगों के लिए ऐसे आ़लिम से फ़ायदा हासिल करने का मौका न होगा जिसका इल्म बिला इख़्तिलाफ़ हो और जब ये सूरत सही न हुई तो दूसरी सूरत साबित हुई यानी आंहज़रत (स0) के ऐसा जानशीन आपका होना चाहिए।

पस अब सवाल यह है कि आंहज़रत (स0) का ख़लीफ़ा आम लोगो की तरह हो जिससे ख़ता का सुदूर जायज़ है और उनके इल्म में इख़्तिलाफ़ है या ऐसा न हो बल्कि मुअय्यद मिनल्लाह हो, उसी तरह जैसे रसूल यानी उसके

पास फ़रिश्ते आये और उससे वही के अलावा बात करे और बग़ैर रुईयत के भी और वह नबुव्वत के अलावा तमाम बातों में मिसले रसूल (स0) हो क्योंकि जो शख़्स जायज़ुअलख़ता होगा उसके हुक्म में ज़रुर इख़्तिलाफ़ होगा और उस सूरत में अहकामे दीन में ख़लल वाक़ेअ़ होगा पस लाज़िम आया कि ख़लीफ़ा बादे रसूल रासिख़ फ़िल इल्म हो और मुतशाबिहात की तावील जानता हो। मुअय्यद मिनल्लाह हो ख़ता उसके लिए जायज़ न हो, कलाम में उसके इख़्तिलाफ़ व तज़ाद न हो और वह बन्दों पर ख़ुदा की हुज्जत हो।

यह कहा जाता है कि रसूलुल्लाह (स0) को जो इल्म कुरआन से हासिल हुआ वह काफ़ी था लैलतुल क़द्र में इसकी तजदीद की क्या ज़रुरत है इसका जवाब यह है कि ख़ुदा फ़रमाता है : **फ़ीहा यफ़रुक़ू कुल अम्र हकीम अम्र न मिन इन्दना इन्ना कुन्ना मुरसलीन** (इस शबे क़द्र में जुदा किया जाता है हर अमे हकीम वह अम्र जो हमारी तरफ से है और हम भेजे हुए है) यह आयत है दलील इसकी की हर अम्र जुदा जुदा नये तरीक़े से बयान किया जाता है और उसके लिए शबे क़द्र को मख़सूस किया गया है कि उसमें मलायका और रुह नाज़िल होते है आसमान से ज़मीन पर हमेशा, पस जरुरी है उसका वजूद जिसकी तरफ़ मलायका को भेजा जाए हर साल साबित हुआ ग़ैर नबी की तरफ मुल्क का आना।

2: इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जबकि मेरे पदर बुर्जुगवार बैठे हुए थे आपके पास कुछ लोग मौजूद थे आप इस तरह हंसे कि आँखो में आंसू डबडबा आये। लोगों से फ़रमाया तुम जानते हो कि मै क्यों हँसा

उन्होंने कहा नहीं 'फ़रमाया इब्ने अब्बास का गुमान यह था कि मै उन लोगों से हूँ जिन्होंने कहा (आयत) हमारा रब अल्लाह है फिर वह अपने इस कौल पर कायम रहे (इब्ने अब्बास का इन्तेक़ाल 68 हिजरी में हुआ और इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम 57 हिज़री में पैदा हुए पस मालूम हुआ कि यह गुफ्तगू बअहदे तफ़ूलियत थी) मैने कहा–ए इब्ने अब्बास क्या तुमने मलायका को देखा है कि उन्होंने तुमको दुनिया व आख़िरत में मदद देने की खबर दी हो, अमन में रहने की ख़ौफ व हुज़्न से, इस पर उन्होंने कहा अल्लाह तआला फ़रमाता है मोमिन सब एक दूसरे के भाई हैं।

और इस हुक्म में तमाम उम्मत दाखिल है यह सुनकर मैं हँसा मैने कहा–ए इब्ने अब्बास मैं तुमको खुदा की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या खुदा के हुक्म में इख़्तिलाफ़ है उन्होंने कहा नहीं, मैने कहा तुम क्या फैसला करोगे ऐसे शख्स के बारे में जिसने हमला करके तलवार से दूसरे शख्स की उंगलियां काट दी फिर एक दूसरा शख्स आया और उसने उसका हाथ काट दिया यह शख्स अगर तुम्हारे पास लाया जाये और तुमको काजी बनाया जाये तो तुम क्या फैसला करोगे उन्होने कहा मैं क़तए दस्त करने वालों से कहूँगा कि इस मकतू के हाथ की वयत्र दे और मकतूअ से कहूँगा कि दूसरे से जिस तरह चाहे सुलह कर ले और उसको भेजूँगा दो आदिल काज़ियों के पास मैनें कहा हुक्में खुदा में तो यह इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया और तुम्हारा पहला क़ौल टूट गया (यह हुक्म तो अज़रुए ज़न हुआ न मुवाफ़िक़े शराअ)

खुदा को यह पसन्द नहीं कि वह मख़्लूक़ में अज

क़िसम हुदूद को ऐसी शै हादिस करें जिसका बयान रुएं ज़मीन पर न हो फैसले की सूरत यह होगी कि पहले हाथ कताअ करने वाले का हाथ काटो और दैयत दिलाओ (उंगलियों की यह है अल्लाह का वह हुक्म जो शबे क़द्र में हम पर नाज़िल हुआ)

अगर तुमने रसूलुल्लाह से सुनने के बाद इन्कार किया तो अल्लाह तुमको वासिले जहन्नम करेगा इस तरह जैसे तुम को फजीलते अली के इन्कार पर अन्धा कर दिया। उन्होंने कहा इस पर मेरी बीनाई गई है फ़रमाया–तुम्हें इसका इल्म है वल्लाह यह अन्धा नहीं हुआ मगर फरिश्ते के पर मारने से फ़रमाया मैं इसकी बात पर हँसा और मैने उसकी कमजोरीए अक्ल पर नज़र रखकर उस रोज़ छोड़ दिया दूसरे रोज़ मै फिर उनसे मिला मैनें कहा तुमने कल से ज्यादा सच्चा कलाम पहले नहीं कहा। तुमसे पहले अली इब्ने अबीतालिब अ० ने कहा हर साल शबे क़द्र में आती है इसमें मलायका तमाम साल के मामलात लेकर आते है बेशक इस उम्र के लिए बाद रसूलुल्लाह के कुछ वालियाने अम्र होने ज़रुरी है तुमने पूछा था वह कौन है हजरत ने फ़रमाया था मैं और मेरे सुल्ब से ग्यारह इमाम जो मुहद्दिस है तुमने कहा सिवाय रसूलुल्लाह के ज़माने के शबे क़द्र को नही देखा पस वह फरिश्ता तुम पर जाहिर हुआ जो इनसे बातें करता है और उसने कहा ऐ अब्दुल्लाह तूने झूठ बोला मेरी आँखों ने देखा है जो तुझसे अली (स0) ने बयान किया तेरी आँखों ने उसको नही देखा (लेकिन उसके दिल में यह बात बैठी हुई थी और वह कानों से सुन चुका था) पस फरिश्ते ने अपना बाजू तुझ पर मारा और तू अन्धा हो गया इब्ने अब्बास ने कहा कि अगर हम

किसी चीज़ में इख्तिलाफ़ करते हैं तो यह अल्लाह के हुक्म से होता है। मैंने कहा तो अल्लाह का हुक्म भी उसका सा हुक्म है जो मुख्तलिफ दो अम्रों का हुक्म देता है उन्होने कहा ऐसा नहीं मैंने कहा अपने रवैये से तुम भी हलाक हुए और दूसरों को भी हलाक किया।

3: इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने लैलतुल क़द्र में फ़रमाया है कि लौहे महफूज़ से जुदा किया जाता है इसमें हर उम्र उस्तवार फ़रमाता है नाज़िल होता है इसमें हर अम्र उस्तवार और मुहकम दो चीज़ें नहीं होतीं बल्कि एक चीज होती है पस जो इस तरह हुक्म करे कि उसमें इख्तिलाफ़ न हो तो उसका हुक्म अल्लाह के हुक्म से होगा और जो हुक्म करे ऐसे अम्र के साथ जिसमें इख्तिलाफ़ हो और बावजूद इसके दो मुख्तिलफ हुक्मों के अपनी राय और जिनको दुरुस्त समझे तो उसका हुक्म शैतानी हुक्म होगा बेशक शबे क़द्र में नाज़िल होती है वली–ए–अम्र की तरफ तफसील तमाम सालाना अमूर की साल बसाल इस वली–ए–अम्र को हुक्म दिया जाता है कि अपने लिए ऐसा करो और लोगों के मुताल्लिक ऐसा ऐसा वली अम्र को उसके साथ हर रोज खुदा की तरफ से इल्म हासिल होता रहता है ख़ास ख़ास उमूर और पोशीदह असरार के मुताल्लिक़ इसी तरह जैसे शबे क़द्र में हर अम्र इस पर नाज़िल होता है फिर आपने यह आयत तिलावत की अगर रुए जमीन के तमाम अशजार क़लम बन जाएं और सात समन्दर स्याही तब भी अल्लाह के कलमात तमाम न होंगे बेशक अल्लाह अज़ीज़ व हकीम है।

4: इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है

कि अली इब्नुल हुसैन अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "हमने कुरान को शबे क़द्र में नाज़िल किया"। सच फ़रमाया खुदाए अज्जा व जल्ल ने कि उसने कुरान को शबे क़द्र में नाज़िल किया और फ़रमाया– ऐ रसूल (स0) तुम जानते हो शबे क़द्र क्या है हजरत ने फ़रमाया मैं नहीं जानता खुदा ने फ़रमाया वह उन हज़ार महीनों से बेहतर है जिसमें शबे क़द्र न हो रसूलुल्लाह से यह भी फ़रमाया कि तुम यह भी जानते हो कि शबे क़द्र हज़ार महीनों से क्यों बेहतर है हज़रत ने कहा नहीं। फ़रमाया इसलिए कि इसमें मलायका और रुह अपने रब के हुक्म से नाज़िल होते हैं हर अम्र को लेकर और खुदा जब इज्न देता है किसी शै का तो वह इससे राजी होता है इस रात में सलामती है सुबह के तुलूअ होने तक खुदा फ़रमाता है ऐ मोहम्मद (स0) तुम पर मेरे मलायका और रुह मेरा सलाम कहते हैं जबसे वह ज़मीन पर उतरते है सुबह के तुलूअ होने तक और एक जगह अपनी किताब में फ़रमाता है डरो उस फितने से जो ज़ालिम लोगों से तुम तक पहुँचे सुरह इन्ना अन्ज़लनाहों के मुतालिक़ यानी मुशरिक व मुनाफ़िक़ इससे इन्कार करेंगे और दूसरी आयत में फ़रमाता है मोहम्मद रसूल (स0) हैं उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं पस अगर वह न जाएं या कत्ल कर दिये जाएं तो क्या तुम अपने पिछले पांव पलट जाओगे और जो पलट जाए वह हरगिज अल्लाह को कोई नुकसान न पहुँचाएगा और अल्लाह शुक्र करने वालों को बदला देगा पहली आयत में खुदा ने यह ज़ाहिर फ़रमाया है कि जब मोहम्मद मरेंगे तो अहले ख़िलाफ़े अम्रे खुदा के मुताल्लिक कहेंगे कि शबे क़द्र तो रसूलुल्लाह के साथ गयी पस यह वह ख़ास फितना है जो उनको

पहुँचेगा और इसीलिए वह अपने पिछले पांव पलटेंगे क्योंकि अगर वह कहें कि शबे क़द्र रसूल (स0) अल्लाह के साथ रुख्सत नहीं हुई तो उनको अम्रे इलाही का नुजूल शबे क़द्र में मानना पड़ेगा अगर इसका इकरार कर लिया तो उसे लामुहाला साहिबे अम्र को भी मानना पड़ेगा।

5: इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हजरत अली अलैहिस्सलाम अक्सर कहा करते थे कि बनी तीन और बनी अदी के नुमाइन्दे रसूलुल्लाह स0 के पास आये हजरत सूरह इना अन्ज़लनाहद को बड़े खुजूअ व खुशूअ और गिरिया के साथ पढ़ने लगे वह दोनो कहने लगे इस सूरह को पढ़ने से आप (स0) पर बड़ी रकत तारी हुई रसूलुल्लाह ने उनसे फ़रमाया इसकी वजह से जो मेरी आँखों ने देखा है और मेरे क़ल्ब ने समझा और जो कुछ उसने देखा यह (इशारा किया हजरत अली स0 की तरफ) मेरे बाद यह है (साहिबे अम्र है) उन दोनो ने कहा वह क्या है जो आप (स0) ने देखा और वह क्या है जो वह (अली स0) देखेंगे पस बकुदरते ख़ुदा ज़मीन पर लिखा गया तनज्ज़तुल मलायको व रुह बिइज़्ने रब्बेहिम मिन कुल्ले अम्र 'फिर हज़रत ने फ़रमाया क्या ख़ुदा के कुल अम्र ' कहने के बाद भी कोई बात बाकी रह गई उन्होंने कहा नहीं। हज़रत ने फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि यह हर अम्र किस पर नाज़िल होता है उन्होंने कहा वह य रसूलुल्लाह आप (स0) है। फ़रमाया हाँ 'फिर फ़रमाया कि क्या शबे क़द्र मेरे बाद भी होगी उन्होने कहा ज़रुर फ़रमाया यह अम्र भी इसमें नाज़िल होगा कहा हाँ फ़रमाया किस पर नाज़िल होगा उन्होंने कहा हमें नहीं मालूम 'पस उनमें से एक का हाथ पकड़ कर कहा कि नहीं जानता

तो अब जान ले यह होगा वह दोनों बादे रसूल शबे क़द्र को पहचानते थे इस सख्ती की बिना पर जो रोअबे रसूल (स0) से उनमें दाखिल हुई।

6: इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ शियों! मुखालिफों से मुनाज़िरा करो सूरह रूना अन्ज़लनाह से तो तुम कामयाब हो जाओगे खुदा की क़सम ये सूरह खुदा कि हुज्ज़त है उसकी मख़लूक पर रसूले खुदा के बाद और यह तुम्हारे दीन की सरदार है और हमारे इल्म की इन्तेहा है ऐ गिरोह शियों तुम मुख़ाफिलों से बहस करो आयत हामीम वल किताबुल मुबीन' हमने नाज़िल किया कुरान को मुबारक रात में और हम डराने वाले हैं यह आयत वलियाने अम्र के मुताल्लिक़ है ख़ास तौर पर रसूलुल्लाह (स0) के बाद ऐ गिरोह शिया खुदा फ़रमाता है कोई कौम ऐसी नहीं गुजरी कि उसमें डराने वाला न आया हो किसी ने इमाम से पूछा कि रसूलुल्लाह (स0) नजीर न थे फ़रमाया – जरुर थे। तुमने सच कहा है लेकिन यह तो बताओ 'क्या रसूलुल्लाह (स0) अपनी जिन्दगी में तमाम अतराफ़े आलम को डराने गये थे उसने कहा नहीं फ़रमाया। तो लामुहाला अहकामे दीन की तालीम के लिए किसी को भेजना जरुरी हुआ। क्या तुमने हज़रत के फरिस्तादह के मुताल्लिक़ ग़ौर किया' क्या वह ऐसा ही नजीर न होना चाहिए जैसे नज़ीर अल्लाह की तरफ से रसूल होकर आये थे मैंने कहा– हाँ ज़रुर– हज़रत ने फ़रमाया। पस इसी तरह हज़रत के मरने के बाद भी आपका कोई फरिस्तादह नज़ीर होना चाहिए। मैंने कहा उसकी ज़रुरत नही हज़रत ने फ़रमाया तो इस सूरत में तो आप रसूलुल्लाह (स0) की उम्मत की आने वाली नस्लें तबाह हो

जायेंगी। मैंने कहा क्या कुरान उनके लिए काफ़ी नही? फ़रमाया ज़रुर है बशर्ते कि इसका मुफ़स्सिर मौजूद हो। उसने कहा क्या रसूलुल्लाह (स0) ने तफ़सीर बयान नही फरमाई हज़रत ने फ़रमाया जरुर बयान की और वह एक शख़्से वाहिद और उम्मत से तफ़सीर बयान करना ज़िम्मा हुआ इस शख्स से और वह अली बिन अबी तालिब है सायल ने कहा – ए अबू जाफ़र (स0) क्या अम्र ख़ास है आम लोगों के लिए नही रसूलुल्लाह (अगर ऐसा है तो वह ज़ाहिर क्यों नही करते) फ़रमाया ख़ुदा चाहता है कि उसकी इबादत शिया पोशीदा तौर से करें उस वक्ते ख़ास तक कि दीने ख़ुदा को ग़ल्बा हासिल हो।

यह ऐसा ही है जैसे रसूलुल्लाह (स0) जनाब खदीजा के साथ पोशीदा इबादत करते थे जब तक कि एलान का हुक्म न हुआ। सायल ने कहा तो क्या इस दीन वाले के लिए अपनी इबादत छुपाना लाज़िम है फ़रमाया – हाँ क्या अली बिन अबी तालिब ने रसूलुल्लाह (स0) के साथ अपनी इबादत एलाने रिसालत के वक्त तक नहीं छिपाई उसने कहा यह सही है। पस यहाँ मामला हमारा है जब तक कि किताब अपनी मुद्दत को पहुँचे। यानि क़ायम आले मोहम्मद (स0) के ज़हूर तक।

7: इमाम अबू ज़ाफर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने सबसे पहले शबे क़द्र को पैदा किया और उसमे सबसे पहले नबी और सबसे पहले वसी को पैदा किया और असकी मशीयत ने यह चाहा कि हर साल यह रात हो और उसमें आने वाले साल के जुम्लो अमूर तफ़सील से बता दिये जायें जो इससे इंकार करेगा उसने इल्मे इलाही की

तरहीद की। क्योंकि आम्बिया व मुरसलीन व मुहद्देसीन कायम करते है। लोगों पर हुज्ज़त उस चीज से जो उन तक पहुँचती है उस रात में यह उमूर जिबरईल उनके पास आते हैं मैंने कहा क्या मुहद्दिस वग़ैरह के पास भी जिबरईल आते है और दीगर मलाइका फ़रमाया आम्बिया व मुरसलीन के बारे में तो कोई शक ही नहीं उनके अलावा भी दुनिया के आगाज़ से उसके खात्मे तक ख़ुदा की कोई हुज्ज़त रुए ज़मीन पर रहेगी और शबे क़द्र में अम्रे इलाही नाजिले होगा। उस शख्स पर जिसको ख़ुदा अपने बन्दों में सबसे ज्यादा दोस्त रखता है ख़ुदा की क़सम शबे क़द्र में मलायका और रुह उम्रे इलाही को लेकर आदम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुए और ख़ुदा की क़सम जब आदम अलैहिस्सलाम ने रेहलत फ़रमायी तो उनके वसी उनके जगह हुए इसी तरह आदम के बाद जो भी आम्बिया आये तो शबे क़द्र में अम्रे इलाही उनके पास आया और उनके बाद उनके अवैसिया के पास।

और ख़ुदा की क़सम आदम से लेकर मोहम्मद मुस्तफा (स0) तक उस रात में जिसके पास भी अम्रे इलाही आया उसको हुक्म दियां गया कि वह फलां शख्स की वसीयत करे। ख़ुदा ने अपनी किताब में आं हज़रत (स0) के बाद वलीयाने अम्र के मुताल्लिक फ़रमाया है। तुममे जो लोग ईमानदार है उन्होने नेक आमाल किये है ख़ुदा ने उनसे वादा किया है कि वह उनके रुए जमीन का खलीफ़ा उसी तरह बनाएगा जिस तरह उनसे पहलों को बनाया है अला क़ौलिही वही लोग फासिक़ हैं यानि ख़ुदा फ़रमाता है मै तुम को तुम्हारे नबी के बाद इसी तरह खलीफ़ा बनाऊंगा अपने इल्मे दीन और इबादत के लिए जिस तरह औसियाए आदम को बनाया

था। यहाँ तक कि ख़ुदा ने उनके बाद खत्मुल मुरसलीन को मबऊस किया (ताकि) मेरे साथ किसी को इबादत में शरीक न करे फ़क्त मेरी इबादत करें। ईमान के साथ 'मोहम्मद (स0) के बाद कोई नबी नहीं' पस जो लोग उसके खिलाफ कहेंगे वह फ़ासिक़ है पस ख़ुदा ने आं हज़रत सल्लम के बाद वालियाने को इल्म पर कुदरत दी और वह हम हैं।

पस हमसे पूछो जो पूछना है अगर हम सच कहें (कि वक्ते इज़हार अभी नही आया) तो हमारी सदाक़त का इक़रार करो लेकिन तुम ऐसा करने वाले नही (यह उन शिया से खिताब है जो ताकरया नहीं करते थे) पस हमारा आलिम होना और हमारे ग़ैर का जाहिल होना ज़ाहिर है। लेकिन वह वक्त जब हमसे दीन ज़ाहिर होगा और लोगों के दरमियान इख्तिलाफ़ बाक़ी न रहेगा उसके लिए एक वक्त मोअय्यन है रातों और दिनों के गुजरने के बाद जब वक्त आयेगा तो दीन ज़ाहिर होगा और उस वक्त सिर्फ एक ही दीन होगा और ख़ुदा की क़सम उम्र तय हो गया है कि मोमिनों के दरमियान इख्तिलाफ़ न रहेगा और इसीलिए लोगों पर उनको गवाह बनाया है ताकि मोहम्मद (स0) हम पर गवाह हो और हम अपने शियों पर गवाह हों और हमारे शिया लोगों पर गवाह बने।

ख़ुदा को यह बात नापसन्द है कि उसके हुक्म में इख्तिलाफ़ हो या उसके हुक्म में तनाकुस हो। जो शख्स सूरह अन्जलनाह और उसकी तफ़सीर पर ईमान रखता है उसकी फ़ज़ीलत उस शख्स पर जो ईमान में उसकी मिसल नही 'ऐसी है जैसी इंसान की फ़ज़ीलत बहाइम पर' अल्लाह तआला ने मोमिनीन के जरिये से उन लोगों को दफ़ा करता

है जो सूरह इन्ना अन्जलनाह की तफ़सीर से इंकार करते हैं उसके लिए दुनिया में अलबत्ता इन्तिहाई अजाब आख़ेरत है जो यह जानते हुए भी तौबा नही करता मै नहीं जानता कि उस ज़माने में सिवाय हज़ व उमरा और मुजाविरते इमाम जेहाद और क्या है।

8: रावी कहता है कि एक शख़्स ने अबू जाफर अलैहिस्सलाम से कहा यब्ना रसूलिल्लाह (स0) आप मेरे ऊपर गुस्सा तो न करेंगे? फ़रमाया मैं ऐसा क्यों करुंगा उसने कहा मैं आपसे एक सवाल करुंगा फ़रमाया करो। उसने कहा आप गुस्सा तो न करेंगे? फ़रमाया नहीं। उसने कहा आपने अपने क़ौल पर गौर किया कि शबे क़द्र पर मलायका और रुह नाज़िल होते है औसिया पर और वह अम्रे इलाही लेकर आते हैं जिसका इल्म उनको नही होता और या ऐसा अम्र लाते हैं जिसको रसूलुल्लाह (स0) जानते थे और यह तो आपको मालूम है कि रसूलुल्लाह (स0) मर गये और उनके इल्म से कोई ऐसी चीज़ नहीं जिस पर निगाह रखने वाले अली न हों हज़रत ने फ़रमाया। ऐ शख़्स तेरे और मेरे दरमियान वजहे इख़्तिलाफ़ क्या है और किस ने तुझको मेरे पास भेजा है उसने कहा हुक्मे ख़ुदा ने तलबे दीन के लिए भेजा है फ़रमाया – जो कुछ कहता हूँ उसकी समझ रसूलुल्लाह जब मेराज में तशरीफ़ ले गये तो उस वक़्त तक ज़मीन पर तशरीफ नही लाये जब तक ख़ुदा ने उनको आगाह नहीं किया। उन तमाम चीजों से जो हो चुकी हैं या आइन्दा होने वाली हैं।

और उनका ज्यादा इल्म मुजमल है जिसकी तफ़सीर व तौज़ीह लैलतुल क़द्र में आयी थी यही सूरत अली बिन अबी

तालिब के लिए थी वह जानते थे मुजमल इल्म 'जिसकी वज़ाहत होती थी शब हाय क़द्र में' उसी तरह जैसे रसूलुल्लाह पर 'सायल ने कहा क्या इज़माल में तफ़सीर न थी फ़रमाया हाँ बल्कि वह नबी और औसिया के पास शब हाय क़द्र में अम्र के साथ आयी थी कि ऐसा करो' उनको बताया जाता है कि वह मुताबिक अम्र किस–किस तरह अमल करे। रावी कहता है मैने कहा ज़रा इसको वाजेह कीजिए फ़रमाया नहीं मेरे रसूलुल्लाह 'मगर शबे मेराज में जो इल्म हासिल किया था वह उनके हाफिज़े में था और उसकी तफसीर भी जानते थे मैंने पूछा लैलतुल क़द्र में जो इल्म हासिल हुआ वह क्या था वह अम्रे इलाही था और सहूलत थी इस इल्म के मुताल्लिक जो दिया गया था (यह सवाल रावी की तरफ से हज़रत की तक़रीर के दौरान थे) सायल ने पूछा कि शबहाय क़द्र में इस इल्म के सिवाय जो कुछ हासिल हुआ वह क्या था फ़रमाया – वह वह इल्म था उस अम्र का जिसके छिपाने का हुक्म दिया गया था और उसकी तफसीर मालूम थी।

रावी ने कहा – फिर जो शबहाय क़द्र में दिया जाता था वह क्या इल्म था – फ़रमाया जो इल्म हज़रत को दिया गया था। उसी की तौज़ीह व और सहूलत बयान की थी सायल ने कहा तो क्या जो इल्म इन हज़रात को दिया गया था शबहाय क़द्र में उसके सिवा कुछ और दिया गया फ़रमाया वह उस चीज़ का इल्म था जिसके छिपाने का हुक्म दिया गया था और उसकी तफसीर जिसके मुताल्लिक तूने सवाल किया 'अल्लाह के सिवा कोई नही जानता। सायल ने कहा कि क्या औसिया को वह इल्म दिया गया था जो आम्बिया को नहीं मिला था। फ़रमाया कैसे वसी को उसका इल्म हो

सकता है जिसकी वसीयत उसको नहीं की गयी' सायल ने कहा 'इस सूरत में क्या हमारे लिये यह कहने कि गुंजाइश है कि औसिया में से किसी एक को वह इल्म दिया गया है जिसको दूसरा नहीं जानता' फ़रमाया ऐसा नहीं है।

कोई नबी नहीं मरता मगर यह कि उसका इल्म उसके वसी के सीने में होता है और शबे क़द्र में मलायका और रुह वह हुक्म लेकर नाज़िल होते हैं जिसको बन्दगाने ख़ुदा में जारी करते है तो क्या इस हुक्म को वह पहले नहीं जानते थे फ़रमाया ज़रुर जानते थे लेकिन वह किसी शै के जारी करने की ताक़त नहीं रखते थे यहाँ तक कि उन्हें शबे क़द्र में बताया जाता है कि वह आने वाले साल के लिए ऐसा—ऐसा करें।

सायल ने कहा ए अबू जाफर (स0) क्या हम इस बात से इन्कार कर सकते है फ़रमाया – इन्कार करने वाला हममें से नहीं 'सायल ने कहा नबी पर जो शबे क़द्र में नाज़िल होता था क्या उनको उसका पहले से इल्म न होता था।

फ़रमाया – यह सवाल तुमको नहीं करना चाहिए समझो इल्म मकाना व मायकून हम नबी व वसीये नबी को होता है जब कोई नबी रेहलत फ़रमाता है तो उसके बाद आने वाला वसी उस इल्म को जानता है।

लेकिन जिस इल्म के मुताल्लिक तुम सवाल कर रहे हो तो ख़ुदाय अज़्ज़ा व जल ने इन्कार किया इससे कि वह मुत्तलअ़ करे औसिया को उस पर 'मगर सिर्फ उनकी ज़ात के लिए (यानि उन इसरार को दूसरे से बयान करने की इजाजत नहीं होती।)

सायल ने कहा यबना रसूलिल्लाह यह कैसे मालूम हो

कि हर साल शबे क़द्र होती है फ़रमाया – जब माहे रमज़ान आये तो तुम सूरह दुख़ान हर रात को सौ मर्तबा पढ़ो जब 23वीं शब आयेगी तो तुमको उस चीज़ की तसदीक हो जायेगी जिसके मुताल्लिक तुमने सवाल किया है।

9: फ़रमाया इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम ने क्या तुम नहीं देखते उनको जिन्हें ख़ुदा ने शक़ावत के लिए अहले ज़लालत के लिए भेजा शैतानों के लश्करों को और उनकी अज़्वाज को (यह बयान सूरह मरियम की आयत के मुताबिक है **अलम तराना अरसलना अलशयातीन अल काफ़िरीन**) यह तादाद ज्यादा है उन मलायका से जो उस खलीफ़ए ख़ुदा की तरफ भेजे जाते है जो अदलो सवाब के लिए भेजे गये हैं किसी ने कहा ऐ अबू जाफ़र शयातीन मलायका से ज्यादा कैसे होंगे। फ़रमाया ख़ुदा ने जैसा चाहा वैसा हुआ साइल ने कहा ए अबू जाफर ! अगर मैं यह बात बाज़ शियों में बयान करुंगा तो वह इन्कार करेंगे उसने कहा वह कहेंगे कि मलायका शयातीन से ज्यादा है फ़रमाया – तूने सच कहा लेकिन जो मैं कहता हूँ उसे समझ सूरत यह है कि हर दिन मैं और हर रात मैं तमाम जिन शयातीन अइम्माए ज़लालत के पास (जो बकसरत हैं) जाते हैं और उन्हीं के शुमार के बराबर मलायका की हिदायत पर नाज़िल होते है और जो शबे क़द्र आती है तो मलायका बतदबीरे इलाही वली ये अम्र पर नाज़िल होते हैं (रावी कहता है) या यह फ़रमाया कि ख़ुदा भेजता है उतने ही शयातीन को ताकि वह वलीये ज़लालत के पास जायें पस वह उनको इफ़तेरा और झूठ सिखाते हैं चुनानचे सुबह को वह लोगों से बयान करते है कि हमने रात ऐसा–ऐसा देखा पस अगर वलीये अम्र से उसके मुताल्लिक़ पूछा जाये तो वह बताते हैं कि तूने ख्वाब में शैतान को देखा

है और उसने तुझे यह बताया उसको खूब वाजेह तौर से उस ज़लालत का हाल बता दिया जाता है जिस पर वह होता है। ख़ुदा की क़सम जिसने लैलतुल क़द्र कि तसदीक़ की उसने ज़रुर यह जान लिया कि यह खुसूसियत हमारे लिए है जैसा कि रसूलुल्लाह ने अपनी वफ़ात के वक्त फ़रमाया था अली अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ 'मेरे बाद ये तुम्हारा वली है पस अगर तुम इसकी इताअत करोगे तो फ़लाह पाओगे लेकिन जो लैलतुल क़द्र पर ईमान नहीं लाया वह उसका मुनकिर होगा और जो ईमान लाया वह हमारे ग़ैर की राय के मुताबिक सच्चा नहीं' जब तक यह न कहे कि यह आयत हमारे लिए है और जो यह न कहे कि वह झूठा है ख़ुदा अपने मलायका और रुह को काफ़िर व फासिक़ पर नाज़िल नही फ़रमाता और अगर कोई कहे कि उस ख़लीफा पर नाज़िल होते है जो ज़मीन पर हाकिम है तो उसका यह कहना बेहकीकत है और अगर यह कहा जाये कि नुजूले मलायका किसी पर नहीं होता तो यह कैसे मुमकिन है कि एक शै नाज़िल हो और वह किसी पर न हो। अनक़रीब लोग ऐसा कहेंगे लेकिन यह कहना लग़्व होगा और उनकी खुली गुमराही होगी।



## इकतालीसवां बाब

## अइम्मा अलैहिस्सलाम का इल्म शबे जुमा में ज़्यादा होता है

रावी कहता है फ़रमाया मुझसे इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ऐ अबू यहिया हमारे लिए जुमे की रातों

में एक रात अज़ीमुश्शान होती है मैंने कहा वह कैसा है फ़रमाया – मरे हुए आम्बिया की रुहें और औसियाये मुर्दा की रुहें और उस वसी की रुह जो तुम्हारे सामने है आसमान की तरफ जाती हैं और अरशे इलाही के बमुकाबिल पहुँचती हैं और हफ्तों उसका तवाफ़ करती है और अर्श के हर पाये के पास दो रकअत नमाज़ पढ़ती हैं फिर अपने अबदान की तरफ लौटायी जाती हैं पस आम्बिया और औसिया ख़ुशी से भर जाते है और सुबह करता है वह वसी जो तुम्हारे सामने है और उसके इल्म में बहुत कुछ इज़ाफा हो जाता है।

2: मुझसे एक दिन इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया (उससे पहले हज़रत मुझे कुन्नियत से नहीं पुकारते थे) ऐ अबू अब्दिल्लाह मैंने कहा लब्बैक फ़रमाया हमारे लिए हर शब जुमा ख़ुशी होती है। मैंने कहा आपकी ख़ुशी ज्यादा करे यह किस तरह फ़रमाया – जब शबे जुमा आती है तो रसूलुल्लाह और अइम्मा अलैहिस्सलाम अर्श तक नही पहुँचते है और हम उनके साथ होते हैं पस जब हम अपने अबदान की तरफ लौटते है तो हमको इल्म हासिल होता है अगर यह न होता तो हम ख़त्म हो जाते जो हमारे पास है।

3: इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम से मरवी है कि हर जुमे की रात को औलियाये ख़ुदा को सुरूर हासिल होता है मैंने कहा यह कैसे 'फ़रमाया जब शबे जुमा आती है तो रसूलुल्लाह (स0) अर्शे इलाही तक पहुँचते हैं और अइम्मा' मैं भी उनके साथ होता हूँ।



## बयालीसवां बाब

# अइम्मा अलैहिमुस्सलाम का इल्म बढ़ता है घटता नहीं

1: फ़रमाया इमाम रिज़ा अलैहिसलाम ने कि फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने कि अगर हमारा इल्म बढ़ता न रहता तो खत्म हो जाता।

2: फ़रमाया सादिके आले मोहम्मद (स0) ने कि अगर हमारा इल्म बढ़ता न रहता तो हम उसे खत्म कर देते।

3: रावी कहता है कि मैंने अबू जाफ़र अलैहिस्सलाम को कहते सुना। अगर हमारा इल्म ज्यादा न होता रहता तो हम उसे खत्म कर देते। मैंने कहा क्या ऐसा इल्म भी आपको हासिल होता है जो रसूलुल्लाह को न हो। फ़रमाया सूरत यह है कि पहले रसूलुल्लाह पर पेश होता है फिर अइम्मा पर मुन्तही होता है हमारी तरफ।

4: फ़रमाया – इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि जो इल्म ख़ुदा की तरफ से आता है उसकी इब्तिदा अल्लाह की तरफ से होती है। फिर अमीरुल मोमिनीन के पास आता है फिर एक के बाद दूसरे की तरफ ताकि हमारे आखिर का इल्म हमारे अव्वल के इल्म से ज्यादा न हो।



## तैंतालीसवां बाब

# अइम्मा अलैहिमुस्लाम वह तमाम उलूम जानते हैं जो मलायका व अम्बिया मुर्सलीन अ० को मिले हैं।

1: फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के लिए दो इल्म हैं एक वह जिसको जाहिर किया है अपने मलायका 'आम्बिया व मुरसलीन (स0) पर। पस जो इस सब में ज़ाहिर है उसकी तालीम हमको भी दी है और दूसरा इल्म वह है जो उसने अपनी ज़ात से मख़सूस किया है (और किसी दूसरे को उससे मुत्तला नही किया) जैसे इल्म बज़हूरे कायमे आले मोहम्मद (स0) पस जब खुदाए तआला उससे मुताल्लिक कोई बात चाहता है तो हमको मुत्तला करता है वह हमको बता देता है वह पेश किया जा चुका है उनका अइम्मा पर जो हमसे पहले थे उनकी रवायत की है फलां–फलां ने।

2: फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदा के दो इल्म हैं एक वह जो उसके पास है और किसी पर उसे मुत्तला नही किया दूसरा वह इल्म है जो उसने मलायका और मुरसलीन को दिया है। पस जो मलायका और मुरसलीन को दिया है वह हमको भी दिया है।

3: फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि अल्लाह के दो इल्म है एक इल्म दिया हुआ दूसरा न दिया हुआ जो इल्म दिया हुआ है उसके किसी अम्र को मलायका

और मुरसलीन नही जानते। मगर हम उसको जानते हैं। और मख़फ़ूफ़ वह इल्म जो ख़ुदा के पास हम उम्मुल किताब (लौहेमहफूज़) में है। जब वह (क़ायमे ऑले मोहम्मद (स0) के ज़हूर पर) नाफिज़ किया जायेगा।

4: फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा के दो इल्म हैं एक वह जो उसके सिवा कोई (दूसरा) नहीं जानता दूसरा इल्म है जो मलायका और मुरसलीन को दिया। हम उसको जानते हैं।



## चवालीसवां बाब

## ज़िक्रूल्ग़ैब

1: इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से एक मर्दे फारसी ने पूछा क्या आप ग़ैब जानते हैं फ़रमाया कि इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि जब हमारा इल्म कुशादह होता है (इलहाम से या फरिश्ते के खबर देने से) तो हम जानते हैं और जब ऐसा नहीं होता तो हम नहीं जानते। फ़रमाया अल्लाह ने अपना भेद सौंपा जिबरईल को जिबरईल ने रसूले ख़ुदा (स0) को और उन्होंने जिसको चाहा सुपुर्द किया।

2: हमरान बिन आईन ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से आयत बदी उस्समावाते वल्अर्ज़ के मुताल्लिक़ सवाल किया। फ़रमाया – अल्लाह ने ईजाद किया। तमाम अशिया को अपने इल्म से बग़ैर उसके कि कोई मिसाल उससे पहले हो उसनें

आसमान व ज़मीन को पैदा किया। उससे पहले आसमान व ज़मीन न थे क्या तुमने खुदाए तआला का यह कौल नहीं सुना कि उसका अर्श पानी पर था। हमरान ने कहा आपने उस आयत पर गौर किया है वह आलिमुलगैब है नहीं मुत्तला होता उसके गैब पर कोई हज़रत ने फ़रमाया – उसके आगे यह भी चुन ले और वल्लाह मोहम्मद मुस्तफा (स0) उन लोगों में से हैं जिनको अल्लाह ने मुन्तखत किया है। खुदा वन्दे आलम अलीम है हर उस चीज़ पर जो गायब है उसकी मख़लूक पर उस चीज़ के मुताल्लिक़ जो वह मुकद्दर करता है और अपने इल्म से तय करता हैं। उसके पैदा करने के और क़ब्ल इसके कि मलायका को उनका इल्म हो। ऐ हमरान इल्म उसी के पास है जब उसकी मशीयत होती है तो उसको जारी करता है। यानि मलायका को बताता है। पस यह इल्म जिसको वह मुक़द्दर करता है तो उसे हज़रते रसूल खुदा और हम तक पहुँचा देता है।

3: सदीर से मरवी है कि मैं और अबू बसीर वग़ैरह मजलिसे अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम में थे। हज़रत ग़जबनाक हालत में घर में से बरामद हुए और आप (स0) ने भरी मजलिस में फ़रमाया। मुझे ताज्जुब है उन लोगों पर जो यह गुमान करते है कि हम गैब जानते हैं। गैब का हाल तो ख़ुदा के सिवा कोई नही जानता (जैसा कि सूरह नमल में फ़रमाया है कुल ला यअलमू मनफिस्समावाती अल्अख़) मैंने एक बार एक कनीज़ को मारना चाहा। वह भागी मुझे इल्म न हुआ कि वह किस घर में छिपी 'सदीर कहते हैं कि जब हज़रत मजलिस से उठकर जाने लगे तो मैंने और अबू बसीर ने कहा। हम आप (स0) पर फ़िदा हों। हमने आपको ऐसा–ऐसा कहते सुना। कनीज़ के मुताल्लिक हालांकि हम जानते है कि

आप इल्मे कसीर रखते हैं और हम आपको इल्मे ग़ैब की तरफ निस्बत देते हैं। फ़रमाया – ए सदीर! क्या तूने कुरान पढ़ा है। फ़रमाया – यह आयत भी पढ़ी है जिसके पास किताब ख़ुदा का थोड़ा सा इल्म था (आसिफ वज़ीर सुलेमान स0) उसने कहा मैं तख़्ते बिल्क़ीस–पलक झपकने से पहले ले आऊँगा। मैंने कहा पढ़ा है हज़रत ने कहा तुम्हें मालूम है कि उस शख़्स के पास किताबे ख़ुदा का कितना इल्म था। मैंने कहा आप ही फ़रमायें। फ़रमाया – सिर्फ़ इतना जैसे बहरे ज़ख़्ख़ार से एक क़तरा मैंने कहा किस क़दर कम था। फ़रमाया नहीं यह कहो किस क़दर ज्यादा था क्योंकि उसकी निस्बत इल्मे इलाही से है यानि बलिहाज़े इल्मेइलाही तो वह कुछ न था लेकिन बन्दों के इल्म के मुकाबिल तो बहुत ज्यादा था फिर फ़रमाया किताब ख़ुदा में यह आयत भी पढ़ी है। फ़रमाया – जिसके पास पूरी किताब का इल्म है वह अफज़ल है या वह जिसके पास जुज़ई किताब का इल्म है फ़िर अपने सीने की तरफ इशारह करके फ़रमाया वल्लाह कुल किताब का इल्म हमारे पास है कुल किताब का इल्म हमारे पास है।

## तौज़ीह

मज़कूरह बाला हदीस में जो इमाम अलैहिस्सलाम ने ग़ैब दानी की अपनी तरफ़ से नफ़ी फ़रमायी है उससे मुराद यह है कि अलल्इत्लाक़ इल्मुल ग़ैब ख़ुदा के सिवा किसी को नहीं है आम्बिया और मुरसलीन और अइम्मा अलैहिमुस्सलाम तो इनकी ग़ैब दानी बिज़्ज़ात नहीं बल्कि ख़ुदा की मर्ज़ी पर मौकूफ है जो आइन्दा या माज़ी के मुताल्लिक़ 'जिस चीज़ का चाहता है अता कर देता है।

4: सायल ने इमाम जाफर सदिक़ अलैहिस्सलाम से सवाल किया क्या इमाम ग़ैब जानता है? फ़रमाया नहीं लेकिन जब वह किसी चीज़ के बताने का इरादा करता तो उससे आगाह कर दिया जाता है।



## पैंतालीसवां बाब

## अइम्मा अलैहिमुस्सलाम जब जानना चाहते हैं तो उनको बता दिया जाता है

1: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इमाम जब चाहता है तो उस को इल्म दे दिया जाता है।

2: इमाम जब चाहता है कि जाने तो उस को इल्म दे दिया जाता है।

3: इमाम जिस शै को जानने का इरादा करता है तो अल्लाह उस शै का उसे इल्म अता कर देता है।



## छियालीसवां बाब

## अइम्मा अलैहिमुस्सलाम अपनी मौत का वक्त जानते हैं और वह बा अख्तियार खुद मरते हैं

1: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जो इमाम यह नही जानता कि उसे क्या मुसीबत पहुँचेगी और

अंजामकार क्या होगा तो मख़लूक़े ख़ुदा की रहनुमाई नहीं कर सकता और ख़ुदा की हुज्जत नही हो सकता।

2: हसन बिन मोहम्मद बिन बस्सार ने कहा कि बयान किया मुझसे एक बूढ़े ने जो अहले कुस्तीयर्रबीअ से था बग़दाद में रवायत की उन लोगों से कि जिन की ज़बानों से हदीस नक़ल की जाती है। हसन कहते हैं उस पीरे मर्द ने कहा। मैंने ख़ानवादए रिसालत से एक शख़्स को देखा जिनकी फज़ीलत लोग बयान करते थे। और मैंने उससे बेहतर किसी को फज़ीलत व इबादत में न पाया। मैंने कहा कि वह कौन थे और तुमने उनको कैसा पाया। उसने कहा सनदी इब्ने शाहक के ज़माने में 80 आदमी ऐसे जमा किए गये जो ख़ैर की तरफ मन्सूब थे। हमको हज़रत मूसा इब्ने जाफ़र के पास भेजा गया और हमसे सनदी ने कहा तुम सब उस शख़्स (इमाम मूसा काज़िम[अ०]) को देखो क्या कोई नई बात पाते हो। लोग गुमान करते हैं कि उनके साथ ज़्यादती की गयी है और बहुत सी बातें उनकी क़ैद के मुताल्लिक़ बयान करते हैं देख लो कैसा कुशादह घर है और कैसा अच्छा फर्श है कोई तंगी नहीं न अमीरुल मोमिनीन (हारुन) का इरादा उनको तकलीफ पहुँचाने का है यह अमीरुल मोमिनीन से मुनाज़िरे के मुन्तज़िर हैं देखो यह बिल्कुल सही व सालिम हैं। और आराम के तमाम सामान मुहय्या हैं अब तुम उनसे पूछो। रावी कहता है हमें किसी तरफ तवज्जों न थी! सिवाय हज़रत की तरफ देखने और उनकी फज़ीलत और शाने अज़मत पर नजर करने के इमाम अलैहिस्सलाम ने खुद ही फ़रमाया। जो कुछ उसने सामाने राहत वग़ैरह के मुताल्लिक कहा वह ज़ाहिर है लेकिन तुमको आगाह करता हूँ

कि मुझे सात फॅलों में पेवस्त करके ज़हर दिया गया है मेरा रंग कल को हरा हो जायेगा और कल ही मैं मर जाऊँगा। मैंने सिन्दी बिन शोहक सादिक़ की तरफ देखा वह परेशान था और बतख़ की तरह कांप रहा था।

3: जिस रात को हज़रत अली इब्नुल हुसैन[अ0] का इन्तिक़ाल हुआ। इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ0] पीने के लिये पानी लाये और कहने लगे बाबा जान यह पानी पी लीजिए। फ़रमाया बेटा इसी रात में मेरी रुह क़ब्ज होगी। यह वही रात है। जिस में रसूलुल्लाह[स0] ने इन्तिक़ाल फ़रमाया था।

4 : रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से कहा कि अमीरुल मोमिनीन अलैहिस्सलाम अपने क़ातिल को पहचानते थे और उस रात को भी जानते थे जिसमें क़त्ल किये गये और उस जग को भी जहाँ मक़तूल हुए और घर में जो काजें थी उनकी चीख़ पुकार भी सुनी जिनकी फरियाद के बाद नौहा ख्वानी हुई और उम्मे कुलसूम का यह क़ौल भी कि आज की रात आप घर पर ही नमाज़ पढ़ लेते। किसी को हुक्म दीजिए कि वह आप की जगह नमाज़ पढ़ा दे। मगर हज़रत ने इंकार किया और आप अदाये नवाफिल के लिए बग़ैर हथियार बार–बार आते जाते भी रहे आप अपने क़ातिल को पहचानते भी थे तलवार से क़त्ल होने को भी जानते थे फिर आपने अपने आपको क्यों न बचाया। इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह ठीक है लेकिन हुक्मे क़ज़ा व क़द्र जो कुछ था उसको बचा लाना ही बेहतर था।

5: इमाम मूसा काज़िम (स0) ने फ़रमाया अल्लाह तआला गज़बनाक हुआ हमारे शियों पर (बे सबब तर्क तक़य्या) पस अख्तियार दिया मुझे अपने और उनके क़त्ल

होने के दरमियान पस मैंने अपनी जान देकर उनको बचा लिया।

6: फ़रमाया इमाम रिजा अलैहिस्सलाम ने अपने ख़ादिम मुसाफिर से ऐ मुसाफिर उस कारेज़ में मछलियाँ हैं मैंने कहा हाँ आप (स0) पर फ़िदा हूँ। फ़रमाया मैंने शबे गुजिश्ता रसूलुल्लाह स0 को ख्वाब में यह कहते सुना ऐ अली (स0) जो हमारे पास है (बहिश्त) वह तेरे लिये बेहतर है यह इशारा था उस तरफ कि जब हज़रत की कब्र खोदी गयी तो उसमें पानी निकला जिसमें मछलियाँ थी।

7: फ़रमाया इमाम सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि जिस रोज मेरे पदरे बुजुर्गवार का इन्तिकाल हुआ मैं उनकी खिदमत में था। उन्होंने अपने गुस्ल व क़फन और कब्र में उतारने के मुताल्लिक वसीयत फ़रमायी। मैंने कहा बाबा जान! वल्लाह जबसे आप बीमार हुए हैं आज आपकी हालत हर रोज़ से बेहतर है। मैं तो आसारे मौत आपमें नहीं पाता। फ़रमाया बेटा क्या तुमने नहीं सुना कि अली इब्नुल अलैहिस्सलाम पसे दीवार से फ़रमा रहे हैं। ऐ मोहम्मद आने में जल्दी करो।

8: इमाम मोहम्मद बाकि़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – ख़ुदा ने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम पर अपनी नुसरत नाज़िल की यहाँ तक की फरिश्तें माबैन आसमान व ज़मीन आ गये फिर अख्तियार दिया। नुसरत कुबूल करने और ख़ुदा से मुलाकात करने के दरमियान हज़रत ने मुलाक़ात इलाही को अख्तियार किया।



## सैतालीसवां बाब

# अइम्मा अलैहिमुस्सलाम इल्म मा काना व मायकून को जानते हैं और इन पर कोई शै पोशीदा नहीं

1: सैफ तम्मार से मरवी है कि हम इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम के पास शियों की जमाअत के साथ हुजरे में थे। हज़रत ने फ़रमाया कोई जासूस तो यहाँ नही 'हमने दाहिने बायें देखकर कहा कोई नही' हज़रत ने फ़रमाया क़सम है रब्बे काबा की और यह तीन बार फ़रमाया। अगर मैं मूसा (स0) और खिज़्र (स0) के ज़माने में होता तो मैं बताता उनको नहीं जानते क्योंकि मूसा व खिज़्र वह जानते थे जो हो चुका है आइन्दा के मुताल्लिक उनको इल्म नहीं दिया गया था। और न जो क़यामत तक होने वाला है। और हमने यह इल्म रसूलुल्लाह से विरसे में पाया है।

2: फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने मैं जानता हूँ जो आसमान और ज़मीन में है और में जानता हूँ जो जन्नत में है। और जानता हूँ कि जो जहन्नम में है और जो हो चुका है जो होने वाला है। फिर कुछ देर सुकूत किया और ग़ौर किया उस पर कि जो उसको सुनेगा उस पर शाक़ गुजरेगा। फ़रमाया – यह मैंने जाना है किताब ख़ुदा से जिसमें ख़ुदा फ़रमाता है। इसमें हर शै का ब्यान है।

## तौज़ीह

हज़रत ने सुकूत इस बिना पर किया कि सुनने वाले

यह समझेंगे कि मैं या तो आलिमुल ग़ैब हूँ या नबी हूँ इल्मे ग़ैब ख़ुदा के लिए मख़सूस है और नबूवत आना हज़रत स0 पर खत्म हो गयी दूसरी गुज़िश्ता एक हदीस में आपने फ़रमाया है मैं एक कनीज़ को सजा देना चाहता था वह भाग गयी और मुझे पता नहीं कि वह कहाँ गयी यह दोनों बयान मुतज़ाद हैं उस तवह्हुम को दूर करने के लिए आपने फ़रमाया हमारे पास जो कुछ है ख़्वाह माकाना के मुताल्लिक हो या मायकून के 'वह कुरआने मजीद से इस्तिबात किया हुआ है। उसकी तौज़ीह यह है कि कुरआन के मुताल्लिक ख़ुदाए अज़्ज़ा व जल ने फ़रमाया है कि उसमें हर शै का बयान है और हर खुश्क व तर उसके अन्दर है तो उसका सुबूत किया है हर शै पर हावी होने के मायने यह हैं कि इल्म माकाना व मायकून व इल्मे जन्नत व नार सब ही कुछ उसके अन्दर है लेकिन उसका पता कैसे चले। जब तक कोई उसका सुबूत देने वाला न हो और उसके लिये सिर्फ वही शख़्स मुसदिक होगा जो पूरी किताब का इल्म रखता हो और उसके इस्तिम्बात सही हो और ऐसा शख़्स सिवाय मासूम दूसरा नहीं हो सकता और जो इस्तिबात सही कर सकता है वह माकाना व मायकून को बता सकता है और अगर कोई भी ऐसा न हो तो कुरआन का यह दावा सही साबित न होगा। यह इस्तिम्बाती कुव्वत ख़ुदा का अतियाए ख़ास है आम लोगों का उससे ताल्लुक नहीं यह एक नूर है जिसकी रौशनी में उसरारे मख़फ़िया को उस वक्त मालूम कर लिया जाता है जब मालूम करने वाले के दिल में ख़्वाहिश पैदा हो न कि हर वक्त 'यही सूरत रसूल (स0) ख़ुदा के लिए भी थी कि जब उन्हें किसी अम्र ग़ैब के मालूम करने ज़रुरत

होती थी तो ब इल्हामे रब्बानी उसे मालूम कर लेते थे यही सूरत आइम्मा अलैहिस्सलाम के लिए भी थी कनीज़ के पता चलाने की ख्वाहिश दिल में न थी अगर होती तो वह ज़रुर मालूम कर लेते। ऐसे आलिम का हर ज़माने में होना ज़रुरी है ताकि कुरआन के उस दावे की तसदीक होती रहे अब रहा यह अम्र कि आलिम किताबुल्लाह का असरारे मख़फ़िया के मालूम करने का तरीका क्या है और वह आयते कुरआनी से पसे परदा उमूर का इस्तिंबात क्यों करता है और किन हालात के तहत ऐसा होता है उसके मालूम करने की तकलीफ हमको नहीं दी गयी आसिफ़े बरख़िया वज़ीरे सुलेमान (स0) को किताबे खुदा का थोड़ा सा इल्म था उस पर वह पलक झपकते शहरे सबा से तख्ते बिल्क़ीस उठा लाये। हमको सिर्फ उतना ही बताया गया है। लेकिन कैसे उठा लाये उसके जानने से हमारा ताल्लुक नहीं। यह इल्मे आम्बिया (स0) औसियाये आम्बिया (स0) को कभी बिल्इजमाल हासिल होता है कभी बित्ततफ़सील 'कभी उनकी ख़्वाहिश पर मिलता है कभी बेख्वाहिश हस्बे ज़रुरत' उसी लिए इमाम अलैहिस्सलाम ने गुज़िश्ता! हदीस में फ़रमाया है कि हमारा इल्म घटता बढ़ता रहा है रसूल (स0) को यह दुआ करने का हुक्म था रब्बे ज़िदनी इलमन बिज़्जात' हर शै का इल्म आलिम बिलग़ैब खुदा को है। और अम्बिया व औसिया को खुदा से मिलता है। हस्बे ज़रुरत शबे क़द्र में आइन्दा साल के तमाम वाक़िआत उन को बता दिये जाते हैं पस इमाम के कलाम में कोई तनाकुल नहीं और बता दिये जाते हैं पस इमाम के कलाम में कोई तनाकुल नहीं और अब्नाये रोज़गार और सलातीने वक़्त–व–की शदीद मुखालिफत की बिना पर अपनी उस

फ़ज़ीलत ख़ास आम लोगों के सामने बयान नही करते थे और बड़े एहतियात से काम लेते थे ताकि कोई दुश्मन न सुने वरना क़त्ल कर दिये जाने का अन्देशा था। सिर्फ़ उन लोगों से बयान करते थे जिन पर पूरा – पूरा एतमाद होता था।

3: मुफज्ज़ल ने इमाम ज़ाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा कि मैं आप पर फिदा हूँ क्या ख़ुदा किसी ख़ास बन्दे की इताअत को अपने बन्दों पर फ़र्ज़ करता है और उस ख़ास बन्दे से आसमानी खबरों को पोशीदा रखता है। फ़रमाया – वल्लाह वह ज्यादा करीम व रहीम और मेहरबान है अपने बन्दों पर यह कैसे मुमकिन है कि वह किसी बन्दे की इताअत तो बन्दों पर फ़र्ज़ करे और सुबह व शाम की आसमानी खबरें उससे छिपाये रखे।

4: मैने अबू ज़ाफर[अ०] को कहते सुना जबकि उनके पास कुछ लोग बैठे हुए थे मुझे उन लोगों पर ताज्जुब है जो हमको दोस्त रखते हैं और हमें इमाम जानते हैं और हमारी इताअत को अपने इताअत रसूल की तरह फ़र्ज़ जानते हैं और फिर अपनी दलीलों को हमारी इमामत के मुताल्लिक़ तोड़ देते हैं और अपने ईमान की क़मजोरी की वजह से अपने नफ़सों से झगड़ा करते हैं। हमारे हुकूक़ की अदायगी में कोताही करते हैं और ऐब लगाते है। उस पर जिसको अल्लाह ने हमारे हक़ मारर्फत की दलील अता की है और हमारे अम्र को उसने तसलीम किया है क्या तुम नहीं समझते कि अल्लाह ने फ़र्ज़ किया है अपने औसिया की इताअत को अपने बन्दों पर उसके बाद कैसे मुमकिन है कि वह अख़बार समावात व अर्ज को अपने औसिया से मख़फी रखे और क़ता कर दे उनसे मवादे इल्म को वह इल्म जिस पर क़यामें दीन

मुनहज़िर है। हमरान ने कहा— मैं आप पर फिदा हूँ मुझे यह बतायें ऐसे लोगों से अम्रेदीन में कैसे काम लिया हज़रत अली[अ०] इमाम हसन[अ०] और इमाम हुसैन[अ०] जंग में उनका निकलने और कायम रहने की क्या सूरत हुई और शैतानी लश्कर ने उनको कत्ल करने और फ़तह पाने में क्या मुसीबत नाज़िल की। फ़रमाया अल्लाह तआला ने उनके लिये यह अम्र मुकद्दर किया था वह उन पर बसबीले अख्तियार जारी हुआ रसूलुल्लाह की तरफ से उनको उसका इल्म हासिल हो चुका था बसर की उनके साथ अली[अ०] और हसन[अ०] हुसैन[अ०] ने उस इल्म के साथ जो रसूलुल्लाह से मिला था साकित हुआ 'जो साकित हुआ ऐ हमरान जब यह मुसीबत उन पर नाज़िल हुई और शयातीन सिफ़त लोगों को उन पर गुलबा हासिल हुआ तो उन्होंने ख़ुदा से दुआ की कि इस बला को उनसे दूर करे' और इलहाह वज़ारी की उन तवाग़ीत के दूर करने और उनकी हुकूमत को हटाने के लिये ख़ुदा ने दुआ कुबूल की और उन सर कशों को उनसे दूर किया। उन तवाग़ीत की यह हुकूमत ऐसी जल्दी गयी जैसे मोतियों की लड़ी टूट जाये उनका सिलसिला मुनक़ता हुआ और उनमें तफरक़ा पैदा हुआ ऐ हमरान यह मुसीबत उन पर इसलिए नहीं आयी थी कि उन्होंने गुनाह किया था या अल्लाह की मुख़ालिफत की थी बल्कि बे इस्तेहक़ाक़ ख़ुदा की तरफ से दी हुई मनाज़िले करामत तक पहुँचने की सज़ा में ऐ हमारन तुम उन के रास्ते न चलना।

5: हश्शाम बिन हकम कहते हैं मैंने मक़ामे मिना में पाँच सौ इल्मे कलाम के मसायल हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से दरयाफ्त किये इस तरह कि मैं यह कहता

जाता था कि लोग इस – इस तरह कहते है और हज़रत फ़रमाते हैं तुम ऐसा–ऐसा कहो मैंने कहा मैं आप पर फिदा हूँ यह हलाल है और यह हराम है उसके मुताल्लिक़ तू जानता था कि आपसे बढ़कर कोई जानने वाला नहीं। बल्कि आज इल्मे कलाम के मुताल्लिक़ मालूम हुआ। फ़रमाया – वाय हो तुझ पर ख़ुदा की हुज्जत बन्दों पर तमाम नहीं हो सकती' जब तक कि उसकी तरफ से कोई ऐसा न हो जो बन्दों की एहतियाज को पूरा कर सके।

6: रावी कहता है मैने इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम से सुना कि किसी उम्मत में बिल्कुल जाहिल तो कोई नहीं होता। हाँ ऐसा होता है कि कुछ जानता हैं कुछ नही जानता। ख़ुदा क़ी शान उससे अरफा व आला है कि वह एक बन्दे की इताअत फ़र्ज़ तो कर दे और आसमान व ज़मीन का इल्म उससे छिपा ले। वह उससे नहीं छिपाता।



## अड़तालीसवां बाब

## ख़ुदा ने अपनी नबी को हुक्म दिया कि जो तुम को दिया गया वह अली को भी सिखाऊं वह शरीके इल्मे रसूल हैं

1: इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिबरईल रसूलुल्लाह (स0) के पास दो अनार लाये। रसूलुल्लाह स0 ने उनमें से एक खा लिया और दसरे के दो टुकड़े किये

आधा खुद खाया और आधा अली को खिलाया और फ़रमाया ऐ भाई तुम जानते हो यह दोनों अनार क्या थे हज़रत अली (अ०) ने कहा नहीं। फ़रमाया – पहला नबुव्वत का था तुम्हारा उसमें हिस्सा नहीं 'दूसरा इल्म का था उसमें तुम मेरे शरीक हो। मैं (रावी) ने कहा ख़ुदा आपकी हिफ़ाजत करे वह कैसे शरीक थे इमाम ने फ़रमाया – ख़ुदा ने जो इल्म मोहम्मद को तालीम किया उसके मुताल्लिक़ हुक्म दिया कि अली अलैहिस्सलाम को भी तालीम दें।

2: फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाक़िर^(अ०) ने कि जिबरईल^(अ०) रसूलुल्लाह के पास दो अनार जन्नत के लाये और वह दोनों हज़रत को दिये आप^(स०) ने उनमें से एक खा लिया और दूसरे के दो टुकड़े किये। एक टुकड़ा हज़रत अली^(अ०) को दिया जो उन्होंने खा लिया। फ़रमाया – ऐ अली^(अ०) पहला अनार जो मैंने खाया वह नबुव्वत थी जिसमें तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं' दूसरा इल्म था जिसमें तुम मेरे शरीक हो।

3: मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना कि जिबरईल^(अ०) हज़रत रसूले ख़ुदा के पास जन्नत से दो अनार लाये हज़रत अली^(अ०) से मुलाक़ात हुई उन्होंने पूछा – आपके हाथ में यह दो अनार कैसे हैं। फ़रमाया यह एक नबुव्वत है जिसमें तुम्हारा हिस्सा नहीं। दूसरा इल्म है उसके बाद आपने दो टुकड़े किये। आधा अली^(अ०) को दिया। आधा खुद खा लिया फ़रमाया इसमें तुम मेरे शरीक हो और मैं तुम्हारा फिर इमाम अ० ने फ़रमाया कि जो चीज़ भी ख़ुदा ने रसूल^(स०) को तालीम दी वह उन्होंने अली^(अ०) को दी। फिर यह इल्म हमारी तरफ आया।



## उन्चासवां बाब

# जिहाते उलूमे अइम्मा अ०

1: इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमारा इल्म तीन किस्म का है अव्वल ज़मानाए माजी का इल्म (जो एक इमाम से दूसरे इमाम को मिलता है) दूसरे बाक़ी मान्दाह इल्म (जो कुरआन से माख़ूज होता है) जो किताबे ख़ुदा में लिखा हुआ है तीसरे हादिस (जो रोज़ मर्रा की तबदीलियों के मुताल्लिक़ शबे क़द्र में हासिल होता है।) वह दिलों में डाला जाता है या फरिश्ते की आवाज कानों में आती है और यह हमारे इल्म की सबसे बेहतर सूरत है और हमारे नबी के बाद कोई नबी नहीं।

2: इमाम जाफ़र अलैहिस्सलाम से मरवी है रावी कहता है मैंने कहा मुझे आलम के इल्म की खबर दीजिए कि वह कैसे हासिल होता है फ़रमाया वह विरासते रसूल (स0) और अली (अ0) है मैंने कहा हम तो आपस में यह बयान करते हैं कि इल्म आप लोगों के कुलूब में डाला जाता है और कानों में आवाज़ डाली जाती है फ़रमाया हाँ ऐसा भी है।

3: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) ने हमारा इल्म ग़ाबिर है मज़बूर है और दिलों में डाला हुआ है और कानों से सुना हुआ हैं ग़ाबिर वह है जिसका ताल्लुक़ हमारे पहले इल्म से है और मज़बूर वह है जो हमारे बाद में आता है इलहाम हमारे कुलूब को होता है और फरिश्ते की आवाज़ कान में आती है।



## पचासवां बाब

# अइम्मा अलैहिमुस्सलाम हर शिया को उस के पोशीदा नफ़े व नुक्सान से आगाह करते हैं।

1: फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने अगर तुम्हारी ज़बानों पर बन्दिश न होती तो हर शिया को हम उसके नफ़े व नुक़सान की ख़बर दे देते।

2: अबू बसीर कहते हैं मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा कि असहाबे अली व हजर बिन अदी व रशीद हजरी वग़ैरह को बावजूदे कि वह अपनी मौत और मुसीबतों को इल्म में रखते थे किस वजह से उनको वह मुसीबतें पहुँचीं जो पहुँची वह हज़रत ने गज़ब नाक लहजे में जवाब दिया कि उसके बाएस वह लोग हुए (यानि दुश्मनान अहले बैत इब्ने ज़ियाद व हज्जाज वग़ैरह) मैंने कहा – फिर आप अपने दोस्तों को क्यों नहीं आगाह करते' फ़रमाया अली (स0) के बाद यह दरवाज़ा बन्द हो गया था लेकिन बाद में हुसैन बिन अली अलैहिस्सलाम ने थोड़ा सा उसे खोला। ऐ अबू मोहम्मद (कुन्नियत अबू बसीर) वह ऐसे लोग थे कि उनकी ज़बानों पर मोहर थी (यानी वह इफशायें राज़ नहीं करते थे इसी लिये इमाम हुसैन (अ0) ने अपने असहाब को आने वाली मुसीबत से आगाह कर दिया था।



## इक्यावनवां बाब

# अम्रे दीन की तफ़वीज रसूलुल्लाह स० को

1: रावी कहता है मैं इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुआ तो हज़रत को यह कहते सुना। अल्लाह तआला ने अपनी मुहब्बत के सबब तरबियत की अपने रसूल (स0) की और फ़रमाया सूरह नून में। ऐ रसूल (स0) बेशक तुम ख़ुल्के अज़ीम फायज़ हो' फिर अम्रे दीन उनके सुपुर्द किया। और फ़रमाया – जो रसूल तुमको दे उसे ले लो और जिस अम्र से मना करें उससे बाज़ रहो' ख़ुदा फ़रमाता है जिसने रसूल (स0) की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की। फिर फ़रमाया – रसूल (स0) ने अम्रे दीन अपने बाद अली (अ0) के सुपुर्द किया और उनको अमीन बनाया। पस तुमने उनको मान लिया। लेकिन और लोगों ने इन्कार किया। हम तुमसे यह चाहते हैं कि जब हम कहें तो तुम भी कहो और जब हम चुप रहे तो तुम भी चुप रहो। हम तुम्हारे और अल्लाह के दरमियान वास्ता हैं ख़ुदा ने हमारी मुख़ालिफत में किसी के लिए बेहतरी नहीं रखी।

2: इब्ने असीम से मरवी है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में था कि एक शख्स आया और कुरआन की एक आयत के मुताल्लिक पूछा। आप (स0) ने उसे जवाब दिया। थोड़ी देर बाद एक दूसरा आया उसने भी उसी आयत के मुताल्लिक़ पूछा। आप (स0) ने उसे दूसरा जवाब दिया..........................................मुझे इस वाक़िये से इतना

सदमा पहुँचा गोया किसी ने मेरे क़ल्ब के टुकड़े – टुकड़े कर दिये मैंने अपने दिल में कहा। मैंने शाम में अबू क़तादह को लिखा कि वह एक वाव वग़ैरह की गलती नहीं करता और एक यह है कि उन्होंने ग़लती पर ग़लती की अभी मैं इस ख्याल में था कि एक शख्स और आया। और उसने भी उसी आयत के मुताल्लिक़ पूछा। आपने उसको जो जवाब दिया वह पिछले दोनों जवाबों के खिलाफ था अब मेरे नफ़्स को सुकून हासिल हुआ और मैंने यह जाना कि यह अज़रुवे तक़य्या जवाब दिये गये हैं अब हज़रत मेरी तरफ मुतवज्जहे हुए और फ़रमाया – ऐ इब्ने असीम अल्लाह तआला ने सुलेमान बिन दाऊद को दुनयावी जाह सुपुर्द करके फ़रमाया था यह हमारी बख़्शिश है चाहे किसी को देकर उस पर एहसान रखो चाहे उसे बग़ैर हिसाब रोके रहो (यानि उस सल्तनत की कोई अहमियत न थी) और रसूल (स0) के सुपुर्द वह रुहानी हुकूमत की जिसके मुताल्लिक ख़ुदा फ़रमाता है जो तुम्हें रसूल (स0) दे (बे चूँ व चरा)। उसे ले लो' और जिससे मना करे उससे बाज़ रहो पस जिस तरह (अम्रे दीन में हुकूमते मुतलक़ा) रसूल (स0) को ख़ुदा ने यह हुकूमत सुपुर्द की उसी तरह हमको भी दी है मक़सद यह है कि अम्रे दीन हमारे सुपुर्द है हम जो मसलेहत समझते है करते हैं।

3: रावी कहता है कि मैंने इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम और इमाम जाफ़र सादिक़ (स0) से सुना है कि अमे हक़ अल्लाह तआला ने अपने नबी के सुपुर्द किया ताकि वह उनकी इताअत को देखें फिर यह आयत पढ़ी। रसूल (स0) जो कुछ तुमको दें ले लो और जिस अम्र से मना करे उससे बाज़ रहो।

4: रावी कहता है मैंने सुना कि इमाम जाफ़र सादिक़ (स0) ने अपने एक सहाबी क़ैस बिन आमिर से फ़रमाया कि ख़ुदा ने अदब सिखाया अपने नबी को और बहुत अच्छा अदब सिखाया। पस जब अदब में कमाल हासिल हुआ तो फ़रमाया बेशक तुम खुल्क़े अज़ीम पर हो फिर अम्रे दीन और उम्मत को हज़रत के सुपुर्द किया ताकि वह ख़ुदा के बन्दों पर हुकुमत करें पस ख़ुदा ने फ़रमाया जो कुछ रसूल तुम्हे दे उसे ले लो और जिससे रोकें उससे बाज़ रहो बेशक रसूल अल्लाह (स0) रास्त पर थे तौफीक़ दिये हुए थे और उनमें रुहुल्कुदस की ताईद हासिल थी सियासत ख़ुल्क व हिदायत मख़लूक के मुताल्लिक़ न उनसे कोई लग़जिश सर्ज़द हुई और न कोई ख़ता पस हज़रत ने लोगों को आदाबे इलाही की तालीम दी। फिर ख़ुदा ने फ़र्ज़ की नमाज़ अदा की दो रकअत (पाँच वक्त में) कुल दस रकअत 'रसूलुल्लाह ने दो रकअतों के साथ दो-दो रकअतों का और इज़ाफा किया और मग़रिब की नमाज़ में एक रकअत जो फरीज़ो की मिसल क़रार पाई जिनका तर्क करना जायज़ नहीं सिवाय सफर के और मग़रिब की नमाज में जो एक रकअत का इजाफा हुआ था सफ़र में वह बाक़ी रहा। इस सूरत में सत्तरह रकअतें फ़र्ज़ हुई फिर रसूलुल्लाह ने सुन्नतें क़रार दी। 34 रकअतें यानि फ़र्ज़ रकअतों से दोगुनी 'ख़ुदा ने उन को उस की इजाज़त दी' फ़रीजा और नाफ़िला मिलकर 51 रकअतें हो गयी उनमें से दो रकअत बादे नमाज़े इशा बैठ कर पढ़ी जाती हैं बजाय नमाज़े वितिर और फ़र्ज किया अल्लाह ने माहे रमज़ान के रोजों को और रसूलुल्लाह ने सुन्न्त क़रार दिया माहे शाबान के रोजों को और तीन दिन हर माह में

(यानि बकाया दस माह में) इस तरह सुन्नत रोज़े फ़र्ज से दो हिस्से ज़्यादा हो गये फिर ख़ुदा ने उसकी इजाज़त दी' फिर ख़ुदा ने हराम किया शराब को और रसूलुल्लाह ने हराम किया हर नशा देने वाली चीज़ को ख़ुदा ने उसको मन्जूर किया बाज़ चीज़ों को रसूलुल्लाह ने मकरुह करार दिया। लेकिन यह नही ऐसी नहीं जैसी हराम के लिए नहीं है मगर वह नही अज़रुवे नाखुशी व कराहत है बाज़ चीजों की रसूलुल्लाह ने इजाज़त दी है तो उनका बजा लाना बन्दों पर उसी तरह है जैसे वाजिब का हो और नहीं इजाज़त दी उसी तरह है जैसे वाजिब का हो और नही इजाज़त दी रसूलुल्लाह ने उसके करने की जिससे रोका है नही हराम की तरह 'उसी तरह जिसका हुक्म दिया है फ़र्ज़े लाज़िम की तरह उसके खिलाफ करने की' पस पीने की बहुत सी नशा आवर चीज़े है। जिनसे नहीं हराम की रसूलुल्लाह (स0) ने रोका है और किसी को उसके बजा लाने की इजाज़त नही दी। उसी तरह हज़रत ने नहीं इजाज़त दी उन दो रकअतों के कम करने की जिनकी अल्लाह की फ़र्ज़ करार दे दिया है किसी को उनको कम करने का हक नहीं। सिवाय मुसाफिर के कोई मजाज नहीं। इस अम्र का कि जिसकी इजाज़त रसूल (स0) ने नहीं दी उसको बजा लाये पस रसूलुल्लाह का हुक्म ख़ुदा के हुक्म की तरह और उनकी नही' नही ख़ुदा की मिसल है हर हुक्म व नहीये रसूल (स0) को उसी तरह कबूल कर लेना चाहिए जैसे ख़ुदा के अम्र व नही को।

5: रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर और इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिमुस्सलाम से सुना कि अम्र ख़ल्क को अल्लाह तआला ने अपने नबी के सुपुर्द कर दिया ताकि वह

उनकी इताअत को देखें फिर यह आयत पढ़ी। रसूल (स0) जो कुछ तुम को दें उसे ले लो और जिस अम्र से रोकें उससे बाज़ रहो।

6: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला ने फज़ाएल व कमालात से आरास्ता अपने नबी को जब मन्शाये इलाही के मुताबिक बन गये तो फ़रमाया तुम ख़ल्के अज़ीम पर हो। फिर अपना दीन उनके सुपुर्द करके फ़रमाया। जो रसूल तुम को दें उसे ले लो और जिससे मना करें उससे बाज़ रहो और अल्लाह तआला ने मय्यित के तरके की तक़सीम करार दी और उसमें जद के लिये कोई हिस्सा क़रार न पाया। रसूलुल्लाह ने उसके लिये छटा हिस्सा मुअय्यन किया। ख़ुदा ने उसे मंजूर किया उसे लेये ख़ुदा ने फ़रमाया है यह हमारी अता है चाहे किसी को दे डालो या रोक लो। तुमसे कोई हिसाब न होगा यानि हज़रत सुलेमान की तरह आन हज़रत को अम्रे दीन में मुख्तारे कुल बना दिया गया था।

7: इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह[स0] ने आँख की और क़त्ले नफ़्स की दैत क़रार दी और जौ की शराब और हर नशा देने वाली चीज़को हराम क़रार दिया। एक शख़्स ने इमाम अलैहिस्सलाम से सवाल किया जो चीज़ कुरआन में थी क्या रसूलुल्लाह ने उसे मुअय्यन किया। फ़रमाया – हाँ ताकि यह जाना जाये कि रसूल की इताअत करने वाला कौन है और मासियत करने वाला कौन।

8: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक़ में से

किसी के सुपुर्द अम्रे दीन को नहीं किया सिवाय रसूल (स0) और आइम्मा के और फ़रमाया है हमने सच्ची किताब को तुम पर नाज़िल किया है ताकि जो कुछ अल्लाह ने तुमको दिखाया है उसके मुताबिक लोगों के दरमियान हुक्म करो" यही तरीक़ा जारी रहा औसिया के लिए भी।

9: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने 'ख़ुदा ने अपने रसूल (स0) को मकारिमे अख़लाक से आरास्ता किया। जब दरदेए कमाल तक पहुँचे तो अम्रे दीन को उनके सुपुर्द किया ओर फ़रमाया जो रसूल (स0) तुम्हे दें उसे ले लो और जिससे मना करें उससे बाज़ रहो पस जो कुछ रसूल (स0) को सुपुर्द किया गया वही हमको सुपुर्द किया गया है।

10: इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से आयते हाज़ा अताऊना अलख़ के मुताल्लिक़ पूछा गया फ़रमाया ख़ुदा ने सुलेमान के मुताल्लिक़। फ़रमाया हाज़ा अताऊना अलख़ और ख़ुदा ने उनको मुल्के अज़ीम दिया। फिर उस आयत का हुक्म जारी हुआ रसूलुल्लाह[स0] के लिये पस हज़रत को अख़्तियार था जिसको चाहें दें जिसको चाहें न दें उनको सुलेमान से ज़्यादा दिया गया।



## बावनवां बाब

## अइम्मा अ० साबेक़ीन में किससे मुशाबेह हैं उनमें नबूवत मानना मम्नूअ है

1: रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से पूछा कि ओलमा यानि औसिया खातिमुलअम्बिया का क्या

मर्तबा है। फ़रमाया वही जो जुल्क़रनैन^अ० और वसी सुलेमान^अ० और वसी मूसा^अ० का है।

2: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़^अ० ने वाजिब है मख़लूक पर कि अम्रे हलाल व हराम हमसे मालूम करे आइम्मा–ए–ज़लालत की तरफ न जायें। लेकिन नबुवत हम में नहीं है।

3: रावी कहता है कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़^अ० से सुना कि ख़ुदा ने खत्म किया तुम्हारे नबी पर नबियों को 'पस उनके बाद कोई नबी न होगा और तुम्हारी किताब पर अपनी किताब पर खत्म किया। पस उसके बाद कोई किताब न आयेगी और उस किताब में हर शय को बयान कर दिया है और ख़ुदा ने तुमको पैदा किया है। और आसमान और ज़मीन को और आगाह किया पहले वाक़ियात पर और फैसल किये तुम्हारे दरमियान जो नज़ाआत थे और उनको खबर दी तुमको बाद वाले वाक़ियात से और हुक्म किया जन्नत व नार का और उस चीज़ का जिसकी तरफ़ तुम्हारी बाज़ गश्त है।

4: फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर^अ० ने अली^अ० मुहद्दिस थे (फरिश्ता उनसे कलाम करता था) मैंने कहा तो क्या नबी थे हज़रत ने अपने हाथ को इस तरह हरकत दी (यानि इशारह किया कि नहीं) फिर फ़रमाया वसी–ए–सुलेमान^अ० और वसी–ए–मूसा की तरह थे या मिसल जुल्क़रनैन के। क्या तुम तक यह खबर नहीं पहुँची कि हज़रत अली (स0) ने फ़रमाया मैं तुमसे उसकी मसल हूँ।

5: इमाम जाफ़र सादिक़ और इमाम मोहम्मद बाक़िर^अ० से मरवी है मैंने पूछा आपकी मनज़िलत क्या है और साबिक़ीन में आप^अ० किससे मुशाबेह हैं फ़रमाया साहिबे मूसा^अ० व जुलक़रनैन^अ० के वह दोनों आलिम थे नबी न थे।

6: सदीर रावी हैं कि मैंने इमाम जाफर सादिक़[अ0] से कहा कि कुछ लोग गुमान करते हैं कि आप लोग क़ाबिले इबादत हैं और कुरआन की यह आयत सुबूत में पेश करते है' वह वो है जो आसमान में भी माबूद है और ज़मीन में भी' हज़रत ने फ़रमाया ए सदीर ! मेरा कान, मेरी आँख, मेरी जिल्द, मेरा बदन, मेरा गोश्त और मेरा खून औ मेरे बाल उन लोगों से बरी है और अल्लाह भी उनसे बरी है। ख़ुदा की क़सम यह न मेरे दीन पर हैं न मेरे आबाव अजदाद के ख़ुदा बरोज़े कयामत मुझको और उन लोगों को एक जगह जमा न करेगा वह इन पर ग़ज़बनाक होगा। मैंने कहा कुछ लोगों का ख़याल यह है कि आप रसूल[स0] हैं और दलील लाते है उस आया कुरआनी से। ऐ रसूल ! खाओ पाक रिज्क़ और नेक अमल करो। जो तुम करते हो मैं जानता हूँ। फ़रमाया ऐ सदीर! मेरा कान, मेरी आँख, मेरे बाल और मेरी जिल्द, मेरा गोश्त और मेरा खून उनसे बरी है और अल्लाह और उसके रसूल (स0) भी बरी हैं वह न मेरे दीन पर है न मेरे आबाव अजदाद के। वल्लाह मुझे और उनको ख़ुदा रोज़े क़यामत एक जगह जमा करेगा वह उनसे नाराज़ है मैने कहा फिर आप कौन हैं? फ़रमाया हम इल्में इलाही के ख़ज़ीनादार हैं 'हम अम्रे इलाही के तर्जुमान हैं' हम मासूम है' अल्लाह ने हमारी अताअत का हुक्म दिया है और हमारी नाफ़रमानी से रोका है हम अल्लाह की हुज्जते बालेग़ा है आसमान में और रुवे ज़मीन पर।

7: रावी कहता है कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ0] से सुना कि अइम्मा अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह[स0] जैसे हैं मगर वह नबी नहीं है उनके लिए उतनी औरतें हलाल नही जितनी

नबी के लिए हैं उसके अलावह जितनी फ़ज़ीलतें और ख़ुसूसियतें आन हज़रत को दी गयी है सबमें अइम्मा अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह सल्लम के साथ शरीक हैं।



## तिरपनवां बाब

## अइम्मा अ० मोहद्दिस व मुफ़्हिम हैं

1: इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने ज़ुरारह को भेजा कि वह हकम बिन ओतबा को यह तालीम दे कि औसियाय मोहम्मद[अ०] मुहद्दिस हैं। यानि फ़रिश्ते उनसे कलाम करते है।

2: हमि बिन ओतबा से मरबी है कि मैं हज़रत अली[अ०] इब्नुल हुसैन[अ०] की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत ने फ़रमाया ऐ हकम! क्या तू वह आयत जानता है जिससे हज़रत अली[अ०] अपने क़ातिल को पहचानते थे और उन बड़े बड़े उमूर को भी जो लोगों के लिए हादिस होते हैं हकम कहते है मैंने अपने दिल में कहा कि आज मुझे अली[अ०] इब्नुल हुसैन[अ०] के इल्म से फ़ैज हासिल होगा और मैं उमूर एज़ाम से वाकिफ हूंगा पस मैने कहा मै उस आयत को नही जानता अल्लाह बेहतर जानने वाला है मैंने कहा या बिन रसूलुल्लाह (स0) मुझे उस आयत के मुताल्लिक़ आगाह कीजिए। फ़रमाया – ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआला का यह क़ौल है हमने तुमसे पहले न किसी रसूल को भेजा और न नबी और मुहद्दिस को और अली बिन अबी तालिब मुहद्दिस थे एक शख़्स ने जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन ज़ैद था और वह आपका माँ की तरफ से सौतेला भाई था आपसे कहा सुब्हान

अल्लाह मुहद्दिस थे? गोया वह उसका मुनकिर है पस इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम हमारी तरफ मुतवज्जे हुए और फ़रमाया तेरी माँ का बेटा बाद में उसको जाना। जब हज़रत ने यह फ़रमाया तो वह शख़्स साकित हो गया। हज़रत ने फ़रमाया यही वह आयत है जिसको न समझने की वजह से अबूल खत्ताब (मोहम्मद बिन मिक़लास अलअसदी अल कूफी ग़ाली मलऊन) हलाक हुआ। वह कहता था अइम्मा अम्बिया हैं जब उसने सुना कि वह मुहद्दिस हैं तो नबी और मुहद्दिस में फर्क़ न कर सका और वह अपने पहले क़ौल से उदूल करके कहने लगा। अइम्मा माबूद है।

"आयत वमा अरसलना मिन क़बलिक मिन रसूले वला नबीनि वला मुहद्दिस" से इमाम अलैहिस्सलाम ने यह ज़ाहिर फ़रमाया कि कोई रसूल बगैर नबुवत के नहीं होता और नबी बग़ैर मुहद्दिस हुए नही बनता। यानि फरिश्ते उसे बताते है पस हज़रत अली अलैहिस्सलाम उसी बिना पर अपने क़ातिल को भी जानते थे और उमूर अज़ीमा को भी।

3: मैने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम को फ़रमाते सुना। अइम्मा ओलमा है 'सादिक' मुफहि्हम और मुहद्दिस हैं।

4: हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ से मुहद्दिस के मुताल्लिक़ पूछा गया। फ़रमाया वह आवाज को सुनता है और वजूद को नही देखता। रावी ने कहा फिर वह कैसे जानता है कि यह कलाम फरिश्ते का है फ़रमाया उसको ऐसा सकीना और वक़ार हासिल है कि वह जान लेता है कि यह कलाम फरिश्ता कर रहा है।

5: फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने अली अलैहिस्सलाम मुहद्दिस थे मैं अपने दोस्तों के पास

आया तो उनसे कहा। मैं एक अजीब बात सुनाने आया हूँ उन्होंने पूछा वह क्या है। मैंने कहा – इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि अली अलैहिस्सलाम मुहद्दिस थे उन्होने कहा तुझे पूछना चाहिए कि कौन उनसे बात करता है। मैं लौट कर आया और कहा मैंने आपका क़ौल असहाब से नक़ल किया तो उन्होंने ऐसा–ऐसा कहा है फ़रमाया फरिश्ता कलाम करता था मैंने कहा तो क्या वह नबी थे आप[स०] ने हाथ से इशारा करके बतलाया कि नहीं बल्कि वह थे मिस्ल वज़ीरे सुलेमान अलैहिस्सलाम मूसा अलैहिस्सलाम और जुल्क़रनैन अलैहिस्सलाम की तरह क्या तुमने हज़रत अली अलैहिस्सलाम का यह क़ौल नही सुना। मै उनकी मिस्ल हूँ।



## चौवनवां बाब

## उन अरवाह का ज़िक्र जो अइम्मा अ० में होती हैं

1: जाबिर जाफ़ी से मरवी है कि फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने – ऐ जाबिर अल्लाह ताला ने पैदा किया अपनी मखलूक को तीन किस्म का जैसा कि फरमाता है तुम तीन किस्म के जोड़े हो। दाहिनी तरफ वाले क्या हैं (दाहिनी तरफ वाले) (बएतबार मनाज़िल व मरातिब) और बायें तरफ (बएतबार दरजात अजा़ब) और नेकियों की तरफ

सबक़त करने वाले तो सबक़त करने वाले ही हैं और वहीं मुक़र्रबान बारगाहे ईज़दी हैं और सबकत करने वाले वह मुरसलीन हैं और अल्लाह की मख़लूक में उसके मख़सूस बन्दे है खुदा ने उनमें पाँच रुहें पैदा की है और ताईद की है उनकी रुहुलकुदुस से उससे वह अशया की मार्फत हासिल करते हैं दूसरे उनकी ताईद की रुह ईमान से जिसकी वजह से वह अल्लाह से डरते हैं। तीसरे उनकी रुह कुव्वत दी। जिसकी वजह से वह ताअत खुदा पर कुदरत रखते हैं चौथे रुहे शहवत दी जिससे उनमें ताअते खुदा की ख़्वाहिश पैदा होती है और मअसियत से कराहत करते हैं 'पाँचवे उनकी रुहे मुदरज दी जिससे वह लोगों से मिलते हैं और लोग उनके पास आते हैं और मोमिनीन और असहाब मैमनह को रुहे ईमान दी। जिससे वह ख़ौफ खुदा करते हैं और कह कुव्वत दी जिससे वह ताअते ख़ुदा पर कुदरत रखते है और रुह शहवत दी जिससे उनके दिल में ताअते खुदा की ख़्वाहिश पैदा होती है और रुहे मदरज जिससे वह लोगों के पास जाते है ओर लोग उनके पास आते हैं।

2 : जाबिर (रजि0) से मरवी है कि मैंने इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से इल्मे आलिम (इमाम) के मुताल्लिक़ पूछा। फ़रमाया 'ऐ जाबिर अम्बिया और औसिया में पाँच रुहें होती है, – रुहुलकुदुस, रुहुल ईमान, रुहुलहयात, रुहुलकुव्वत, रुहे शहवत, रुहुलकुदुस से उन्होंने पहचाना। उन तमाम चीजों को जो अर्श और ज़मीन से नीचे तक हैं आखिर की चार को हादिस आरिज़ होते हैं लेकिन रुहुलकुदुस लहव व लअब से दूर रहती है।

3: रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम

से इल्म इमाम के मुताल्लिक़ सवाल किया कि वह क्यों कर एतराफ आलम की खबर रखते हैं दरआनहालिके वह अपने घर में होते हैं और हिजाब देखने से माने होते हैं। फ़रमाया– ऐ मुफज़्ज़ेला खुदा ने नबी में पाँच रुहें क़रार दी हैं रुहे हयात जिससे चलता फिरता है रूहे कुव्वत जिससे उठता और जिहाद करता है रूह शहवत जिससे खाता पीता और बतरीके अहसन हलाल औरतों से मुबाशिरत करता है और रूहे ईमान जिससे ईमान लाता है और इफरात और तफरीत से महफूज़ रहता है और रूहुलकुदुस जो हामिल नबुव्वत है। जब नबी की रुह कब्ज होती है तो यह रुहें इमाम की तरफ आती है रुह (यानि इल्म व अमल इमाम का भी नबी जैसा है) रुहुलकुदुस सोती नहीं न गाफिल होती है न माइले दुनिया होती है न कारेदीन से गाफिल बाक़ी चार सोती है ग़ाफिल होती है कारेदीन तर्क करती और मामलाते दुनिया में इन्हेमाक रखती है और रुहुलकुदुस इन बातों से बरी है।



## पचपनवां बाब

## वह रूह जिससे अल्लाह इस्लाहे अहवाल अइम्मा अ० करता है

1: रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक़[अ०] से उस आयत के मुताल्लिक़ पूछा। उसी तरह हमने वही की तुम्हारी तरफ रूह की जो हमारे अम्र से है तुम नहीं जानते थे किताब

क्या है और ईमान क्या है फ़रमाया वह रूह खुदा की मख़लूक में से एक मखलूक है जो जिबरईल और मीकाईल से अज़ीम तर है वह रसूलुल्लाह सल्लम के साथ रहती है उनको खबर देती है और दुरूस्तिई हाल करती है रसूल (स0) के बाद वह आइम्मा के साथ है।

2: असयात बिन सालिम से मरवी है कि अहले बैत के एक शख्स ने दरआन हालिके मैं मौजूद था इमाम जाफर सादिक़[अ0] से आयत के मुताल्लिक़ सवाल किया "वकज़ालिकह औहैना इलैका रूहन अमरिना" इमाम[अ0] ने फ़रमाया कि जब से ख़ुदा ने उस रूह को नाज़िल किया है वह आसमान की तरफ नहीं गयी है। यानि वह हमेशा क़यामत तक औसियाये नबी के साथ उसी तरह बाक़ी रहेगी। जिस तरह आन हज़रत के साथ थी। वह बेशक हमारे साथ है।

3 : अबू बसीर से मरवी है कि मैंने इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से आया "यसा अलूनका अनि रूंह" के मुताल्लिक पूछा फ़रमाया वह अल्लाह की एक मखलूक़ है जिबराईल और मीकाईल सबसे अज़ीम है वह रसूलुल्लाह के साथ थी वह आइम्मा के साथ है और वह उलूही कुव्वतों में से एक है।

4 : अबू बसीर से मरवी है मैंने अबू अब्दिल्लाह[अ0] से सुना कि आया यसअलूनक अनि रूंह' रूह खुदा की एक मख़लूक है जो जिबरईल और मीकाईल से बड़ी है। सिवाय हज़रत रसूले खुदा (स0) के पास नहीं रही वह आइम्मा के साथ है उनकी हालत की इसलाह करती है और ऐसा नहीं है कि इन्सान जिस अम्र की ख्वाहिश रखे उसे पा ही ले।

5: रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा इल्म के मुताल्लिक़ कि क्या उससे मुराद यही है कि

लोगों के मुँह से हासिल हो या उस किताब से जिसको पढ़ते है फ़रमाया—उसकी शान उससे बहुत ज्यादा बुजुर्ग है और ज्यादा फ़र्ज़ है क्या यह आयत नहीं पढ़ी। वकज़ालिका औहैना अलैक अल्अख़ फिर फ़रमाया तुम्हारे असहाब उनके बारे में क्या कहते है क्या वह इक़रार करते हैं कि वह एक हालत थी कि हज़रत नहीं जानते थे कि किताब क्या है और ईमान क्या है। मैंने कहा मुझे मालूम नहीं 'वह क्या कहते है' फ़रमाया—हाँ एक वक्त ऐसा था कि हज़रत नहीं जानते थे कि किताब क्या है और ईमान क्या है यहाँ तक कि खुदा ने उस रूह को भेजा जिस का ज़िक्र कुरआन में है पस उसके oghd jrsghvki स० को इल्म व फ़हम हासिल हो गया यह अतिय—ए—इलाही है जिसे चाहे वह अता करे और जब किसी बन्दे को अता करता है तो उसको फहम की तालीम देता है।

6 : रावी कहता है एक शख्स अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम के पास आया और रूह के मुताल्लिक सवाल किया उससे मुराद जिबरईल नहीं ? फ़रमाया – जिबरईल तो मलायका से हैं और रूह जिबराईल के अलावह है यह आप ने मुकर्रर फ़रमाया। उसने कहा कि यह तो आप बहुत बड़ी बात कह रहे हैं कोई भी यह गुमान नहीं करता कि रूह ग़ैर जिबरईल है हज़रत ने फ़रमाया तो गुमराह है अहले ज़लालत का क़ौल रवायत करता है खुदा ने अपने नबी से फ़रमाया है खुदा का अम्र आ गया तुम उसमे जल्दी न करो पाक व बरतर है अल्लाह उससे कि लोग उसका शरीक क़रार देते है मलाईका नाज़िल होते हैं रूह के साथ पस मलाईका ग़ैर रूह है अल्लाह की उन पर रहमत हो।



## छप्पनवां बाब

## इमाम अपने से पहले इमाम के उलूम को कब जानता है

1: रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछाः इमाम अपने पहले इमाम के तमाम उलूम को कब पाता है फ़रमाया—उसकी जिन्दगी के आखिरी वक़्त में।

2: रावियों ने बयान किया कि फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि इमाम उसकी जिन्दगी के आखिरी लम्हे में अपने से पहले इमाम के उलूम को जानता है।

### तौज़ीह

यानि जब इमाम रेहलत फरमाने लगता है तो वह अपने बाद पैदा होने वाले इमाम को असरारे इमामत तालीम करता है।

3: इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से किसी ने पूछा कि इमाम असरारे इमामत कब जानता है और अम्रे इमामत उसकी तरफ कब मुन्तही होता है। फ़रमाया— पहले इमाम की ज़िन्दगी के आखिरी वक़्त।



## सत्तावनवां बाब

## सब इमाम इल्म व शुजाअत व ताअत में बराबर हैं

1: इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

ख़ुदा ने फ़रमाया है जो लोग ईमान लाये और उनकी जुर्रियत ने ईमान में उनका इत्तेबा किया तो हमने उनकी जुर्रियत को उनसे मुलहिक़ कर दिया और उनके अमल से कोई शे कम नहीं की (तौर) फिर इमाम ने फ़रमाया जो लोग ईमान ले आये हैं नबी और अमीरूल मोमिनीन पर और उनकी औलाद में अइम्मा और औसिया पर और हमने कम नहीं किया उनकी जुर्रियत से उस हुज्जत को जो रसूल लाये अली (स0) के बारे में उनकी दलील और हुजत (नबुवत हो या इमामत) एक ही है और इताअत भी एक ही तरह की है।

2: फ़रमाया—इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम ने हम इल्म और शुजाअत में सब बराबर हैं और अताया में बक़दर उसके बजा लाते हैं जिसका हुक्म दिया गया हो।

3: फ़रमाया—इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हम अल्म व फहम और हलाल व हराम में एक दूसरे के काएम मक़ाम है लेकिन रसूलुल्लाह स0 और अली (अ0) दोनो को फज़ीलत हासिल है।



## अट्ठावनवां बाब

## हर इमाम अपने बाद आने वाले इमाम को पहचानता है और आयत इन्नल्लाहा या मोरोकुम अन तुवद्दुल्अमा नाते इला अहलेहा अइम्मा की शान में है

1: रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम

से उस आयत के मुताल्लिक़ पूछा। अल्लाह हुक्म देता है तुम को कि अमानतों को उसके अहल के सुपुर्द कर दो और जब लोगों के दरमियान हुक्म करो तो अदूल से हुक्म दो। फ़रमाया उससे मुराद हम है यानि पहला इमाम अपने बाद वाले इमाम को किताबें, इल्म और हथियार जो अमानत इलाहिया हैं सुपुर्द कर दे और जब तुम लोगों के दरमियान फैसला करने लगो तोअज़ रूए इंसाफ फैसला करो फिर ख़ुदा ने लोगों से कहा। ऐ ईमान वालो अल्लाह की इताअत करो और इताअत करो रसूल (स0) की और जो तुम में ऊलिल अम्र हैं उन की "यानि हमारी ख़ास कर इताअत फ़र्ज़ है। तमाम मोमिनीन पर ताक़यामत। फिर फरमाता है अगर तुमको किसी अम्र में झगड़े का ख़ौफ हो तो रूजू करो अल्लाह रसूल और अपने ऊलिल अम्र की तरफ 'अगर वालियाने अम्र और रिआया के दरमियान झगड़ा मुराद होता (जैसा कि अहले सुन्नत कहते हैं) तो कैसे मुमकिन था कि वालिमाने अम्रे की इताअत का हुक्म भी देता और फिर उनको झगड़े में शरीक भी करता यह तो उन मामुरेन के लिए है जिनसे कहा गया है कि तुम इताअत करो अल्लाह और रसूल (स0) की और जो तुममें ऊलिल अम्र हैं उनकी।

2: इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से रावी ने उस आयत के मुताल्लिक़ सवाल किया। ख़ुदा तुमको हुक्म देता है कि अमानतों को उनके अहल के सुपुर्द कर दो। फ़रमाया उससे मुराद अइम्मा आले मोहम्मद और उनको हुक्म है कि हर इमाम अपने बाद वाले इमाम को असरारे इलाहिया तालीम दे और उनके सिवा किसी और को उससे मख़सूस न करे और न उससे उस अमानत को पोशीदा रखे।

3: फ़रमाया—इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने उस आयत के मुताल्लिक़ कि अल्लाह हुक्म देता है कि अमानतों को उनके अहल तक पहुँचा दो, उससे मुराद इमाम हैं कि हर इमाम अपने बाद वाले को अमानते इलाहिया पहुँचा दे और उसके सिवा दूसरे को न दे और न उससे पोशीदा रखे।

4: रावी कहता हे मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से उस आयत के मुतालिक़ पूछा "इन्नल्लाह या मुरोकुम" अलख। फ़रमाया खुदा ने इमाम अव्वल को हुक्म दिया है कि वह असरारं इमामत अपने बाद वाले इमाम के सुपुर्द कर दे और वह शै उसे दे दे जो उसके पास है।

5 : फ़रमाया—इमाम जाफ़र सादिक़ अलैह सलाम ने इमाम अपने बाद वाले इमाम को पहचानता है और उसको वसीयत करता है।

6: इमाम अपने बाद वाले इमाम को पहचानता है और वसीयत क़रता है।

7: फ़रमाया—इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जब कोई इमाम रेहलत फरमाता है तो अल्लाह उसको बता देता है कि उसका वसी कौन है।



## उन्सठवां बाब

## इमामत अहदे इलाही हैं यके बाद दीगरे

15 अबू बसीर से मरवी है कि इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की ख़िदमत में हाज़िर हुआ कि लोगों ने औसिया का ज़िक्र किया मैंने इस्माईल[अ०] (हज़रत के बड़े साहबज़ादे जिनको दाऊदी बोहरे हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के बाद इमाम

मानते है) का ज़िक्र किया। फ़रमाया–नहीं ऐ अबू मोहम्मद (कुन्नियत अबू बसीर) ऐसा नहीं है यह अख्तियार अल्लाह को है उसने एक के बाद दूसरे का नाम नाज़िल कर दिया है।

2: मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को कहते सुना। क्या तुम यह समझते हो कि वसीयत करने वाला हममे से है जिसको चाहता है वसीयत करता है ब़ाखुदा ऐसा नहीं है बल्कि यह अहद है अल्लाह और रसूल (स0) का। एक शख्स के बाद दूसरे के लिये यहां तक कि अम्रे इमामत साहबे अम्र तक मुनतही हो।

3: इमाम जाफ़र सादिक़[अ0] ने फ़रमाया कि इमामत ख़ुदा की तरफ से एक अहद है ख़ुदा ने नाम बनाम कुछ लोगों को मुईन कर दिया है इमाम के लिये सज़ावार नहीं कि वह उससे पोशीदा रखे जो उसके बाद होने वाला इमाम है ख़ुदा ने वही की दाऊद[अ0] को कि वह अपने खानदान से एक शख़्स को अपना वसी बनायें और फ़रमाया–मेरे इल्म में यह गुज़र चुका है कि जब किसी नबी को भेजूंगा तो उसे ख़ानदान से उसका एक वसी भी बनाऊंगा और दाऊद[अ0] के बहुत से बेटे थे उनमें एक लड़का था जिसकी माँ दाऊद[अ0] की ज़ौजीयत में थी और जिन्दा थी दाऊद उससे बहुत मुहब्बत करते थे जब यह वही हुई तो उन्होंने उससे कहा ख़ुदा ने यह की है कि मैं अपने अहल में से किसी को अपना वसी बनाऊं, उनकी बीबी ने कहा मेरे बेटे को बना दीजिए। फ़रमाया–हाँ मैं भी यही चाहता हूँ और इल्मे इलाही में यह बात गुजर चुकी थी। कि दाऊद[अ0] के वसी सुलेमान[अ0] हैं। खुदा ने दाऊद[अ0] को वहीं की कि जल्दी न करो। उससे

पहले कि मेरा हुक्म तुम्हारे पास आये। कुछ देर के बाद दाऊद[अ0] के पास दो आदमी झगड़ा करते आये। एक बकरियों वाला था दूसरा अंगूर के बाग़ का मालिक 'खुदा ने दाऊद[अ0] को वही कि अपनी सब औलाद को जमा करो और इसका फैसला पूछो' जो फैसला कर दे वही तुम्हारा वसी होगा। पस दाऊद[अ0] ने सबको जमा किया। जब उनके सामने यह क़जया पेश हुआ तो सुलेमान[अ0] ने कहा। ऐ अंगूर वाले बकरियाँ तेरे खेत में कब आयी थी। उसने कहा रात को, फ़रमाया मैंने यह फ़ैसला किया कि बकरियों वाला इस साल साल बकरियों के बच्चे और ऊन तुझे दे' दाऊद[अ0] ने कहा यह कैसे 'कयों यह फैसला नहीं करते कि यह सब बकरियाँ अंगूर वाले को दे दी जायें ओलमाए बनी इस्राईल इसी फैसले को हक़ जानते है जनाब सुलेमान[अ0] ने कहा उन बकरियों ने अंगूर के दरख़्त जड़ से नहीं उखाड़े हैं सिर्फ अंगूर खायें हैं आइन्दा साल वह फिर आ जायेंगे यानि नुक़सान सिर्फ एक साल के मुनाफे का है लिहाजा उसे बकरियों के बच्चों और ऊन से पूरा कर दिया जायेगा। ख़ुदा ने दाऊद[अ0] को वही की कि उस क़ज़ये का फैसला यही है जो सुलेमान[अ0] ने किया है ऐ दाऊद[अ0] एक अम्र का इरादा मैंने किया। और एक अम्र का तुमने (मेरा इरादा पूरा हुआ) दाऊद[अ0] अपनी बीवी के पास आये और कहने लगे। हमने एक इरादा किया और उसके अलावह खुदा ने इरादा किया और असली इरादा अल्लाह ही का है हमने उसको तसलीम कर लिया। इमाम ने फ़रमाया—बस यही सूरत औसिया की है उस मामले में अम्रे इलाही से तजावुज़ नहीं करते और मुअय्यिन वसी के सिवा दूसरे को नहीं बनाते।

## तौजीअ

कुलेनी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया हदीसे अव्वल में बकरियो के दिन को अंगूरों के खेत में दाख़िल होने को इसलिए पूछा गया था अगर ऐसा होता तो बकरियों वाले पर कोई मेहरबान न होता इसलिये कि बकरी वाले का यह फ़र्ज होता है कि वह अपनी बकरियाँ दिन में चुराये और खेत वाले का यह फ़र्ज है कि वह दिन में अपने खेत की हिफाज़त करे और रात को बकरियों वाले को चाहिये कि वह उनको बाँधे खेत वाले को चाहिये कि वह अपने घर में सोये।

4: रावी कहता है फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ऐसा नहीं है कि हमारा वसीयत करने वाला जिसके लिये चाहे वसीयत कर दे। बल्कि वह अहद है रसूलुल्लाह की तरफ से एक के बाद दूसरे के लिये यहाँ तक कि आख़िर इमाम उसको अपने नफ़्स पर ख़त्म कर दे।



## साठवां बाब

## अइम्मा अ० ने नहीं किया और नहीं करेंगे मगर वही जो अहदे खुदा है वह अम्रे खुदा से तजावुज़ नहीं करते

1: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदा ने वसीयत नामा नाज़िल किया बसूरत किताब और आना हज़रत पर सिवाय उस वसीयत नामा के कोई तहरीर मुहर नाज़िल नहीं हुई' जिबरईल ने कहा–ऐ मोहम्मद–(स0)

यह वसीयत नाम है तुम्हारी उम्मत के लिये तुम्हारे अहले बैत के बारे में रसूलुल्लाह ने पूछा। ऐ जिबरईल! मेरे अहले बैत कौन हैं? उन्होंने कहा उनमें का नजीब और उसकी जुर्रियत ताकि वह वारिस हो तुम्हारे इल्मे नबुवत में जैसा कि तुमको उसका वारिस इब्राहीम ने बनाया और यह मीरास अली के लिये है और उनकी औलाद के लिये जो उनके सुल्ब से हो और उन्हीं पर ख़ात्मा है पस अली (स0) ने पहली मुहर को खोला और उसमे जो कुछ था उस पर इत्तेला पायी।

फिर इमाम हसन (स0) दूसरी मुहर को तोड़ा और जो कुछ उसमें था उसको पढ़ा। जब इमाम हसन (स0) का इन्तेक़ाल हुआ तो तीसरी मोहर को इमाम हुसैन (स0) ने खोला उसमें था क़िताल करो दुश्मनो से और क़त्ल हो जाओ और एक क़ौम को लेकर शहादत के लिये निकलो पस हज़रत ने ऐसा ही किया। जब उन्होंने शहादत पायी तो वह वसीयत नामा अली बिन हुसैन को दे दिया। उन्होंने चौथी मोहर तोड़ी लिखा था चुप रहो और रज़ा–ए–इलाही में सिर झुकाए रहो क्योंकि इल्म हिजाब में है। जब उन्होंने वफात पायी तो वह तहरीर इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम को मिली ' आप (स0) ने पाँचवी मोहर तोड़ी उसमें था किताबे ख़ुदा की तफसीर बयान करो और अपने आबाव अजदाद की तसदीक़ करो और अपने बेटे को अपना वारिस बनाओ' उम्मत से नेकी करो और अल्लाह के हक़ के असबात के लिये खड़े हो जाओ और ख़ौफ़ और अमन हर हालत में हक़ कहो और अल्लाह के सिवा किसी से न डरो पस हज़रत ने ऐसा ही किया उसके बाद वह वसीयत नामा अपने बाद वाले

को दिया। मैंने कहा (रावी) वह आप (स0) है फ़रमाया – मुझे यही कहना है कि तुम जाओ और मुझसे बैअत करो। मैंने कहा मैंयह सवाल करता हूँ कि जिस तरह खुदा ने आपको और आप (स0) के आबा को इमामत अता फरमायी है क्या आपके बाद भी मरने से पहले वसायत का यह सिलसिला जारी रहेगा। ऐ मुआकिफ़ खुदा ने ऐसा ही किया है मैंने कहा आपके बाद कौन होगा। फ़रमाया – यह सोने वाला और इशारह किया अपने हाथ से अब्दे सालहे (इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम) की तरफ जो सो रहे थे।

2: फ़रमाया– इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने 'खुदा ने अपने नबी (स0) की वफात से पहले एक किताब नाज़िल की और फ़रमाया–ऐ मोहम्मद यह हमारी वसीयत है तुम्हारे अहल जो नजबा हैं। उनके लिये हज़रत ने फ़रमाया–ऐ जिबरईल वह कौन है उन्होंने कहा अली बिन अबी तालिब और उनकी औलाद 'उस किताब पर मुहर लगी हुई थीं सोने की' वह किताब आन हज़रत[स0] ने अमीरूल मोमिनीन[अ0] को दे दी और हुक्म दिया कि उनमें से एक मुहर को तोड़ें और जो लिखा है उस पर अमल करें अमीरूल मोमिनीन ने एक मुहर को तोड़ा और हस्बे हिदायत अमल किया फिर उसे इमाम हसन[अ0] को दे दिया एक मुहर उन्होंने तोड़ी और अमल किया फिर उन्होंने अपनी मर्ग के वक्त इमाम हुसैन[अ0] को दे दी। उन्होंने तीसरी मोहर तोड़ी उसमें लिखा था एक गिरोह के साथ शहादत के लिये निकलो उनकी शहादत तुम्हारे ही साथ है और राहे खुदा में अपना नफ़्स बेच डालो 'पस उन्होंने ऐसा ही किया। फिर वह किताब अली बिन अल हुसैन को दे दी गयी उन्होंने चौथी मोहर को तोड़ा उसमें लिखा था कि

सरे तसलीम ख़म करो खामोशी के साथ अपने घर में बैठ के मरते दम तक इबादते ख़ुदा करो उन्होंने ऐसा ही किया। फिर उसे दिया अपने फ़र्ज़न्द इमाम मोहम्मद बाक़िर को उन्होंने मोहर को तोड़ा तो उसमें देखा' लोगों से अहादीस बयान करो और उनको फतवा दो और अल्लाह के सिवा किसी से न डरो' तुम पर किसी को क़ाबू हासिल न होगा उन्होंने ऐसा ही सिया फिर वह उनके फ़र्ज़न्द इमाम जाफ़र सादिक़ को मिली उन्होंने मुहर को तोड़ा तो उसमें था अहादीस को बयान करो और फतवा दो और उलूमे अहलेबैत (स0) को नश्र करो और तसदीक़ करो अपने आबा सालहीन की और अल्लाह के सिवा किसी से न डरो' तुम उसकी पनाह में हो उन्होंने ऐसा ही किया। फिर उन्होंने इमाम मूसा काज़िम को वह किताब दी। फिर उसी तरह होता रहेगा क़यामे इमाम मेंहदी (स0) तक।

(3) हमरान ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से कहा आप[अ0] ने गौर किया हजरत अली[अ0] और इमाम हसन[अ0] और इमाम हुसैन[अ0] के वक़िआत पर उनका निकलना और दीने ख़ुदा की हिफ़ाज़त पर कायम रहना और जो मुसीबत उनको बाग़ियों और शयातीन इन्स के हाथ से बसूरेत कत्ल और गलबा पहुँचे। इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। ऐ हमरान! यह उमूरे क़ज़ा व क़द्र इलाही से मुताल्लिक है उसी के हुक्म व मशियत से उनका इजरा हुआ उन उमूर का इल्म उनको रसूलुल्लाह के जरिये से पहले ही हो चुका था उस पर अली[अ0] व हसन[अ0] व हुसैन[अ0] क़ायम रहे और जिसके लिए हममें से खामोश ज़िन्दगी का हुक्म था खामोश रहे।

4 : इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम फरमाते है। क्या अमीरूल मोमिनीन उस वसीयत को नहीं लिखा और रसूलुल्लाह ने उन्हें नहीं लिखवाया और जिबराईल (स0) और मलायका मुक़र्रबीन उस पर गवाह नहीं हुए हज़रत यह सुनकर देर तक सर झुकाए रहे फिर फ़रमाया–ऐ अबुल हसन (स0) (कुन्नियत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम) जो तुमने कहा ऐसा ही होना था। लेकिन जब रसूलुल्लाह पर अम्रे रिसालत का नुज़ूल हुआ तो ख़ुदा ने यह वसीयत बसूरत किताब व दस्तावेज़ नाज़िल की' ऐ जिबरईल मयउन मलायका के जो अमानुल्लाह हैं लेकर आये और जिबरईल ने कहा। ऐ मोहम्मद (स0) जो लोग आप (स0)के पास है उनको चले जाने का हुक्म दीजिए सिवाये आपके वसी के कोई न रहे ताकि हमसे वह वसीयत नामा ले ले और हम आप (स0) को उसके देने पर गवाह बनायें और ज़ामिन क़रार दे वसी से मुराद हमारी अली (स0) हैं पस परसूलुल्लाह ने सबाके हटाया सिवाय अली व फात्मा (स0) कोइ न रहा। दरवाज़ा और घर के दरमियान परदा हायल था। जिबरईल ने कहा– ऐ मोहम्मद (स0)! तुम्हारा रब सलाम कहता है और फरमाता है यह वह नविशता है जिसका मैंने तुमसे वायदा किया था और शर्त की थी उस पर मैंने तुमको गवाह बनाया और तुम पर मलायका को गवाह क़रार दिया। और ऐ मोहम्मद मेरा गवाह होना काफी है यह सुनकर रसूलुल्लाह के बदन का एक–एक जोड़ कांपने लगा और फ़रमाया ऐ जिबरईल मेरे रब पर सलाम है उसकी तरफ से सलामती है उसकी तरफ सलामती लौटती है मेरे माबूद ने सच कहा। नविश्ता लाओ 'जिबरईल ने वह रसूलेपाक को दिया और कहा यह अली को दे

दीजिए। हज़रत ने फ़रमाया लो ऐ अली उसे पढ़ो। उन्होंने एक-एक हरफ पढ़ा आन हज़रत ने फ़रमाया ऐ अली यह मेरे रब का अहद है और उसकी शर्त मुझसे है और यह ख़ुदा की अमानत है मैंने तबलीग़ कर दी नसीहत कर दी और तुम तक पहुँचा दिया। हज़रत अली ने फ़रमाया मेरे माँ-बाप आप (स0) पर फिदा हूँ मैं गवाही देता हूँ कि आप (स0) ने तबलीग़ कर दी नसीहत कर दी और जो कुछ (स0) के कहा उसकी तसदीक़ करता हूँ और मेरे कान, आँख और मेरा खून मेरा गोश्त गवाही देता है जिबरईल ने कहा मैं तुम दोनों को गवाही देता हूँ। रसूलुल्लाह ने फ़रमाया – ऐ अली तुमने मेरी वसीयत सुन ली और उसको जान लिया और अल्लाह और मेरी तरफ से ज़ामिन हो गये उस अहद के वफा करने कें हज़रत अली (स0) ने कहा-बेशक मेरे माँ-बाप आप पर फिदा हों मैं ज़ामिन हूँ खुदा मेरी मदद करें और उसकी अदा पर तौफ़ीक दे। रसूलुल्लाह ने फ़रमाया – ऐ अली (स0)! मैं चाहता हूँ कि उसके मुतालिक़ रोज़े क़यामत गवाही दूँ। हज़रत अली ने कहा मैं आप (स0) के उस इरादे का गवाह हूँ रसूलुल्लाह ने जिबरईल मीकाईल मलायका और मुक़रबीन जो उनके साथ है वह भी उस वाक़िये के गवाह हैं हज़रत अली ने कहा। उनको गवाही देनी चाहिए मैं उन पर गवाह हूँ ' पस रसूलुल्लाह ने गवाही दी और बहुक्म ख़ुदा जिबरईल ने जो शराएत नबी से बयान की थी उसकी गवाही दी और फ़रमाया- ऐ अली (स0) उसमें जो कुछ है उसे पूरा करो दोस्ती रखो उससे जो अल्लाह और उसके रसूल (स0) को दोस्त रखे और बराअत और दुश्मनी रखो उससे जिससे अल्लाह और उसका रसूल से दुश्मनी रखते है और सब्र के

साथ उनसे अपनी बराअत का इज़हार करो और गुस्से को जाओ अपने हक़ के ज़ाऐ होने पर 'अपने खुम्स के ग़स्ब पर और अपनी हतक व हुरमत पर। हज़रत अली<sup>अ०</sup> ने कहा अच्छा या रसूलुल्लाह<sup>स०</sup>! अमीरूल मोमिनीन<sup>अ०</sup> फरमाते हैं क़सम है उस ज़ात की जिसने दाने को शिगाफ़्ता किया और हवाओं को चलाया कि मैंने जिबरईल को रसूलुल्लाह<sup>स०</sup> से कहते सुना। ऐ मोहम्मद<sup>स०</sup>! उनको आगाह कर दो कि उनकी हतक 'हुरमत अल्लाह और उसके रसूल की हत्के हुरमत है और यह भी बता दो कि उनकी दाढ़ी उनके सर के खून से खिज़ाब होगी अमीरूल मोमिनीन<sup>अ०</sup> ने फ़रमाया – उन वाक़ियात को सुनकर मुझे इज़तेराब लहिक़ हुआ। यहाँ तक कि मैं औंधे मुँह गिर गया। फिर मैंने कहा मैंने सब बातों को कुबूल किया और उन मुसीबतों पर राज़ी हूँ अगर चे हतक 'हुरमत हो और अम्र सुन्नत मोअत्तल हो जाये और किताबे ख़ुदा पारह पारह हो काबे को ढहा दिया जाये और मेरी दाढ़ी मेरे सर के ताज़ा ख़ून से ख़िज़ाब हो 'मैं हमेशा सब्र से काम लूंगा यहाँ तक कि आप के पास पहुँच जाऊं' फिर रसूलुल्लाह ने फातिमा<sup>स०</sup> और हसन<sup>अ०</sup> व हुसैन<sup>अ०</sup> को बुलाया और उन वाक़ियात से जिस तरह अमीरूल मोमिनीन<sup>अ०</sup> को आगाह किया था उनको भी आगाह किया। उन्होंने भी हज़रत अली<sup>अ०</sup> की तरह जवाब दिया। उसके बाद यह वसीयत सोने से सर बमुहर कर दी गयी ताकि आग का असर न हो और वह अमीरूल मोमिनीन<sup>अ०</sup> को दे दी गयी। रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से पूछा उसमें वसीयत थी क्या? फ़रमाया–अल्लाह और रसूल<sup>स०</sup> के तरीक़े 'मैंने कहा क्या वसीयत में यह भी था कि लोग अमीरूल मोमिनीन पर जबर

। क़हर व ग़ल्बा हासिल करेंगे और उनकी मुख़लिफत पर कमर बांधेंगे फ़रमाया एक–एक चीज़ एक–एक हर्फ़' क्या तुमने ख़ुदा का यह क़ौल नहीं सुना। हम लिखते हैं उस चीज़ को जो वह कर चुके हैं और उनके निशानात को और हम ने र शय का अहसा इमामे मुबीन[अ०] में कर दिया है फिर आन हज़रत[स०] ने हज़रत अली[अ०] और हज़रत फातिमा[स०] से फ़रमाया जो कुछ मैंने तुमसे बयान किया। तुमने उसे समझ लिया और क़ुबूल कर लिया! उन्होंने कहा जी हाँ हम सब्र करेंगे हर उस चीज पर जिससे हमें रंज पहुँचे या तह हम को ग़ज़ब नाक करने वाली हो।

5: हरीज़ से मरवी है कि मैंने इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा। आप[अ०] अहले बैत हज़रत की जिन्दगी के क़द्र कम होती है हालांकि लोगों की हाजतें आपसे वाबस्ता रहती हैं फ़रमाया हममें से हर एक के पास एक सहीफा होता है जिसमें वह सब लिखा होता है जिस पर अमल करना उनके लिये जरूरी होता है और उसमें मुझे अम्ल भी दर्ज होती है पस जब वह काम हो चुकते हैं और वह जान लेता है कि उसकी मौत क़रीब होती है तो नबी अकरम स0 उसके पास आते हैं और उसकी ख़बरे वफात देते हैं और यह बताते हैं कि पेशे ख़ुदा उसका क्या मर्तबा है इमाम हुसैन अलैहिस्सल्लम ने उस सहीफा को पढ़ा और जो वाक़िआत पेश आने वाले थे उनको वाज़े किया गया और जो वाक़ियात अमल में आने से रह गये थे वह भी बताये। पस हज़रत जिहाद के लिये निकले। मलायका ने उनकी नुसरत की ख़्वाहिश अल्लाह से की 'ख़ुदा ने इजाज़त दे दी और उसके बाद वह जंग की आमादगी के लिये कुछ देर ठहरे

यहाँ तक कि हज़रत शहीद हो गये तब वह नाज़िल हुए। मलायका ने कहा परवर दिगार उसमें क्या मसलेहत थी कि तूने हमें उतरने का हुक्म दिया और नुसरत की इजाज़त दी लेकिन जब हम उतरे तो तूने उनकी रुह क़ब्ज कर ली। ख़ुदा ने वही की कि अब तुम उनकी कब्र पर रहो यहाँ तक कि तुम उनको खुरूज देखो (इशारह है खुरूज हज़रत हुज्जत की तरफ) पस तुम उनकी मदद करो और उस पर गिरया करो और जो ख़िदमत तुम ना कर सके उस पर तुमको मैंने मख़सूस किया उसकी नुसरत और बका के लिये पस मलायका महरुमी नुसरत पर रोये। अब जब रजअत में वह खुरुज करेंगे तो वह मदद करेंगे।



## इकसठवाँ बाब

## वह उमूर जो वाजिब करते हैं हुज्जते इमाम अ० को

1 : अबू बसीर से रवायत है मैंने इमाम रिज़ा[अ०] से पूछा 'जब इमाम मर जाये तो उसके बाद वाले इमाम को कैसे पहचाने', फ़रमाया–इमाम के लिये कुछ अलामात हैं उनमें से एक यह है कि वह अकबर औलादे पदर हो और उसकी फज़ीलत और वसीयत हो और जब बेरुनी मुक़ामात से लोग आयें और पूछें फलां ने अपना वसी किसको बनाया तो लोग कह दें फलाँ को यानि उसके मुताल्लिक़ शोहरत भी हो) और नबी[स०] के हथियार हममें बजाये उस ताबूत के हैं जो बनी इसराईल में था इमामत के पास हथियार होते हैं चाहे इमाम कहीं हो।

2 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा अम्रे इमामत को बजब्र लेने वाले और ग़लत दावे करनै वाले पर हुज्जत क्यों कर तमाम हो। फ़रमाया उससे हलाल व हराम के मुताल्लिक़ पूछा जाय फिर मेरी तरफ मुतवज्जे होकर फ़रमाया तीन क़िस्म की हुज्जते है जो सिवाये इमाम के किसी में नहीं पायी जाती अव्वल यह कि सब लोगों से आला व अफज़ल हो और उसके पास तबर्रूकाते रसूल[स०] हों और उसके लिये खुल्लम खुल्ला वसीयत हो कि जब लोग बेड़ या बच्चों से शहर में आकर पूछें कि फलां ने किसके मुताल्लिक़ वसीयत से शहर में आकर पूछें कि फलां ने किसके मुतालिक़ वसीयत की तो लोग कह दें कि फलाँ इबने फलाँ के मुतालिक़ की है।

3 : फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि किसी ने उनसे पूछा। मार्फते इमाम किस शय से होती है। फ़रमाया–ज़ाहिरी वसीयत और फज़ीलत सें कोई इमाम को मुँह शिकन और शर्म गाह का तअना नहीं दे सकता कि वह झूटा है माले हराम खाता है कि ज़िना का मुर्तकिब होता है।

4 : रावी कहता है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से पूछा इमाम की अलामत क्या है फ़रमाया अव्वल यह कि ताहिरूल विलादत हो दूसरे अच्छे माहौल में नश्वनुमा हुआ हो। तीसरे लहूवो लाब से उसका ताल्लुक़ न हो।

5 : रावी कहता है मैंने रिज़ा अलैहिस्सलाम से पूछा कि अम्रे इमामत पर दलील क्या है पहले यह कि औलादे अकबर हो 'दूसरे साहबे फज़ीलत हो तीसरे उसके लिये साबिक़ इमाम ने इस तरह वसीयत की हो कि लोग शहर में आकर पूछें कि फलाँ ने किसके लिये वसीयत की है तो सब कहे

फलाँ बिन फलाँ के मुताल्लिक़ और यह जहाँ कहीं जाये तबर्रूकाते रसूल (स0) उसके साथ रहें।

6 : हष्शाम इब्ने सालिम से मरवी है कि फ़रमाया। इमाम जाफ़रे सादिक़[अ0] ने अम्रे इमामत औलादे अकबर के लिये उस वक़्त है जबकि उसमें कोई ऐब न हो (यानी इल्म व फ़ज़्ल व वसीयत वग़ैरा के लिहाज़ से कोई कमी न हो।)

अबू बसरी से मरवी है, मैंने इमाम मूसा काज़िम[अ0] से पूछा कि मैं आप पर फ़िदा हूं इमाम की शिनाख़्त कैसे होती है हज़रत[अ0] ने फ़रमाया चन्द ख़सलतों से, अव्वल वह चीज़ जो उसके पिदरे बुज़ुर्गवार की तरफ़ से होती है इससे इशारा था अपने निस्ब व तअय्युन के मुतअल्लिक़ ताकि यह लोगों पर हुज्जत हो। दूसरे जब उससे सवाल किया जाये तो जवाब देने और अगर इब्तिदाए सुकूत हो तो कल की ख़बर दे और हर ज़बान में कलाम करे। मुझसे फ़रमाया। ऐ अबू मोहम्मद! यहां से उठने से पहले एक अलामत तुम्हारे सामने आने वाली है थोड़ी देर बाद एक मर्दे ख़ुरासानी आया और उसने अरबी ज़बान में गुफ़्तुगू की। हज़रत[अ0] ने उसका जवाब फ़ारसी में दिया। मर्दे ख़ुरासानी ने कहा। मैंने यह समझते हुए अरबी ज़बान में कलाम किया कि आप[अ0] फ़ारसी से बख़ूबी वाक़िफ़ न होंगे फ़रमाया। सुब्हानल्लाह अगर मैं अच्छी तरह जवाब न दूं तो फिर तुझ पर मेरी फ़ज़ीलत कैसी, फिर हज़रत ने मुझसे फ़रमाया। ऐ अबू मोहम्मद (कुन्नितय अबू बसीर) इमाम पर न किसी आदमी का कलाम पोशीदा होता है न परिन्दे का, न चौपाये का और न किसी जानदार चीज़ का। पस जिसमें यह ख़ुसूसियत नहीं वह इमाम नहीं।



## बासठवाँ बाब

# इमामत का सेबात आक़ाब में

1: इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हसन अलैहिस्सलाम व हुसैन अलैहिस्सलाम के बाद इमामत आइन्दा कभी दो भाइयों को न मिलेगी इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के बाद यह सिलसिला अली इब्नुल हुसैन से चला खुदा फरमाता है किताबे खुदा में नबी सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम के बाज़ रिश्तेदार बाज़ से बेहतर है पस अली बिन अल हुसैन के सिलसिले के बाद यह सिलसिला। औलाद दर औलाद चलता रहेगा।

2: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि अल्लाह ने नापसन्द किया उस बात को कि वह हसन अलैहिस्सलाम व हुसैन अलैहिस्सलाम के बाद अम्रे इमामत को दो भाइयों में करार दे।

3: इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से किसी ने पूछा क्या इमामत चचा और मामूं तक जायेगी। आप अलैहिस्सलाम ने कहा—नहीं—मैंने कहा क्या भाई को मिलेगी। फ़रमाया—नहीं—मैंने कहा—फिर कौन इमाम होगा। फ़रमाया—मेरा फ़र्ज़न्द जो अभी लावलद है।

4: फ़रमाया—इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इमामत नहीं जमा होगी दो भाइयों में हसन अलैहिस्सलाम व हुसैन अलैहिस्सलाम के बाद वह औलाद दर औलाद चलेगी।

5: रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा अगर खुदा न ख़्वास्ता आपका इन्तिकाल हो जाय (खुदा मुझे वह दिन न दिखलाये) तो कौन इमाम होगा हज़रत

ने अपने फ़र्ज़न्द मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ इशारह किया मैंने कहा उनके बाद फ़रमाया—उनका बेटा—मैंने कहा अगर मरने के बाद वह एक बड़ा भाई छोड़ें और बेटा छोटा सा हो तब कौन इमाम होगा। फ़रमाया – बेटा और इसी तरह एक के बाद दूसरा।



## तिरसठवां बाब

# खुदा और रसूल स० की नस अइम्मा अ० के लिए

1 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से आयत अतीउल्लाह व अतीउर्रसूल अलख के मुताल्लिक़ पूछा। फ़रमाया मैं हज़रत अली अलैहिस्सलाम और हसन अलैहिस्सलाम व हुसैन अलैहिस्सलाम के बारे में नाज़िल हुई है मैंने कहा कि लोग कहते हैं किताब खुदा में अली अलैहिस्सलाम और उनके अहले बैत का नाम नहीं फ़रमाया।

तुम उनसे कहो कि नमाज़ हज़रत पर नाज़िल हुई। लेकिन यह न बताया गया कि तीन रकअत या चार रकअत उसकी तफसीर रसूल (स0) ने बयान की?

आयते ज़कात नाज़िल हुई लेकिन यह नहीं बताया गया कि हर चालीस पर एक—उसकी तफसीर रसूलुल्लाह ने लोगों से बयान फरमायी?

आयते हज नाज़िल हुई लेकिन यह नहीं बताया गया कि सात तवाफ़ करो, यह तफसीर रसूलुल्लाह ने बयान फरमायी।

आयते–अतीउल्लाह अलख़ नाज़िल हुई। यह आयत हज़रत अली[अ0] हसन[अ0] और हुसैन[अ0] के बारे में फरमाया 'मन कुन्तो मौलाहो फअलीयुन मौलाह' और यह भी फ़रमाया। ऐ मुसलमानों 'मैं तुममें अल्लाह की किताब और अपनी अहले बैत के बारे में वसीयत करता हूँ मैंने ख़ुदा से दुआ की थी कि इन दोनों में तफरक़ा न डाले यहाँ तक कि हौज़ कौसर पर मेरे पास आयें।

और यह भी फ़रमाया कि तुम उनको तालीम न दो। वह तुमसे ज्यादा जानने वाले हैं वह तुमको बाबे हिदायत से निकलने न देंगे और बाब ज़लालत में दाख़िल न होने देंगे।

अगर रसूल (स0) साकित हो जाते और अपने अहलेबैत[अ0] को न बताते तो फलां ख़ानदान वाले अहले बैत होने का दावा कर बैठते अल्लाह तआला ने अपनी किताब में अपने नबी के क़ौल की तसदीक कर दी। फ़रमाया–अल्लाह का इरादा है कि ऐ अहले बैत हर क़िस्म के रिज्स को तुमसे दूर रखे और पाक रखे जो पाक रखने का हक़ है यह अहलेबैत[अ0] अली व फातिमा हसन[अ0] व हुसैन[अ0] हैं उनको रसूलुल्लाह (स0) ने ख़ानेए उम्मे में चादर के अन्दर दाख़िल करके फ़रमाया–ख़ुदा वन्दा हर नबी के कुछ अहल और गरांक़द्र ज़ातें होती हैं मेरे अहलेबैत[अ0] और गरांक़द्र अज़ीज़ यह हैं। उम्मे सलमा[रह0] ने कहा क्या मैं आपके अहल से नहीं। फ़रमाया तुम ख़ैर पर हो लेकिन यह मेरे अहल और सक़ल हैं।

जब रसूलुल्लाह (स0) ने वफात पायी तो अली तमाम लोगों से बेहतर थे जैसा कि रसूलुल्लाह (स0) ने बकसरत उनके बारे में फ़रमाया था और लोगों पर उनको सरदार

बनाया था और रोजे ग़दीर उन का हाथ पकड़ कर सबको उनकी जाँनशीनी की ख़बर दे दी थी जब अली का वक़्ते वफ़ात क़रीब आया तो उनकी क़ुदरत से वह बात बाहर थी कि वह अपने फ़र्ज़न्द मोहम्मद हनीफ़या या अब्बास (स0) या हसन (स0) या हुसैन (स0) के सिवा अपने किसी और बेटे को अपना जांनशीन बना देते और अगर बफ़र्जे मुहाल हज़रत अली किसी और को अपना जांनशीन बना देते तो हसन (स0) या हुसैन (स0) कहते। अल्लाह तआला ने जिस तरह आपकी फज़ीलत में आयत नाज़िल की जिस तरह आपकी इताअत का हुक्म दिया, हमारी इताअत का भी दिया है जिस तरह रसूलुल्लाह ने आपके लिये तबलीग़ की है हमारे लिये भी की है जिस तरह रिज्स से आप (स0) को दूर रखा है हमको भी दूर रखा है।

और जब हज़रत अली का इन्तिक़ाल हुआ तो इमाम हसन (स0) बसबब अपनी बुजुर्गी के सबसे बेहतर थे वक़्त इन्तिक़ाल उनकी यह ताक़त न थी कि वह अपना क़ायम मुक़ाम अपनी औलाद में से किसे बना देते और वह ऐसा न कर सकते थे जबकि ख़ुदा फरमाता है रिश्तेदारों में बाज़ बाज़ से बेहतर हैं अल्लाह की क़िताब में अगर वह अपने बेटे को बना देते तो हुसैन (स0) उनसे कहते ऐसा क्यों किया। जब अल्लाह ने मेरी इताअत का उसी तरह हुक्म दिया है जिस तरह आपकी और आपके बाप की इताअत का है रसूलुल्लाह ने मेरे बारे में भी उसी तरह तबलीग़ की है जिसे तरह आपके और आपके बाप के बारे में, ख़ुदा मुझको भी रिज्स से उसी तरह दूर रखा है जिस तरह आपको और आपके बाप को। पस जब इमामत हुसैन (स0) को मिली तो उनके ख़ानदान में

कोई ऐसा न था कि उस तरह मुद्दई इमामत होता जैसे इमाम हुसैन (अ0) अपने भाई और बाप के मुक़ाबिल हो सकते थे नेज़ यह कि वह अम्रे इमामत को इमाम हुसैन (अ0) से नहीं हटा सकते थे और न उन्होंने ऐसा किया। जब इमामते इमाम हुसैन (अ0) को मिली तो उस आयत की तावील जमा ताहिर हो गयी कि किताब ख़ुदा की रू से बाज़ रिश्तेदार बाज़ से बेहतर हैं इमाम हुसैन (अ0) के बाद अली बिन अल हुसैन की तरफ़ मुनताक़िल हुई फिर मोहम्मद बिन अली की तरफ। फ़रमाया इमाम ने रिज्स से मुराद शक है हमने अपने रब के मुताल्लिक़ कभी शक नहीं किया। अबू बसीर ने भी ऐसी ही रवायत की है।

2 : इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से रावी ने पूछा कि आया नबी मोमिनीन के नफ़्सो से ज्यादा उन पर औला बा तसर्रुफ हैं और उनकी अज़वाज मोमिनीन की मायें हैं और नबी के रिश्तेदारों में बाज़ उनसे ज्यादा औला हैं किताब ख़ुदा में किसी के बारे में नाज़िल हुई है फ़रमाया साहिबाने अम्र के बारे में नाज़िल की है और उसका हुक्म जारी हुआ है औलादे हुसैन (अ0) के बारे में उनके बाद 'पस हम उस अम्र के क़राबते रसूल (स0) के बनिस्बत मोमिनीन व मुहाजिरीन व अंसार के ज्यादा मुसतहक़ है मैं ने कहा क्या औलाद जाफ़र का भी उसमें कोई हिस्सा है फ़रमाया – नहीं मैंने पूछा और औलाद अब्बास का फ़रमाया नहीं 'फिर बनी अब्दुल मुत्तलिब[अ0] की हर शाख़ का ज़िक्र किया। फ़रमाया नहीं–औलाद इमाम हसन (अ0) का ज़िक्र करना भूल गया। बाद में मैं ने उनके मुताल्लिक़ भी पूछा। फ़रमाया–नहीं। और फिर फ़रमाया–ऐ अब्दुर्रहीम (नाम रावी) मोहम्मद (स0) के

रिश्तेदारों में हमारे सिवा किसी और का हिस्सा नहीं।

3: इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है आयत इन्नमा वलीयोकुमुल्लाह 'के मुतालिक कि उसमें वली के माने हैं तुमसे बेहतर और तुम्हारे जुम्ला उमूर और तुम्हारी जानों और मालों में सबसे जयादा अहक़ और औला बित्तसर्रुफअल्लाह और उसका रसूल है और वह साहिबे ईमान हैं यानि अली (स0) और उनकी औलाद में अइम्मा अलैहिस्सलाम क़यामत तक यह लोगों के वली हैं फिर खुदा ने उनका वस्फ यूँ बयान किया कि वह नमाज़ पढते हैं और रुकू में ज़कात देते हैं अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने नमाज़ जुहर की दूसरी रकअत में जब रुकू किया दरा हालेकि आप एकहज़ार दीनार का लिबास पहने हुए थे जो रसूलुल्लाह (स0) ने आप (स0) को पहनाया था और नजाशी बादशाह जिसने बतौर तोहफा आन हज़रत स0 के पास भेजा था मस्जिद में एक सायल आया और कहने लगा अस्सलामो अलैका या वलीयुल्लाह और मोमिनो के नफ्सों से बेहतर 'सदक़ा दो एक मिसकीन को हज़रत ने वह लिबास उतार कर उस साइल को उठा लेने का इशारा किया। खुदा ने उस पर यह आयत नाज़िल की। पस इस नेमत का सिलसिला आप की उस औलाद में भी बाक़ी रहा। जिन को मनसेब इमामत हासिल हो और उस सिफत में हज़रत अली (स0) के साथ शरीक रहे उन्होंने भी हालते रुकू में सदक़ा दिया। अमीरूल मोमिनीन (स0) जिसने सवाल किया वह मलायका में से थे और बाक़ी अइम्मा से सवाल करने वाले भी मलायका थे।

## तौजीह

मशहूर तरीन हदीस यह है कि हजरत अली अलैहिस्सलाम

ने बहालत रुकू अगूंठी दी थी लेकिन यह हदीस बताती है कि लिबास दिया। इससे मालूम हुआ कि दोबारा ऐसा वाकेआ पेश आया। एक बार अगूंठी दी, दूसरी बार लिबास, यह सूरत ऐसी ही है जैसे आन हजरत स0 को क़ई बार मेराज हुई, मगर मशहूर मेराज है दीगर अइम्मा का बहालते रुकू ज़कात देना। अगरचे हज़राते अहले सुन्नत को तसलीम नहीं। इसलिए वह विलायत अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम से इस बिना पर इन्कार करते है कि इस आयत में युकीमून यूतून व रोकऊन, जमा के सीगे है लेकिन उसके इन्कार से हकीकत पर परदा नहीं पड़ सकता। विलायत की सनद देने वाला ख़ुदा है उसने हमारे अइम्मा के उस फेल पर अपने उन मलायका को गवाह बनाया है जिन्हें बसूरते सायल उन हजरात के पास भेजा था।

4: फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा ने अपने रसूल (स0) को विलायते अली का हुक्म दिया और आयत इन्नमा वलीयोकुमुल्लाह व रसूलेही (अल्लाह तुम्हारा वली है और उसका रसूल (स0) और वह लोग जो ईमान लाये है नमाज को क़ायम करते है और ज़कात देते है दरआन्हाले कि वह रुकू में हो) और फ़र्ज़ किया विलायत वलीअम्र –को, लोगो ने न जाना कि वह क्या है–ख़ुदा ने हज़रत रसूले ख़ुदा को हुक्म दिया कि वह उनको बताएं जिस तरह नमाज जकात और सोम व हज के मुताल्लिक़ बताया है। जब हजरत के पास ख़ुदा का यह हुक्म आया तो आप दिल गिरफ्ता हुये और ये खौफ हुआ कि कहीं लोग मूर्तद न हो जाये। और हजरत को झुठलाएं नहीं उसी दिल गिरफ्तगी के हालत में आपने अल्लाह की तरफ रुजूं की। ख़ुदा ने वही की कि ऐ रसूल ! तुम्हारे रब की तरफ से जो तुम पर

नाजिल हुआ है उसे पहुंचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया तो गोया ख़ुदा की रिसालत ही को न पहुंचाया। अल्लाह तुमको दुश्मनों के शर से बचा लेगा पस ख़ुदा के उस हुक्म के मुताबिक रोज़े गदीर खुम आप (स0) ने विलायत अली का एलान किया। एक मुनादी ने नमाज के लिए जमा होने की निदा दी। आप (स0) विलायत अली का ऐलान करके फ़रमाया कि जो लोग यहाँ मौजूद है वह गायबिन तक यह खबर पहुंचा दे, सबसे इकरार लिया सिवाये अबू जारूद के– इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि एक फरीजा दूसरे के बाद नाजिल होता। विलायत आखिरी फरीजा था जिसके बाद अल्लाह ने आयत अलयौमा अकमल्तो लकुमदीनुकुम अल्ख को नाजिल किया और हजरत ने यह भी फ़रमाया कि अल्लाह कहता है कि उस फरीजे के बाद ऐ रसूल (स0) मैं और कोई आयत नाजिल न करूंगा क्योंकि मैंने अपने फरायज को मुकम्मल कर दिया

5: अबू बसीर कहते है इमाम मो0 बाक़िर अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाजिर था कि एक शख्स ने कहा – आप विलायते अली (स0) के मुताल्लिक़ बयान करें। आया यह हुक्म अल्लाह कि तरफ से था यह रसूल अल्लाह की तरफ से था? यह सुनकर हजरत गुस्सा हुये फ़रमाया रसूल अल्लाह बहुत ज्यादा खौफ करने वाले थे उससे कि खिलाफे हुक्म ख़ुदा कोई हुक्म दे। बल्कि ख़ुदा ने उस अम्रे विलायत को भी उसी तरह फ़र्ज़ करार दिया है जिस तरह नमाज जकात व रोजा और हज को।

6 : अबू जारूद ने इमाम मो0 बाक़िर अलैहिस्सलाम से रवायत की है कि मैंने हजरत को फरमाते सुना कि ख़ुदा ने बन्दों पर पांच चीजों को फ़र्ज़ किया है जिनमें से उन्होंने चार

Presented by: https://jafrilibrary.com

को लिया और एक को छोड़ दिया। मैंने कहा उसका नाम बताएं फ़रमाया अव्वल नमाज को वाजिब किया लोग नहीं जानते थे कि कैसे पढ़े–जिबराईल ने आकर कहा ऐ मोहम्मद (स0) उनको नमाज के औकात वगैरह बताएं फिर जकात का हुक्म फ़रमाया ऐ मोहम्मद नमाज की तरह उनको जकात के मसाएल भी बताएं जैसे नमाज के बताएं है। फिर रोजे का हुक्म आया जब रोज आशूरह हुआ तो आपने कुर्ब व जवार की बस्तियों में रोजे का हुक्म भेजा (फिर उस रोजे का हुक्म मनसूख हुआ) उसके बाद रमजान के रोजे फ़र्ज़ हुए। फिर हज का हुक्म आया, नमाज, जकात और रोजे की तरह आपने हज को भी समझाया। फिर विलायत का हुक्म आया रोज अरफा को जुमे का दिन था फिर यह आयत नाजिल हुई, अलयौमा अकमलतो लकुमदीनुकुम, और कमालेदीन हुआ विलायत अली का हुक्म आने के बाद – उस वक्त रसूल अल्लाह ने फ़रमाया – मेरी उम्मत अहदे जाहिलयत के अकीदे को लिए हुए है जब मैंने अपने इब्ने अम के मुताल्लिक़ ऐसा हुक्म सुनाऊंगा कि कोई यह कहेगा कोई वह, बगैर जबान पर लाये यह बात मेरे दिल में आयी, पस खुदा का एक ताकीदी हुक्म मेरे पास आया और मुझे डराया। अगर तुमने मेरे उस हुक्म की तबलीग न की तो मुझे मोअज़्ज़ब करेगा। उसके बाद यह आयत, या अय्योहर्रसूलो बल्लिग़ मा उन्ज़ेला इलैका मिर्रब्बिक–अलख़ नाजिल हुई बेशक अल्लाह काफिरों को हिदायत नहीं करता। पस रसूल अल्लाह ने अली का हाथ पकड़ा और फ़रमाया – लोगो ! मुझसे पहले कोई नबी दुनिया में नहीं आया मगर यह कि खुदा ने उसे उम्र अता फरमायी। फिर उसे अपने पास बुला लिया पस

अनकरीब मैं भी बुलाया जाऊंगा और मैं उसकी दावत को कुबूल करूंगा। खुदा के यहां मुझसे भी सवाल किया जायेगा और तुमसे भी पस तुम क्या कहोगे। उन्होंने कहा – हम उसकी गवाही देंगे कि आपने हक तबलीग व नसीहत अदा किया और जो आपकी जिम्मेदारी थी उसे पूरा किया। पस अल्लाह आपको तमाम रसूलों से बेहतर जज़ा दे। हजरत ने फ़रमाया खुदा वन्दा गवाह रहना (तीन बार) फिर फ़रमाया ऐ मुसलमानों ये अली (स0) तुम्हारा वली है मेरे बाद हाजिरीन को चाहिए यह खबर गायबीन तक पहुंचा दे, इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैह सलाम ने फ़रमाया–अली खुदा के अमीन है उसकी मखलूक पर और उसके गैब के और उसके दीन के मुहाफिज है वो दीन जिसे उसने अपनी ज़ात के लिए इन्तेखाब किया फिर रसूल अल्लाह को जो पेश आया वो पेश आया। आप (स0) ने हजरत अली (स0) को बुलाकर फ़रमाया–मैं तुमको उस चीज का अमीन बनाना चाहता हूँ जिसका अमीन मुझे खुदा ने बनाया है अपने गैब और अपने इल्म का और अपनी मखलूक का और अपने उस दीन का जिसे उसने अपनी ज़ात के लिए पसन्द किया। ऐ जियाद उसने उस फजीलत में और किसी को शरीक नहीं किया। उसके बाद एक मुद्दत गुजरने पर हजरत अली ने अपने बेटों को बुलाया जिनकी तादाद बारह थी फ़रमाया – ऐ –मेरे फ़र्ज़न्द अल्लाह चाहता है कि वह मेरे अन्दर सुन्नत याकूब को जारी करें, याकूब ने अपने बारह बेटों को बुलाकर कहा मैं तुमको आगाह करता हूँ तुम्हारे साहब के बारे में (हुक्म से यानि मेरे बाद मेरे कायम मुकाम यूसूफ हो) पस इसी तरह मैं भी तुम्हारे साहिबे हुकूमत को बताता हूँ आगाह हो कि यह दोनों बेटे

रसूल अल्लाह के हसन (स0) व हुसैन (स0) है पस उनकी बात सुनी और उनकी अताअत करो और उनकी मदद करों, मैंने उन दोनों को इन चीजों का अमानतदार बनाया। जिसका रसूल अल्लाह ने मुझे अमानतदार बनाया था अपनी खल्क पर अपने ग़ैब पर और अपने उस दीन पर जिसको उसने अपनी जात के लिए इन्तेख़ाब किया था। पस खुदा ने उन दोनों के लिए तीन चीजों को वाजिब किया है जिनको अली (स0) पर वाजिब किया था रसूल अल्लाह ने –पस उन दोनों में एक को दूसरे पर फजीलत हासिल नहीं मगर बुजुर्गी सिंन के वजह से, और हुसैन (स0) का मामूल था कि जब तब मजलिस इमाम हसन (स0) मे बैठते खामोश बैठते, फिर जब इमाम हसन (स0) की वफात का वक्त करीब आया तो उन्होनें यह अमानत इमाम हुसैन (स0) के सुपुर्द की और जब उनकी वफात का वक्त तो उन्होंने अपनी बेटी फातिमा कुबरा के सुपुर्द की तो उनको एक लिपटी हुई तहरीर दी और अल्फाज में वसीयत भी की। हजरत अली बिन अल हुसैन वाकेऐ कर्बला में मर्ज इसहाल में मुब्तिला थे यह बीमारी सब को मालूम थी फातिमा ने यह तहरीर अली बिन अल हुसैन को दी फिर खुदा की कसम यह तहरीर हम तक पहुंची।

7 : अबू बसीर से मरवी है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर से कहा कि पैरवान मुख्तार में से एक शख्स ने मुझसे कहा कि मोहम्मद हनफ़िया इमाम थे यह सुनकर हजरत को गुस्सा आया। फ़रमाया–फिर तुमने क्या कहा–मैंने कहा मेरी समझ में तो आया नहीं कि क्या कहूँ–फ़रमाया तुमने यह क्यों न कहा कि रसूल अल्लाह ने अली (स0) व हसन (स0) व हुसैन (स0) के मुताल्लिक़ वसीयत की और जब अली (स0)

के इन्तेकाल का वक्त आया तो हसन (स0) व हुसैन (स0) के मुताल्लिक़ वसीयत की और अगर वह उन दोनों से छिपाये रहते तो वह कहते कि हम दोनो आपके वसी है ? और हजरत अली ऐसा करते ही नहीं इमाम हसन (स0) ने इमाम हुसैन (स0) के लिए वसीयत की कि अगर वह ऐसा नहीं करते तो इमाम हुसैन (स0) कहते कि मैं आप का वसी हूँ रसूल अल्लाह के फरमान के मुताबिक और अपने पदर बुजुर्गवार के एलान के मुताबिक और वह ऐसा क्यों करते यानि इमाम हसन (स0) व इमाम हुसैन (स0) को वसीयत करने से क्यों कर रोकते। दरआन्हालेकि यह आयत मौजूद है बाज रिश्तेदार बाज से बेहतर है और यह वसायत तो हममे और हमारी औलाद में है।

## तौजीह

मकसद हजरत का यह था कि अगर मोहम्मद हनफ़िया इमाम होते तो जब वसायत का ऐलान हजरत अली बिन हुसैन (स0) के हक में किया गया था तो मोहम्मद हनफ़िया ने इमाम हुसैन (स0) से क्यों न कहा कि जब फरमाने रसूल व अमीरूल मोमिनीन यह हक मेरा है इनका खामोश रहना उसकी दलील है कि वह अपने को मुस्तहके इमाम नहीं जानते थे।

## चौसठवां बाब

## इशारा नस–ए–इमामत अमीरूल मोमेनीन[अ०] पर

जै़द बिन जहमिल हेलाली से मरवी है क्रि मैंने इमाम

जाफ़ारे सादिक़ अलैहिस्सलाम को कहते सुना है कि जब आयत इन्नमा वली युकुमुल्लाह नाज़िल हुई तो रसूल<sup>स०</sup> ने उन दोनों से कहा तुम अली<sup>अ०</sup> को अमीरूल मोमेनीन<sup>अ०</sup> कहकर सलाम करो और ऐ ज़ैद उस रोज़ उनसे ब–ताकीद कहा गया यह रसूलुल्लाह<sup>स०</sup> का फ़रमाना। उन्हीं दोनों से था कि खड़े होकर अली<sup>अ०</sup> को या अमीरूल मोमेनीन<sup>अ०</sup> कह कर सलाम करो। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह<sup>स०</sup> यह हुक्म ख़ुदा की तरफ़ से या उसके रसूल<sup>स०</sup> की तरफ़ से, रसूलुल्लाह<sup>स०</sup> ने उन दोनों से फ़रमाया यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से है और उसके रसूल<sup>स०</sup> की तरफ़ से भी, पस ख़ुदा ने यह आयत नाज़िल की। ताकीद के बाद अपने अहदों को मत तोड़ो, तुमने अल्लाह की किफ़ायत अपने ऊपर ले ली। बेशक जो तुम करते हो अल्लाह उसे जानता है और इससे मुराद है रसूलुल्लाह<sup>स०</sup> का उनसे कहना और फिर उनका यह पूछना कि यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से या रसूल<sup>स०</sup> की तरफ़ से यानी उन्होंने इस क़ौल को मुवक्कद कराना चाहा। रसूलुल्लाह<sup>स०</sup> ने यह फ़रमा कर और ज़्यादा मज़बूत कर दिया कि अल्लाह और रसूल<sup>स०</sup> दोनों की तरफ़ से है फिर ख़ुदा ने फ़रमाया। तुम उस औरत की तरह न बनो जिसने सूत को काता और धागे बंटकर तोड़ डाले कि अपने अहदों को इस बात की मक्कारी का जरिया बनाने लगो कि एक गिरोह के नाम ज्यादा पाकीज़ा हो तुम्हारे इमामों से। मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ सूरह नहल की उस आयत में तो लफ्ज़ उम्मत हैं और आपने अइम्मा फ़रमाया। इमाम ने फ़रमाया नहीं आईमा ही है मैंने कहा हम उस आयत को यूं पढ़ते हैं। उस औरत के ऐसे न बनो जो अपना सूत मजबूत कातने के बाद टुकड़े

कर के तोड़ डाले कि अपने अहदों को उस बात की मक्कारी का जरिया बनाये कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से ख़्वाहमख़्वाह बढ़ते जाये उससे ख़ुदा बस तुमको आज़माता है इसमें उम्मत की जगह हुजूर (स0) ने अइम्मा फ़रमाया है और अरबी (ज्यादा) की जगह अज़की (पाकीज़ा) फ़रमाया 'आपने फ़रमाया अरबी क्या है पस आप (स0) ने ताज्जुब के साथ हाथ उठाया और फिर गिरा दिया और फ़रमाया–अल्लाह उससे तुम्हारी आज़माइश करता है उससे मुराद यह है कि अली (स0) के ज़रिये तुम्हारी आज़माइश करता है ताकि रोज़े क़यामत इन बातों को ज़ाहिर कर दे जिनमें तुम इख़्तिलाफ करते थे।

अगर ख़ुदा चाहता तो तुमको एक ही गिरोह बना देता। लेकिन वह जिसको चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसको चाहता है हिदायत करता है रोज़े क़यामत जो कुछ तुम कर चुके हो उसके मुताल्लिक़ पूछा जायेगा। अपनी क़समों को मक्कारी का ज़रिया न बनाओ। वरना तुम्हारे क़दम जमने के बाद उखड़ जायेंगे (यानि अली (स0) के बारे में जो रसूलुल्लाह (स0) ने कह दिया है) और तुम राहें ख़ुदा से हटाने (अली (स0) की राह से) की सज़ा में जहन्नुम का मज़ा चखोगे।

2: अबू हमज़ा समाली ने रवायत की है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना कि जब हज़रत रसूले ख़ुदा की नबुवत का वक़्त खत्म हुआ और उनके दिन पूरे हो गये तो अल्लाह ने उन पर वही की– ऐ मोहम्मद तुमने अपनी नबुवत का दौर पूरा कर दिया और अपना ज़माना खत्म कर दिया। पस जो इल्म व ईमान व इस्में अकबर और मीरासे इल्म और आसार नबुवत तुम्हारे पास है वह अपने अहले बैत

में से अली बिन अबी तालिब के सुपुर्द कर दो मैं नही मुनक़ता करुँगा इल्म व ईमान व इस्मे अकबर और मीरास व आसारे नबुवत को तुम्हारी जुर्रियत से उसी तरह जिस तरह मैंने नही क़तअ किया इन चीज़ो को जुर्रियाते अम्बिया अलैहिस्सलाम से।

3: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि वसीयत की मूसा ने यूशा बिन नून को और यूशा बिन नून ने औलादे हारुन[अ०] व मूसा[अ०] को, की अल्लाह तआला जिस गिरोह में से जिसको चाहता है इन्तेख़ाब कर लेता है और बशारत दी मूसा[अ०] व यूशा[अ०] ने मसीह[अ०] के आने की पस जब ख़ुदा ने मसीह को मबऊस किया तो उन्होंने कहा कि मेरे बाद औलादे इस्माईल से एक नबी आने वाला है जो मेरी तसदीक़ भी करेगा और तुम्हारी भी और (इन्जील व तौरेत के मनसूख़ होने में) मेरे लिए अज्र होगा और तुम्हारे लिए भी और उसके बाद उसके मख़सूसीन और मुस्तहफ़ेज़ी कहलायेंगे क्योंकि अल्लाह ने उनका यही नाम रखा है क्योंकि वह हिफाज़त करने वाले होंगे इस्में अकबर की और यह वह किताब है जिससे हर शय जानी जाती है जो अम्बिया अलैहिस्सलाम के पास थी जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है हमने तुमसे पहले रसूलों को भेजा और हमने उनके साथ किताब व मीज़ान नाज़िल की। किताब इस्में अकबर है जो मशहूर है तौरेत व इन्जील व फुरकान से लेकिन इतना है नही। इसमे किताब नूह व सालेह व शोएब व इब्राहीम भी है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि यह पहले सहीफ़ों इब्राहीम व मूसा में भी है सहफ इब्राहीम कहाँ हैं सहफ इब्राहीम और सोहोफ़े मूसा इस्में अकबर है वह वसीयत एक आलिम के बाद दूसरे आलिम की तरफ मुन्तक़िल होती रही यहाँ तक कि उसका सिलसिला हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स०) तक पहुँचा। जब हज़रत माबूस हुए तो ईमान लाये उन

पर दीन की हिफ़ाजत करने वाले एक़ाब और झुठलाया उनको बनी इसराईल ने 'रसूले ख़ुदा ने अल्लाह की तरफ लोगों को बुलाया और राहे ख़ुदा में जिहाद किया। फिर ख़ुदा ने वही की कि अपने वसी के फज़ायल का एलान करो। अर्ज की परवरदिगार! यह क़ौमे अरब जाहिल है इनमें न कोई किताब आयी न कोई नबी मबऊस हुआ। वह अम्बिया की नबुवत के फ़ज़ल व वशरफ को जानते ही नहीं। वह मुझ पर ईमान न लायेंगे अगर मैं उनको अपने अहले बैत की फ़ज़ीलत से आगाह कर दूंगा। ख़ुदा ने फ़रमाया उनके बारे में तुम ग़म न करो' तुम उनके सामने अपने वसी की फ़ज़ीलत का ज़िक्र करो 'उनके कुलूब में नेफाक पैदा हो जाएगा। पस रसूलुल्लाह ने जान लिया कि यह होने वाला है। ख़ुदा ने कहा – ऐ मोहम्मद हम जानते है कि जो कुछ यह लोग कहते है तुम्हारे सीने में उससे तन्गी होती है बेशक वह तुम्हें नहीं झुठलाते बल्कि यह ज़ालिम आयाते ख़ुदा से इन्कार करते है और यह उनका इन्कार बगैर हुज्ज़त व दलील के है रसूलुल्लाह उनकी तालिफे क़ल्ब करते थे और बाज के मुक़ाबिल बाज से मदद लेते थे और बराबर अपने वसी की कोई न कोई फ़ज़ीलत बयान करते रहते थे यहाँ तक कि सूरः अलम नशरह नाज़िल हुआ। पस जब अपनी मौत का इल्म हुआ तो लोगों को अपनी मौत की खबर दी और उस आयत से लोगों पर हुज्ज़त कायम की ऐ रसूल (स0) जब तक तुम कार नबूवत से फारिग़ हो जाओ तो अपना जानशीन मुकर्रर कर दो और अपने रब की तरफ चले आओ यानि अपने वसी की जानशीनी का ऐलान ऐलानिया करो और सबके सामने उनकी फ़ज़ीलत बयान करो। तब हज़रत ने फ़रमाया जिसका मैं

मौला हूँ उसका अली<sup>अ०</sup> मौला है ख़ुदा दोस्त रखे उसे जो अली<sup>अ०</sup> को दोस्त रखे और दुश्मन रखे उसे जो अली<sup>अ०</sup> रखे (तीन बार फ़रमाया)......... अलबत्ता मैं ऐसे को वसी बना रहा हूँ रसूल<sup>स०</sup> को दोस्त रखता है और अल्लाह और रसूल<sup>स०</sup> उसे दोस्त रखते है वह ऐसे लोगों से दूर रहता है जो अल्लाह और जो अपने साथियों को बुज़दिल बताते थे और साथ ही उनको 'और यह भी फ़रमाया – अली सैय्यदुल मोमिनीन हैं अली अमूदुद् दीन है यहीं वह है जो मेरे बाद हक़ पर लोगों की गरदने मारेंगे अली<sup>अ०</sup> जिस तरफ माईल होंगे हक़ उनके साथ होगा और फ़रमाया। मैं तुममे दो चीज़े छोड़े जाता हूँ अगर तुमने उनको पकड़े रखा तो हरगिज गुमराह न होगे वह दोनों एक अल्लाह की किताब है और दूसरे मेरे अहले बैत मेरी इतरत' लोगों! मेरी बात सुनो 'मैंने अम्रे हक़ की तबलीग़ कर दी' तुम अनक़रीब हौज़ कौसर पर मेरे पास आओगे मैं तुमसे इन दोनों गरांक़दर चीज़ों के मुताल्लिक़ सवाल करुंगा यानि अल्लाह की किताब और अपनी इतरत के मुताल्लिक़ तुम उन पर सबक़त न ले जाओ। वरना हलाक हो जाओगे और उनको सिखाओ – पढ़ाओ मत 'वह तुमसे ज्यादा जानने वाले हैं पस आन हज़रत के उस क़ौल से उन पर हुज्ज़त तमाम हो गयी और ख़ुदा के उस किताब से जिसे लोग पढ़ते हैं पस अहले बैत की फज़ीलत' रसूल<sup>स०</sup> के कलाम 'कुरआन के बयान से लोगों पर ज़ाहिर होती रही। जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है' ख़ुदा इरादा रखता है कि ऐ अहले बैत! ख़ुदा तुमसे हर किस्म की नजासत को दूर रखे और पाक रखे जो हक़ पाक रखने का है।

और अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया जो माले

ग़नीमत तुमको मिले उसका पाँचवा हिस्सा अल्लाह और रसूल (स0) और जविलकुर्बा का है और फ़रमाया जविलकुर्बा का हक़ अदा करो। उससे मुराद अली है और उनका हक़ वह वसीयत थी जो उनके लिए की गई थी और इस्में अकबर और मिरासेइल्म आसार नबुवत थे और फ़रमाया – ऐ रसूल (स0) तुम कह दो कि मैं तुमसे जविलकुर्बा की मोहब्बत के सिवा और कुछ नहीं चाहता और फ़रमाया जब मवद्दत के मुतालिक़ सवाल किया जायेगा कि किसी बिना पर क़त्ल किया गया यानि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं तुमसे सवाल करुंगा उस मवद्दत के मुताल्लिक़ कि जिनकी फ़जीलत तुम पर नाज़िल की गयी थी तुमने किस गुनाह पर उनको क़त्ल किया और अल्लाह तआला यह भी फ़रमाता है कि अगर तुम नहीं जानते तो अहले ज़िक्र से पूछो और ज़िक्र से मुराद किताब है और अहले जिक्र आल मोहम्मद अलैहिस्सलाम है ख़ुदा ने उनसे सवाल करने का हुक्म दिया है नहीं हुक्म दिया है उनको जाहिलों के सवाल का और अल्लाह ने कुरआन का नाम ज़िक्र रखा है जैसा कि फ़रमाता है और हमने रसूल (स0) ज़िक्र को तुम पर नाज़िल किया है ताकि तुम लोगों से बयान कर दो। जो उनके लिए नाज़िल किया गया है ताकि वह ग़ौर व फिक्र करें।

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह ज़िक्र है तुम्हारे लिये और तुम्हारी क़ौम के लिए और अनक़रीब तुमसे पूछा जायेगा और फ़रमाया अल्लाह ने अल्लाह की इताअत करो और इताअत करो रसूल[स0] और जो तुमने इताअत है उनकी और यह भी फ़रमाया अगर तुम अपने मामले में रूजूअ करोगे अल्लाह की तरफ और रसूल और उलिल अम्र की तरफ और

उनमे जो इस्तिम्बात करने वाले हैं वह उसको बता देंगे पस जिन उलिल अम्र की तरफ रूजूअ का हुक्म दिया गया है वह वही है जिनकी इताअत का हुक्म है जब रसूले ख़ुदा हज्जे आख़िर से वापस हुए जो जिबरईल आयत–या अय्योर्हरसूला बल्लिग़ अलख़ लेकर आये। यानि ऐ रसूल^स० जो तुम पर नाज़िल किया गया है उसे पहुँचा दो और अगर तुमने यह काम न किया तो तुमने कारे रिसालत ही अन्जाम न दिया और अल्लाह को लोगों को शर से बचाने वाला है और अल्लाह काफिरो के गिरोह को हिदायत नही देता फिर मुनादी ने निदा दी। सब लोग जमा हो गये आप^स० ने बबूल के दरख्तों के मुताल्लिक़ हुक्म दिया कि उनके कांटों को झाड़ू से समेटा जाये।

फिर फ़रमाया लोगों! बताओ तुम्हारा वली तुम्हारे नफ़्सो से बेहतर कौन है उन्होंने कहा कि अल्लाह और उसका रसूल^स० 'फ़रमाया पस जिसका मैं मौला हूँ उसका अली मौला है ऐ ख़ुदा दोस्त रख उसको जो उसे दोस्त रखे और दुश्मन रख उसको जो उसे दुश्मन रखे तीन मर्तबा यह कलेमात कहे। पस क़ौम के दिल में नफाक का कांटा खटका और कहने लगे। ख़ुदा ने ऐसा हुक्म मोहम्मद पर हरगिज नाज़िल नही किया बल्कि वह उससे अपने इब्ने इम्म का मर्तबा बुलन्द करना चाहते है जब हज़रत मदीना आये तो अन्सार ने हाज़िर खिदमत होकर कहा या – रसूलुल्लाह ख़ुदा^स० ने हम पर अहसान किया है और आपकी वजह से हमें शरफ़ बख्शा है आप^स० के ज़हूर से हमारे दोस्त खुश हुए और दुश्मन दिल सोखता आप^स० के पास एतराफ व जवानिब से वफ्द आया करते है और आप^स० के पास कोई चीज़ उनको देने के

लिए नहीं इस बिनाह पर हमारे दुश्मन शमातत करते है हम चाहते है कि हम में से हर एक का तिहाई माल आप ले ले ताकि मक्का का वफ्द जब आये तो आप के पास उनको देने के लिए माल हो हज़रत ने कोई जवाब न दिया और मुन्तज़िर वही रहे। जिबरईल नाज़िल हुए और कहा कि ऐ रसूल आप<sup>स॰</sup> उनसे कह दे कि मसें सिवाय अपने जुल्कुर्बा कि मोहब्बत के और कुछ नहीं चाहता। फिर आयते खुमुस नाज़िल हुई तो मुनाफिक कहने लगे – रसूल चाहते है कि हमारे अमवाल और माल गनीमत में से अपने अहलेबैत<sup>अ॰</sup> को दे। पस जिबरईल आये और कहा ऐ मोहम्मद आपने नबुवत को पूरा कर दिया और अपने अय्याम को खत्म कर दिया। लिहाजा अब इस्मे अकबर 'मिरासे इल्म और आसारे इल्म नबुवत' अली<sup>अ॰</sup> के सुपुर्द कर दो' मैं इस हाल में ज़मीन को नहीं छोड़ूंगा कि उसमें कोई ऐसा इल्म न हो' जिससे मेरी इताअत और मेरी वलायत का तआरुफ हो और हुज्ज़त हो उन लोगों के लिए जो नबी की वफात के बाद वसी यानि बारहवें इमाम के खुरुज तक पैदा हों। पस हज़रत ने वसीयत की अली<sup>अ॰</sup> को इस्मे अकबर की और मिरासे इल्म और आसारे इल्म नबुवत और वसीयत की हजार कलमों की और हजार बाब की कि हर एक कल्मा और हर बाब से हर कल्मे और हजार बाब मुन्कशिफ हुए।

4: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़<sup>अ॰</sup> ने कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाह<sup>स॰</sup> ने अपने मरज़ेमौत में मेरे पास खलील को बुलाओ पस दोनों बीबियों ने अपने अपने बाप को बुला लिया। जब उनको रसूल<sup>स॰</sup> ने देखा तो अपना मुँह फेर लिया और फ़रमाया मेरे दोस्त को बुलाओ पस अली को

बुलाया गया। हज़रत उन पर झुके और बातें कीं। जब अली^अ० निकले तो दोनों ने पूछा आप^अ० से आप^अ० के ख़लील ने क्या कहा। फ़रमाया – मुझे हज़ार बाब इल्म के तालीम किये और हर बाब से हजार बाब मेरे ओर मुन्कशिफ़ हो गये।

5: इमाम मोहम्मद बाक़िर^अ० से मरवी है कि रसूलुल्लाह^स० ने अली^अ० को हजार हर्फ तालीम किये और हजार हर्फ और उन पर मुन्कशिफ हुए।

6: इमाम जाफर सादिक़^अ० ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह^स० के कब्जै शमशीर में एक छोटा सा सहीफा था। अबू बसीर कहते है – मैनें पूछा उस सहीफे में क्या था फ़रमाया वह हरुफ थे कि हर हर्फ से हजार हर्फ और जाहिर होते थे और यह भी फ़रमाया कि उनमें से दो हर्फ भी अब तक जाहिर नही हुए।

7: रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़^अ० से कहा– मैं आप पर फिदा हूँ मय्यत के गुसल के पानी की हद क्या है फ़रमाया कि रसूलुल्लाह^स० ने अली^अ० से कहा कि अगर मैं मर जाऊं तो चाहे ग़र्स (मदीना का कुआँ) से छह बड़े डोल पानी के लेना मुझे गुसल व क़फन देना और हुनूत करना और जब गुस्ल व क़फन से फारिग़ होना तो मुझे क़फन समेत बिठा देना और जो चाहना दरयाफ्त करना। पस खुदा की क़सम जो तुम पूछोगे जवाब दूंगा।

8: फ़रमाया इमाम ज़ाफ़र सादिक़^अ० ने जब रसूलुल्लाह^स० की मौत का वक़्त आया तो हज़रत अली^अ० को अपनी रिदा में दाखिल करके फ़रमाया – तुम मुझे गुसल व क़फन देना फिर मुझे बिठाना और जो चाहना पूछ लेना।

9: यूनुस बिन रबात से मरवी है कि मैं और कामिल

तम्मार इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के पास आये। कामिल ने कहा—मैं आप पर फिदा हूँ एक हदीस फलाँ बिन फलाँ बयान करता है फ़रमाया बयान करो वह क्या है कि नबी[स०] ने अली[अ०] को बवक्ते वफात एक हजार बाब इल्म के तालीम फ़रमाये और हर बाब से इल्म का एक एक हजार बाब और खुल गए। फ़रमाया ठीक है मैंने कहा कि आपके शियों या दोस्तो को यह मालूम है फ़रमाया एक बाब या दो बाब 'मैंने कहा आपकी फ़जीलत से नही बयान किये जाते मगर एक या दो बाब के फ़रमाया अनकरीब तुम हमारी फ़जीलत से न बयान करोगे मगर एक अलिफ़ गै़र मरबूत यानि बहुत ही कम।



## चौंसठवां बाब (अलिफ़)

# इशारा और नसे इमाम हसन अ०

1: सलीम बिन कैस से मरवी है कि मैं उस वक़्त मौजूद था जब अमीरुल मोमिनीन[अ०] ने अपने फर्ज़न्द हसन[अ०] के मुताल्लिक़ वसीयत की। मैं गवाही देता हूँ कि उस वक्त इमाम हुसैन[अ०] 'मोहम्मद हनफ़िया[अ०] और हज़रत अली[अ०] की तमाम औलाद और आपके शिया रूउसा अहलेबैत[अ०] मौजूद थे। हज़रत ने किताब और सलाह इमाम हसन[अ०] को देकर फ़रमाया – बेटा रसूलुल्लाह[स०] ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हारे लिए वसीयत करुं और अपनी किताबें और हथियार उसी तरह तुम्हें दूं जिस तरह रसूलुल्लाह[स०] ने अपनी किताबें और हथियार मुझे दिये और मुझे हुक्म दिया कि तुम्हे हुक्म दूं कि जब तुम्हारी वफात का वक़्त करीब आये तो यह चीज़ अपने भाई हुसैन के सुपुर्द करना। फिर हुसैन से फ़रमाया –

रसूलुल्लाह[स०] ने तुमको हुक्म दिया है यह चीज़े अपने उस बेटे के सुपुर्द करना और अली बिन अलहुसैन का हाथ पकड़ कर कहा तुमको रसूलुल्लाह[स०] ने हुक्म दिया है कि यह चीज़े अपने बेटे मोहम्मद बिन अली के सुपुर्द करना और रसूलुल्लाह की और मेरी तरफ से उनको सलाम कहना।

2: इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से मरवी है कि जब अमीरुल मोमिनीन[अ०] की वफात का वक़्त आया तो अपने बेटे इमाम हसन[अ०] से फ़रमाया कि मेरे पास आओ ताकि वह इसरार तुम्हें तालीम करुं जो रसूलुल्लाह[स०] ने मुझे तालीम किये और अमीन बनाऊं उन चीज़ों का जिनका रसूलुल्लाह[स०] ने मुझे अमीन बनाया उसके बाद असरार इमामत आप[स०] ने तालीम किये।

3: रावी कहता है कि जब हज़रत अली[अ०] कूफ़ा की तरफ रवाना हुए तो अपनी किताबें उम्मे सलमा के सुपुर्द कीं और वसीयत भी कि जब इमाम हसन[अ०] मदीना आये तो उम्मे सलमा ने वह चीज़े उनके सुपुर्द कर दी।

4: जब हज़रत अली[अ०] कूफ़ा रवाना हुए तो अपनी किताबें जनाब उम्मे सलमा को दीं और वसीयत भी की कि जब इमाम हसन[अ०] मदीना आये तो उम्म सलमा उनके सुपुर्द कर दी।

5: इमाम बाक़िर[अ०] से मरवी है फ़रमाया अमीरुल मोमिनीन[अ०] ने वसीयत की इमाम हसन[अ०] को और गवाह किया अपनी वसीयत पर इमाम हुसैन[अ०] और मोहम्मद हनफ़िया[अ०] और अपनी तमाम औलाद और रुसा शिया और अपनी अहलेबैत[अ०] को फिर अपनी किताब और तब्रकात इमाम हसन[अ०] को दिये और फ़रमाया – मुझे रसूलुल्लाह ने हुक्म दिया है कि तुमको अपना वसी बनाऊं और किताब व हथियार उसी तरह तुम्हारे

हवाले कर दूं जिस तरह रसूलुल्लाह स0 ने मेरे हवाले किये थे और तुमको हुक्म दूं कि जब तुम्हारी मौत आये तो यह चीज़े अपने भाई हुसैन अ0 के सुपुर्द करना। फिर अपने फ़र्ज़न्द हुसैन अ0 से फ़रमाया – रसूलुल्लाह स0 ने मुझे हुक्म दिया है कि तुम यह चीज़ें अपने फ़र्ज़न्द अली अ0 बिन हुसैन अ0 के सुपुर्द कर देना और अली अ0 बिन हुसैन अ0 से फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ने हुक्म दिया है कि तुमको अपने फ़र्ज़न्द मोहम्मद अ0 बिन अली अ0 को देना और रसूलुल्लाह स0 की और मेरी तरफ से उनको सलाम कहना। फिर इमाम हसन अ0 से फ़रमाया तुम वली अम्र हो और क़सास लेने के मजाज़ हो अगर मैं क़त्ल हो जाऊ तो तू एक जर्ब के बदले एक ही ज़र्ब लगाना और ज्यादती करके गुनहगार न होना।

6: रावी कहता है कि जब अमीरुल मोमिनीन को मस्जिद में ज़र्ब लगी तो अयादत करने वाले लोग जमा हुए और कहने लगे ऐ अमीरुल मोमिनीन वसीयत कीजिए। फ़रमाया मेरी पीठ के पीछे तकिया लगाओ। फिर फ़रमाया – हम्द है उस ज़ात के लिए जिसके अम्र के ताबेअ बक़द्र अपनी ताकत के हम्द करते है और मैं हम्द करता हूँ उसकी जो उसे पसन्द है कोई माबूद नहीं सिवाय अल्लाह के वह वाहिद व अहद व समद है ऐ लोगों! हर शख्स मुलाकात करेगा उससे जिससे बचने की कोई राह नहीं। मौत हर नफ्स को अपनी तरफ खिचने वाली है और जिससे भागना बेसूद है बहुत दिन ऐसे आये कि मैंने उस अम्र को आशकारा करना चाहा लेकिन ख़ुदा को उसका पोशीदा रखना ही मंजूर हुआ उस अम्र मकनूं पर इत्तिला पाना बहुत दूर है मेरी वसीयत यह है कि अल्लाह की ज़ात में किसी को शरीक मत

करो और सुन्नत मोहम्मद मुस्तफ़ा को ज़ाया न करो और दीन के इन दोनों सतूनों को कायम करो और इन दोनों चिरागों को रोशन रखो 'तुम्हारी फर्द गुज़ास्त काबिले मजम्मत होगी हर शख़्स को तकलीफे दी गई बक़द्र उसकी ताकत के और जाहिलों के बार को हल्का किया गया है यानि जो नही जानते उसमें फतवा न दो। तुम्हारा रब रहीम है तकलीफ माला युताक़ नही देता और तुम्हारा इमाम हर मुश्किल का जानने वाला हैं और तुम्हारा दीन उस्तवार है मैं कल तुम्हारा हाकिम था और आज तुम्हारे लिए इबरत हूँ और कल तुमसे जुदा होने वाला हूँ।

अगर उस मंजिल पर कदम जमे रहे (मैं जिन्दा रहा) तो मुराद बरायी और अगर कदम में लगजिश हुई (मौत आ गयी) तो हम हैं ही शाखों के साये में हवा की गुजरगाह में 'बादल के साये में उफुक़े आसमान पर फैल कर हल्का पड़ चुका है और जमीन व आसमान में उसके अजज़ा मुतफ़र्रिक़ हो चुके हैं मेरा बदन कुछ दिन तुम्हारा हमसाया बना। फिर मेरा यह जिस्म तुम्हारे सामने होगा जो एक क़ालिबे बेरुह होगा साकिन होगा हरकत के बाद खामोश होगा गोयाई के बाद' अलबत्ता तुम्हारे लिए मेरी खामोशी पंदआमोज होगी और मेरे पुर अज़जियाये कलाम का खत्म होजाना और मेरे अजज़ा का बेहिस हो जाना तुम्हारे लिए नसीहत करने वाला होगा। ई तौर की एक नातिक़ बलीग़ खामोश है और वादा करना ऐसी ज़ात को जो तुम्हारी मुलाकात का मुश्ताक रहता है कल रोज़ क़यामत तुम मेरी हुकुमत को देखोगे उस रोज़ ख़ुदा वन्दे आलम उन इसरार को जो मेरे दिल में मखफी हैं आशकारा करेगा तब तुम पहचानोगे मुझे 'मेरे यह मकान खाली करने के बाद और मेरी जगह मेरे ग़ैर के आने के बाद (यानि एराफ

वसराफ व कौसर वगैरह पर मुझे पहचानोगे) अगर मैं बाकी रहा। यानि उस जर्ब के बाद जिन्दा रह गया तो अपने खून का वली मैं खुद होउंगा और अगर मर जाऊं तो फना मेरी वायदागाह है और अगर मैं माफ कर दूं तो मेरे लिये यह अफ़्वू दर्जए कराबत ईज़दी होगा और तुम्हारे लिए नेकी' पस अफ़्व करो और दरगुजर करो। क्या तुमको यह पसन्द नहीं कि खुदा तुम्हारे गुनाह बख्श दे पस लोगों हैरत का मुकाम है हर गफलत पर उसकी इस पर हुज्ज़त करार पायी और उसकी जिन्दगी का ज़माना बद बख्ती में गुजरा हो। ख़ुदा हमें और तुम्हें उन लोगों में से करार दे जिन्होंने ताअत ख़ुदा में कोताही नही की और बरग़बते इबादत करते है और मरने के बाद उनके लिंए अजाब न हों' हमारा नेकी करना ओर बदी से बचना सब अल्लाह की मदद से है फिर इमाम हसन[अ०] से फ़रमाया – एक जर्बत के बदले में तुम क़ातिल को एक ही जर्ब लगाना और ज्यादा करके गुनाह न क़रना।

7: रावी कहता है कि जब इब्ने मुल्जिम ने हज़रत अली[अ०] को जर्ब लगायी तो आप ने इमाम हसन[अ०] से फ़रमाया– अगर मैं मर जाऊं तो इब्ने मुल्जिम को क़त्ल करके कूफा के कूड़ेघर में दबा देना।



## पैसठवां बाब (अलिफ)

## इशारा नस्से इमामत इमाम हुसैन अ०

1: रावी कहता है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से सुना कि जब इमाम हसन[अ०] की वफात का वक़्त आया तो इमाम हुसैन[अ०] से कहा – ऐ बरादर मैं तुमको एक़ वसीयत

करता हूँ उस पर नजर रखना जब मैं मर जाऊं तो मेरा जनाज़ह तैयार करना, मेरा रुख़ कब्रे रसूल[स0] की तरफ करना ताकि उनसे अपने अहद को ताजा करुं फिर मेरा रुख़ वालिदा गिरामी की कब्र की तरफ करना, फिर मुझे बक़ी अ0 में दफन कर देना और जान लो कि मुझे आयशा की तरफ से वह तकलीफ पहुँचेगी जिसे अल्लाह भी जानता है और वह लोग भी उसकी कारगुजारी को समझते है कि उनको अल्लाह और उसके रसूल[स0] की तरफ से हम अहले बैत से जो अदावत है पस जब इमाम हसन[अ0] का इन्तेक़ाल हो गया और जनाज़ह तैयार हुआ और उनको ले गये मस्जिद रसूल में इस मुकाम पर जहाँ आन हज़रत मुर्दो पर नमाज़ पढ़ा करते थे तो इमाम हुसैन[अ0] ने नमाजे जनाज़ह पढ़ी और उसके बाद कब्रे रसूल की तरफ चले तो एक इब्लीस सफत ने जाकर आयशा को खबर कर दी।

2: उसने कहा कि लोग हसन[अ0] का जनाज़ह लेकर आये है ताकि रसूलुल्लाह[स0] के पास दफन करें यह सुनकर वह एक ज़ीन कसे हुए ख़च्चर पर सवार होकर निकलें और वह इस्लाम में सबसे पहली बीबी थीं जो ज़ेन पर सवार हुई और उन्होंने कहा तुम ऐ नबी हाशिम अपने बेटे को मेरे घर से ले जाओं यह मेरे घर में दफन न होंगे और उसके और रसूल[स0] अल्लाह के दरमियान परदा चाक न होगा।

इमाम हुसैन[अ0] ने उनसे कहा कि आप तो यह परदा पहले ही अपने बाप के लिए चाक कर चुकी है पहलुए रसूल में उनको जगह दे चुकें जिनका कुर्ब रसूल[स0] को पसन्द न था आपको पेश ख़ुदा उसका जवाब देना होगा।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ0] से मरवी है कि जनाब (स0) की वफात

का वक़्त करीब आया तो क़म्बर से फ़रमाया। दरवाज़े पर आले मोहम्मद[स०] के सिवा कोई और तो नहीं। मैंने कहा अल्लाह और उसका रसूल और फ़र्ज़न्द बेहतर जानते है कि और कोई नहीं। फ़रमाया तुम जाकर मोहम्मद हनफ़िया को बुला लाओ मैं उनके पास गया। उन्होंने कहा खबर तो है आपको इमाम हुसैन[अ०] ने बुलाया है उन्होंने जल्दी से जूते के बन्द बांधे जो जल्दी में ठीक न बंध सके और दौड़ते हुए आये जब हज़रत के पास पहुँचे तो सलाम किया। इमाम हुसैन[अ०] ने फ़रमाया बैठो तुम जैसा और कौन है जो उस कलाम को सुनें 'जिससे मुर्दे जिन्दा हो जाते है और जिन्दा मर जाते हैं। तुम ज़र्फ़े इल्म बने रहो और चिराग़ हिदायत दिन की रोशनी बाज़ हिस्से की बाज़ से ज्यादा तेज होती हैं। तुम नहीं जानते कि अल्लाह ने औलादे इब्राहीम व इब्राहीम को इमाम बनाया और बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी और दाऊद को ज़बूर अता की और तुमको मालूम है कि हज़रते रसूले खुदा[स०] के बाद भी यहीं तरीका जारी रहा।

ऐ मोहम्मद बिन अली मैं तुमको हसद से डराता हूँ खुदा ने उस हसद का वसफ काफिरों के लिये बयान किया है जैसा कि फ़रमाया है वह काफिर हैं हसद करते है अपनों ही से बाद उसके कि हक़ उन पर जाहिर हो चुका है और ऐ मोहम्मद बिन अली अल्लाह तआला तुम पर शैतान को क़ाबू न दें। क्या मैं तुमको आगाह करुं जो मैंने तुम्हारे बारे में तुम्हारे बाप से सुना है उन्होंने कहा – ज़रुर 'फ़रमाया – मैं यौम बसरह (जंगे जमल) तुम्हारे पदरे बुज़ुर्गवार को कहते सुना कि जो चाहता है कि दुनिया व आखिरत में मुझसे नेकी करे उसको चाहिए कि मेरे बेटे मोहम्मद से नेकी करे' ऐ मोहम्मद बिन अली अगर तुम चाहो तो मैं तुमको आगाह कर दूं उस वक़्त से जबकि तुम बसूरते नुत्फा अपने बाप की पुश्त में थे। ऐ मोहम्मद बिन अली क्या तुम नहीं जानते कि

इमाम हुसैन[अ०] ने फ़रमाया था मेरी वफात के बाद (यह) इमाम है मेरे बाद' और खुदा के नजदीक यह किताब में हैं और यह विरासत है नबी की – जिसको अता किया इमाम हुसैन[अ०] को अल्लाह ने उनके माँ बाप की तरफ से खुदा के इल्म में यह था कि ऐ बनी हाशिम! तुम उसकी मखलूक़ मे सबसे बेहतर हो। पस नबी हाशिम में से उसने मोहम्मद का इन्तेखाब किया और मोहम्मद[स०] ने अली को मुन्तखिब किया और इमाम हसन[अ०] ने फ़रमाया अली ने मुन्तखब किया और फ़रमाया मैं हुसैन[अ०] को मुन्तख़ब करता हूँ।

यह सुनकर मोहम्मद बिन अली ने कहा– आप इमाम हैं और वसीला हैं रसूले ख़ुदा तक पहुँचने का। वल्लाह मैं यह क़सम करता कि आपसे यह कलाम सुनने से पहले मर जाता मेरे सर में वह कलाम है जो उस कसीर पानी वाले कुंए के मानिन्द है जिसका पानी कसीर डोल खीचने से कम नहीं होता और हवाएं लू नहीं पैदा करती (यानि काश मैं हसद को अपनी तरफ दिये जाने से पहले मर जाता 'और यह कि आपके फज़ाइल मुझे इतने मालूम है कि वह खत्म होने वाले नहीं')।

वह यह लिखी हुई गोया किताब है मुज़य्यन कागज पर मैंने चाहा कि उन फज़ाइल को बयान करूँ 'लेकिन मैंने देखा कि वह किताबे ख़ुदा में पहले से मौजूद हैं और साबिक़ा कुतुब में ख़ुदा के रसूल[स०] उनको पढ़ चुके है' बेशक यह कलाम ऐसा है कि बोलने वालों की ज़बानें खामोश है और क़ातिबों के कलम शिकस्ता' बल्कि वह कलम को उनके फज़ाइल के लिए पाते ही नहीं और लिखने वालों ने इतना लिखा है कि कागज का कोई हिस्सा सियाह हुए बगैर नहीं रहा। आप[स०] की फज़ीलत को कोई नही पहुँच सकता ख़ुदा

मोहसिनों को ऐसा ही बदला देता है और नहीं है कुव्वत मगर जो अल्लाह देता हैं।

हुसैन[अ०] ने हमको इल्म दिया और हिल्म वाला बनाया और अजरुवे रहम हमको रसूलुल्लाह से करीब किया। इमाम हुसैन फ़कीह हैं पैदा होने से पहले ही से और उन्होंने वहीं को पढ़ा है बोलने से पहले अगर ख़ुदा ख़ैर में किसी और में पाता तो हज़रत मोहम्मद मुस्तफा[स०] को इन्तेखाब न करता। ख़ुदा ने मोहम्मद[स०] का इन्तेखाब किया और उन्होंने अली[अ०] का और अली[अ०] ने आपको इमामत के लिये मुन्तख़ब किया और आपने हुसैन को इन्तेखाब किया हमने तस्लीम कर लिया और राजी हो गये और उनके सिवा और कौन हैं जिससे हम राज़ी होते है' हमने मुश्किलात में अपने अम्र का मालिक उन्हीं को तस्लीम कर लिया है।

3: रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] को यह कहते सुना कि जब इमाम हसन[अ०] का वक़्ते वफात करीब आया तो आपने इमाम हुसैन[अ०] से फ़रमाया – ऐ मेरे भाई मैं तुमको एक वसीयत करता हूँ उसको याद रखना।

पस जब मैं मर जाऊ तो तुम मुझे तजहीज़ व तकफीन करके रसूलुल्लाह की क़ब्र की तरफ मेरा रुख कर देना ताकि मैं अपना अहद उनसे ताजा करु' फिर मेरा रुख मेरी वालिदा माज्दा की तरफ कर देना। फिर मुझको जन्नतुल बक़ी में दफन कर देना और यह जान लो कि आइशा से मुझे वह तकलीफ पहुँचेगी जिसे तुम जानते हो और लोग भी जानते है उनको अल्लाह के रसूल[स०] और हम अहलेबैत[अ०] से अदादत है जब इमाम हसन[अ०] की रुह कब्ज़ हुई और उनका जनाज़ह तैयार हुआ तो बनी हाशिम उस मुक़ाम पर ले गये जहाँ

रसूलुल्लाह नमाज़े जनाज़ा पढ़ा करते थे बाद नमाज़ जनाज़ह को कब्रे रसूल के पास लाये। किसी ने हज़रत आइशा को खबर दी कि नबी हाशिम हज़रत हसन[अ०] बिन अली[अ०] को रसूलुल्लाह[स०] के पास दफन करना चाहते हैं वह यह सुनकर जीन कसे हुए खच्चर पर सवार होकर निकली' इस्लाम में सबसे पहले औरतों में ऐसी सवारी करने वाली वहीं थी उन्होंने नबी हाशिम से कहा – तुम अपने बेटे को मेरे घर से ले जाओ। यहाँ वह दफन नहीं होंगे उनके और रसूल के दरम्यािन परदा नहीं हटेगा। इमाम हुसैन[अ०] ने कहा – यह तो आप अपने बाप को दफन कर के कर चुकीं और जिनको रसूलुल्लाह[स०] दोस्त न रखते थे वह हो चुका। ख़ुदा उसके मुताल्लिक़ आपसे बाज़ पुरस करेगा। मेरे भाई की यह वसीयत की वह अपने पदर बुजुर्गवार रसूलुल्लाह[स०] के पास दफन हूँ और अपने अहद को उनसे पूरा करे आपको मालूम है कि मेरे भाई अल्लाह और रसूल[स०] की सबसे ज्यादा मारेफ़त रखने वाले थे और कुरआन की तावील के सबसे ज्यादा जानने वाले उनके और रसूलुल्लाह[स०] के दरम्यिान हिजाब कैसा।

और अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ इमान वालों! नबी के घरों में दाखिल न हो मगर उनके अजन और इजाजत के। और आपने बगैर आन हज़रत[स०] से इज़्न लिए लोगों को दाखिल कर दिया (यानि अबू बकर व उमर को दफन करा दिया) हालांकि ख़ुदा फ़रमाता है कि ऐ इमान वालो नबी की आवाज से ऊँची आवाज न करो तुमने अपने बाप को और उनके फारुक को रसूलुल्लाह[स०] के पास दफन कर दिया हालांकि खुदा फ़रमाता है जो लोग अपनी आवाजों

को रसूलुल्लाह[स०] के सामने नीचा रखते है वह हैं जिनके दिलों का अल्लाह ने तक़्वा से इम्तिहान लिया है तुमने उन दोनों को रसूलुल्लाह[स०] के पास दफन कर दिया है। हालांकि उन्होंने उस अम्र की रियायत न कीं। जिसका रसूलुल्लाह[स०] ने हुक्म दिया था बेशक अल्लाह ने हराम किया है मुर्दा मोमिनीन पर उस चीज़ को जो हराम की है जिन्दों पर। ख़ुदा की क़सम ऐ आइशा दफ़्ने हसन[अ०] जो तुम्हे बुरा मालूम हो रहा है अगर अपने बाप रसूलुल्लाह के पास दफन होना जरुरी होता तो तुम देखते कि तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ वह जरुर दफ़्न किये जाते।

फिर मोहम्मद हनफ़िया ने कहा– आप एक दिन खच्चर पर सवार हुई 'एक दिन ऊँट पर। पस इस पर भी अपने नफ्स पर काबू हासिल न किया और अदावत नबी हाशिम ने मालिके ज़मीन भी न हुँई यह सुनकर उन्होंने फ़रमाया– ऐ इब्ने हनफ़िया यह (इमाम हुसैन[अ०] तो कई फातिमाओं से निस्बत रखते है। मगर तुम कलाम करने वाले कौन? इमाम हुसैन[अ०] ने फ़रमाया तुम मोहम्मद को फवातिम से कैसे हटाती हो। वल्लाह उनको भी तीन फातिमाओं ने पैदा किया है। फातिमा मखजूमी जौजे अब्दुल मुत्तलिब 'फातिमा बिन्ते असद मादरे अली[अ०] और फातिमा आमरी ने।

आयशा ने कहा तुम अपने बेटे को यहाँ से हटाओं और इनको ले जाओ 'क्योंकि तुम अदावत वाले हो। इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने फ़रमाया – पस इमाम हुसैन[अ०] जनाज़े को बक़ीअ में ले गये और वहाँ दफ़्न कर दिया।



# छियासठवां बाब

## इशारा नस्से इमामत अली इब्नुल्हुसैन अ०

1: फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने कि जब हुसैन[अ०] बिन अली की वफात का वक़्त करीब आया तो आप ने अपनी बेटी फातिमा कुबरा[स०] को बुलाया और उनको एक मलफूफ तहरीर और वसीयत नाम दिया और हज़रत अली बिन अल हुसैन अलैह सलाम इस ज़माने में मर्ज़ असहाल में मुब्तिला थे पस फ़ातिमा ने वह किताब अली बिन हुसैन[अ०] को दी। फिर यह किताब वल्लाह हमारे पास रही। ऐ ज़ियाद (रावी) रावी कहता है मैंने पूछा। मैं आप पर फ़िदा हूँ उसमें क्या था। फ़रमाया नबी आदम की वह तमाम ज़रूरतें जब से आदम पैदा हुए ख़त्मे दुनिया तक 'उसमें जराएम की सजायें भी थीं यहाँ तक कि एक चरका की सज़ा भी।

2 : इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने फ़रमाया जब इमाम हुसैन अलैह सलाम की वफात का वक़्त क़रीब आया तो आपने अपनी वसीयत मलफूफ अपनी बेटी फ़ातिमा के सुपुर्द की बाद शहादत इमाम हुसैन[अ०] ने वह वसीयत अली बिन अल हुसैन[अ०] के सुपुर्द की। रावी कहता है मैंने पूछा – ख़ुदा की आप पर रहमत हो उसमें क्या था फ़रमाया वह तमाम बातें जिनकी मोहताज औलादे आदम आग़ाज़े आफ़री नश से ख़त्मे दुनिया तक होगी।

3 : इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया जब इमाम हुसैन[अ०] ईराक़ की तरफ जाने लगे तो आपने उम्मे सलमा[रह०] को तहरीरें और वसीयतें सुपुर्द कीं। जब इमाम ज़ैनुल आब्दीन

अ० कै़द यज़ीद से रिहा होकर आये तो उम्मे सलमा (रजि०) ने वह उनके सुपुर्द कीं।

4 : रावी कहता है मैं अली बिन हुसैन अ० की ख़िदमत में हाज़िर था ओर आप के पास आपके साहबज़ादे भी थे कि जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी आये सलाम किया और इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] का हाथ पकड़कर खुलूत में ले गये और फ़रमाया मुझे रसूलुल्लाह[स०] ने ख़बर दी है कि तुम एक शख़्स को मेरे अहले बैत से पाओगे जिसका नाम मोहम्मद बिन अली होगा और कुनयत अबू जाफ़र 'उनसे मेरा सलाम क़ह देना' यह कह कर वह चले गये जब इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] पलट कर अपने बाप और भाई के पास आये तो हज़रत ने अली[अ०] बिन अल हुसैन[अ०] से पूछा। जाबिर[रह०] ने तुमसे क्या कहा फ़रमाया कहते थे कि रसूलुल्लाह[स०] ने उनसे फ़रमाया कि तुम मरे अहले बैत में एक शख़्स को पाओगे जिसका नाम मोहम्मद बिन अली होगा तुम उसको मेरा सलाम पहुँचा देना हज़रत ने फ़रमाया मुबारक हो तुमको ऐ फरज़न्द! कि अल्लाह ने रसूल[स०] की उस खुसूसियत को तमाम खानदान में तुम से मख़सूस किया उसका जिक्र अपने भाईयों से न करना वह तुम्हारे साथ वहीं चाल चलेंगे जो बरादराने यूसुफ[अ०] ने यूसुफ[अ०] से चली थी।



## सरसठवां बाब

# इमामत इमाम मो० बाक़र अ०

1 : इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने फ़रमाया जब हज़रत अली बिन हुसैन अ० की मौत का वक़्त आया तो आपने एक सन्दूक निकाला। फिर फ़रमाया – ऐ मोहम्मद इसे उठाओ। पस उसे चार आदमियों ने उठाया। हज़रत की वफात के

बाद उनके भाइयों ने दावा किया कि सन्दूक में जो कुछ है वह हमें भी दो। इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० ने फ़रमाया अगर इसमें तुम्हारा कुछ हिस्सा होता तो मेरे पदर बुज़ुर्गवार सिर्फ मुझको न देते। इस सन्दूक में रसूलुल्लाह स० के हथियार और किताबें थीं।

2 : रावी कहता है इमाम ज़ैनुल आब्दीन अ० मुतवज्जे हुए अपने लड़कों की तरफ दरआनहालिके वह हज़रत के पास जमा थे। फिर इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० ने फ़रमायां ऐ मोहम्मद इस सन्दूक को अपने घर ले जाओ। इमाम अ० फरमाते हैं उसमें दिरहम व दीनार न थे बल्कि वह इल्म से भरा हुआ था।

3 : इमाम जाफर सादिक़ अ० ने फ़रमाया कि बनी उमय्या के बादशाह उमर बिन अब्दुल अज़ीज ने इब्ने हज़्म हाकिम मदीना को लिखा कि ओक़ाफ अली व उमर व उस्मान की फेहरिस्त बनाकर भेज दे उसने जैद बिन हुसैन से जो ख़ानदान में सबसे बड़े थे फेहरिस्त तलब की उन्होंने लिखा चूंकि अली के बाद मुतवल्ली हसन हुए उनके बाद अली बिन अल हुसैन और उनके बाद इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० है लिहाज़ा उनसे मांग इब्ने हज़्म ने अपना आदमी मेरे पदर बुज़ुर्गवार के पास भेजा। हज़रत ने कागज़ात मेरे हाथ इब्ने हज़्म के पास भेजे। मैंने उसे जाकर दिये इमाम जाफर सादिक़ अ० फ़रमाते हैं कि बाज़ लोगों ने मुझसे पूछा कि औलाद इमाम हसन अ० औक़ाफ के इन दलीलों को जानती थी फ़रमाया – ज़रूर जानते थे लेकिन हसद उन पर ग़ालिब आया। अगर वह हक़ को हक़ के साथ तलब करते तो उनके लिये बेहतर होता। लेकिन उन्होंने दुनिया को तलब किया।

रावी कहता है कि इमाम जाफर सादिक अ० ने फ़रमाया कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज इब्ने हज़्म को लिखा। उसके बाद वहीं बया न फ़रमाया जो गुज़र चुका है फिर फ़रमाया

इब्ने हज़्म ने अपना आदमी ज़ैद बिन अलहुसैन[अ०] के पास भेजा और वह मेरे बाप से बड़े थे।



## अरसठवां बाब

# इमाम जाफ़र सादिक़ अ० की इमामत पर नस्स

1 : रावी कहता है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] को चलता देखकर कहते हुए सुना। तुम यह चाल देखते हो यह वही है जिसके मुताल्लिक़ ख़ुदा ने फ़रमाया है हम इरादा रखते हैं कि एहसान करे उन लोगों पर जो रूवे ज़मीन पर ज़ईफ़ बना दिया गये हैं उनको इमाम बनायेंगे और हम उनको वारिस बनायेंगे।

2 : हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया कि जब मेरे पदर बुर्जुगवार की वफ़ात का वक़्त करीब आया तो मुझसे फ़रमाया – ऐ जाफ़र मैं तुझसे अपने असहाब के बारे में वसीयत करता हूँ। मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ इन सब को बुलाऊँगा और इनमें से किसी एक को भी इस हाल में न रखूंगा कि शहर में किसी से भी इल्मो–माल का सवाल करुं।

3 : रावी कहता है मैंनें इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से सुना कि आदमी की सआदत उसमें है कि उसका बेटा उससे सूरत व सीरत और इख़्लाक़ व आदात में उससे मुशाबेह हो मैं यह बात अपने इस फ़र्ज़न्द में पाता हूँ कि वह मुझसे सूरत व इख़्लाक़ व आदात में मुशाबेह है और फ़र्ज़न्द से मुराद इमाम जाफ़र सादिक़ थे।

4 : रावी कहता है मैं इमाम मोहम्मद बाक़र अ० की ख़िदमत में हाज़िर था कि इमाम कि इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] तशरीफ लाये और इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से फ़रमाया – यह ख़ल्के ख़ुदा में सबसे बेहतर है।

5 : रावी कहता है मैं इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] की ख़िदमत में हाज़िर था कि इमाम जाफर सादिक़ अ० तशरीफ लाये और इमाम मोहम्मद बाक़र अ० से फ़रमाया। यह ख़ल्म ख़ुदा में सबसे बेहतर है।

6 : इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने फ़रमाया कि इमाम जाफर सादिक़[अ०] ख़ल्के ख़ुदा में सबसे बेहतर हैं।

7 : जाबिर बिन यज़ीद जाफी से मरवी है कि मैं इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० की ख़िदमत में हाज़िर था किसी ने कायम आले मोहम्मद (स०) के मुताल्लिक़ सवाल किया। हज़रत ने हमाम जाफर सादिक़[अ०] पर हाथ रखकर फ़रमाया वल्लाह यह क़ायम आले मोहम्मद (स०) है अनबसा से मरवी है कि इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] के इन्तिक़ाल के बाद मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से इसका ज़िक्र किया। फ़रमाया जाबिर ने सच बयान किया कि तुम्हारा गुमान यह है कि हर इमाम अपने से पहले इमाम के बाद कायम नहीं होता।

## तौजीह

यहाँ कायम से मुराद इमामे आख़िर[अ०] नहीं है बल्कि उमूरे दीन का कायम करने वाला और अहकामे शरिअत का निगराँ और उसका जारी करने वाला मुराद है।

8 : फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने कि मेरे वालिद ने अम्रे इमामत के लिये जो उमूर थे मेरे सुपुर्द किये जब उनकी वफात का वक़्त आया तो मुझसे फ़रमाया गवाहों को

बुलाओ। मैंने कुरैश के चार शख़्स बुलाये। जिनमें अब्दुल्लाह बिन उमर का गुलाम नाफे भी था। फिर फ़रमाया –लिखो यह वह वसीयत है जो याक़ूब ने अपने बेटों को की थी। फ़रमाया–ऐ बेटों! ख़ुदा ने तुम्हारे लिये दीन का इस्तफा किया है पस तुम मुसलमान होकर मरना। वसीयत करता हैं मोहम्मद बिन अली बिन जाफ़र बिन मोहम्मद और उसको यह हुक्म देता है कि मुझे कफन दें उस चादर का जिसमें नमाज़ जुमा पढ़ा करता था और मेरा इमामा बांधे और चौकोर कब्र बनायें और चार अंगुल से ज्यादा बुलन्द करें और वक़्त बन्द अपने लिबास के बन्द खोल दें। फिर गवाहों से फ़रमाया– अब तुम जाओ। ख़ुदा तुम पर रहम करें। उनके जाने के बाद मैंने कहा–यह गवाही आपने क्यों करायी। फ़रमाया – मुझे यह बुरा मालूम हुआ कि लोग कहें कि किसी के लिये वसीयत नहीं की और तुम मग़लूब हो। मैंने चाहा कि यह तुम्हारे लिये हुज्जत हो।



## उन्हत्तरवां बाब

# इमाम मूसा काज़िम अ० को इमामत पर नस्स

1 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से कहा– दोज़ख से बचाने में मेरी मदद कीजिए यह फरमाइये कि आपके बाद इमाम कौन है उसी वक़्त मूसा काज़िम[अ०] आ गये वह उस वक़्त कमसिन थे फ़रमाया यह है तुम्हारा इमाम उसी की पैरवी करो।

2 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से कहा मैं सवाल करता हूँ उस ख़ुदा से जिसने आपके आबाए ताहरीन को आप जैसी सफ़ात अता फरमायी कि वह रसूले ख़ुदा के बाद थी आप ही जैसे को मुअय्यन करें। फ़रमाया – ख़ुदा ने ऐसा किया है मैंने पूछा वह कौन है आप[अ०] ने इशारा कियां अब्देसालेह (इमाम मूसा काज़िम[अ०]) की तरफ वह उस वक़्त सो रहे थे और वह उस वक़्त कमसिन थे।

3 : रावी कहता है मैंने अब्दुर्रहमान बिन हिजाज से पूछा जिस साल इमाम मूसा काज़िम अ० क़ैद किये गये कि यह बुजुर्ग इस शख़्स (मुराद हारुन या सिन्दी बिन शाहिक) के हाथ में हैं मैं नहीं जानता कि इस क़ैद का अन्जाम क्या होगा।

पस आया उनकी औलाद के मुताल्लिक़ तुम्हें कुछ ख़बर है कि कौन इमाम जाफ़र के बाद इमाम होगा। उसने कहा ऐसा सवाल मुझसे सिवाय तुम्हारे किसी ने नहीं किया। सुनो मैं इमाम जाफ़र सादिक की ख़िदमत में हाज़िर हुआ वह घर के हिस्से में थे। जहाँ इबादत किया करते थे हज़रत दुआ फरमा रहे थे और आपके दाहिनी तरफ मूसा बिन जाफ़र[अ०] आमीन कह रहे थे। मैंने कहा मैं आप पर फिदा हूँ मैं समझता हूँ कि आपके पास मेरा आना बन्द हो जायेगा। लिहाजा यह बताइये कि आपके बाद इमाम कौन होगा फ़रमाया मूसा ने – ज़िरह रसूल[स०] पहनी तो उनके बदन पर ठीक आयी। मैंने कहा बस मैं समझ गया। अब ज्यादा बयान की जरूरत नहीं।

4 : मुफ़स्सल बिन उमर से मरवी है कि मैं इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के पास था कि इमाम मूसा काज़िम[अ०] दर आंलेकि वह सग़ीर सिन थे तशरीफ लाये। इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया – मैं उनके लिये वसीयत करता हूँ पस तुम उनकी

इमामत का ज़िक्र करो। अपने मुअतमद असहाब के सामने।

5 : इस्हाक़ बिन जफर ने बयान किया कि मैं अपने वालिद के पास एक दिन था पस उनसे अली बिन उमर ने पूछा आपके बाद हम और दूसरे लोग किस तरफ रुजू करें फ़रमाया दो ज़र्द लिबास वाले और दो गेसुवों वाले की तरफ और अभी इस दरवाज़े से आने वाला है दरवाजे के दोनों किवाड़ वह अपने हाथ से खोलेगा थोड़ी देर बाद दोनों हाथ नमूदार हुए और दरवाजा खुला और उससे काज़िम बरामद हुए।

6 : मंसूर इब्ने हाज़िम ने इमाम जाफ़र सादिक अ० से कहा कि मेरे माँ बाप आप पर फिदा हो दिन और रात गुजरते जा रहे हैं पस जब आप दुनिया में न हों तो हमारा इमाम कौन है? फ़रमाया यह तुम्हारा इमाम है और अपना हाथ इमाम मूसा काज़िम अ० के दाहिने कंधे पर रखा और वह उस वक़्त पाँच साल के थे और अब्दुल्लाह बिन जाफर हमारे पास थे।

7 : रावी कहता है मैं इमाम जाफ़र सादिक अ० से कहा अगर आपकी मौत वाक़य हो, 'ख़ुदा मुझे यह न दिखाये। तो हम किस को इमाम मानें हज़रत ने अपने बेटे मूसा काज़िम की तरफ इशारा किया। मैंने कहा अगर वह भी मर जाये तब' जायें और उनके बड़े भाई हों तब उनमें कौन इमाम होगा फ़रमाया बेटा और यह तरीक़ा जारी रहेगा मैंने कहा अगर मैं न उनको पहचानता हूँ न उनके मुक़ाम को तब क्या हो। फ़रमाया – तुम कहना ख़ुदा वन्दा मैं अपना वली जानता हूँ उसको तेरी हुज्जतों में से बाक़ी हो नस्ले इमाम माज़ी से और यह कहना इन्शा अल्लाह तुम्हारे लिये बहुत होगा।

8 : रावी कहता है कि इमाम जाफर सादिक अ० ने ज़िक्र किया इमाम मूसा काज़िम अ० का जबकि वह कमसिन

थे और फ़रमाया कोइ मौलूद हममें नहीं हुआ ऐसा जिसका मर्तबा हमारे शियों के लिये उससे ज्यादा हो। फिर मुझसे फ़रमाया तुम मेरे फ़र्ज़न्द इस्माईल को इमाम मानकर उस पर जुल्म न करना।

9 : फ़ैज बिन मुख्तार से एक तवील हदीस में अमरे इमाम मूसा काज़िम अ० के मुतालिक़ मरवी है कि उससे इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने कहा जिसके मुताल्लिक़ तूने सवाल किया वह तेरा इमाम यह है पस उनके पास जाओ (इमाम मूसा काज़िम उस सक़्त गहवारे में थे) और उनके हक़ का इकरार करो। पस मैं खड़ा हुआ और उनके सर और हाथ को बोसा दिया और उनके लिये ख़ुदा से दुआ की हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने फ़रमाया मैं ने तुमसे पहले किसी औरको मिलने की इजाज़त नहीं दी। मैंने कहा क्या मैं उसकी खबर लोगों को दूँ। फ़रमाया–सिर्फ अपने खानदान वालों को और अपनी औलाद को और मेरे साथ मेरे अहल 'मेरी औलाद और मेरे रोफक़ा थे और यूनुस बिन फलीबान मेरे रूफक़ा में से थे। जब उन लोगों को मैंने ख़बर दी तो उन्होंने ख़ुदा की तारीफ की और यूनुस ने कहा ख़ुदा की कसम मैं इकतिफा न करुंगा जब तक ख़ुद हज़रत से न सुन लूं और उसके मिज़ाज में जल्दी थी पस वह चला' मैं भी उसके पीछे–पीछे चला। पस हम दरवाजे पर पहुँचे तो मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैह सलाम से सुना दरआन्हा लेकि वह मुझसे पहले पहुँच चुका था। ऐ यूनुस जो कुछ फैज़ ने बयान किया है वह ठीक है उसने कहा समअन बताअ। हज़रत इमाम अलैह सलाम ने फ़रमाया अपने साथ ले जा युनूस को ऐ फैज।

10 : अबू अब्दिल्लाह अ० ने मलामत की अपने फ़र्ज़न्द

अब्दुल्लाह को और एताब किया और नसीहत की और फ़रमाया किस अम्र ने तुमको रोका कि तुम अपने भाई जैसे बनो पस ख़ुदा की क़सम मैं उनके चेहरे पर नूर की देखता हूँ। अब्दुल्लाह ने कहा क्या आपक`बाप और मेरे बाप उनकी माँ और मेरी माँ एक नहीं हैं। हज़रत ने फ़रमाया वह मेरा नफ्स है और तुम मेरे बेटे हो।

11 : रावी कहता है मैं इमाम जाफर सादिक़ अ0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ वह हज़रत मूसा के गहवारे के पास खड़े उनसे सरगोशी कर रहे थे। मैं बैठ गया जब हज़रत सरगोशी से फारिग हुए तो मैं हज़रत के पास गया। फ़रमाया अपने इमाम मूसा (स0) ने निहायत फसीह ज़बान में जवाब दिया। फिर फ़रमाया तुम जाओ अपनी लड़की का नाम बदल दो जो तुमने कल रखा है वह ऐसा नाम है जिससे ख़ुदा बुग़ज़ रखता है और मेरे एक लड़की पैदा हुई थी जिसका नाम मैंने हमीरा रखा था हज़रत अबू अब्दुल्लाह ने फ़रमाया। उनके हुक्म को बजा लाओ बाएसे फलाह होगा। मैंने उसका नाम बदल दिया।

12 : रावी कहता है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 पास थे हमसे फ़रमाया – अपने इस साथी को जान लो मेरे बाद तुम्हारा इमाम यही है।

13 : अबू अय्यूब नहवी से रिवायत है कि मन्सूर बादशाह अब्बासी ने निस्फ शब के वक़्त मुझे बुलाया। मैं गया तो देखा कि वह एक कुर्सी पर बैठा हुआ है और उसके सामने शमा रखी हुई है। और हाथ में एक ख़त है मैंने सलाम किया उसने वह ख़त मुझे दे दिया। दरआन्हालेकि वह रो रहा था मुझसे कहा यह ख़त मोहम्मद बिन सुलेमान हाकिम

मदीना का है उसने ख़बर दी है कि मोहम्मद बिन जाफ़र का इन्तिकाल हो गया है। फिर उसने तीन मर्तबा इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैही राजेऊन—कहा और यह भी कहा अब जाफर की मसल कौन है फिर मुझसे कहने लगा इस ख़त का जवाब लिख। जब मैंने ख़त का आग़ाज लिख लिया। तो उसने कहा अगर उन्होंने औक़ाफ के मुताल्लिक़ सिर्फ अपनी तरह एक शख़्स के मुताल्लिक़ वसीयत की है तो उसे बुलाकर गर्दन मार दे। हाकिम मदीना ने उस ख़त के जवाब में लिखा कि उन्होंने पाँच शख़्सों के मुताल्लिक़ वसीयत की है मंसूर बिन मोहम्मद सुलेमान, अब्दुल्लाह बिन जाफ़र और अपनी बीवी हमीदा बरबरीया यह मादरे मूसा के लिये।

## तौजीह

उससे मालूम हुआ कि इमाम जाफ़र सादिक अ० ने इल्मे इमामत से मंसूर के इरादे को मालूम कर लिया था नीज़ यह नस है इमामत पर इमाम मूसा काज़िम अ० की क्योंकि बाक़ी चार में इमामत की अहलियत न थी।

14 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक अ० से इमाम के मुताल्लिक़ सवाल किया। फ़रमाया वह लहव व लाब नहीं करता इसी असना में इमाम मूसा काज़िम अ० एक बकरी का बच्चा लिये हुए आ गये और उससे कहने लगे अपने रब को सजदह कर यह सुनकर इमाम अलै० ने फ़रमाया—बेशक इमाम लहू व लब नहीं करता।

15 : नज़र बिन सईद ने भी यह रवायत नकल करके इतना लिखा है कि इमाम जाफ़र सदिक अ० ने वसीयत की मंसूर व अब्दुल्लाह व मूसा व मोहम्मद बिन जाफर और अपने एक गुलाम के लिये मंसूर ने कहा। अब उन लोगों के कत्ल

की कोई सूरत न रही, क्योंकि मंसूर का नाम भी शामिले वसीयत था।

16 : फैज़ बिन मुख्तार से मरवी है कि मैं इमाम जाफर सादिक़ अ० की खिदमत में था। कि इमाम मूसा काज़िम अ० जबकि वह लड़के थे आ गये मैंने उनको पकड़ लिया और बोसा दिया। इमाम जाफ़र सादिक अ० ने फ़रमाया तुम कश्ती हो और यह तुम्हारा मल्लाह है। फैज़ कहते हैं कि अगले साल मैं हज को गया मेरे पास दो हजार दीनार थे मैंने एक हज़ार इमाम जाफ़र सादिक अ० को भेजे और एक हज़ार मूसा काज़िम अलैह सलाम को। उसके बाद जब मैं हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो फ़रमाया –ऐ फैज़! तुमने मुझे मूसा के बराबर कर दिया। मैंने कहा आप ही ने तो फ़रमाया था कि यह तुम्हारे मल्लाह हैं। फ़रमाया मल्लाह मैंने नहीं कहा बल्कि अल्लाह के हुक्म से।



## सत्तरवां बाब

# इमाम रज़ा अ० की इमामत पर नस्स

1 : सहहाफ से मरवी है हशाम इब्ने हकम और अली बिन यक़तीन बग़दाद में थे। अली बिन यक़तीन ने बयान किया कि मैं एक रोज इमाम मूसा काज़िम अ० के पास बैठा था कि आपके फ़र्ज़न्द अली आ गये। मुझसे कहा ऐ अली बिन यक़तीन यह मेरी औलाद का सरदार है मैंने अपनी कुनियत उसे दी। हशाम ने यह सुनकर उसकी पेशानी पर

हाथ मारा और कहा तुम यह कैसे कहते हो अली बिन यक़तीन ने कहा। वल्लाह मैंने ऐसे ही सुना है हशाम ने कहा मैं तुमको ख़बर देता हूँ कि इमाम मूसा काज़िम (स0) के बाद वहीं इमाम होंगे और रावियों ने भी सहाफ से यही रवायत की है।

2 : फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अ0 ने मेरा फ़र्ज़न्द अली अकबर औलाद है और उनमें सबसे ज्यादा नेक है और मेरे नज़दीक सबसे ज्यादा महबूब वह मेरे साथ जफर में नज़र करता है और नहीं नज़र करता उसमें मगर नबी या वसी नबी।

3 : रावी कहता है मैंने इमाम मूसा अ0 से कहा मैं बूढ़ा हो गया हूँ मुझे नार जहन्नुम से बचाइये हज़रत ने इमाम रिज़ा अ0 की तरफ इशारा करके फ़रमाया यह है तुम्हारा इमाम मेरे बाद।

4 : रावी कहता है मैंने इमाम मूसा काज़िम अ0 से कहा। आप मुझे बताइये कि आप के बाद मुआमलात दीनी का ताल्लुक़ हम किससे रखे' फ़रमाया – यह मेरा बेटा अली है मेरे वालिद ने मेरा हाथ पकड़ा और कब्र रसूल (स0) पर ले जाकर फ़रमाया – बेटा ख़ुदा ने फ़रमाया है कि मैं जमीन पर ख़लीफा बनाने वाला हूँ पस ख़ुदा अपने वादे को वफा करने वाला है।

5 : मैंने इमाम मूसा काज़िम अ0 से कहा मेरा अब बुढापा है और मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गयी है मैंने आपके पदरे बुर्ज़गुवार से भी सवाल किया था। पस अब आप बताइये कि आपके बाद कौन इमाम होगा फ़रमाया – अबुल हसन रिज़ा।

6 : रावी कहता है इमाम मूसा काज़िम अ0 की ख़िदमत में आया उनके पास उनके फ़र्ज़न्द इमाम रिज़ा अ0 थे मुझसे फ़रमाया – ऐ जैद! यह मेरा फलां बेटा हे इसकी तहरीर मेरी तहरीर है और इसका कलाम मेरा कलाम है उसका क़ासिद मेरा क़ासिद है जो यह कहे सच है।

7 : मख़ज़ूमी ने जिसकी माँ नस्ल जाफर बिन अबी तालिब से थी बयान किया तो इमाम मूसा काज़िम अ0 ने हमें बुलाकर फ़रमाया। तुम जानते हो मैंने क्यों बुलाया है हमने कहा नहीं' फ़रमाया इसलिए कि गवाह बनो उस बात के कि मेरा बेटा मेरा वसी है और मेरे अम्रे इमामत का कायम करने वाला है और मेरा ख़लीफा है मेरे बाद' पस जिसका मेरे ऊपर कर्ज़ा हो वह मेरे उस बेटे से ले लें और जिससे मैंने वायदा किया हो वह उससे पूरा कराये और जिसको (क़ैद खाने में) मुझसे मिलना जरूरी हो वह उसकी तहरीर के साथ मुझसे मिले।

8 : हुसैन मुख्तार से मरवी है हमें कुछ तहरीरें मिलीं इमाम मूसा काज़िम अ0 की उस में तहरीर था कि मेरा अहद है मेरी औलाद में सबसे बड़े से कि वह ऐसा– ऐसा करें और फलां को कुछ न दें यहाँ तक की तुम मुझसे मुलाकात करो या मुझे मौत आ जाये।

9 : हुसैन बिन मुख्तार से मरवी है कि बसरा में इमाम मूसा काज़िम अ0 की कुछ तहरीर करदह अलवाह मिली जिनमें तहरीर था कि यह मेरा मुआहेदह है वल्दे अकबर से कि वह फलां को यह दे और फलां को यह 'और फलां को कुछ न दे। यहाँ तक कि क़ैद से छूटकर आ जाओ या मुझे मौत आ जाये अल्लाह जो चाहता है करता है।

10. अली बिन यक़्तीन से मरवी है कि इमाम मूसा काज़िम अ० ने कैद खाने से लिखा कि फलां मेरा बेटा मेरी औलाद का सरदार है मैंने अपनी कुन्नियत उसे दी।

11 : दाऊद बिन सुलेमान रावी हैं कि मैंने इमाम मूसा काज़िम अ० से कहा मैं उस बात से डरता हूँ कि अगर कोई हादसा पेश आ जाय और मैं आपकी ख़िदमत में हाजिर न हो सकूं लिहाजा यह मालूम करने की जरूरत है कि आपके बाद इमाम कौन होगा फ़रमाया – मेरा बेटा फलां यानि अबुल हसन (इमाम रिज़ा अ०)

12 : रावी कहता है मैंने इमाम मूसा काज़िम अ० से कहा कि मैंने आपके वालिद से सवाल किया था कि आपके बाद कौन इमाम होगा तो उन्होंने आपको बताया चुनान्चे जब इमाम जाफ़र अ० का इन्तिकाल़ हुआ तो लोग हर तरफ से जमा हुए मैंने आपके मुताल्लिक़ बयान किया और मेरे असहाब ने भी गवाही दी पस अब आप बताइये कि आपके बाद आपकी औलाद में से कौन इमाम होगा फ़रमाया – मेरा फलां बेटा।

13 : रावी कहता है मैं कुछ माल ले कर इमाम मूसा काज़िम अ० के पास आया। हज़रत ने उसमें से कुछ ले लिया और कुछ छोड़ दिया। मैंने कहा आपने मेरे पास क्यों छोड़ा। फ़रमाया – मेरे बाद वाला इमाम तुझसे मांग लेगा जब हमारे पास हज़रत के मरने की खबर पहुँची तो इमाम रिज़ा अ० ने अपने बेटे को मेरे पास भेजा और उन्होंने वर माल मुझसे मांगा मैंने दे दिया।

14 : रावी कहता है कि वह उमरा के लिये जा रहा था कि राह में इमाम मूसा काज़िम अ० से मुलाकात हुई। मैंने

कहा– मैं आप पर फिदा हूँ यह मुक़ाम आपको याद है कि यहाँ एक वक़्त हम ठहर चुके हैं। फ़रमाया – हाँ तुमको भी याद है मैंने कहा हाँ मैं और मेरे वालिद यहाँ आप से मिलें थे और आप इमाम जाफर सादिक़ अ० के साथ थे और उनके साथ आपके भाई भी थे मेरे बाप ने उनसे कहा मेरे माँ–बाप आप पर फिदा हों आप सब अइम्माए ताहरीन हैं और मौत से कोई बचने वाला नहीं आप अम्रे इमामत के मुताल्लिक़ मुझसे उनको गुमराही से बचाऊँ फ़रमाया ऐ अबू अब्दिल्लाह (कुन्नियत रावी) यह मेरी औलाद है और मेरा बेटा उनका सरदार है और इशारा किया आपकी तरफ।

और वह साहिबे इल्म व हिकमत व सखा व मार्फत है और उसके पास है वह तमाम चीजें जिनके लोग मोहताज होते हैं या वह दीन व दुनिया के मामलात में इख्तिलाफ करते हैं उनमें हसने खल्क़ हैं हसने जवाब है वह खुदाई दरवाजों में से एक दरवाजा है और उनमें और भी बहुत सी खूबियाँ हैं मेरे वालिद ने पूछा – मेरे माँ बाप आप पर फिदा हों वह क्या हैं फ़रमाया उससे पैदा होगा उस उम्मत का फरयादरस वह दादरसे खल्क़ होगा वह बलेहाज़े इल्म व नूर फज़ल व हिकमत बेहतरीन मौलूद और बेहतरीन परवरिश याफ्ता होगा। अल्लाह मोमिनों के ख़ून की उसकी वजह से हिफाज़त करेगा और उनके झगड़ों की इसलाह करेगा उनकी परा गन्दगी को दूर करेगा उनके बरहनों को लिबास पहनायेगा वह भूके को सीर करेगा। खौफज़दह उससे अमन में हो जायेगा उसकी बरकत से अल्लाह मेंह बरसायेगा और अपने बन्दों पर रहम करेगा वह सन रसीदों से बेहतर होगा बेहतरीन परवरिश याफ्ता होगा। उसका क़ौल हुक्म होगा उसका खामोश रहना

इल्म होगा वह लोगों के झगड़ों को फसला करेगा और अपने क़बीले का सरदार होगा। अपनी जवानी को पहुँचने से पहले ही मेरे मां बाप ने पूछा क्या वह पैदा हो गये हैं फ़रमाया हाँ चन्द साल गुजर गये रावी कहता है पस हमारे पास एक शख्स मुख़ालिफ़ों में से आ गया जिसके सामने हमने कलाम करने की जुर्अत न की।

यज़ीद नामी रावी है कि मैंने इमाम मूसा काज़िम अ० से कहा। आप भी उसी तरह हमें आगाह कीजिए जिस तरह आपके पदरे बुर्जुगवार ने आगाह किया है फ़रमाया – मेरे वालिद का ज़माना और था अब वह ज़माना नहीं मैंने कहा जो आपकी परेशां हाली पर राज़ी हो उस पर अल्लाह की लानत हज़रत यह सुनकर बहुत हंसे। फिर फ़रमाया – ऐ अबू अमारह मैं तुम्हें बताता हूँ। मैं अपने घर से निकला और मैंने लोगों के सामने वसीयत की अपने फलां बेटे के मुताअल्लिक़ और बज़ाहिर अपने और बेटों को भी शरीक किया। लेकिन दर हक़ीकत वसीयत उसके लिये थी। मैंने तन्हा उसी को वसी बनाया अगर यह अम्रे इमामत मेरे अख्तियार में होता तो मैं अपने बेटे क़ासिम को बनाता क्योंकि मुझे उससे बेपनाह मुहब्बत है और मेरी मेहरबानी भी उस पर ज्यादा है लेकिन यह अम्र तो ख़ुदा के अख्तियार में है।

और वह अम्रे इमामत को जहाँ चाहता है क़रार देता है और ख्वाब में रसूलुल्लाह ने मुझे ख़बर दी और मेरे वसी को दिखाया और उन बादशाहाने ज़लालत को भी जो उनके जमाने में होंगे उसी तरह हमें से कोई किसी को वसी नहीं बनाता जब तक उसको ख़बर न मिलें। रसूलुल्लाह (स0)से और मेरे जद अली मुर्तज़ा[अ0] से खुदा का दुरूद हो उन पर

और मैंने ख्वाब में रसूलुल्लाह के पास अंगूठी देखी और तलवार' असा और किताब और अमामा' मैं पूछा था रसूलुल्लाह (स0) यह क्या है। फ़रमाया यह अमामा खुदाये इज्ज़ो जल्ल की सल्तनत है।

और तलवार इज्ज़ते खुदा है और किताब नूरें खुदा है और असा कुव्वते खुदा है और अंगूठी उन सब की जामेअ है फिर मुझसे फ़रमाया। अब यह अम्रे इमामत तुमसे मिलकर दूसरे की तरफ जाने वाला है मैंने कहा था रसूलुल्लाह (स0) दिखाइये कि इनमें वह कौन है हज़रत ने फ़रमाया मैंने उस उम्रे इमामत की मुफारेक़त में अइम्मा में से किसी को तमसे ज्यादा मज़तरिब नहीं पाया अगर इमामत का मामला मुहब्बत से मुताल्लिक़ होता तो इस्माईल तुम्हारे बाप के लिए तुमसे ज्यादा महबूत थे लेकिन यह अम्र ख़ुदा के अख्तियार में है।

इमाम मूसा काज़िम अ0 ने फ़रमाया – मैंने अपनी जिन्दा या मुर्दा औलाद को देखा। अमीरूल मोमिनीन ने ख्वाव में फ़रमाया यह उनके सरदार है और इशारा किया मेरे बेटे अली की तरफ और कहा कि यह मुझसे है और मैं इनसे हूँ और अल्लाह मोहसिन के साथ है रावी कहता है फिर इमाम मूसा काज़िम ने फ़रमाया (ऐ यज़ीद (नाम रावी) यह तरे पास अमानत है उसे आगाह न करना मगर अकलमन्द को या जिसे तुम सच्चा समझते हो और अगर गवाही तलब की जाय तो गवाही दो और क़ौले खुदा है कि अमानतों को उनके अक्ल के सुपुर्द कर दो और यह भी फ़रमाया है कि उससे ज्यादा ज़ालिम कौन है जो खुदा से गवाही छिपाये कि रावी कहता है फिर इमाम मूसा काज़िम ने फ़रमाया – मैं रसूलुल्लाह की तरफ मुतवज्जे हुआ और अर्ज़ की मेरे बाप आप (स0) पर

कुर्बान हों मैंने अपनी औलाद को जमा किया है पस उसमें से कौन मेरे बाद इमाम होगा फ़रमाया जो नूर खुदा से दिखता है और उसकी फहम से सुनता है और उसकी हिकमत से बोलता है वह रास्ते पर रहता है ख़ता नहीं करता इल्म रखता है। जाहिल नहीं होता वह हिकमत व इल्म का मुअल्लिम होता है और वह यह है कि उसके बाद मेरे फ़र्ज़न्द अली का हाथ पकड़ा और फिर फ़रमाया – तुम उसके साथ बहुत कम दिन रहोगे जब तुम अपने सफर से लौटो तो वसीयत कर देना और अपने मुआमले को दुरूस्त कर लेना और जो इरादा किया है उसे पूरा कर लेना। क्योंकि तुम उनसे दूर होने वाले हो और ग़ैरों के हमसाये बनने वाले हो।

जब तुम इरादा करो जाने का यानि जब हारून मदीना आये और तुम्हें क़ैद करना चाहे तो अपने फ़र्ज़न्द अली को बुलाओ और उससे कहो कि वह तुमको गुसल दे कफन पहनाये और यह तहारत् काफी है तुम्हारे लिये क्योंकि उसके बाद फिर तुम्हें गुसल देने और कफन पहनाने का मौका तुम्हारे बाद वाले इमाम को न मिल सकेगा और यह सुन्नत रह जायेगी कि इमाम साबिक़ को इमाम लाहिक़ गुसल व कफन दे पस तुम इनाम रिज़ा के सामने लेट जाना और उनके भाइयों चचों के सामने इमाम के हुस्ने खल्क़ को बयान करना और हुक्म देना कि वह नौ तकबीरें तुम पर कहे यानि नमाज़े जनाज़ा में।

## तौजीह

नमाज़े मय्यत में चार तकबीरें हैं लेकिन इस हदीस में नौ का जिक्र है या तो यह पेशगी नमाज़ जनाज़ह की सूरत में है या खुसूसियात इमाम में है या फिर यह कहा जाय कि

नमाज़ जनाज़ह में चार तकबीरें वाजिब हैं और नौ मुस्तहब, भाईयों और चचों को बुलाने की जरूरत इसलिए समझी गयी कि इमाम रिज़ा अ० की इमामत का ऐलान हो जाये ताकि बाद में नज़अ की सूरत ने हो।

और वसीयत ज़ाहिर हो जाये और तुम्हारी जिन्दगी में तुम्हारा वली मुईन हो जाये। उसके बाद अपनी औलाद को जमा करो और लोगो के सामने उनको गवाह बनाओ और अल्लाह भी उन पर गवाह होगा और खुदा का गवाह होना काफी है।

यज़ीद रावी है कि फिर इमाम मूसा काज़िम अ० ने फ़रमाया मैं इस साल गिरफ्तार हो जाऊंगा और मेरे बाद अम्रे इमामत मेरे बेटे अली (स0) से मुताल्लिक़ होगा जो हमनाम अली बिन अबी तालिब हैं अली (स0) बिन अलहुसैन (स0) हैं उनके बाद दूसरे अली (स0) बिन हुसैन (स0) हैं जिनको अता की गयी है अली अव्वल की फहम, उनका गल्बा मोमिनीन की उनसे मोहब्बत और अली अव्वल का दीन और उनकी तकलीफात (अज़ किस्मे ग़सबे हुकूक) और दूसरे अली (स0) के मसाएब के मेहन और तकलीफ देह बातों पर उनका सा सब्र और उसको चाहिए कि खामोश रहे और हारुन के मरने के चार बरस बाद कुछ कहे।

फिर मुझसे फ़रमाया – ऐ यज़ीद जब तुम उस जगह पहुँचों और मेरे पिसर से मुलाकात करो और तुम अनक़रीब उससे मिलोगे तो बशारत देना कि एक लड़का पैदा होगा जो अम्ने खुदा होगा और मामून व मुबारक होगा वह तुम्हें बतायेगा कि तुम मुझसे मिले हो। तुम इन्दल मुलाक़ात कहना कि यह लड़का जिस कनीज़ से पैदा होगा वह ख़ानदान से

होगी मारिया के जो कनीज़े रसूल (स0) थे वह इब्राहिम पिसरे रसूलुल्लाह (स0) की माँ। अगर मुमकिन हो तो मेरा सलाम पहुँचा देना।

यज़ीद कहता है कि इमाम मूसा काज़िम के इन्तिक़ाल के बाद आपके फ़र्ज़न्द इमाम रज़ा अ0 से मिला। हज़रत ने फ़रमाया उमरा का इरादा है या नहीं, मैंने कहा आपके अख़्तियार में है मेरे पास ज़ादे राह नहीं।

हज़रत ने ताअज्जुब ने फ़रमाया सुब्हान अल्लाह यह कैसे मुमनिक हैं कि हम उमरा की तकलीफ तो दें और ज़ादे राह ने दें, पस हम चले जब उस जगह पहुँचे जहाँ इमाम मूसा काज़िम (स0) से मुलाक़ात हुई थी तो हज़रत ने कलाम की इब्तिदा की और फ़रमाया। ऐ यज़ीद यही वह जगह है यहाँ तुम अक्सर अपने चचा ज़ाद भाईयों (मुराद इमाम जाफर सादिक़ और उनकी औलाद) से मिले हो। मैंने कहा बेशक, फिर मैने इमाम मूसा काज़िम (स0) की मुलाक़ात का हाल बयान किया। हज़रत ने फ़रमाया वह कनीज़ अभी नहीं आयी जब आयेगी तो मैं अपने वालिद का सलाम उसे पहुँचा दूंगा।

हम मक्का की तरफ रवाना हुए और उस कनीज़ को खरीदा। उसी साल कुछ दिन बाद वह हामला हुई और वह लड़का पैदा हुआ। यज़ीद ने कहा कि इमाम रज़ा अ0 के भाई उनके लावल्द होने की वजह से यह उम्मीद दिल में लिये हुए थे कि वह उनके वारिस होंगे। वह मुझसे भी अदावत रखने लगे (कि अगर मैं यह ख़बर इमाम रिज़ा अ0 से बयान कर करता तो वह साहबे औलाद न होते) इस्हाक़ बिन जाफर अ0 ने लोगों से कहा कि मैंने देखा है कि यह शख़्स मजलिस इमाम मूसा अ0 में बैठता था जहाँ मैं ना बैठा

था।

15 : यज़ीद बिन सलीम ने मरवी है कि जब इमाम मूसा काज़िम अ0 ने वसीयत की तो गवाह बनाया इब्राहिम बिन मोहम्मद जाफरी, इस्हाक़ बिन जाफर बिन मोहम्मद व जाफर बिन सालेह वह माविया जाफर (औलाद जाफर तय्यार) वह यहिया बिन अल हुसैन बिन ज़ैद बिन अली व साद इब्ने इमरान अन्सारी और मोहम्मद बिन जाफर को और हज़रत खुद उस वसीयत को लिखने वाले थे फ़रमाया – मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और उसका कोई शरीक नहीं और उसका कोई शरीक नहीं और मोहम्मद उसके अब्द व रसूल (स0) है और क़यामत आने वाली है इसमें कोई शक नहीं और जो लोग कब्रों में हैं अल्लाह उनको उठायेगा और उसका वादा हक़ है और उसका वादा हक़ है और कब्ज़ा हक है और खुदा के रूबरू खड़ा होना हक़ है और जो रूहुल अमीन लेकर आये वह हक़ है उसी अक़ीदे पर मैं ज़िन्दा हूँ और उसी अक़ीदे पर मैं मरूंगा और उसी अक़ीदे पर रोज़े क़यामत मैं उठूंगा इन्शा अल्लाह मैं गवाही देता हूँ कि मैंने उस वसीयत को अपने हाथ से लिखा है और यह वहीं खुसूसियत है जो मेरे बाद अमीरूल मोमिनीन ने की और उनके वसी मोहम्मद बिन अली उससे पहले, मैंने हर तरफ वही लिखा और ऐसी ही वसीयत मेरे वालिद बिन मोहम्मद ने की थी और मैंने वसीयत की है अपने फरज़ंद अली के लिये और अपने बेटों के लिये जो उसके साथ हैं और मैं उनकी सलाहियत से मानूस हूँ और मैं चाहता हूँ कि वह उनसे इकरार ले कि मेरे फ़र्ज़न्द अली को वसीयत की है अपने सदक़ात और औक़ाफ के मुताल्लिक़ और अपने

गुलामों और उन बच्चों के मुताल्लिक जो पैदा हो चुके हैं और अपने बेटों के लिए इब्राहिम और अब्बास व क़ासिम व इस्माईल और अहमद के लिये और उम्मे अहमद (कनीज़ इमाम मूसा काज़िम (स0) के लिए और मेरे फ़र्ज़न्द अली के लिये वसीयत की है कि मेरी अज़वाज़ के लिये एक तिहाई सदाक़ात मेरे वालिद के अवक़ाफ़ और एक तिहाई मेरे अवक़ाफ़ से दें बाक़ी जहाँ मुनासिब समझें खर्च करें साहबे माल की तरह चाहे फरोख्त करे चाहे हेबा करें, अता करें या तसद्दुक़ करें उन पर जिनके नाम मैंने लिये हैं और उन पर जिनके नाम नहीं लिये।

वह मिस्ल मेरी ज़ात के है मेरे माल व औलाद के मामले में चाहे तो उन भाइयों को जिनका ज़िक्र मैने अपनी तहरीर में कर दिया है अपने पास रखें और अगर न पसन्द करें तो उनको अलाहेदा कर दें इस बारे में उन पर कोई इल्ज़ाम न होगा न राय बदलने की जरुरत पेश आयेगी कि अगर उनमें से कुछ ऐसे हो कि अपना सुलूक बदल दें तो उनको साथ लें उनका इनहेसार उनकी राय पर है।

अगर (खानदान में) कोई अपनी बहन की शादी करना चाहे तो बग़ैर इमाम की इजाज़त के और अम्र के शादी न करें क्योंकि वह क़ौम के मुनाकेह के अच्छे जानने वाले है और अगर कोई बादशाह या कोई शख्स किसी अम्र की बजा आवुरी में मानैअ हो या हाएल हो। उन अमूर (औक़ाफ वग़ैरह) के दरमियान जो मैने अपने वसीयत नामे में ज़िक्र किये है तो वह अल्लाह और रसूल (स0) से अलग है अल्लाह और रसूल उससे बेज़ार है उस पर अल्लाह की लानत ओर ग़ज़ब है और लानत करने वालों की लानत और मलाइका व मुक़र्रबीन

की अम्बिया व मुरसलीन (स0) और तमाम मुसलमानों की लानत।

और किसी बादशाह को यह हक़ नही पहुँचता कि वह हमारे औक़ाफ व सदक़ात वग़ैरह के मुताअल्लिक़ अली<sup>अ0</sup> को बाज़ रखे। हमारी तरफ़ से अली<sup>अ0</sup> के काम बाज़ रखे।

कोई बाज़ पुर्स नहीं और न मेरी औलाद में किसी को यह हक़ है मेरी तरफ से माल के वह मालिक है।

और वह रास्त गो है जिन अमूर का जिक्र किया गया है अगर वह माल कम बताये तो सही है और अगर ज्यादा बतायें तो सही है मैने वसीयत नामे में अली<sup>अ0</sup> के साथ अपनी औलाद के जो नाम रखे है तो सिर्फ उनकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई और नेक नामी के लिये और इन्तिज़ामी उमूर में उनका कोई दख़ल नहीं।

और मेरी औलाद की माऐं अगर अपने घरों में पर्दे के अन्दर है नफ्क़ा उतना ही मिलेगा जितना मेरी जिन्दगी में मिलता रहा है अगर अली उसको मुनासिब समझें, और मेरी लड़कियों के लिये भी यही सूरत है कोई भाई अपनी बहन की और कोई मां अपनी बेटी की तजवीज़ बग़ैर अली<sup>अ0</sup> के मशवरह के करेगी और न इसका हक़ बादशाह को है और न चचों को मगर अली<sup>अ0</sup> की राय और मशवरह के बाद अगर उसके खिलाफ उन्होंने अमल किया तो अल्लाह और उसके रसूल (स0) की मुख़ालेफत की और उन्होंनें मेरी फ़र्ज़न्द के अख़्तियारात में झगड़ा किया दरआन्हालिकि वह मुनाकेह क़ौम का सबसे ज्यादा जानने वाला है अगर वह तजवीज़ करनी चाहे तो कर दे और न करनी चाहे तो न करे और मैंने यही वसीयत जो उस किताब में है लड़कियों को भी कर दी है

और मैंने उन पर खुदा को गवाह करार दिया है और अली (स0) और उम्मे अहमद भी उन पर गवाह हैं और नहीं जायज़ किसी को मेरी उस तहरीर को खोलने और न उसका ऐलान करे। दर आन्हालेकि वह इन लोगों में से न हो। जिनका मैंने सिर्फ ज़िक्र किया है और नामज़द किया है पस जो उसके ख़िलाफ करेगा उसका मुज़लमा उस पर होगा।

और जो नेकी करेगा तो उसका फायदा उसकी ज़ात को पहुँचेगा और खुदा अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं और दुरूद हो मुहम्मद और उनकी आल पर। और किसी बादशाह वग़ैरह के लिये जायज़ नहीं कि वह उस तहरीर की मोहर को जिसके नीचे मैंने मोहर लगा दी हे तोड़े और जो ऐसा करेगा तो उस पर अल्लाह की लानत होगी और ग़ज़ब खुदा का नाज़िल होगा और लानत होगी लान करने वालों की और मलायका व मुक़र्रबीन की 'आम्बिया और मोमिनीन की' जमाअत की और यह तहरीर हज़रत ने लिखी और मोहर लगायी अबू इब्राहीम अ0 ने और गवाहों ने भी मोहर लगायी और दुरुद ही मोहमद (स0) व आल मोहम्मद (स0) पर।

इब्ने हकम ने बयान किया कि रवायत की मुझसे अब्दुल्लाह बिन आदम जाफ़री ने यज़ीद बिन सलीत से कि अबू इब्राहीम तलही काज़ी मदीना था जब इमाम मूसा काज़िम (अ0) का इन्तिक़ाल हो गया तो उनके भाई तलही क़ाजी के पास गये और अब्बास इब्ने मूसा ने उनसे कहा कि उस तहरीर के नीचे ख़ज़ाना और जवाहरात है अली ने (इमाम रज़ा अ0 ने) उनको छिपा लिया है और हमको महरूम करके उन पर क़ब्ज़ा कर लिया है और हमारे पदर बुर्जुगवार ने जो

कुछ माल छोड़ा है उन्होंने उस सब पर क़ब्ज़ा कर लिया है और हमें मुफ़लिस बना दिया है और ख़ुददारी मलहूज़ न होती तो मैं एक–एक चीज़ को सबके सामने बयान कर देता (मतलब यह है कि शिया बहुत सा माल ख़ुमुस हमारे बाप को लाकर दिया करते थे यह तहरीर उसी के मुताल्लिक़ है)।

इब्राहीम बिन मोहम्मद जो उस तहरीर के गवाहों में से थे आगे बढ़े और कहने लगे तुम हो कुछ ब्यान कर रहे हों हम उसे कुबूल नहीं करते और तुम्हारे उस बयान की तसदीक़ नहीं करते और हमारे नज़दीक मलऊन व ज़लील हो। हम तुम्हारे झूठ को तफली और बुजुर्गी दोनों हालतों में जानने वाले हैं तुम्हारे वालिद तुम्हारी हालत को सबसे ज्यादा जानने वाले थे अगर तुममें कोई खूबी है तो तुम्हारे बाप तुम्हारी ज़ाहिरी व बातनी सूरत में जरुर जानने वाले होते तो जरुर तुमकों अमीन बनाते। लेकिन उन्होंने कभी दो खुर्मो पर भी तुमकों अमीन नहीं बनायां

फिर उसके चचा इस्हाक़ बिन जाफ़र उसकी तरफ बढ़े और उसक गिरेबान पकड़ कर कहा, तू गुसताख़ाना बातें आज भी और कल भी अली के बारे में सर ज़द हुई तमाम क़ौम ने उनकी तसदीक़ व एआनत की।

अबू इमरान क़ाजी ने कहा इमाम रिज़ा अ0 से 'ऐ अली अबुल हसन काफी है मेरे लिए लानत' आपके बाप की (दस्तावेज में इमाम मूसा काज़िम) लिखा जो बादशाह या कोई हाकिम उस मोहर को तोड़े तो उस पर खुदा व मुरसलीन और मलायका की लानत हो) आपके वालिद ने आपको अख्तियार दिया है क़सम खुदा की हर बाप अपने बेटे के मुताल्लिक़ सबसे ज्यादा जानने वाला होता है।

खुदा की क़सम आपके पदर बुर्जुगवार मेरे नज़दीक़ न तो खफीफुल अक़्ल थे और न जईफुरीय अब्बास ने क़ाज़ी से कहा कि अल्लाह तुम्हारी हिफाज़त करे इस मोहर को तोड़िये और जो कुछ उसके नीचे लिखा है उसे पढ़िये और 'उसने कहा मैं तो मोहर को न तोडूंगा। तुम्हारे बाप की लानत मेरे लिए काफी है अब्बास ने क़हा – मैं तोडूंगा उसने कहा तुम जानो' अब्बास ने मोहर को तोड़ा उसमें था कि कि उन लोगों को तौलियत से ख़ारिज करो। उसे मालिक सिर्फ अली (इमाम रिज़ा) है और उनको हुक्म दिया गया था कि वह इताअते अली[अ०] में दाखि़ल हों बाखुशी या बइकराह और यह कि सदक़ात वग़ैरह से उनको अलाहिदा रखा जाय। उस मोहर का तोड़ना उन लोगों के लिए मुसीबत रूसवायी और ज़िल्लत का बाएस बन गया और इमाम रज़ा अ० के लिए सबबे ख़ैर हुआ।

जब वसीयत नामे की मोहर अब्बास ने तोड़ी तो उसके नीचे हस्ब ज़ेल गवाहों की गवाही थी इब्राहिम बिन मोहम्मद, इस्हाक़ बिन जाफर व जाफर बिन सालेह व सईद बिन इमरान, उन्होंनें उम्मे अहमद का चेहरा खोल दिया। क़ाज़ी की क़चहरी में उनका दावा था कि उम्मे अहमद नहीं इसलिये उन्होंने उनके चेहरे से परदा हटा दिया।

फिर उन्होंने पहचान लिया। तब उम्मे अहमद ने कहा – वल्लाह मेरे सरदार (इमाम मूसा काज़िम अ०) ने ऐसा ही कहा था कि तू अनकरीब पकड़ी जायेगी जबरन और घर से मज़लिस की तरफ निकाली जायेगी उस पर इस्हाक़ बिन जाफ़र ने डांटा और कहा औरतें नाकि़सुल होती है। उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं कही।

फिर इमाम रिज़ा अ० ने अब्बास से फ़रमाया – ऐ भाई मैं जानता हूँ कि यह बातें तुमने उन क़र्जो की वजह से की है जो लोगों के तुम पर हैं पस ऐ सईद ! तुम मेरे साथ चलो और बताऊँ उन पर कितना कर्ज़ है मैं उसको अदा कर दूंगा अल्लाह में जब तक ज़मीन पर चलता हूँ तुमसे हमदर्दी करना और नेकी करना नहीं छोडूंगा अब तुम बताओ क्या चाहते हो।

अब्बास ने कहा आप हमको हमारे जायद माल से देना चाहते हैं हालांकि हमारे हक़ का माल आपके पास बहुत ज्यादा है हज़रत ने फ़रमाया तुम जो चाहो करो, हमारी अर्ज़ तुम्हारी अर्ज़ है अगर अच्छी बात कहोगे तो खुदा उसे उसका अच्छा बदला पाओगे और अगर बुरा करोगे तो अल्लाह ग़फूरूर्रहीम है और तुमको मालूम है कि अभी तक मेरे लड़का नहीं है और तुम्हारे सिवा और कोई मेरा वारिस नहीं अगर जैसा तुम्हारा गुमान है मैंने कोई शैय रोक रखी है या ज़खीरा कर ली है तो वह तुम ही को मिलेगी और खुदा ही क़सम जबसे वालिद माज़िद मरे हैं जो चीज़ मुझे मिली है मैंने उसे मुतफर्रिक कर दिया है। जैसा कि तुमने देखा है (यानि सब पर तक़सीम कर दिया है)

यह सुनकर अब्बास उछल पड़ा और कहने लगा वल्लाह ऐसा नहीं है अल्लाह का कोई हुक्म हमारे ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि तुमने जो कुछ हमारे साथ किया है अज़रुवे हसद किया है और हमारे बाप ने जो इरादा किया था वह नहीं जायज़ किया अल्लाह ने, न उनके लिए न तुम्हारे लिये और तुम इस बात को जानते हो और मैं भी जानता हूँ। सफवान बिन यहिया (वकील इमाम रिज़ा) जो कूफ़ा का

पारचा फरोश है उसने हमारे हक़ की चीज़ को फ़रोख़्त किया) गर मैं ज़िन्दा हूँ तो उसको और तुमको शर्मिन्दा ज़रूर करूंगा।

इमाम अ0 ने फ़रमाया नहीं है मदद और कुव्वत मगर खुदाये अज़ीम ऐ मेरे भाईयों ! मैं तुम्हारी मसर्रत का हरीस हूँ, खुदा उसको जानता है खुदाया अगर तू जानता है कि में उनके दुरूस्तिये हाल को दोस्त रखता हूँ और उनके साथ नेकी करने वाला हूँ और सलाए रहम करने वाला हूँ और उन पर मेहरबान हूँ और रात दिन उनके मामलात में उनकी मदद करता हूँ तू मुझे उसकी बेहतर जज़ा दे। और अगर ऐसा नहीं और तू अल्लामुल ग़ुयूब है तो मेरे साथ वह कर जिसका मैं अहल हूँ 'सर का बदला सर है और ख़ैर का बदला ख़ैर , 'खुदा बन्द उनकी इसलाह कर और उकने मामलात को दुरूस्त कर और हमसे और उनसे शैतान को दूर रख और ज़लील कर' अपनी अताअत में उनकी मदद कर और हिदायत की तौफीक़ दे और जो कुछ मैं कहता हूँ अल्लाह उसका वकील है अब्बास ने कहा मैं आपकी चर्ब ज़बानी जानता हूँ आपकी बात की मेरे नज़दीक कोई वक़अत नहीं। यह बदकलामी सुनकर लोग उठ खड़े हुए और मोहम्मद (स0) व आले मोहम्मद पर दुरुद भेजा।

16इब्ने सनान से मरवी है कि मैं इमाम मूसा काज़िम अ0 से आया ईराक़ आपके जाने से क़ब्ल और इमाम रिज़ा अ0 आपके पास बैठे थे मुझसे फ़रमाया ऐ मोहम्मद इस साल एक वाक़ेआ होने वाला है आप (स0) के उस फरमाने ने मुझे पेरशानी में डाल दिया। फ़रमाया – सब्र करना बग़ावत व सरकशी पर; 'लेकिन उससे मुझे और मेरे बाद वाले को कोई

नुक़सान न पहुँचेगा। मैंने कहा मैं फ़िदा हूँ वह होगा क्या? फ़रमाया – खुदा ज़ालिमों को गुमराही में छोड़ेगा और अल्लाह जो चाहता है करता है मैंने कहा है क्या बात' फ़रमाया –' मेरे उस बेटे के हक़ को ग़ज़ब किया और उसकी इमामत से इंकार किया तो ऐसा है। जैसे अली का हक और बाद रसूलुल्लाह उनकी इमामत से इंकार कर दिया। मैंने कहा वल्लाह अगर मैं ज़िंदा रहा तो उनका हक़ ज़रूर उनके सुपुर्द कर दूंगा और हम उनकी इमामत का इक़रार करेंगे आपके बाद कौन होगा। फ़रमाया मेरा बेटा मोहम्मद (इमाम मोहम्म्द तक़ी अ0) मैंने कहा – हम उन पर राज़ी है और उनकी इमामत को तसलीम करते हैं।

## तौजीह

इमाम मोहम्मद तक़ी अ0 को बाज़ लोग इमाम रज़ा अ0 का फ़र्ज़न्द तसलीम नहीं करते थे और उस मुखालफ़त में बड़ा ज़ोर पैदा हो गया सादात के अकसर अफराद ने उस बारे में इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से झगड़ा किया था। आपने औक़ाफ व सदक़ात को हमसे अलग रखने के लिये इमाम मोहम्मद तक़ी को अपना बेटा ज़ाहिर किया है उसी कज़िया की तरफ इमाम मूसा काज़िम अ0 ने मज़कूरह बाला हदीस में इशारा फ़रमाया है।



## इकहत्तरवां बाब

# इमाम मो० तक़ी अ० की इमामत पर नस्स

1. रावी कहता है कि ख़बर दी मुझको उसने जो इमाम

रिज़ा अ० के पास बैठा था जब लोग आपके पास से उठ गये तो हज़रत ने फ़रमाया अबू जाफर (इमाम मोहम्मद तक़ी) से मिलो और अहद मुलाक़ात को ताज़ा करो। जब वह लोग चले गये तो मुझसे फ़रमाया खुदा मुफ़ज़्ज़ल पर रहम करे कि उसने इमामत तक़ी का इकरार किया और क़नाअत की हमारे बयान पर बिदूने इशारा के।

2. रावी कहता है मैंने सुना इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से कि किसी ने आप (अ०) से एक मसअला पूछा। फ़रमाया – उस से तुम्हारा क्या मक़सद है ये अबू जाफ़र इमाम मुहम्मद तक़ी (अ०) हैं मैं ने उनको अपनी जगह बिठाया है। हम अहले बैत हैं हमारे छोटे बड़ों के वारिस होते हैं बे कमो बेश।

3. रावी कहता है मैं मुहम्मद तक़ी की ख़िदमत में हाज़िर हआ आपने चन्द चीज़ों में मुझ से मुनाज़िरा किया। फिर फ़रमाया ऐ अबू अली शक को दूर करो मेरे बाप का फ़रज़न्द मेरे सिवा कोई नहीं।

4. रावी कहता है इब्ने क़ियामा ने इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम को एक ख़त में लिखा है आप कैसे इमाम हो सकते हैं दर आंहालांकि आप का कोई लड़का नहीं, आप ने ग़ज़बनाक होकर जवाब दिया। तुम को यह कैसे मालूम हुआ कि मेरे बेटा होगा ही नहीं खुदा की क़सम चन्द रोज़ गुज़रने वाले हैं कि खुदा मुझे लड़का दे जो हक़ व बातिल के दर्मियान फ़र्क़ करने वाला होगा।

5. रावी कहता है इब्ने नज्जाश ने मुझ से पूछा तुम्हारे इमाम के बाद कौन इमाम होगा मैं चाहता हूं तुम उनसे दरियाफ़्त करो ताकि मुझे भी इल्म हो जाये मैंने भी इमाम

रज़ा अलैहिस्सलाम से सवाल किया। आपने फ़रमाया मेरा बेटा इमाम है फिर फ़रमाया किसी को जुर्रत है कि कह दे मेरा बेटा। दरआंहालांकि उस का बेटा न हो।

6. रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम के पैदा होने के बाद कुछ सवाल किये आपने फ़रमाया – उससे तुम्हारा मक़सद क्या है यह हैं अबू जाफ़र (इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम) मैंने उनको अपनी जगह बिठाया है।

7. इब्ने क़ियामा ने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से सवाल किया। क्या एक वक़्त में दो इमाम होते हैं फ़रमाया – नहीं मगर ये एक कि एक उनमें सामित हो। मैंने कहा – अब तो आप अकेले ही हैं सामित तो कोई नहीं और इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम उस वक़्त तक पैदा न हुए थे। आपने फ़रमाया ख़ुदा उसको मुझसे पैदा करेगा जो हक़ और अहले हक़ को साबित क़दम बनायेगा और बातिल और अहले बातिल को मिटायेगा। एक साल बाद इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम पैदा हुए और इब्ने क़यामा वाक़िफ़ था।

8. रावी कहता है मैं इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर था। आप (अ०) ने अपने फ़रज़न्द को बुलाया वह बहुत कमसिन थे। हज़रत ने उनको अपने पहलू में बिठाकर मुझ से फ़रमाया उनके कपड़े उतारो और इन दोनों को कन्धों के दर्मियान देखो मैंने देखा तो आपके शाने पर एक मुहर लगी थी जिसका असर गोश्त के अन्दर तक था। फ़रमाया – तुमने इसे देखा इसी तरह का निशान उसी जगह मेरे पिदर बुजुर्गवार के भी था।

9. रावी कहता है मैं इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम की

ख़िदमत में हाज़िर था आपके फ़रज़न्द अबू जाफ़र (इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम) दरआंहाले कि वह कमसिन थे आये। आपने फ़रमाया ये वह बच्चा है जिस से ज़्यादा बरकत वाला हमारे शियों के लिये और कोई नहीं।

10. रावी कहता है मैं ने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से कहा कि क़ब्ल उसके कि अबू जाफ़र पैदा हों तो हमने आपसे आपके बाद वाले इमाम के मुताल्लिक़ सवाल किया था तो आपने फ़रमाया था कि ख़ुदा मुझे लड़ता अ़ता करेगा। चुनान्चे उसने अ़ता किया। जिससे हमारी आंखें ठण्डी हुई पस ख़ुदा हमें आपकी मौत का दिन न दिखाये अगर ऐसा हो तो आपके बाद कौन इमाम होगा। आपने अबू जाफ़र की तरफ़ इशारा किया। मैंने कहा ये तो तीन ही बरस के हैं फ़रमाया – क्या मज़ाएक़ा है ईसा तीन ही साल के हुज्जते ख़ुदा थे।

11. रावी कहता है मैंने सुना कि इब्राहीम बिन इस्माईल ने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से कहा मेरे बेटे की ज़बान में लुकनत है कल मैं उसे आपके पास भेजूंगा। आप उसके सर पर हाथ फेर दें और दुआ करें वह आप का गुलाम है फ़रमाया – वह अबू जाफ़र का गुलाम है कल उन्हीं के पास भेजना।

12. रावी कहता है मैं अली बिन जाफ़र बिन मुहम्मद (अ0) के पास मदीने में बैठा था और मैं उनके पास दो साल से क़याम किये हुए था जो कुछ वह अपने भाई इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से सुना हुआ बयान करते थे मैं उसको लिखता जाता था। नागाहे इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये मस्जिदे रसूल में, पस आये अली बिन जाफ़र बग़ैर जूतों और रिदा के उनके हाथ को बोसा

दिया और ताज़ीम की। इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ चचा बैठिये अल्लाह आप पर रहम करे। फ़रमाया – ऐ मेरे सरदार मैं कैसे बैठूं, दरेआंहालांकि आप खड़े हैं जब अली बिन जाफ़र अपने मक़ाम पर आये तो उनके यारों ने यह कह कर झिड़का कि वह आपके बाप के चचा हैं आप उनके साथ ऐसा बुज़ुर्गों का सा बर्ताव करते हैं उन्होंने कहा चुप हो जा। जबकि अल्लाह अज़्ज़ो जल इतना कह कर अपनी दाढ़ी को पकड़ा मेरी ये सफ़ेद दाढ़ी क़ाबिले अज़्मत हो और ये जवान न हुआ। मैं इसको क़ाबिले अज़्मत जानता हूं खुदा ने उन्हें जिस मक़ाम पर रखा है। मैं उनकी फ़ज़ीलत का कैसे इन्कार करूं जो कुछ तुम कहते हो मैं उससे खुदा की पनाह मांगता हूं मैं तो उनका गुलाम हूं।

13. रावी ने अपने बाप से रिवायत की है कि मैं ख़रासां में इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक शख़्स ने आकर कहा अगर आपकी मौत का हादसा हो जाये तो आपके बाद इमाम कौन होगा, हज़रत ने फ़रमाया – मेरा बेटा अबू जाफ़र, ये कहने वाला शख़्स इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम को कमसिन होने की वजह से ज़लील जानता था। इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। अल्लाह तआ़ला ने भेजा ईसा (अ0) बिन मरयम को रसूल नबी (स0) और साहबे शरीअ़त बनाकर ऐसे सिन में जो कम था सिने अबू जाफ़र अलैहिस्सलाम से।

14. रावी कहता है कि मैं ने अली बिन जाफ़र से सुना कि उसने रिवायत की है हसन बिनुल्हुसैन बिन अली बिनुल्हुसैन से कहा कि उसने बयान किया कि खुदा ने मदद की इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम की। उन्होंने कहा खुदा की क़सम हम

उनके चचा हैं। हमने भी उन पर ज़्यादती की, हसन ने कहा मैं आप पर फ़िदा हूं ये कैसे आप लोगों ने क्या किया। मैं तो मौजूद न था उन्होंने कहा इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम के भाइयों ने और हमने भी कहा कि हम में से कोई इमाम स्याह रंग वाला नहीं हुआ। इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया वह (इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम) मेरा बेटा है। उन्होंने कहा ज़ैद बिन हारिसा के बारे में – रसूलुल्लाह ने क़याफ़ा शनासों के ज़रीए फ़ैसला किया था। पस हमारे और तुम्हारे ही घरों में आयें जब वह आये तो उन्होंने हम को बाग़ में बिठाया और इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम के चचा भाई और बहने सब वहां जमा हुए और उन्होंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम को अदना जुब्बा पहनाया और उसी की टोपी सर पर रखी और गर्दन पर बेल्चा रखा (काश्तकारों और दहक़ानों के से लिबास में आप (अ0) को नुमायां किया)।

और कहा आप बाग़ में इस तरह दाख़िल हों गोया आप उसके माली हैं और क़याफ़ा शनासों से कहा – बताओ उस लड़के का बाप कौन है उन्होंने कहा उनमें से उसका कोई बाप नहीं है बल्कि ये उसके बाप का चचा है और ये उसका चचा है और ये उसका चचा है और यह उसकी फूफी है अल्बत्ता उसका बाप ये साहबे बसतान है उन दोनों के क़दम एक से हैं पस इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम चलने लगे तो उन्होंने कहा कि ये उसके बाप हैं। अली बिन जाफ़र ने कहा। मैं उठा और मैंने इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम के लुआबे दहन को चूसा और कहा कि मैं गवाही देता हूं कि आप खुदा की तरफ़ से मेरे इमाम हैं।

इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने गिरया फ़रमाया और कहा

ऐ चचा क्या तुमने मेरे बाप को कहते नहीं सुना कि रसूलुल्लाह (स0) ने फ़रमाया है बेहतरीन कनीज़ का फ़रज़न्द आयेगा वह उस ज़ने हबशिया का फ़रज़न्द होगा जिसके मुंह से खुशबू आती होगी और तय्यबुर्रहम होगी और इल्हाम किया जायेगा उस पर खुदा की लअ़न हो उन अब्बासियों पर और उनकी जुर्रियत पर (जिन्होंने औलाद से दुश्मनी की) वह (इमामे असर) को क़त्ल करेंगे उनको बरसों महीनों और दिनों और उनको ज़िल्लत की तरफ खींचेगे और वह दूर रहेंगे अपने अब वजद से वह साहबे ग़नीमत होंगे और ऐ चचा यह सब मेरी नस्ल से होगा। मैंने कहा मैं आप पर फिदा हूँ यह आपने सच कहा।



## बहत्तरवां बाब

# इमाम अली नक़ी अ० की इमामत पर नस्स

रावी कहता है जब पहली बार हज़रत इमाम अली नक़ी[अ0] बग़दाद जाने लगे तो मैंने चलते वक्त कहा। मैं आप पर फिदा हूँ मैं उस पेश आने वाली सूरत से डर रहा हूँ लिहाज़ा यह बताइये कि आपके बाद कौन इमाम होगा। पस आप[अ0] ने हँसते हुए मेरी तरफ देखा। और फ़रमाया – इस साल मेरा जाना वहाँ नहीं है जो तुमने गुमान किया है (यानि उस सफ़र मेरी वफात न होगी क्योंकि इस मर्तबा मामून ने मेरी दामादी के लिये बुलाया था।) जब आप दूसरी बार मुअतसिम के बुलाने पर जाने लगे तो मैं आप[अ0] की ख़िदमत

में हाज़िर होकर कहने लगा। मैं आप पर फ़िदा हूं आप जा रहे हैं ये तो फ़रमाइये आप[अ०] के बाद कौन इमाम होगा ये सुनकर हज़रत इतना रोये कि रीशे मुबारक तर हो गई फिर मुझसे फ़रमाया इस मर्तबा ख़ौफ़ की सूरत है पस मेरे बाद बेटे अली[अ०] इमाम हैं।

2: खैराफी ने अपने बाप से रिवायत की है कि वह ख़ादिम था इमाम अली नक़ी[अ०] का और अहमद बिन मुहम्मद हर रात को आता था ताकि इमाम अली नक़ी[अ०] की बीमारी का हाल मालूम करे जब वह शख़्स जो इमाम के और मेरे बाप के दरमियान पैग़ाम रसा आया था तो अहमद उठ गया और उससे तन्हाई में गुफ्तगु की मेरे बाप ने, एक रात मैं घर से निकला तो अहमद मजालिस से उठ खड़ा हुआ और मेरे बाप ने क़ासिद इमाम से खुलूत की अहमद ने चक्कर लगाया और ऐसी जगह छिप कर खड़ा हुआ ताकि बातचीत को सुने क़ासिद ने मेरे बाप से कहा आपके मौला ने आपको सलाम कहा है और फ़रमाया है मैं दुनिया से जाने वाला हूँ और अम्रे इमामत मुनतक़िल होने वाला है मेरे फ़र्ज़न्द अली[अ०] की तरफ़ उसकी इताअत तुम पर उसी तरह फ़र्ज़ है जिस तरह मेरे बाप[अ०] के बाद मेरी इताअत तुम पर फ़र्ज़ थी क़ासिद यह कहकर चला गया और अहमद अपनी जगह पर आया और मेरे बाप से कहने लगा तुमसे और उससे क्या बात चीत हुई उन्होंने कहा अच्छी बात चीत हुई उसने कहा मैंने सुन लिया है पस तुम मुझसे क्यूं छुपाते हो और जो सुना था बयान कर दिया। मेरे बाप ने कहा तुमने फ़ेले हराम किया। ख़ुदा फ़रमाता है अहवालुल मुस्लेमीन का तजस्सुस न करो। पस इस गवाही को महफ़ूज़ रखो, शायद कि हम किसी दिन

उसकी तरफ़ मोहताज हों और तुम पर लाज़िम है कि जब वक़्त आये तो उसको ज़ाहिर कर देना जब सुबह हुई तो मेरे बाप ने दस परचों पर एक पैग़ाम लिखा और वह परचे क़ौम के सरबर आवुरदा लोगों के हवाले करके कहा कि इससे कि मैं तुमको बुलाऊँ अगर मेरी मौत वाक़ेअ हो जाये तो इसको खोलना और जो इसमे है उस पर अमल करना। जब इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] का इन्तिक़ाल हो गया तो मेरे बाप ने बयान किया कि जनाज़ा अभी घर से न निकलने पाया था कि तक़रीबन चार सौ आदमियों ने आप[अ०] की इमामत का इक़रार किया। क़ौम के रूअसा मोहम्मद बिन अलफरज़ के यहां जमा हुए और अम्रे इमामत के मुताल्लिक़ गुफ़्तुगू करने लगे मोहम्मद बिन अलफ़रज़ ने मेरे बाप को इस इजतेमाअ की ख़बर दी और लिखा है कि अगर शोहरत का ख़ौफ न होता तो मैं उनको लेकर आता। लिहाज़ा आप आइये मेरे बाप सवार होकर उनके पास पहुँच गये। वहाँ क़ौम जमा थी उन्होंने मेरे बाप से कहा / इस मामले में आप क्या कहते हैं मेरे बाप ने कहा इन मेरे रक़ओं को लाओ व ले आये। उनसे कहा मुझे इसी का हुक्म दिया गया है बाज़ लोगों ने कहा हम चाहते हैं कि इस अम्र का कोई गवाह भी हो उन्होंने कहा यह अबू जाफ़र अशअरी उस पैग़ाम का गवाह है जो मुझे इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] से पहुंचा था और उन्होंने उससे गवाही देने को कहा। अहमद ने इन्कार कर दिया मेरे बाप ने उसको मुबाहले की दावत दी। उन्होंने जब मामले की सूरत पायी तो कहा – मैंने उस पैगाम को सुना है मैं चाहता हूँ इमाम अरब हो अज्म न हो पस उन सब लोगों ने इक़रार हक़ कर लिया।

3: अहमद बिन अबी ख़ालिद गुलाम इमाम मोहम्मद

तक़ी अलैह ने बयान किया कि उसने वसीयत मकतूबा की गवाही दी।

गवाही दी अहमद बिन अबी ख़ालिद गुलाम इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] ने उसकी अबू जाफर बिन अली बिन मूसा जाफर बिन मोहम्मद बिन अली बिन अलहुसैन बिन अली अबीतालिब अलैहुमुस्सलाम ने इस बात की गवाही दी कि वसीयत की इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] ने अपने फ़र्ज़न्द अली और उनकी बहनों के मुतालिक़ और अम्रे मूसा को उनके बलूग़ तक ताबेअ बनाया और अब्दुल्लाह बिन मसाविर को मुतवल्ली बनाया ज़मीनों और अमवाल और नफक़ात व गुलाम व क़नीज़ों का जब तक इमाम अली नक़ी[अ०] बालिंग हों (उसकी उम्र उस वक्त छह या आठ साल थी।) अब्दुल्लाह बिन मसाविर उस दिन से वकील हुए। नक़ी[अ०] और उनकी बहनों के मामलात के और अम्रे मूसा मुतालिक़ हुआ इमाम अली नक़ी[अ०] से बाद बलूग़ जबकि हाज़त वकील न रहे सदकात वग़ैरह में वह बालिग़ हों इमाम अली नक़ी[अ०] के। यह वाक़िया रोज़ यक शम्बा 3, जिलहिज 220 हिजरी का है अहमद बिन ख़ालिद ने अपने क़लम से गवाही लिखी है और उसके गवाह हैं हसन बिन मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अलहसन बिन अली बिन अल हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब अलैहुमुस्सलाम जो जवानी मशहूर हैं उनकी गवाही अहमद बिन ख़ालिद की गवाही की तरह उस तहरीर के सदर में भी उन्होंने अपनी गवाही अपने हाथ लिखी और नस्र ख़ादिम ने अपनी गवाही अपने हाथ से लिखी।



## तिहत्तरवां बाब

# इमाम हसन अस्करी अ० की इमामत पर नस्स

1: यहिया बिन यसार रावी कहता है कि वसी बनाया इमाम अली नक़ी अ0 ने अपने बेटे हसन (असकरी) अ0 सलाम को अपने मरने से चार माह क़ब्ल और गवाह बनाया मुझे और अपने गुलामों को।

2: रावी कहता है मैं इमाम अली नक़ी अ0 के घर के सहन में आपके पास था कि आपके फ़र्ज़न्द मोहम्मद आये मैंने कहा क्या आपके बाद यही इमाम होंगे फ़रमाया नहीं मेरे बाद हसन होंगे।

3: रावी कहता है कि फ़रमाया इमाम अली नक़ी अ0 ने कि मेरे बाद तुम्हारा इमाम वह होगा जो मेरे बाद तुम्हारा इमाम वह होगा जो मेरी नमाज़ जनाज़ा पढ़ेगा और हम उससे पहले अबू मोहम्मद (स0) को जानते भी न थे पस इमाम अली नक़ी अ0 के बाद इमाम हसन असकारी अ0 निकले और नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

4: रावी कहता है मैं मौजूद था इमाम अली नक़ी अ0 के पास जिस दिन उनके फ़र्ज़न्द मोहम्मद ने वफात पायी आपने इमाम हसन अस्करी अ0 ने फ़रमाया – खुदा का शुक्र करो कि अम्रे इमामत तुमसे मुताल्लिक़ हुआ।

5: रावी कहता है कि जब अबू जाफर मोहम्मद बिन अली का इन्तिकाल हुआ तो इमाम अली नक़ी अ0 तशरीफ लाये आपके लिये कुर्सी लायी गयी आप उस पर बैठे और

आपके गिर्द आपके खानदान वाले जाम थे और इमाम हसन असकरी अ0 एक तरफ खड़े थे जब अबू जाफ़र की तजहीज़ व तकफीन से फारिग़ हुए तो इमाम हसन असकरी अ0 से फ़रमाया – बेटा ख़ुदा का शुक्र करो कि उसने अम्रे इमामत अता फ़रमाया।

6: रावी कहता है मैंने इमाम अली नक़ी अ0 से कहा अगर आपका इन्तिकाल हो जाये और मैं उस कहने की खुदा से पनाह मांगता हूँ तो आपके बाद कौन इमाम होगा फ़रमाया– मेरे लड़कों में से सबसे बड़ा।

7: रावी कहता है कि मैं इमाम अली नक़ी अ0 की ख़िदमत में आया। उसक वक़्त आपके फ़र्ज़न्द अबू जाफर ज़िन्दा थे मेरा गुमान था कि वही इमाम होंगे मैंने कहा मैं आप पर फिदा हूँ इमामत के लिये आप की औलाद में कौन मख़सूस है फ़रमाया जब तक मेरा हुक्म न हो किसी को मख़सूस न करो। रावी कहता है कुछ मुद्दत बाद मैंने फिर हज़रत को लिखा आपने तहरीर फ़रमाया – मेरी औलाद में सबसे बड़ा और इमाम हसन असकारी अबू जाफ़र से बड़े थे।

8: रवायत की है एक जमाअत बनी हाशिम ने उनमें हसन बिन हसनिल अफ़तिस भी थे यह सब रोज़ वफात मोहम्मद (पिसर इमाम अली नक़ी) बिन अली बिन मोहम्मद इमाम हसन अस्करी के दरवाज़े पर हाज़िर हुए बाग़र्ज ताज़ियत आपके घर के सहन में थे और आपके गिर्द लोग बैठे हुए थे जो आले अबू तालिब, बनी हाशिम और कुरैश से थे जो आले अबू तालिब, बनी हाशिम सिवाय गुलामों और दूसरे लोगों के, आप[अ0]) ने हसन बिन अली (नक़ी) को देखा उनका गिरेबान फटा हुआ है। वह दाहिनी तरफ आकर खड़े हो गये हम उनको न पहचानते थे एक घड़ी बाद इमाम अली

नक़ी अलैह सलाम ने फ़रमाया – बेटा अल्लाह का शुक्र करो कि उसने तुम्हारे लिये अम्रे इमामत को क़रार दिया। वह जवान (इमाम हसन असकरी[अ0]) रोने लगा और कहा – रब्बुलआलमीन खुदा के लिए हम्द है और मैं सवाल करता हूँ खुदा से कि आपकी बरकत से अपनी नेअमतें हम पर तमाम करे और फिर इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन कहा। हमने उस जवान के मुताल्लिक़ सवाल किया लोगों ने फ़रमाया – यह हज़रत के फ़र्ज़न्द हसन[अ0] हैं उस वक्त उनकी उम्र 20 साल या कुछ ज़ायद थी उस दिन हमने पहचाना और यह समझा कि हज़रत का यह इरशाद इमामत और अपना क़ायम मुक़ाम बताने की तरफ था।

9: रावी कहता है कि मैं इमाम अली नक़ी अ0 की ख़िदमत में अबू जाफ़र के मरने के बाद हाज़िर हुआ ताकि ताज़ियत करूं इमाम हसन अस्करी बैठे हुए थे वह रोने लगे हज़रत ने फ़रमाया – खुदा ने उनके बाद तुमको इमाम करार दिया। पस शुक्र खुदा करो (कि इशतिबाह की सूरत बाक़ी न रही।)

10: रावी कहता है के मैं इमाम अली नक़ी अ0 के फ़र्ज़न्द अबू जाफ़र के मरने के बाद उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मेरे दिल में यह खयाल आया कि अबू जाफर और इमाम हसन अस्करी का वाक़िया उसक वक्त बिल्कुल वैसा ही जैसा इमाम मूसा काज़िम और इस्माईल और फ़र्ज़न्द उन इमाम मूसा सादिक़ का था और जो क़िस्सा खुरदी बुज़ुर्गी का वहां था वही यहां है (यानि जिस तरह इस्माईल इमाम मूसा) काज़िम से उम्र में बड़े थे उसी तरह अबू जाफर इमाम हसन अस्करी इमाम हुए। फिर इमाम अली नक़ी अलैह सलाम, क़ब्ल उसके कि मैं कुछ कहूँ। मुझसे फरमाने लगे ऐ अबू हाशिम, खुदा ने अबू जाफ़र के बाद अपना हुक्म ज़ाहिर

किया अबू जाफ़र के बाद अपना हुक्म जाहिर किया अबू मोहम्मद (हसन अस्करी) के बारे में जिसकी मार्फत लोगों को न थी यह ऐसा ही जैसा कि इस्माईल के मरने के बाद मूसा (स0) (काज़िम) के लिये जाहिर हुआ था। यह ऐसा ही जैसा कि मैंने तुमसे बयान यिका। अगर चह मेरा बेटा मेरे बाद मेरा जांनशीन है उसके बाद वह तमाम इल्म जिसकी तरफ एहतियाज होती है और उसके पास सामान हिमायत है।

11: रावी कहता है कि मुझे लिखा इमाम अली नक़ी अ0 ने कि अबू मोहम्मद मेरा बेटा है ख़ालिस तर है आले मोहम्मद में अज़रुवे तबियत मुस्तहकमतर है उनमें अजरूवे बुरहान वह मेरी औलाद अकबर है मेरा क़ायम मक़ाम है उसकी तरफ मुन्तहा होती है रसनहाय इमामत यानि जफर अबपज़ व जफर अहमर वग़ैरह जानता हूँ और जमीअ मसाएल का इल्म उसके पास है पस जो तुम्हें पूछना है उससे पूछो उसको हर उस चीज़ का इल्म है जिसकी तरफ एहतियाज होती हैं।

12: रावी कहता है मुझे इमाम अली नक़ी[अ0] ने एक ख़त में लिखा कि तुम पूछना चाहते हो कि मेरे बाद मेरा जांनशीन कौन है और तुमको उस मामले में अज़तराब है पास तुम गम न करो। अल्लाह तआला किसी क़ौम को हिदायत के बाद गुमराही में नही छोड़ता। यहाँ तक कि वह ज़ाहिर कर देता है उस चीज़ को जिससे वह साहिबे तक़वा हो तुम्हारा इमाम मेरे बाद अबू मोहम्मद मेरा फ़र्ज़न्द है उसके पास तमाम बातों का इल्म है जिनकी तुम्हें एहतियाज हो वह मुक़द्दम रखता है उस चीज को जिस चीज़ को खुदा चाहता है और मुवख़्ख़र करता है उस चीज़ को जिसे अल्लाह मुवख़्खर चाहें खुदा फरमाता है हम किसी आयत को मनसूख नहीं करते और न

भुलाते है मगर यह कि उसकी जगह उससे बेहतर या उसकी मसल ले आते है मैने जो कुछ लिखा है उसमें तौजीअ और क़नाअत है साहबे अक़्ल बेदार के लिये।

13: रावी कहता है मैने इमाम अली नक़ी[अ0] से सुना कि मेरा जांनशीन मेरे बाद हसन है पस क्या हाल होगा तुम्हारा मेरे जांनशीन के बाद आने वाले जांनशीन के मुताल्लिक़। मैंने कहा यह क्यों फ़रमाया—उस लिये कि तुम उसके वुजूद को न देखोगे और उसका ज़िक्र उसके नाम से ना कर सकोगे। मैंने कहा फिर हम उन्हें कैसे याद करेंगे। फ़रमाया यह कहना हुज्जत खुदा आले मोहम्मद (स0) से।



## चौहत्तरवाँ बाब

## इशारा और नस्स साहिबुद्दार की तरफ़

1: रावी कहता है कि ख़बर आयी मेरे पास इमाम हसन अस्करी अ0 के पास से उनके मरने के दो साल क़ब्ल उनकी जांनशीनी के मुताबिक़ फिर खबर आयी मरने से तीन दिन पहले और बताया गया कि उनके बाद कौन इमाम होगा।

2: रावी कहता है मैंने इमाम हसन अस्करी अ0 से कहा कि आपकी जलालत सवाल करने से मानेअ है इजाज़त दीजिए कि मैं आपसे सवाल करुं। फ़रमाया पूछो मैंने कहा आया आप[अ0] के कोई फ़रज़न्द है कहा हाँ मैंने कहा अगर आप[अ0] का इन्तेक़ाल हो जाये तो हम कहां सवाल करें। फ़रमाया—इसी शहर में (वुकला के जरिये)

3: रावी कहता है कि इमाम हसन अस्करी ने अपने फ़र्ज़न्द को मुझे दिखला कर कहा यह तुम्हारा इमाम है मेरे बाद

4: रावी कहता है मैंने वकील इमाम हसन अस्करी से कहा कि इमाम अबू मोहम्मद (हसन असकरी[अ0]) इन्तिक़ाल कर गये उसने कहा हाँ। लेकिन तुम मैं अपना जांनशीन उनको बना गये हैं और अपने हाथ से इशारा किया।

5: रावी कहता हे कि इमाम हसन असकरी[अ0] ने ख़बर दी जब ज़बीरी (मुक़तदिर अब्बासी) क़त्ल कर दिया गया कि यह सज़ा है उसकी जो अल्लाह से गुस्ताखी करता है उसके औलिया के बारे में उसका ख्याल था कि वह मुझे क़त्ल करेगा और यह समझता था कि मेरा कोई फ़र्ज़न्द नहीं। पस उसने कुदरते खुदा को कैसा देखा। हज़रत के एक फ़र्ज़न्द पैदा हुए जिनका नाम आपने मोहम्मद रखा। यह विलादत 256 हिजरी में हुई।

6: रावी कहता है मैं सामरह आया और इमाम हसन अस्करी अ0 के दरवाज़े पर हाज़िर हुआ। हज़रत ने मुझे बुलाया। मैं अन्दर दाख़िल हुआ और सलाम किया। फ़रमाया कैसे आये। मैने कहा आपकी ख़िदमत करने के लिये। फ़रमाया--अच्छा रहो मैं हज़रत के ख़ादिमों के साथ रहने लगा और बाज़ार मैं सौदा सुलफ लाने लगा मैं बग़ैर इज़्न घर के अन्दर आता जाता था जबकि मर्दाना होता था एक रोज़ मैं अन्दर आया उस वक़्त घर में मर्द थे मैने घर के अन्दर एक आवाज़ सुनी, हज़रत ने मुझे पुकार कर कहा अपनी जगह पर ठहरो, पस मैंने अन्दर दाख़िल होने की जसारत न की और बाहर न निकला। नागाह एक कनीज़ निकली उसके साथ कोई शय लिपटी हुई फिर मुझे आवाज़ दी कि आ जाओ मैं अन्दर आया। फिर कनीज़ को पुकारा। वह आयी तो फ़रमाया जो तेरे पास है उस पर से परदा हटा दे। उसने

हटाया तो मैंने एक खूबसूरत लड़के को देखा जिसके बाल सीने से नाफ़ तक सुनहरे थे काले न थे हज़रत ने फ़रमाया यह तुम्हारा इमाम है उसके बाद लौंडी को उठा ले जाने का हुक्म दिया। उसके बाद जब तक इमाम हसन अस्करी ज़िन्दा रहे मैंने फिर न देखा।



## पचहत्तरवां बाब

# उन लोगों का ज़िक्र जिन्होंने हजरत हुज्जत को देखा

## तौजीह

ज़मानाए गै़बते सुग़रा में हज़रत साहबुलअम्र अ० के सोफरा चार थे। अव्वल अबू अम्र व उस्मान बिन सईद उमरी, दूसरे उनके बेटे अबू जाफर मोहम्मद बिन उस्मान, तीसरे अबुल क़ासिम अल हुसैन बिन रौह बिन अली बहरून्नून बख्ती, चौथे अबुल हसन अली मोहम्मद अलसमरी।

1. रावी कहता है जमा हुए मैं और शेख़ अबू अम्र रहमतुल्लाह अलैह अहमद बिन इस्हाक़ के पास उन्होंने अपनी आँख से इशारा किया कि मैं शेख अबू अम्र से इमाम हसन[अ०] असकरी[अ०] के जांनशीन के मुताबिक़ सवाल करुं। मैंने कहा—ऐ अबू अम्र मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ उसमें मुझे शक नहीं है। मेरा एतक़ाद है और यह मेरा दीन है ज़मीन किसी वक़्त हिज्जते खुदा से ख़ाली नहीं रहेगी मगर क़ब्ल कयामत चालीस रोज़ (दीगर रवायत से मालूम होता है कि सबसे आखिर मरने वाला इमाम होगा चूंकि मज़कूरह

बाला क़ौल रावी का है न कि इमाम का। लिहाज़ा उसको कुव्वत नहीं दी जा सकती) जब कयामत आ जायगी तो हुज्जते खुद रफा हो जायेगी और तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा फिर किसी शख्स को उसका ईमान फायदा न देगा जब तक पहले से ईमान न लाया हो और अम्रे सालेह बतक़ाजाये ईमान उसने न किये हों ऐसे लोग अशरार ख़ल्क अल्लाह होंगे और उन पर क़यामत क़ायम होगी।

लेकिन मै यक़ीन में ज्यादती चाहता हूँ जिस तरह इंब्राहीम ने अपने रब से सवाल किया था कि मुझे दिखा दे कि मुर्दो कैसे जिन्दा करता है खुदा ने कहा क्या तुम ईमान नहीं लाये। कहा क्यों नहीं लेकिन इत्मिनाने क़ल्ब चाहता हूँ मुझे ख़बर दी है अबू अली अहमद बिन इस्हाक़ ने कि मैने इमाम अली नक़ी अ० से पूछा कि मै मसाएल में किस शख्स के हुक्त पर अमलकरूं और अहकाम शरिअत को किस से लूं और किसके क़ौल को कुबूल करूं हजरत ने फ़रमाया– अमरी मेरा मोतमद है जो बात वह मेरी तरफ से पहुँचाये वह मेरी ही बात होगी और जो मेरी तरफ से तुमसे कहे वह मेरा ही क़ौल होगा उसे सुनो और इताअत करो वह मेरा मोतमद है और ख़ता से मामून व मस्ऊन है।

अबू इसहाक़ ने यह भी बताया कि ऐसा ही सवाल उन्होंने इमाम हसन अस्करी अ० से भी किया था। उन्होंने भी यही फ़रमाया कि उमरी और उनका बेटा दोनों सिक़्क़ा है पस वह मेरी तरफ से तुमकों पहुँचायें वह सही होगा और जो तुमसे कहें वह मेरा ही क़ौल होगा पस उनकी बात सुनो और उनकी इताअत करो वह दोनों सिक़ह और मामून हैं।

यह क़ौल दो इमामों का तुम्हारे बारे में है यह सुनकर

अबू अम्र सजदेह में गिर पड़े और रोये और फ़रमाया– पूछो मैने कहा क्या इमाम हसन अस्करी के जानशीन को देखा है फ़रमाया – खुदा की कसम उनकी गर्दन इस तरह की है और इशारह किया अपने हाथ से मैंने उनसे कहा।

अब एक सवाल बाक़ी रहा। उन्होंने कहा वह भी यह बयान करो। मैंने कहा– उसका नाम बता दीजिए फ़रमाया उसके मुताल्लिक़ सवाल करना तुम पर हराम है मैं किसी अम्र के मुताल्लिक़ नहीं कहता कि यह मेरी तरह से है मैं खुद न किसी चीज को हलाल करता हूँ और न हराम, बल्कि जो कुछ कहता हूँ इमाम अ0 की तरह से उस उम्र में बादशाह जाबिर का ख़ौफ है लोगों ने बयान कर दिया कि इमाम हसन अस्करी मर गये दर आन्हालेकि उनका कोई बेटा नहीं पस उनकी मीरास तक़सीम हो गयी और वह मिल गयी इस शख़्स को (जाफर कन्ज़ाब) जिसका इसमें कोई हक़ नहीं और हाल यह है कि इमाम हसन अस्करी अ0 के अयाल (उनके गुलाम वग़ैरह) लोगो के दरमियान गश्त करते फिरते हैं और किसी की यह जुर्अत नहीं कि उनका तार्रुफ करा दे या उनको कुछ दे दे। अगर बादशाह जाबिर को उनका पता चल जाए तो फौरन बुला ले (और उनको क़त्ल कर डाले) पस इस सवाल से बाज रहो और उनका नाम न पूछो। कुलैनी अ0 ने बयान किया है कि एक बुर्जुग ने हमारे असहाब जिनका नाम मैं भूल गया हूँ यही खायत अहमद बिन इस्हाक़ से नक़ल की है।

2: रावी कहता है कि बयान किया मूसा बिन जाफर ने जो खानदान रसूल में सबसे कबीरूल सिन थे कि मैने हज़रत रसूल में सबसे कबीरुस्सिन थे कि मैंने हज़रत साहबुलअम्र को दो मस्जिदों (मस्जिद मक्का व मदीना) के

दरमियान देखा है।

3: रावी कहता है कि हकीमा ख़ातून बिन्ते इमाम मोहम्मद तक़ी अ0 ने जो फूपी हैं इमाम हसन अस्करी अ0 की बयान किया कि मैंने हज़रत हुज्जत को विलादत की उस रात और उसके बाद देखा है।

4: रावी कहता है मैंने अमरी से दरयाफ्त किया कि इमाम हुसैन अ0 मर गये। फ़रमाया– हाँ। लेकिन उन्होंने अपना फ़र्ज़न्द छोड़ा है जिसकी गर्दन ऐसी है और इशारा किया अपने हाथ से।

5. रावी कहता है मैंने सुना अबू अली बिन मुतह्हर से कि जिक्र किया कि उन्होंने हज़रत हुज्जत को देखा है और हज़रत ने उनसे हाल बियाबान नवरदी बयान किया है (क़द के मायने क़ामत के भी हैं और बियाबाने नवर्दी के भी, यहां मुनासिब बमाने बियाबाने नवर्दी दी है क्योंकि क़ामत का बयान कोई माने नहीं रखता है)

6. कनीज़ नीशा पूरी से मरवी है कि मैं इब्रहीम के साथ कोहे सफ़ा पर खड़ी थी कि हजरत साहबुलअम्र आये और इब्राहीम के पास खड़े हुए और उनसे हज के मनासिक की किताब ले ली। और जरूरी मसाएल उनको बताये।

7. रावी कहता है मैंने साहबे अम्र अ0 को हजरे अस्वद के पास देखा लोग हुजूम में एक दूसरे को खींच रहे थे और हज़रत फरमा रहे थे। तुम्हें उसका हुक्म नहीं दिया गया।

8. रावी कहता है मैंने इमाम हसन अस्करी के मरने के बाद हज़रत साहबे अम्र को 20 साला उम्र का देखा मैंने उनके हाथों और सर को बोसा दिया (ईफ़ाअ–ज़मानए शबाब

बिस्त साला उम्र)

9. रावी से जाफरे कज्ज़ाब का ज़िक्र आया तो उसकी लोगों ने मजम्मत की, मैने कहा उसके सिवा और कोई वारिस ही न था क्या तुमने वारिस को देखा है रावी ने कहा मैंने तो नहीं देखा है मेरे ग़ैर ने देखा है। मैंने पूछा वह कौन है फ़रमाया खुद जाफ़र कज्ज़ाब ने दो मर्तबा देखा है और उनसे बात भी की।

10. रावी कहता है ख़बर दी मुझे मोहम्मदेनिल वजनानी ने उन लोगो के मुताल्लिक जिन्होंने साहबे अम्र को देखा। क़ब्ले वफात इमाम हसन अस्कारी दस रोज पहले और फ़रमाया—खुदा वन्दा तू जानता है कि यह धर महबूब तरीन घरों में से होता अगर जाफ़र वग़ैरह की मुखालेफत न होती या इस किस्म की बातें न की जातीं।

11. अली बिन कैस ने एक देहाती क़ाजी से बयान किया कि मैने बादशाह के एक अफसर को देखा कि इमाम हसन अस्करी के घर को दरवाजा तोड़ रहा है पस हज़रते साहबे अम्र निकले और आपके हाथ में एक हथियार था। उससे आपने फ़रमाया— तुम यह क्या कर रहें हो। उस हाकिम ने कहा – जाफरे कज्जाब का गुमान यह है कि आपके वालिद लावलद मरें हैं पस अगर यह आपका घर है तो मै वापस जाता हूँ यह कह कर वह घर से वापस आ गया। अली बिन कैस का बयान है कि उस घर के नौकरों में से एक नौकर निकला। मैंने उसके मुताल्लिक़ पूछा— उसने कहा कि यह तुमसे किसने बयान किया। मैंने कहा देहात के एक क़ाजी ने। उसने कहा यह खबर लोगो से पोशीदा न रहेगी।

12. रावी कहता है कि इमाम हसन अस्करी अ० ने मुझे साहबे अम्र को दिखला कर फ़रमाया– यह हैं तुम्हारे इमाम।

13. अबू नसर ज़रीफ ख़ादिम इमाम हसन अस्करी अ० कहता है कि मैंने साहबे अम्र अ० को देखा।

14. रावी कहता है कि इमाम हसन अस्करी अ० ने मुझे हज़रत साहबे अम्र अ० को दिखाया।

15. रावी कहता है कि मैं अपने एक हमराही के साथ हज कर रहा था जब अराफात में हम पहुँचे तो मैंने एक नौजवान को बैठा पाया जो एक लंग और रिदा पहने हुए था और ज़र्द रंग का जूता पैरों में था। मैं लंग और रिदा की क़ीमत का अन्दाजा लगाया 150 दीनार और यह कि सफर की थकान का कोई असर उन पर न था एक साइल हमारे पास आया। हमने उसको रद कर दिया। वह उस जवान के पास गया और उससे सवाल किया। उसने ज़मीन से कुछ उठाया और उसे दे दिया। साइल ने उसे दुआ दी और लम्बी दुआ की। जवान वहाँ से उठा और ग़ायब हो गया। हम दोनों साइल के क़रीब आये और हमने उससे कहा तुझे इस जवान ने क्या दिया। उसने हमें दिखाया वह सोने की एक दनदाना दार डली थी जो बीस मिसक़ाल वज़नी थी मैंने अपने साथी से कहा हमारा मौला हमारे पास था हमने ना जाना। फिर हम उसकी तलाश में चले और तमाम अरफात में ढूंढ। लेकिन पता न चला। फिर हमने मक्का और मदीना के तमाम लोगों से पूछा। उन्होंने कहाकि एक जवान अल्वी हर साल पा पियादह हज करता है।



## छिहत्तरवां बाब

# हज़रत के नाम लिए जाने की नहीं

1. रावी कहता है मैने इमाम अली नक़ी अ० से सुना कि मेरे बाद मेरे जानशीन हसन अस्करी अ० हैं फिर फ़रमाया—तुम क्या तरीक़ा इख़्तियार करोगे उनके फ़र्ज़न्द के साथ, मैंने कहा आपने यह क्यों न फ़रमाया, फ़रमाया तुम उसके वजूद को न देखोगे और नहीं फ़रमाया—यह कहना हुज्जत आले मोहम्मद (स०)

2. रावी कहता है कि इमाम हसन अस्करी अ० के इन्तिकाल के बाद हमारे असहाब ने कहा कि मै हज़रत साहबे अम्र (स०) से उनका नाम और जगह मालूम करुं जवाब आया अगर क्या तुम नाम मालूम करोगे तो लोग उसे शोहरत देंगे (और यह हमारे ख़ानदान लिये मुज़रत रिसाँ होगा) और अगर मकान का पता चल गया तो चढ़ दौड़ेगे।

3. रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा[अ०] से सुना कि हज़रत से जब क़ाएम आले मोहम्मद[अ०] के मुताल्लिक़ सवाल किया गया तो आपने फ़रमाया—उनका जिस्म नहीं देखा जायेगा और उनका नाम नहीं लिया जायेगा।

4. रावी कहता है हज़रत अबू अब्दुल्लाह अ० ने फ़रमाया कि साहबे अम्र (स०) को उनके नाम से न पुकारेगा मगर काफिर।

## तौजीह

इससे मालूम होता है कि आले रसूल (स०) के लिये वह इतना ख़ौफनाक दौर था कि हज़रत साहबे अम्र अ० का नाम लेना और उनको मौजूद कहना जान जो खों का मामला था।

## सतहत्तरवां बाब

# अम्र नादिर हाल ग़ैब में

1: फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने कि बन्दों को नज़दीकी खुदा से और खुदा का राज़ी होना उनसे ऐसी हालत में है। जब वह हुज्जते खुदा को गायब पायें और वह उन पर ज़ाहिर न हो और उनकी जाये क़याम को न जाने और उसका इल्म रखें कि हुज्जते ख़ुदा से ज़माना ख़ाली नहीं होता और न जो उसका अहद बन्दों से है वह बातिल होता है लेकिन उनको चाहिए कि हर सुबह व शाम ज़हूरे हुज्जत अ0 की तवक़्क़ो रखें जब हुज्जते खुदा का ग़ायब होना यह अलामत है उसकी खुदा का ग़ज़ब है उसके दुश्मनों पर इमाम को ज़ाहिर नहीं किया गया उन पर और खुदा को इसका इल्म है कि उसके औलिया हुज्जते खुदा में शक नहीं करते और वह शक़ करने वाले होते तो वह हज़रत को ग़ायब न करता एक दिन के लिए भी और यह शक़ तो बदतरीन लोगो को ही होता है।

2: अम्मार साबाती से रवायत है कि मैंने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक अ0 से कहा कौन सी इबादत अफ़ज़ल है आयत वह जो दौलते बातिल में इमामे मस्तूर के साथ ही खुफिया तौर या वो इबादत जो हक़ की हुकूमत इमामे ज़ाहिर के साथ ही फ़रमाया ऐ अम्मार पोशीदा एलानिया सदके से बेहतर होता है इसी तरह वल्लाह तुम्हारी वह अबादत है जो सल्तनते बातिल में इमाम ग़ायब के साथ हो और उस सल्तनते बातिल में तुमको तुम्हारे दुश्मन से डराता हूँ और

अहले हक़ का अपना दावा हक़ को सल्तनत बातिल में छोड़ देना अफज़ल है उस शख्स की इबादत से जो इबादत करता है जुहूरे हक़ के वक़्त इमाम बरहक़ के ज़ाहिर होने पर सल्तनत हक़ में और नहीं है दौलते बातिल में खॉक के साथ इबादत करना मसल उस इबादत के जो बहालते अमन हो अहले हक़ की सल्तनत में।

और यह भी जान लो कि तुममें से जो शख्स किसी दिन एक फ़र्ज़ नमाज़ जमात के साथ सही वक्त पर अपने दुश्मान से छिपा कर पढ़े और उसको तमाम करे तो अल्लाह तआला उसको पचास फ़र्ज़ नमाजों का सवाब अता करता है और जो कोई एक नमाज़ वाजिब फरादा अपने दुश्मान से छिपा कर पढ़े और वक्त पर उसे पूरा करे तो खुदा उसे 25 फुरादा वाजिब नमाजों का सवाल देता है और जो एक नमाज़ नाफिला वक़्त पर अदा करें तो ख़ुदा उसे दस सुन्नत नमाज़ों का सवाब देता है और जो छिपा कर नेकी करता है तो ख़ुदा उसे बीस नेकियों का सवाब देता है और अल्लाह उस मोमिन के हस्नात को दो गुना करता है जो अच्छे अफआल बजा लाये और अमल करे तक़य्या पर अपने दीन और अपने इमाम और अपने नफ़्स की हिफाज़त के लिये और अपनी ज़बान को रोके रहे और उसको दो चन्द सवाब मिलेगा बेशक अल्लाह करीम है मैंने कहा मैं आप पर फिदा हूँ आपने अमल की तरफ मुझे रगबत दिलायी और उसके लिये उभारा लेकिन मैं जानना चाहता हूँ कि क्यों कर हम अफ़जल होंगे अज़रुवे आमाल इन असहाब से जो इमाम ज़ाहिर के साथ हो सल्तनत हक़ दरआंलेकि हम दीने वाहिद पर है फ़रमाया तुम सबक़त ले गये उन पर दाखिल होने से दीने ख़ुदा में और

नमाज़ रोज़ा हज और हर अम्रे ख़ैर में जिसकी तौफीक़ अल्लाह ने दी और अल्लाह की इबादत की तरफ सबक़त करने में अपने दुश्मन से पोशीदा तौर पर बजा लाने में अपने ग़ाइब इमाम के साथ उसकी इताअत में रहते हुए और उसके साथ सब्र से काम लेते हुए और सल्तनत हक़ को इन्तिज़ार करते हुए और ज़ालिम बादशाहों से अपनी जान और अपने इमाम की जान से खौफज़दह होकर और इन्तिज़ार करते हुए अपने इमाम अपने हकूक के वापस मिलने का उन ज़ालिमों से जिन्होंने तुम्हारे हकूक रोक रखे हैं और उन्होंने मुज़तर बना दिया है कि तुमको कसब दुनिया के लिये मेहनत व मशक्क़त के साथ और मजबूर किये गये हो। सब्र करने पर अपने दीन के अपनी इबादत के और अपने इमाम की इताअत के मामले में और तुम्हारे हर वक़्त अपने दुशमन का ख़ौफ रहता है यह वजूद है जिनकी बिना पर अल्लाह तआला ने तुम्हारे असर को दूना कर दिया है पस तुम्हें यह गवारा हो।

मैंने कहा क्या फरमाते हैं आप इस सूरत में जबकि होंगे हम असहाब क़ायम आले मोहम्मद (स0) से और हक़ ज़ाहिर होगा। दरआंलेकि अब हम आपकी इमामत व इताअत में रहकर अफज़ल हैं अजरूवे आमाल उन लोगों से जो सल्तनत हक़्क़ा में होंगे और वह दौलत अद्ल में होगी फ़रमाया सुबहान अल्लाह क्या तुम यह दोस्त नहीं रखते कि अल्लाह शहरों में हक़ और अद्ल को क़ायम करे और सबको एक कलिमे पर जमअ कर दे और इख़तिलाफ वाले दिलों में उल्फत पैदा कर दे और लोगों को ऐसा बना दे कि वह रुवे ज़मीन पर उसकी ना फरमानी न करें और हुदूद शरिअत

लोगों में क़ायम हो जाय और अल्लाह क़ायम आले मोहम्मद (स0) के ज़माने में हक़ को उसके अहल की तरफ लौटायेगा और वह इस तरह ज़ाहिर होगा कि कोई हक़ की बात किसी के ख़ौफ से छिपी न रहेगी। खुदा की क़सम ऐ अमार! तुममें से कोई न मरेगा इस हाल में कि तुम हो मगर यह कि इन्दल्लाह उसकी फज़ीलत होगी बहुत से शहीदों पर बदर और ओहद के पस तुमको बशारत हो।

3 : रावी कहता है कि बयान किया अमीरुल मोमिनीन अ0 के सिक़ह असहाब ने कि उन्होंने सुना अमीरूल मोमिनीन से एक खुतबे में ख़ुदा वन्दा में जानता हूँ कि कुल इल्म किसी वक़्त बरतरफ नहीं होता और उसका मवाद मुनक़ता नहीं होता और तेरी ज़मीन तेरी मख़लूक़ पर तेरी हुज्जत से ख़ाली नहीं होती ख़्वाह वह ज़ाहिर हों बिदून उसके कि लोग उसकी इताअत करें या ख़फ़ी पोशीदह रहकर ताकि किसी ज़माने में भी तेरी हुज्जत मख़लूक़ पर कातिल न हो और तेरे दोस्त हिदायत पाने के बाद गुमराह न हों कहाँ हैं और कितने हैं तेरे औलिया, अज़रुवे शुमार बहुत कम हैं और उनकी अज़मते क़द्र खुदा के नज़दीक ज्यादा है वह पेशवाय दीन और अइम्मा हादीन के ताबईन हैं और उनके आदाब से अदब हासिल करते हैं और उन्हीं के तरीक़े पर चलते हैं ऐसी सूरत में हक़ीक़त ईमान का इल्म उनपर हुजूम करता है पस उनकी रुहें कुबूल करती हैं अपने पेशवाओं के इल्म को और उनके दिल नर्म होते हैं उनकी हदीसों से और उनकी बयान करदा हदीसों से ऐराज़ करते हैं और उनके ग़ैर की बातों से बेज़ार होते हैं और मानूस होते हैं उन्हें झूटों से वहिश्त होती है मुसरिफ़ उसका इंकार करते है यह लोग ओलमा के पैरु

हैं और इताअते ख़ुदा व औलियाये ख़ुदा के तहत वह अहले दुनिया से मुसाहिबत करते हैं और अमल करते हैं तकय्या पर अपने दीन की हिफाज़त के लिये और अपने दुश्मन के ख़ौफ से, पस उनकी रुहें बुलन्द मर्तबे पर फाएज़ हैं और उनके ओलमा व अतिब्बा ख़ामोश हैं दुश्मनों के ख़ौफ से हुकूमते बातिला में और इन्तिज़ार कर रहे हैं हुकूमते हक़ का और अल्लाह अपने कलेमात को हक़ से साबित कर देगा और बातिल को मिटायेगा। आगाह हो कि खुशख़बरी है उनके लिये उस सब्र के मुताल्लिक़ जो उन्होंने दीन के मामले में मसायब व आलाम पर किया और कैसा शौक़ है उनको अपनी दौलत व हुकूमत हक्क़ा के वक्त ज़हूर को देखने का और अनक़रीब अल्लाह हमें और उनको जमा करेगा जनात अद्न में और उनके नेक सालेह आबा व अजदाद को और उनकी अज़वाज व ज़ुर्रियत को।



## अठहत्तरवां बाब

# बयाने ग़ैबत

1 : रावी कहता है कि हम इमाम जाफर सादिक़ अ० के पास बैठे थे हज़रत ने फ़रमाया कि साहबे अम्र के लिये ग़ैबत ज़रूरी है इस हालत में दीन से तमस्सुक रखने वाला (दुश्मनान दीन की मुख़ालफत के बाएस) ऐसा होगा जैसे ख़ारदार दरख़्त पर हाथ खींचने वाला, फिर हज़रत ने सर झुकाया और फ़रमाया साहबे अम्र इमामत के लिये ग़ैबत जरूरी है बन्दे को चाहिए कि ख़ुदा से डरे और अपने दीन

से तमस्सुक रखे।

2 : रावी कहता है कि फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ आल्हे सलाम ने जब पाँचवां इमाम ग़ायब होगा औलादे इमामे हफ़्तुम से पस चाहिये कि तुम अल्लाह से डरो अपने दीन के मुताल्लिक़ कोई तुम्हें उससे हटा ना दे बेटा – इस अम्रे इमामत के साहब का ग़ायब होना जरूरी है यहाँ तक कि पलट जायेंगे उस अम्रे इमामत से उसे क़ाबिल यह ग़ैबत इम्तिहान है ख़ुदा की तरफ से उसकी मख़लूक का अगर तुम्हारे (यानि लोगों के) आबा व अजदाद (यह जानते कि सही तरीन दीन यह है तो अलबत्ता उसका इत्तेबा करते रावी ने कहा – मैंने पूछा पांचवां कौन से उस सातवें की औलाद से फ़रमाया तुम्हारी उकूल उससे क़ासिर हैं और तुम्हारी इफहाम का दामन तंग है उसके उठाने से अगर तुम जिन्दा रहोगे तो ज़रूर उसको पाओगे।

3 : मुफ़स्सल से रवायत है कि मैंने इमाम जाफर सादिक़[अ०] से सुना है कि अपने को रफ़्अे तशहीर से बचाओ ख़ुदा की क़सम तुम्हारा इमाम[अ०] बरसों ग़ायब रहेगा और लोग गुरेज़ करेंगे उसे अक़ीदे से ताकि यह कहा जायेगा कि वह मर गये क़त्ल हो गये हलाक हो गये या किसी वादी में चले गये और मोमिनीन की आँखों से उनके फिराक़ में आंसू बहेंगे और वह उस तरह मुज़तरिब होंगे जैसे किश्तियाँ अमवाज़े बहर में, पस उस मुसीबत के भंवर से निजात न पायेगा मगर जो शख़्स जिसके अहद को ख़ुदा ने क़ायम रखा होगा और जिसके ईमान को उसके क़ल्ब में मज़बूत बना दिया होगा और अपनी रहमत से उसकी ताईद की होगी और बारह झण्डे शहादत के बुलन्द होंगे कोई न जानेगा कि वह

कहाँ–कहाँ से उठे हैं रावी कहता है यह सुनकर मैं रोया और कहने लगा फिर हम क्या करेंगे फिर आपने धूप की तरफ़ देखा जो चबूतरे पर फैली हुई थी और फ़रमाया – ऐ अबू अब्दिल्लाह (कुन्नियत रावी) तुम उस धूप को देखते हो मैंने कहा हाँ फ़रमाया वल्लाह हमारा अम्रे उससे ज़्यादा रौशन है (यानि ज़हूरे क़ायमे आले मोहम्मद (स0) होकर रहेगा।)

4 : रावी कहता है कि मैंने इमाम जाफर सादिक़ अ0 से सुना कि यह अम्रे इमामत हुज्जत मुशाबेह है अम्र यूसुफ से रावी ने कहा उससे आपकी मुराद जिन्दगी में उनको बादशाहत मिलने से है या उनके ग़ायब होने से है फ़रमाया नहीं इंकार करेंगे उस उम्मत से मगर वह लोग जो मुशाबेह होंगे सूवरों से (मुराद यह है कि जैसे यूसुफ (स0) के ग़ायब होने को उनके मरने से ताबीर करते थे उसी तरह यहाँ भी कहेंगे।)

यूसुफ के भाई इसबात थे औलाद आम्बिया थे (आम लोगों से ज्यादा उन्हें जानना चाहिये थे) उन्होंने तिजारत की और यूसुफ़[अ0] को बेच डाला और उनसे बात चीत भी करते रहते थे वह उनके भाई थे और यह उसके लेकिन जब यह भाई मिस्र में गये तो हजरते यूसुफ़[अ0] को ना पहचाना। आख़िर उन्होंने बताया कि मैं यूसुफ़[अ0] हूँ और यह मेरा भाई है पस क्यों इंकार करती है यह मलऊना उस अम्र का कि जैसा ख़ुदा ने युसूफ़[अ0] के साथ किया था वह किसी और वक़्त भी अपनी हुज्जत के साथ कर सकता है यूसुफ़[अ0] मिस्र के मालिक थे और उनके बाप के दरमियान अट्ठारह दिन का रास्ता था अगर यूसुफ[अ0] अपने हालात से आगाह कर देते तो हज़रत याक़ूब और उनके बेटे बियाबान के मुख्तसर रास्ते से सिर्फ नौ रोज़ में पहुँच जाते (मगर ख़ुदा को उनका ग़ाइब

रखना ही मंजूर था) पस यह उम्मत क्यों इंकार करती है हज़रत हुज्जत[अ०] के मुताअल्लिक ऐसा होने से जैसा यूसुफ़[अ०] के लिये हुआ वह बाज़ारों में चलते फिरते हैं राहों से गुज़रते हैं और जब तक हुक्मे खुदा ज़हूर के लिये न होगा ऐसा ही होता रहेगा चुनान्चे जब तक ख़ुदा को मंजूर न हुआ। उनके भाइयों में उनको न पहचाना और जब मसलहते ज़हूर हुई तो पहचान गये और कहने लगे क्या तुम यूसुफ़[अ०] हो यूसुफ़[अ०] ने कहा – हाँ मैं यूसुफ़[अ०] हूँ।

5 : ज़ुरारह से मरवी है कि मुझसे हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने फ़रमाया हज़रत हुज्जत[अ०] की ग़ैबत लड़कपन ही से शुरू होगी मैंने कहा यह क्यों । फ़रमाया – दुश्मन के ख़ौफ से और अपने हाथ से इशारा किया अपने बतन की तरफ (यानि वह दुश्मन मेरी ही नस्ल से होगा यह इशारा है जाफर कज़्ज़ाब की तरफ) फिर फ़रमाया – ऐ ज़ुरारह वह इमाम मुन्तजिर होगा। और उसकी विलादत में शक किया जायेगा। कोई कहेगा – उसके बाप लावल्द मरे, कोई कहेगा हमल में इन्तिकाल हो गया। कोई कहेगा कि वह बाप की मौत से दो साल पहले पैदा हुए थे हालांकि वह इमाम मुन्तज़र होंगे।

सिवाय उसके नहीं कि अल्लाह उस ग़ैबत के जरिये से शियों का इम्तिहान लेगा उस ज़माने में बातिल परस्त शक में पड़ जायेंगे ऐ ज़ुरारह– मैंने कहा अगर मैं उस ज़माने ग़ैबत को पालूं, तो क्या करूं। फ़रमाया – ख़ुदा से यूं दुआ करना।

ख़ुदा वन्दा मुझे अपनी ज़ात की मार्फत दे अगर तूने अपनी मार्फत न करायी तो मैं तेरे नबी (स0) की मार्फत हासिल ना कर सकूंगा और अगर ऐसा हुआ तो मैं दीन से गुमराह हो जाऊंगा फिर फ़रमाया – ऐ ज़ुरारह ऐसा भी होगा

कि मदीने में एक लड़का क़त्ल होगा मैंने कहा क्या उसको सुफियान सूरी का लश्कर क़त्ल करेगा फ़रमाया नहीं। बल्कि उसको आले नबी फलां क़त्ल करेगी वह लड़का मदीना में दाखिल होगा लोग उसको पकड़ लेंगे और क़त्ल कर डालेंगे (और यह लड़का औलादे इमामे हसन (स0) से होगा) जब यह जुल्मो जोर से क़त्ल होगा तो ख़ुदा फिर मोहलत न देगा और इंशा अल्लाह हज़रत का ज़हूर होगा।

6 : फ़रमाया इमाम ज़ाफर सादिक़ अ0 ने लोग इमाम को न पहचान सकेंगे वह मौसमे हज में हर साल आयेंगे वह लोगों को देखेंगे लोग उनको न देखेंगे।

7 : रावी कहता है मैंने एक रोज़ अमीरुल मोमिनीन अ0 को मुतफ़क्किर देखा आप लकड़ी की नोक से ज़मीन कुरेद रहे थे मैंने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन मैं आपको मुतफ़क्किर पा रहा हूँ क्या आपके दिल में रग़बते सल्तनत है फ़रमाया — नहीं मेरे दिल में न किसी दिन उसकी रग़बत पैदा हुई है और न दुनिया की, मैं सोच रहा हूँ उस मौलूद के बारे में जो मरे फ़र्ज़न्द ग्यारहवे इमाम की पुश्त से होगा उसका नाम मेंहदी होगा जो ज़मीन अदलो इन्साफ़ से उसी तरह भर देगा जिस तरह व जुल्म व जोर से भर चुकी होगी और होगी उसके लिये रग़बत और हैरत, और कुछ लोग हिदायत पायेंगे और कुछ लोग गुमराह हो जायेंगे।

मैंने कहा— ऐ अमीरुल मोमिनीन यह हैरत और रग़बत कितने दिन रहेगी (ताकि बाद उसे मोमिनीन को इत्मिनान हो) फ़रमाया बाज़ को छह दिन बाज़ को छह माह और बाज़ को छह साल, मैंने कहा क्या यह अम्र होने ही वाला है। फ़रमाया, हाँ गोया वह पैदा हो गयी है और ऐ अस्बअ कहाँ

है तुम्हारा मर्तबा इन मोमिनीन का सा (यानि यह हैरत उनके लिये बाएस नक़्स न होगी) और मोमिनीन उस उम्मत के बेहतरीन लोग होंगे मैंने कहा फिर उसके बाद क्या होगा। फ़रमाया फिर अल्लाह जो चाहेगा करेगा। (यानि ग़ैबत में जब तक चाहेगा रखेगा) बेशक ख़ुदा के लिये बदाअ है अशदात है, गायत व निहायत हैं कौन उनको जाने।

8 : फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने बेशक हम ऐसे हैं जैसे आसमान के सितारे जब एक गायब होगा तो दूसरा उसकी जगह पर ज़ाहिर होगा यहाँ तक कि जब वह जमाना आयेगा कि तुम अपने इमाम पर अनगुश्त नुमाई करोगे और अपनी गर्दनों को उसकी इताअत से कज करने लगोगे तो ख़ुदा तुम्हारे सितारे को गायब कर देगा पस मुतवल्ली होगी औलादे अब्दुल मुत्तालिब और उसकी यह शिनाख्त न होगी कि कौन किस तरफ है यानि कौन मुखालिफ है उस वक़्त तुम्हारा इमाम ज़ाहिर होगा पस तुम अपने रब की हम्द करना।

9 : फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने, क़ायम आले मोहम्मद (स0) के लिये ग़ैबत जरूरी है क़ब्ल उसके कि वह चलें फिरें मैंने कहा ऐसा क्यों होगा फ़रमाया–जालिमों के ख़ौफ से और इशारा किया अपने हाथ से अपने बत्न की तरफ़, यानि वह मुखालिक जो क़त्ल पर आमादह करायेगा हम नस्ल से होगा। (यानि ज़ाफर कज़ाब जो हुकूमत से साज़िश करेगा।)

10 : मोहम्मद बिन मुस्लिम से मरवी है कि हज़रत इमाम जाफर सादिक अ0 ने फ़रमाया है कि अगर तुमको साहबे अम्र (स0) के गायब होने की खबर मिले तो तुम उसको

बुरा न समझना (क्योंकि वह मबनी वर मसलहत होगी)।

11 : रावी कहता है मैं इमाम जाफर सादिक़ अ0 की ख़िदमत में हाजिर था आपके पास कुछ और लोग भी थे मैंने ख़याल किया कि हज़रत मेरे सिवा औरों से बात करना चाहते हैं पस हज़रत ने फ़रमाया–तुम्हारे साहबे अम्र होने का ग़ायब होना जरूरी है लोगों को उनके मुतालिक शुबहात होंगे कोई कहेगा किसी तरफ़ चले गये इस मामले में लोग इस तरह मुज़तरिब होंगे जैसे कश्तियाँ अमवाजे बहर में हिचकोले खाती हैं नहीं निजात पायेगा उस मुहलके से, मगर वह शख़्स जिसने खुदा से मीसाक़ लिया हो और उसने ईमान को उसके क़ल्ब में रासिख कर दिया हो और अपनी रूह से उसकी ताईद की हो उस वक़्त में बारह झण्डे शुबहात वालों के बुलन्द होंगे कोई न जानेगा कौन किसका है यह सुनकर मैं रोने लगा फ़रमाया तुम क्यों रोते है, मैंने कहा कैसे न रोऊं हालांकि आप फरमा रहे है कि मुखालिफों के बारह झण्डे होंगे कोई न जानेगा कौन झण्डा किसका है हज़रत के हुजरे में एक सुराख था जिससे धूप आती थी फ़रमाया उनका ज़हूर उससे ज्यादा रौशन होगा। फिर फ़रमाया हमारा अम्रे इमामत सूरज से ज्यादा रौशन है।

12 : फ़रमाया – इमाम जाफ़र सादिक अ0 ने कि क़ायमे आले मोहम्मद (स0) की दो गैबतें होंगी (गैबते सुग़रा व गैबते कुबरा) वह हर गैबत में हज के ज़माने में आयेंगे वह लोगों को देखेंगे मगर लोग उनको न देखेंगे।

13 : बाज़ असहाब अमीरूल मोमिनीन ने जो मोतबर व मोअस्सक़ है बयान किया अमीरूल मोमिनीन अ0 ने मिनबर कूफ़ा पर बयान फ़रमाया और लोगों ने उसको हिफ्ज़ भी कर

लिया।

खुदा वन्दा ज़मीन पर तेरी हुज्जतों में से एक के बाद दूसरे का होना जरूरी है ताकि वह हिदायत करे तेरे दीन की तरफ और तालीम दें तेरे इल्म की ताकि तेरे औलिया के पैरो मुतफर्रिक़ न हों ख्वाह वह इमाम ज़ाहिर हो और उसकी इताअत न की जाती हो, ख्वाह मख़फी हो और उसके ज़हूर की उम्मीद हो और तेरे वली का वजूद लोगों की नज़रों से ग़ायब हो तर्के दावा इमामत के साथ ताहम उसके क़दीम मुनतशिर उलूम व आदाब मोमिनीन के कुलूब में साबित व बरक़रार होंगे वह उन पर अमल करने वाले होंगे इसी खुत्बे में एक दूसरी जगह फ़रमाया हज़रत अमीर अ० ने, किसमें है यह इल्मो आदाब कम हो जाता है इल्म जब उसके ऐसे न पाये जाते हों जो उसकी हिफाज़त करेंगे और जैसा कि ओलमा से सुना है उसकी रिवायत करें और उसकी तसदीक़ करें। खुदा वन्दा मैं जानता हूँ कि कुल इल्म ग़ायब नहीं हुआ और न उसके सर चश्मे बन्द हुए हैं तू ज़मीन को अपनी हुज्जत से अपनी मख़लूक़ पर कभी खाली नहीं छोड़ता। ख्वाह वह हुज्जत उस सूरत में मौजूद हो कि कोई उसकी इताअत न करें या वह बहालते ख़ौफ पोशीदा हो तो यह इस लिये तू करता है ताकि तेरी हुज्जत बातिल न हो और तेरे औलिया हिदायत के बाद गुमराह न हों लेकिन ऐसे लोग कहाँ हैं और कितने हैं वह तादाद में कम हैं लेकिन अजरुवे क़द्र पेशे खुदाउन का बड़ा मर्तबा है।

14 : फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अ० ने उस आयत के मुताल्लिक़ कह दो ऐ रसूल (स०) कि तुमने उस पर ग़ौर किया कि अगर तुम्हारा ज़मीन की तह में चला जाता है तो

फिर दोबारा ख़ालिस पानी कौन बरामद करता है।" फ़रमाया उससे मुराद यह है कि जब तुम्हारा एक इमाम ग़ायब हो जाता है तो उसकी जगह पर दूसरा इमाम कौन लाता है।

15 : फ़रमाया हज़रत इमाम जाफर सादिक अ0 ने अगर तुम्हारे साहबे अम्र (स0) की गैबत हो तो उससे इन्कार न करना।

16 : अबू बसीर से मरवी है कि फ़रमाया इमाम ज़ाफर सादिक अ0 ने कि साहबे अम्र (स0) के लिये ग़ायब होना जरूरी है कि उस ज़माना ग़ैबत में गोशा नशीनी लाजिमी है और उनके लिये अच्छी जगह हवाली मदीना है और तीस वफादार ख़ादिम हर वक्त आपकी ख़िदमत में रहेंगे (अगर उनमें से एक मर जायेगा तो दूसरा उसकी जगह पर आ जायेगा।

17 : अबान बिन तग़लब से रवायत है कि हज़रत इमाम जाफर सादिक़ अ0 ने फ़रमाया। जब फितनए सुफियानी मस्जिद मक्का व मदीना के दरमियान (मुक़ाम रूहा) में वाकेअ होगा तो तुम्हारा क्या हाल होगा उस वक़्त इल्म इस तरह छिप जायेगा जैसे सांप अपने सुराख में और हमारे शियों में (बाबत मसायल दीन और वजूदे हज़रत) इख्तिलाफ पैदा हो जायेगा बाज–बाज़ को झूटा कहेंगे और बाज–बाज़ के मुंह पर थूकेंगे मैंने कहा हमारे लिये उसे वक्त अम्र खैर कुछ न होगा। फ़रमाया तीन मर्तबा होगा और यही हमारे लिये कुल खैर होगा (मोमिनीन व कामेलीन के लिये जो अपने ईमान पर ऐसे नाजुक वक़्त पर क़ायम रहेंगे)।

18 : जुरारह से मरवी है कि मैंने इमाम जाफर सादिक़ अ0 से सुना कि कायमे आले मोहम्मद (स0) के लिये बचपन

ही में ग़ैबत होगी ख़ौफ की वजह से और इशारा किया अपने हाथ से अपने शिकम की तरफ यानि क़त्ल के ख़ौफ से।

19 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अ0 ने क़ायमे आले मोहम्मद (सा0) के लिये दो ग़ैबत हैं एक सुग़रा दूसरे कुबरा, पहली ग़ैबत में आप (स0) क़ी जगह को कोई न जानेगा सिवाय हज़रत के मख़सूस शियों के और दूसरी में हज़रत की जगह कोई न जाने का सिवाय हज़रत के ख़ासु–लखास दोस्तों के।

20 : रावी कहता है इमाम जाफर सादिक़ अ0 से सुना है कि साहबे अम्र (स0) क़ी दो ग़ैबते होंगी एक में तो वह अपने अहल की तरफ लौटेंगे और दूसरे में कहा जायेगा। हलाक हो गये या किसी वादी में चले गये। मैंने कहा हम उस वक़्त क्या करें फ़रमाया अगर कोई मुद्दई इमाम आख़िरुज्जमां होने का दावा करे तो तुम उससे चन्द मुश्किल सवालात का जवाब मांगो और देखो कि वह इमाम की तरह हैं या नहीं (कभी न होंगे क्योंकि वह जो कहेगा बिनाबर पैरूवीये ज़न कहेगा।)

21 : अबू हमज़ा से मरवी है कि मैं इमाम जाफर सादिक़ अ0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा क्या आप साहबे अम्र (स0) हैं फ़रमाया नहीं, मैंने कहा आपके फ़र्ज़न्द हैं फ़रमाया नहीं, मैंने कहा क्या आपके पोते हैं फ़रमाया नहीं, मैंने कहा क्या आपके पर पोते हैं। फ़रमाया नहीं, मैंने कहा फिर वह कौन हैं। फ़रमाया वह वह हैं जो ज़मीन को अदलों दाद से उसी तरह भर देगा जिस तरह वह ज़ुल्मो जोर से भर चुकी होगी वह सब इमामों के बाद होंगे जिस तरह हज़रते रसूल (स0) ख़ुदा सब रसूलों के बाद हुए।

22 : उम्मे हानी ख्वाहरे अमीरुल मोमिनीन से मरवी है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़र अ0 से उस आयत के मुताल्लिक़ दरयाफ्त किया। क़सम खाता हूँ। आखिर हमसाया पिनहा की। इमाम ने फ़रमाया– वह 260 हिजरी (जो सन्ने वफात इमाम हसन अस्करी अ0 है) उस शहाबे साक़िब की तरह ज़ाहिर होंगे जो अंधेरी रात में चमके, पस अगर तुम उनका ज़माना पा लोगी तो तुम्हारी आँखें ठन्डी जो जायेंगी।

23 : उम्मे हानी ख्वाहरे अमीरुल मोमिनीन से मरवी है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़र अ0 से उस आयत के मुताल्लिक़ दरयाफ्त किया। क़सम खाता हूँ आखिर हमसाया पिन्हां की, इमाम ने फ़रमाया–वह 260 हिजरी (जो सने वफात इमाम हसन अस्करी अ0 है) उस शहाबे साक़िब की तरह ज़ाहिर होंगे जो अंधेरी रात में चमके। पस अगर तुम उस ज़माना को पा लोगी तो तुम्हारी आँखें ठण्डी हो जायेंगी।

24 : इमाम अली नक़ी अ0 से मरवी है कि जब तुम्हारा इमाम तुम्हारे दरमियान से उठ जाये तो कुशादगी तुम्हारे क़दमों के दरमियान होगी यानि तुम्हें ज़ालिमों के सर से निजात मिल जायेगी।

25 : रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा अ0 से कहा–मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम साहबे अम्र हो और यह अम्रे इमामत तुम्हारे पास बगैर शमशीर ज़नी आया है आपकी बैअत वली अहदी भी होगी और आपके नाम का सिक्का भी बन गया। हजरत ने फ़रमाया – हममें से कोई इमाम ऐसा नहीं हुआ कि जिससे मोमिनीन ने ख़तो किताबत की हो उंगलियों से उसकी तरफ इशारा हुआ हो मसाएल उससे दरयाफ्त किये गये हों और अमंवाल उसकी तरफ भेजे गये हों मगर यह कि

उसको या ज़हर दिया गया है या वह अपने फर्श पर मरा है यहाँ तक कि ख़ुदा उस अम्रे इमामत के लिये हममे से एक लड़के को भेजेगा जिसकी विलादत और परवरिश ख़ुफिया तौर से होगी और उसका नसब ग़ैर ख़ुफी होगा।

26 : रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 से कहा आपके शिया ईराक में बकसरत है आप बनी उमय्या पर खुरूज क्यों नहीं करते। आपके खानदान में आपके जैसा कोई नहीं, फ़रमाया – ऐ अब्दुल्लाह बेवकूफों की बात पर कान लगाते हो ख़ुदा की क़सम मैं साहबे अम्र नहीं हूँ। मैंने कहा फिर हमारा साहबे अम्र कौन है। फ़रमाया – देखो जिसकी विलादत लोगों से पोशीदा रहे वह तुम्हारा साहबे अम्र है हममें से कोई इमाम ऐसा न होगा जिसकी तरफ उंगली से इशारा किया गया हो या लोगों की ज़बान पर उसका जिक्र हो मगर यह कि या तो वह ग़म व गुस्सा खा कर मरा या जिल्लत व ख्वारी के साथ।

27 : फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने जब ज़हूरे क़ायमे आले मोहम्मद (स0) होगा तो कोई शख्स ऐसा न होगा जिसकी गर्दन में उसका, अक़्द या बैअत न हो।

28 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक़ अ0 से कहा। मैं सुबह व शाम इन्तिज़ार में बसर कर रहा हूँ लेकिन इमाम को नहीं पाता कि उनकी इक़्तिदा करूं। पस मैं क्या करूं फ़रमाया – जिससे मोहब्बत कर रहे हो (यानि अइम्मा अहलेबैत (स0)) किये जाओ और जिससे बुग्ज़ रखते हो (अइम्मा ज़लालत) तो रखते जाओ। यहाँ तक कि ख़ुदा साहबे अम्र को ज़ाहिर करे।

29 : रावी कहता है फ़रमाया – इमाम जाफर सादिक़

अलैह सलाम ने एक लड़के का गायब होना जरूरी है मैंने कहा यह क्यों फ़रमाया – ज़ालिम बादशाह के ख़ौफे क़त्ल से वह मुन्तज़िर होगा और उसकी विलादत में लोगों को शक होगा कोई कहेगा हमल में है कोई कहेगा उसका बाप लावलद मरा, कोई कहेगा बाप के मरने से दो साल पहले पैदा हुआ ज़ुरारह ने कहा फिर हमारे लिये क्या हुक्म है फ़रमाया – अगर तुम वह ज़माना पा लो तो ख़ुदा से उसी तरह दुआ करना, ख़ुदा मुझे अपनी जात की मार्फ़त दे अगर न दी तो मुझे तेरी मार्फत हासिल न होगी ख़ुदाया मुझे अपने नबी की मार्फत दे अगर न दी तो मैं उनको कभी न पहचानूंगा। ख़ुदा या मुझे हज़रत हुज्जत[अ०] की मार्फत दे अगर न दी मैं अपने दीन से गुमराह हो जाऊंगा अहमद बिन हिलाल कहते हैं मैंने उस हदीस को 56 साल तक ज़ुरारह से सुना।

30 : आयत व इज़ा नुक़ेरा फ़िन्नाक़ूर के मुताल्लिक़ फ़रमाया बेशक हममें एक इमाम ग़ाइब मुज़फ्फर व मंसूर होगा जब ख़ुदा को उसका ज़ाहिर करना मंजूर होगा तो वह उसके दिल में एक नुकता पैदा कर देगा उसके बाद वह जाहिर होगा और अम्रे ख़ुदा को क़ायम करेगा।

31 : रावी कहता है इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने मुझे लिखा। जब ख़ुदा अपनी मख़लूक़ पर गज़बनाक होता है तो हमको उसके पड़ोस से हटा लेता है।



## उन्नासीवां बाब

# उस चीज़ का बयान जो अम्रे इमामत में मुहिक़ व मुब्तिल के दरमियान फ़ैसला करने वाली है।

फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अ0 ने कि ख़िदाश नामी एक शख़्स को तलहा व जुबेर ने अमीरूल मोमिनीन अ0 के पास भेजा और उससे कहा कि हम तुझे एक ऐसे शख़्स के पास भेज रहे हैं जिसको और जिसके खानदान को हम बरसों से जानते हैं कि वह सहर व कुहानत वाले हैं यानि मआज़ अल्लाह बड़े फरेब देने वाले हैं और तू हमारे लिये हमारे नफ़्सों से ज़्यादा मोतबर है इज़हारे पैग़ाम से रूकना नहीं और अम्रे मालूम में हमारे दावे को क़ोई दलायल से साबित कर देना और आगाह हो कि यह शख़्स इसबाते दावा में बहुत बड़ा आदमी है उसकी दलीले तुझे जालवाब न करे दें और जिन चीजों से वह लोगों का दिल मोह लेते हैं और दामे फरेब में फांसते हैं वह खाना पिलाना शहद चटाना और बदन व सर पर तेल मलवाना है और ख़ुलूल में मीठी–मीठी बातें करना है पस उनके यहाँ कोई खाना न खाना, उनके यहाँ का पानी न पीना, उनके शहद व तेल को हाथ न लगाना, उनसे ख़लवत न करना औरा पूरी–पूरी तरह उनसे बचे रहनां अल्लाह की बरकत के साथ जा जब उनको देखना तो यह आईया सख्खरह (सूरह आराफ)

शम्स वलक़मर वन्नुजूम मुसख्ख़रातिन बअम्रेही (0) पढ़ना और अल्लाह से पनाह मांगना। उनके और शैतानों के

मकर से।

जब तू उनके पास बैठे तो अपनी आंख से उसकी इज्जत न करना और उससे मानूस न हो जाना उनसे यूं कहना कि तुम्हारे और दो चचा के बेटे हैं। अज़रुवे क़राबत और क़सम देते हैं वह तुमको उस बारे में कि तुम उनसे क़तई ताललुक़ करने वाले हो और वह तुमसे कहते है कि क्या तुम नहीं जानते कि हमने तुम्हारी ख़ातिर उन लोगों से तर्क ताल्लुक़ किया और रसूले ख़ुदा[स०] के इन्तिक़ाल के बाद, लेकिन तुम्हारा यह हाल है कि जब तुम्हें थोड़ी से दौलत मिल गयी तो तुमने हमारी इज्जत व हुरमत को ज़ाया कर दिया और हमारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया और सूरत यह है कि हमारे अफआल को अपने मामले में देख चुके हैं कि लोगों से साज़बाज़ करके तुमको कितना नुक़सान पहुँचा है) और हमसे अलहिदगी की सूरत में तुमने हमारी कुव्वत व ताक़त का अन्दाजा कर ही लिया हैं

और हमारे शहरों की वुसअत तुमसे ज्यादा हम तुम्हारे महकूम नहीं) जिस शख्स ने तुम्हारी तवज्जो हमारी तरफ से हटायी है हमने देख लिया कि वह तुम्हें किस क़द्र कम नुक़सान पहुंचाने वाला है और हमारा मुक़ाबला करने में उसकी कुव्वत किस कद्र कम है।

और हर आँख वाले पर हमारी शौकत व कुव्वत ज़ाहिर हो चुकी है और हमें यह भी पता चला है कि आप हमारी हतक व हुरमत करते हैं और हमारे लिये बद्दुआ करते हैं पस किस चीज़ ने आपको उस बात पर उभारा है हालांकि हम जानते हैं कि अरब के शहसवारों में सबसे ज्यादा बहादुर हैं क्या हम पर लान करना आप दीनदारी जानते हैं और क्या

आपका यह ख्याल है कि यह लान करना हमारी कुव्वत को तोड़ देगा। जब खिदाश अमीरुल मोमिनीन के पास आया तो वही किया जो उन दोनों ने हुक्म दिया था जब अमीरुल मोमिनीन ने उसकी तरफ देखा तो वह अपने होंठो में आहिस्ता–आहिस्ता कुछ पढ़ रहा था (आयत सख़्खरहू) हज़रत हंसे और फ़रमाया – ऐ भाई अब्दे क़ैस यहां आ। और अपने क़रीब की जगह का इशारा किया उसने कहा मौजूदा जगह ख़ासी गुंजाइश की है मैं तो आपके पास एक पैग़ाम पहुँचाने आया हूँ, फ़रमाया – ठीक लेकिन कुछ खाओ पियो, कपड़े उतारो तेल की मालिश करो। फिर पैग़ाम भी पहुँचा देना। ऐ क़नबर उठ और उसे मक़ाम ज़ियाफत में ले चल, उसने कहा उसकी मुझे ज़रूरत नहीं, फ़रमाया–खलवत में चलकर बात कर, उसने कहा कोई पोशीदा राज़ नहीं, खुल्लम खुल्ला बात है। फ़रमाया मैं तुझे क़सम देता हूँ और तेरे और तेरे दिल के दरमियान हाइल है और जो आँखों की चोरी और दिल की छिपी हुई बात को जानता है बता क्या ज़बीर तेरे पास नहीं आये थे और जो बातें मैंने तुझ पर पेश कीं। क्या वह उन्होंने तुझ से बयान नहीं की थी उसने कहा ज़रूर की थीं।

फ़रमाया अगर मेरे सवाल के बाद तो छिपता तो चश्मे ज़दन में मरके रह जाता अब मैं ख़ुदा की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या जब तू मेरे पास आने वाला था। तुझे जुबैर ने वह बातें नहीं सिखायी थीं जो तूने बयान की उसने कहा बेशक ऐसा ही है।

फ़रमाया क्या आयत सख़रहू भी तालीम दी थी उसने कहा उसे बार–बार पढ़ो, और उसकी ग़लती दुरूस्त की। यहाँ तक कि उसने सत्तर बार पढ़ा उसने कहा क्या वजह

है कि अमीरुल मोमिनीन ने सत्तर बार पढ़वाया, हज़रत ने फ़रमाया क्या तू अपने क़ल्ब को मुतमईन पाता है उसने कहा जरूर क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्जए क़ुदरत में मेरी जान हैं

फ़रमाया—अब बयान कर जो उन्होंने कहा सुन उन दोनों से कह देना कि तुम्हारी गुफ्तगू तुम्हारे ऊपर हुज्जत होने को काफी है ख़ुदा ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता। तुम्हारा गुमान है कि तुम दोनों मेरे दीनी भाई हो और अज़रूवे नसल मेरे चचा ज़ाद भाई हो।

रहा नस्ल का मामला तो मैं उससे इंकार नहीं करता अगर वह नस्ब का सिलसिला कतअ हो जाता है सिवाय उसके कि बसूरत इस्लाम बाकी रखे और तुमने यह जो कहा कि तुम दोनों दीन में मेरे भाई हो तो अगर तुम सच्चे हो तो तुमने किताब अल्लाह को क्यों छोड़ा और उसके हुक्म की नाफरमानी क्यों कि अपने अफआल से अपने दीनी भाई के मुताल्लिक़, मगर यह है कि तुम दोनों झूटे हो, और तुमने इफ्तरा परदाज़ी की यह कहकर कि तुम दोनों मेरे दीनी भाई हो और आन हज़रत (स0) के इन्तिक़ाल के बाद जो तुमने लोगों को छोड़ा और अगर यह छोड़ना हक़ पर था तो तुमने अपने उस हक़ पर होने को मुझसे अलाहिदा होकर तोड़ दिया क्या यह अम्र ख़ैर था और अगर तुमको छोड़ना बातिल पर था तो उस बातिल का गुनाह तुम्हारे ऊपर हुआ और उसके साथ यह गुनाह और किया कि तुमने एहदास फिद्दीन किया फिर यह कि तुमने जो लोगों को छोड़ा और मेरी तरफ आये तो महज़ तमए दुनिया के लिये था और यह तुम्हारे उस क़ौल से ज़ाहिर है कि आपने हमारी उम्मीदों को मुनकता कर

दिया। यानि जो हुकूमत की उम्मीद तुमने मुझसे मिलने में रखी थी वह पूरी न हुई क्योंकि मैं तुम्हारी हालत को जानता था। और अम्रे दीन में बहम्दिल्लाह तुम मुझ पर कोई इल्ज़ाम आयद न कर सके अब रहा यह अम्र कि मैंने तुमसे क़तअऐ रहम क्यों किया तो उसकी वजह यह है कि तुम अम्रे हक़ से हट गये और उस रो गर्दानी की बिना पर तुमने मेरी बैत को अपनी गर्दन से उस तरह निकाल फेंका जैसे एक सर्फश घोड़ा अपवनी लगाम को मुँह से निकाल दे।

मेरा रब अल्लाह है मैंने किसी चीज़ को उसके साथ शरीक क़रार नहीं दिया, पस तुम मत कहो यह बात कि मुझे कम नफा पहुँचा और दफाई कुव्वत कमजोर रही तुम दोनों निफ़ाक़ के साथ मुस्तहक़ शरीक हुए।

(यानि तक़सीम बैतुल माल में मैंने हुक्म ख़ुदा की ख़िलाफ वर्जी नहीं की और किसी दूसरे को उसके हुक्म में शरीक नहीं बनाया। बख़िलाफ़ तुम्हारे कि तुम दूसरे के हुक्म पर अमल करके मुर्तकिबे शिर्क व निफाक़ होते हो।)

और तुम्हारा यह कहना कि मैं अशजऊल अरब हूँ और तुम मेरी लान और बददुआ से बचना चाहते हो तो जान लो कि हर मकाम के लिये एक जुदागाना अमल होता है जिस वक्त मैदान जंग में सिनाने टकरा रही हों और घोड़ों की गर्दनों के बाल खड़े हों और तुम्हारे फेफड़े फूले हुए हों तो उस वक़्त ख़ुदा मेरे कल्ब में कुव्वत देता है और मैं डटकर जंग करता हूँ।

लेकिन जब तुमने अम्रे हक़ को कुबूल करने से इंकार कर दिया तो फिर मैं ख़ुदा से दुआ कीं पस अब उस शख्स की बद्दुआ से घबराते क्यों हो जो तुम्हारे गुमान में एक मर्द

साहिर है और जादूगरों की क़ौम से है।

खुदाया जल्द हलाक कर जुबेर को बदतरीन हलाकत के साथ और गुमराही की हालत में उसका खून बहा और तलहा को जिल्लत के साथ मार और आखिरत में उन दोनों को बदतरीन अज़ाब में मुबतिला कर, अगर उन दोनों ने मुझ पर जुल्म किया है और मुझ पर अफतरा परदाज़ी की हे और मेरे बारे में उन दोनों ने अपनी गवाहियों को छिपाया है और तेरी और तेरे रसूल (स0) की नाफरमानी की है मैं मेरे बारे ख़िदाश से कहा कहो आमीन, उसने आमीन कहो और अपने दिल में कहने लगा वल्लाह मैंने आप (स0) से ज्यादा इल्जाम हटाने वाला नहीं देखा, आप (स0) ने उनकी एक–एक दलील तोड़कर रख दी। मैं उन दोनों से बराएत चाहता हूँ हज़रत ने फ़रमाया – वापस जा। और जो मैंने कहा है वह उन्हें सुना दे। उसने कहा – जब जाऊंगा कि जब आप ख़ुदा से यह दुआ करें कि वह मुझे आपके पास वापस लाये जल्द और मुझे तौफीक़ दे कि मैं आपके बारे में उसकी मर्ज़ी हासिल करूं। पस हज़रत ने दुआ कि वह गया और वापस आ गया और जंगे जमल में शहीद हुआ। अल्लाह उस पर रहम करे।

2 : राफे बिन सल्लमहा से मरवी है कि मैं अली (स0) बिन अबी तालिब की ख़िदमत में यौमे निहरवान हाज़िर था पस जबकि हज़रत अली (स0) बैठे हुए थे एक घुड़सवार आया और कहने लगा अस्सलामो अलैकुम या अली (स0) हज़रत ने फ़रमाया – तेरी माँ तेरे ग़म में बैठे तूने अमीरूल मोमिनीन कहकर सलाम क्यों न किया। उसने कहा मैं उसकी वजह बताता हूँ आप अमीरूल मोमिनीन उस वक्त थे जब

तक आप सिफ़्फ़ीन के हक़ पर लड़ते रहे मगर जब आप हकमैन (अबू मूसा और उमर बिन आस) के फैसले पर राज़ी हो गये तो मैं आपसे अलग हो गया और आपका नाम मैंने मुशरिक रखा पस उस वक़्त से मैं नहीं जानता कि किस मुहब्बत की तरफ लौटूं मेरे नज़दीक दुनिया व माफिहा की हर चीज़ से ज्यादा महबूब बनिस्बत आपकी जलालत के, आपकी हिदायत है हज़रत ने फ़रमाया – तेरी माँ तेरे मातम में बैठे मेरे करीब आ, ताकिं मैं तुझे अलामाते हिदायत को दिखलाऊं वह शख़्स हज़रत के क़रीब आ गया। नागाह एक शख़्स घोड़े को महमीज़ करता आया और कहने लगा या अमीरूल मोमिनीन फतह की बशारत हो और ख़ुदा आपकी आँखों को ठन्डा करें वल्लाह तमाम क़ौम क़त्ल हो गयी फ़रमाया – नहर के इस पार या उस पार, उसने कहा इस पार, फ़रमाया तू झूठा है क़सम ख़ुदा की जिसने दाना को शिगाफ्ता किया और हवाओं को चलाया, वह हरगिज़ नहर को उबूर न करेगा कि वह कत्ल हो जायें उस पहले शख़्स ने कहा चलो यह अच्छा मौक़ा हज़रत की सदाक़त जानने का मिला, कुछ देर बाद एक शख़्स और घोड़ा कुदाता आया और उसने भी ऐसा बयान किया। हज़रत ने उसक मुताल्लिक़ भी वही फ़रमाया – उस शक करने वाले आदमी ने कहा मैं ने इरादा किया कि मैं अली (स0) पर हमला करके उनका सर तलवार से जुदा कर दूँ।

फिर दो सवार घोड़े कुदाते आये उनके दोनों घोड़े पसीने–पसीने हो रहे थे उन्होंने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन अल्लाह आप (स0) की आँखों को ठन्डा रखे वल्लाह तमाम क़ौम क़त्ल हो गयी हज़रत ने फ़रमाया नहर के इस पार या

उस पार, उन्होंने जवाब में कहा इस पार, जब उन्होंने नहर में अपने घोड़े डाले और पानी उनके घोड़ों के सीने तक आ गया तो पलट पड़े और मुसीबत में मुबतिला हुए अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया तुमने सच कहा। पस वह शख़्स उतरा और हज़रत के हाथ और पैर को बोसा दिया, हज़रत ने फ़रमाया तेरे लिये हमारी सदाक़त का यही निशान है।

3 : हबाबा से मरवी है कि मैंने अमीरुल मोमिनीन अली अ0 को देखा कि लश्कर के सिपायियों के साथ है और आपके हाथ में दो सर वाला कोड़ा है और आप जरीमार माही और ज़मार (बेसीन वाली मछलियाँ)। फरोख़्त करने वालों से फ़रमा रहे हैं (ऐ बनी इस्राईल के मसूख़ात बेचने वालो) ऐ बनी मरवान के लश्करियो ! फरात बिन अहनफ ने पूछा – ऐ अमीरूल मोमिनीन नबी मरवान का लश्कर कैसा? फ़रमाया – मुराद वह लोग है जो डाढ़ी मुंडाते हैं और मूंछों पर बल देते हैं पस वह लोग सूरत के लिहाज से मस्ख़ हो गये (मरवान के लश्कर में ऐसे ही लोग थे) मैंने देखा कि हज़रत अली से बेहतर अज़रूवे नुत्क़ कोई नहीं, फिर मैं हज़रत के पीछे लगी रहीं, जब हज़रत मस्जिद के चबूतरे पर बैठे तो मैंने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन दलालते इमामत क्या है? फ़रमाया यह कंकरी उठा ला और अपने हाथ से एक कंकरी की तरफ इशारा कियां हज़रत ने उस पर मोहर लगायी वह पत्थरों में बैठ गयीं फिर फ़रमाया – ऐ हबाबा कोई मुद्दई इमामत हो तो उससे कहो कि उस पत्थर पर मोहर लगा दे जैसे मैंने मोहर लगा दी है अगर लगा दे तो समझना कि वह इमाम है।

और मुफतरेजुत्ताअत है और इमाम जिस चीज़ का इरादा करता है वह शय उससे पोशीदा नहीं रहती, हबाबा

कहती है मैं हज़रत के इन्तिकाल के बाद इमाम हसन (स0) के पास आयी आप अमीरूल मोमिनीन की जगह बैठे थे और लोग आपसे सवाल कर हरे थे मुझसे फ़रमाया – ऐ हबाबा ला जो तेरे पास है मैंने वह पत्थर का टुकड़ा दे दिया। हज़रत ने उस पर उसी तरह मोहर लगा दी जैसे अमीरूल मोमिनीन ने लगायी थी फिर मैं इमाम हसन के बाद इमाम हुसैन (स0) की ख़िदमत में आयी, आप उस वक्त मस्जिद नबवी (स0) में थे पस हज़रत ने मुझे अपने पास बुलाया और मरहबा कहा – फिर फ़रमाया जो मैंने इरादा किया है उसकी दलादत में एक दलील है क्या तेरा इरादा दलील इमामत मालूम करने का नहीं? मैने कहा ज़रूर मेरे सैय्यद व मौला! फ़रमाया जो तेरे पास है मैंने वहीं पत्थरी निकाल कर दी। आपने उस पर मोहर लगा दी फिर मैं अली बिन अल हुसैन के पास आयी और अब बुढ़ापे की वजह से राशा था और मेरी उम्र एक सौ तेरह बरस की हो गयी थी मैंने इमाम अलैह सलाम को रूकू और सजदा और इबादत में मशगूल पाया। पस मैं वलादत से मायूस हुई हज़रत ने अगुश्ते शहादत से इशारा किया। पस मेरा शबाब लौट आया। मैंने कहा मेरे आक़ा मेरी उम्र कितनी गुज़र गयी और कितनी बाक़ी है फ़रमाया–गुज़री को बता दूंगा बाक़ी को नहीं बताऊंगा।

फिर फ़रमाया – जो तेरे पास है वह ला। मैंने वह पत्थर दिया आपने उस पर मोहर लगा दी, फिर मैं इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 की ख़िदमत में आयीं आप (स0) ने भी मोहर लगा दी, फिर मैं फिर इमाम जाफर सादिक़ अ0 के पास आयी उन्होंने भी मोहर लगा दी फिर इमाम मूसा काज़िम अ0 के पास आयी उन्होंने भी मोहर लगा दी, फिर इमाम

रिज़ा अ० की ख़िदमत में आयी उन्होंने भी मोहर लगा दी उसक बाद जैसा कि मोहम्मद बिन हाशिम ने ज़िक्र किया है हबाबा नौ माह तक और जिन्दा रही।

4 : रावी कहता है मैं इमाम हसन अस्करी अ० की ख़िदमत में हाज़िर था कि यमन के एक शख़्स ने दाख़िला चाहा हज़रत ने इजाजत दी। एक शख़्स लम्बा तगड़ा, मोटा ताज़ाअन्दर आया और सलाम किया – अस्सलामो अलैकुम ऐ वली अल्लाह हज़रत ने जवाब सलाम देकर बैठने का हुक्म दिया वह मुझसे मिलकर बैठा मुझे फिक्र हुई कि यह कौन है हज़रत ने फ़रमायां यह औलाद उस अरबी औरत की है जो साहबे हसात थी और जिसके पत्थर पर मेरे आबा व अजदाद ने मोहर लगायीं और वह मोहर पत्थर में बैठ गयी यह उस पत्थर को लेकर आया है ताकि मैं भी मोहर लगाऊं। फिर उससे फ़रमाया– उसे ला, पस उसने पत्थर निकाला उसमें एक जगह खाली थी हज़रत ने उसे ले लिया और अपनी अंगूठी निकालकर उस पर मोहर लगायी जो उसके ऊपर दर आयी, गोया मैं यह नक़्श उस पर देख रहा था अल हसन (स0) बिन अली (स0)

मैंने उस मर्द यमनी से कहा क्या तुने इमाम अ० को उससे पहले कभी देखा था। उसने कहा क़भी नहीं मैं एक मुद्दत से हज़रत की ज़ियारत का मुश्ताक़ था नागाह अभी एक जवान आया जिसको मैंने कभी नहीं देखा था उसने मुझसे कहा अन्दर आ पस मैं आ गया। फिर वह यमनी यह कहता हुआ उठा। अल्लाह की रहमत और बरकत हो तुम पर ऐ अहले बैत जुर्रियत बाज़हुममिम बाज़, यानि एक को दूसरे पर फज़ीलत है और मैं गवाही देता हूँ कि आपका हक़ उसी

तरह वाजिब है जिस तरह हक़ अमीरूल मोमिनीन और हक़ दीगर अइम्मा हुदा का उन सब पर दुरूद व सलाम हो, फिर वह चला गया और फिर किसी ने उसको न देखा। इसहाक़ रावी है कि अबू अल हाशिम ज़ाफरी ने फ़रमाया – मैंने उसका नाम पूछा, उसने कहा मेरा नाम महज इब्ने सलत बिन अक़बा बिन समआन बिन ग़ानिम बिन ख़ानिम है और यह वहीं ज़ने अरबिया है जिसको साहुबलहेसात कहते हैं उसके पत्थर पर मोहर लगायी। अमीरूल मोमिनीन अ0 से लेकर इमाम हसन अस्करी अ0 तक आइमा ने।

5 : इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया – जब इमाम हुसैन (स0) शहीद हो गये तो मोहम्मद हनफ़िया ने एक रोज़ ख़लवत में इमाम जैनुल आब्दीन अ0 से कहा। ऐ पसरे बिरादर! तुम को मालूम है कि रसूल अल्लाह ने अपने बाद वसीयत व इमामत अमीरूल मोमिनीन (स0) के सुपुर्द की, फिर उन्होंने इमाम हसन (स0) को दी और इमाम हसन (स0) ने इमाम हुसैन (स0) और तुम्हारे पदरे बुजुर्गवार ने ख़ुदा का दुरूद और रहमत हो उन पर कि वह शहीद हुए और उन्होंने अपना वसी किसी को नहीं बनाया और मैं तुम्हारा चचा हूँ तुम्हारे बाप का भाई हूँ और अली का बेटा बल्हाज अम्र तुमसे बड़ा हूँ पास अम्रे वसीयत और अम्रे इमामत में मुझसे झगड़ा न करो। हज़रत अली बिन हुसैन (स0) ने फ़रमाया ऐ चचा। अल्लाह से डरो और उस चीज़ का दावा न करो जिसके तुम हक़दार नहीं हो। मैं नसीहत करता हूँ कि तुम जाहिलों में से न बनो, बेशक ऐ चचा मेरे बाप ने ख़ुदा की रहमत हो उन पर, ईराक जाने से पहले मेरे लिये वसीयत फरमायी थी और शहादत से कुछ देर क़ब्ल यह अहद मेरे सुपुर्द किया था यह

रसूल अल्लाह के तबुर्रकात हैं उनमें से मुझसे झगड़ा न करो। मुझे डर है कहीं तुम्हारी उम्र कम न हो जाये। और हाल तबाह न हो। ख़ुदा ने वसीयत और विरासत को औलादे हुसैन (स0) में क़रार दिया है अगर तुम यह जानना चाहते हो तो मेरे साथ हजरे अस्वद के पास चलो ताकि हम उसका फैसला करायें। और उस बारे में सवाल करें। इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया कि यह बात मक्का में हुई, पस दोनों चले। जब हजरे अस्वद के पास आये तो अली बिन अल हुसैन (स0) ने फ़रमाया – अब आप अल्लाह की तरफ रूजू कीजिए और दरख्वास्त कीजिए कि वह हजरे अस्वद को नातिक़ कर दे पस मोहम्मद ने ऐसा ही किया और हिज्र से सवाल किया। उसने कोई जवाब न दिया। तब अली बिन अल हुसैन (स0) ने फ़रमाया–ऐ चचा – अगर आप वसी व इमाम होते तो यह जरूर जवाब देता। उन्होंने कहा अब तुम भी ऐसा करो पस हज़रत अली बिन अल हुसैन (स0) ने ख़ुदा से दुआ की फिर फ़रमाया।

मैं तुझ से सवाल करता हूँ उस ज़ात के वास्ते से जिसने करार दिया। तुझ में मीसाक़ आम्बिया औसिया और तमाम लोगों के मीसाक़ को कि ख़बर दे मुझको उस अम्र की कि हुसैन अ0 के बाद वसी और इमाम कौन है रावी कहता है कि हजर को उस रोज़ से हरकत हुई गोया वह अपनी जगह से हट जायेगा। फिर ख़ुदा ने उसको गोया किया और उसने वाजेह अरबी में कहा। ख़ुदा गवाह है कि अली बिन हुसैन अ0 वसी और इमाम हैं यह सुनकर मोहम्मद हनीफा, अली बिन हुसैन (स0) की इमामत के कायल हो गये ऐसी ही रवायत अली बिन इब्राहीम ने अपने बाप से उसने हमाद

बिन ईसा से उसने हरीज़ से उसने ज़ुरारह से उसने इमाम ज़ाफर सादिक़ से बयान की है।

6 : कलबी निसाबा ने बयान किया कि मैं मदीना में आया और मुझे इल्म न था कि अम्रे इमामत से मुताल्लिक़ है में मस्जिदे रसूल (स0) में आया वहाँ कुछ लोग जमा थे मैं ने उनसे पूछा कि अहले बैत में आलिम कौन है उन्होंने कहा अब्दुल्लाह बिन हसन, मैं उनके घर आया इज़्ने दाख़ेला चाहा। पस एक शख़्स घर में से निकला मैं समझा कि यह उनका नौकर है मैंने उससे कहा कि तुम अपने आक़ा से मेरे लिये इजाज़त लो, वह अन्दर गया और बाहर आया और मुझसे कहा अन्दर आओ, मैंने अन्दर जाकर एक बुज़ुर्ग गोशा नशीन को देखा जो सख़्त रियाज़त नफ्स करने वाले थे मैंने सलाम किया। उन्होंनें पूछा तुम कौन हो। मैंने कहा मैं कलबी निसाबा हूँ।

फ़रमाया तुम्हारी हाजत क्या है मैंने कहा कुछ सवाल करना चाहता हूँ फ़रमाया क्या तुम मेरे फ़र्ज़न्द मोहम्मद से मिले हो मैंने कहा नहीं। मैं तो पहले आप ही के पास आया हूँ। उन्होंने कहा पूछो जो चाहते हो। मैंने कहा एक शख़्स ने अपनी औरत से कहा। तुझको मैंने तलाक़ दी सितारों की तादाद के बराबर, उन्होंने कहा तलाक़ बाईन तो तीन बार में होती है बाकी सितारों के बराबर उस पर अज़ाब नाज़िल होगा। क्योंकि उसने बिदअत की। (जोज़ा ब्रिज में यूंकि तीन सितारे हैं लिहाज़ा तलाक़ बाईन मुराद ली गयी) मैंने पूछा ऐ शेख़ आप मोज़ों पर मसह के बारे में क्या कहते हैं उन्होंने कहा नेक लोग मसह करते हैं लेकिन हम अहलेबैत मसह नहीं करते, मैंने कहा यह दूसरी ग़लती है फिर मैंने पूछा—आप

बे छिल्के की मछली के बारे में क्या कहते हैं फ़रमाया हलाल है लेकिन हम अहले बैत नहीं खाते। मेंने पूछा आप नबीज़ (जो की शराब) के मुताल्लिक क्या कहते हैं। फ़रमाया हलाल है लेकिन हम अहले बैत नहीं पीतें यह सुनकर मैं उठ खड़ा हुआ और वहाँ से निकल आया। मैं दिल में कहता था उस गिरोह ने अहले बैत पर झूठ बोला फिर मैं मस्जिद मे आया वहाँ कुछ लोग कुरैश वग़ैरह के बैठे थे। मैंने सलाम करके कहा – अहले बैत कौन ज्यादा आलिम है उन्होंने कहा अब्दुल्लाह बिन हसन मैंने कहा उनसे तो मैं मिल आया हूँ उनके पास तो कुछ नहीं, उनमें से एक शख्स ने सर उठाया और कहा तुम ज़ाफर बिन मोहम्मद के पास जाओ वह अहले बैत में सबसे ज्यादा आलिम हैं लोगों ने उसे मुलाकात की। मुझे भी लोगों ने अजरुवे हसद उनके पास जाने से रोका था मैंने उस शख्स से कहा–जिसका पता दिया है वहाँ ले चलो, पस मैं वहाँ गया और दरवाज़ा खटखटाया एक गुलाम निकला उसने कहा ऐ बिरादर कल्ब आओ। वल्लाह तुमने मुझे इज़तराब में डाल दिया अब तक कहाँ थे) मैं यह सुनकर घबरा गया अन्दर जाकर एक बुर्जुग को देखा वह एक मुसल्ले पर बैठे हैं जिसका कोई फर्श नहीं और न कोई तकिया है जब मैंने सलाम किया तो उन्होंने पूछा तुम कौन हो। मैंने कहा सुबहान अल्लाह, नौकर ने दरवाज़े पर या अखा कल्ब कहा और आक़ा पूछता है तुम कौन हों मैंने कहा मैं एक कल्बी हूँ नसब अरब का सबसे ज्यादा जानने वाला। हज़रत ने अपनी पेशानी पर हाथ मारकर कहा आदिलों ने (जो बग़ैर वही मसाएल मुतक़ल्लेमा अजरुवे जन व क़यास बयान करते हैं) झूट बोला और पूरी तरह गुमराह हो गये और

पूरे–पूरे ख़सारे में रहे, ऐ भाई कलबी ख़ुदा फरमाता है हमने हलाक किया आद व समूद को और कुँऐं वालों को (जिनहोंने नबी की नाफरमानी की) और उनके अलावह और बहुत से लोगों को किया तो उन कौमों के नस्ब कोजानता है (कि आदम तक उनका सिलसिला नस्ब किया था। कौन किसका बेटा था) मैंने कहा मैं नहीं जानता।

फिर मुझसे फ़रमाया–तू अपने नस्ब के मुताल्लिक़ जानता है? मैंने कहा– हाँ फलां बिन फलां हूँ और सिलसिले को आगे बढ़ाया फ़रमाया ठहर जा– ऐसा नहीं; जैसा तू बयान कर रहा है तू जानता हे कि फलां (हयान बिन बयान) किसका बेटा है। मैंने कहा मैं जानता हूँ फ़रमाया फलां (हयान) ऐसा नहीं, वह एक कुरदी चरवाहे (उमर) का बेटा है यह अपनी बकरियाँ फलां क़बीले के पहाड़ पर चराया करता था वह उस क़बीले की एक औरत के पास आया जो फलां की ज़ौजा थी (बज़नामे) पस उसे कुछ तमा देकर उससे जमा किया। उससे फलां (हयान) पैयदा हुआ पस वह हयान बिन उमद्र बिन मरतअया है तो ग़लती से बयान का बेटा बता रहा है। कैसा नस्साब है।

फिर फ़रमाया जो नाम मैंने बताये क्या तुझे यह मालूम थें मैंने कहा नहीं, अगर हुजूर मुनासिब समझे तो उसका ज़िक्र किसी से न करें यह मेरे लिये बदनामी का बाएस है फ़रमाया तूने नस्साबी का दावा किया था इसलिये मैने कहा– अब मैं ऐसा न कहूँगा। फ़रमाया हम भी किसी से ज़िक्र न करेंगे (आपने उसके सवालात से पहले ही इल्मे इमामत का इज़हार कर दिया) अच्छा अब जिन सवालात के जवाबात के लिये तू आया है वह दरयाफ्त कर। मैंने कहा मुझे उस

मसले का जवाब बताइये। एक शख़्स ने अपनी ज़ौजे से कहा तुझे तलाक़ है सितारों की तादाद के मुताबिक़ (क्या तलाक़ बाइन हो गयी) फ़रमाया तूने सूरः तलाक़ पढ़ा है मैंने कहा हाँ– फ़रमाया पढ़ो, मैंने पढ़ा जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत के वक़्त तलाक़ दो और इद्दह का शुमार रखो।

फ़रमाया – इस आयत में नुजूमे समा का ज़िक्र है मैंने कहा नहीं, फिर फ़रमाया– तलाक़ नहीं दी जाती मगर तुहर में जबकि जमा न किया हो और उसके गवाह दो आदिल हों मैंने दिल में कहा यह पहला सुबूत है। इल्मे इमामत का, फिर फ़रमाया और पूछ, मैंने कहा आप क्या फरमाते हैं मौजूं पर मसह के मुताल्लिक, यह सुनकर हज़रत ने तबस्सुम फ़रमाया, (अब्दुल्लाह बिन हुसैन के जवाब पर) और फिर फ़रमाया– रोज़े क़यामत खुदा हर शय को उसकी सूरत पर ले आयेगा। पस जिन्होंने मोज़ह पर मसह किया (अरब का मोजह बकरी की पोस्त का होता था) उनके पैरों पर बकरी की खाल होगी अब गौर कर ऐसे मसह करने वालों का वज़ू कहाँ जायेगा।

फ़रमाया अब और पूछ, मैंने कहा क्या जरी हलाल है (एक क़िस्म की मछली बेछिलके की) फ़रमाया – ख़ुदा ने मस्ख़ किया एक गिरोह को बनी इस्राईल से जो दरिया के हिस्से में आये वह जरी–ज़मार और मारमाही हैं) जो खुशकी में वह बन्दर, सुअर और दबर (एक क़िस्म की बिल्ली) और वक्र (एक किस्म का गोठ) बने मैंने दिल में कहा– यह तीसरी अलामत हैं फिर फ़रमाया अब आखिरी सवाल भी पूछ और उठ खड़ा हो, मैंने कहा नबीज़ के बारे में आप क्या कहते हैं फ़रमाया हलाल है (एक ख़ास सूरत में आपने मुजमेलन

फ़रमाया ताकि अब्दुल्लाह बिन हसन की गलती साबित करें जिन्होंने तफसील के बग़ैर मुतलक़न हलाल कह दिया था) मैंने कहा हम नबीज़ में दुर्द नबीज़ और दूसरी अदविया डालते हैं (ताकि वह जोश खा जाये, फ़रमाया दूर हो यह तो गन्दी शराब है जो हराम है, मेंने कहा फिर नबीज़ से आपकी क्या मुराद है। फ़रमाया सुन अहले मदीना ने हज़रत रसूल (स0) ख़ुदा से शिकायत की कि मदीना का पानी तल्ख हो गया है और उसके पीने से सेहत ख़राब हो रही है फ़रमाया उसमें खुर्मे डालो, उस शख़्स ने एक नौकर को हुक्म दिया कि ऐसा करें उसने एक मुठ्ठी खुर्मे एक कनस्तर में डाल दिये। उसने उसको पिया और तहारत की यानि वज़ू व गुसल किया। मैंने कहा वह खुर्मे कितने थे जो उसकी मुठ्ठी में थे फ़रमाया जितने उसकी मुठ्ठी में समाये, मैंने कहा एक मुठ्ठी में या दोनों में फ़रमाया कभी एक कभी दो, मैंने कहा पीपे में पानी कितना था फ़रमाया– चालीस से लेकर अस्सी या उससे कुछ ज्यादा (बेलेहाज़े वुसअते ज़र्फ) मैंने कहा उससे मुराद आपकी रितल है। फ़रमाया – हाँ रितले ईराक।

## तौज़ीह

रितल एक पैमाना है लेकिन फ़ोक़हा ने उसे आबे कुर के लिये वज़न क़रार दिया हैं रितले ईराक़ एक सौ तीस दिरहम वज़नी शय का होता है और दिरहम होता है 48 जौ के वज़न में। इमाम ने लफ्जे नबीज़ मजाज़न इस्तिमाल किया है ताकि अब्दुल्लाह बिन हसन की उस गलती को जाहिर करें कि उन्हांने मुताल्लिक़ नबीज को हलाल करार दिया

हालांकि वह हराम है अब्दुल्लाह बिन हसन को चाहिए था कि जो नबीज़ हलाल है उसकी तौज़ीह उसी तरह करते जिस तरह इमाम ने की है चूंकि इमाम के उस बयान करदह सूरत पर अगर लफ्ज़े नबीज़ इस्तेमाल करते थे लिहाज़ा उस लफ्ज़ को मजाज़न इस्तेमाल किया गया। समाअ ने कहा कि कल्बी ने बयान किया कि फिर इमाम उठ खड़े हुए और मैं भी बाहर निकला। मैंने अपने हाथ पर हाथ मार कर कहा कि अगर कोई चीज़ क़ाबिले अमल है तो यह है कल्बी मरते दम तक मुहब्बते अहलेबैत पर क़ायम रहा।

7 : हश्शाम बिन सालिम से मरवी है कि इमाम जाफर सादिक़ अ0 की वफात के बाद मैं और मोमिन ताक़ (अबू जाफ़र बिन नोमान अहवल) मदीना गये। वहाँ मालूम हुआ कि लोगों ने उस अम्र पर इत्तिफाक़ किया कि इमाम जाफ़र सादिक़ (स0) के बाद इमाम अब्दुल्लाह बिन जाफर हैं। और इसलिए कि उन्होंने रिवायत बयान की हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 से कि इमामत मुनतक़िल होगी वलदे अकबर की तरफ बशर्ते कि उसमें कोई ऐब न हो। पस हम अब्दुल्लाह बिन जाफ़र के पास आये और सवाल किया उनसे जैसे उनके बाप से करते थे।

हमने सवाल किया कि ज़कात कितने माल पर वाजिब है उन्होंने कहा दो सौ पर पाँच हमने कहा सौ पर उन्होंने कहा 2½ दिरहम (हालांकि दौ सौ से कम पर ज़कात नहीं है) हमने कहा ऐसा मरजिया फिरक़ा कहता है पस हम उनसे गुमराही की हालत में उठ आये हम नहीं जानते थे कि मैं और अबू जाफर अहवल किसकी तरफ रुजू करें। हम मदीना के एक कूचे में बैठे रो रहे थे और हैरान थे कि किसकी तरफ

जाये, मरजिया की तरफ, कद्रया की तरफ, जैदिया की तरफ, मोतज़ला की तरफ, ख़वारिज की तरफ, हम उसी हालत में थे कि मैंने एक बूढ़े को जिसे मैं नहीं जानता था अपनी तरफ हाथ से इशारा करते पायां मैं ख़ाइफ हो गया कि कहीं यह अबू जाफर मन्सूर बादशाह अब्बासी का जासूस न हो और सूरत उसकी यह थी कि मन्सूर के जासूस यह देखते फिरते थे कि इमाम जाफर सादिक़ अ0 के शिया किस इमामत पर मुत्तफिक़ होते हैं ताकि उसकी गर्दन मार दें मैं डरा कि यह शख़्स उन्हीं में से न हो। मैंने अहवल से कहा एक तरफ हो जाओ मैं अपने और तुम्हारे से मुताल्लिक़ है और न तुम मुझसे अलैहदह हो जाओ और अपने को हलाकत में मत डालो और अपने नफ्स की हिफाज़त करो, पस वह मुझसे थोड़ी दूर हो गया और मैं उसकी तरफ़ बढ़ा क्योंकि मैंने गुमान किया कि मैं उससे छुटकारा हासिल करने पर क़ादिर नहीं, पस मैं उसकी तरफ बढ़ता रहा और मौत मेरे सामने थी यहाँ तक कि वह मुझे लेकर इमाम मूसा काज़िम (स.) के दरवाज़े पर पहुँचा।

उसके बाद उसने मुझको छोड़ दिया और चला गया। नागाह एक ख़ादिम दरवाज़े पर आया और मुझसे कहने लगा। अन्दर आओ अल्लाह तआला तुम पर रहतम करे मैं अन्दर दाखिल हुआ वहाँ अबुल हसन मूसा काज़िम अलैह सलाम थे हज़रत ने बग़ैर मेरे कुछ कहे फ़रमाया न मरज़िया के पास जाओ, न क़दरिया के न ज़ैदिया के और ना मोतज़लिया और ख्वारिज के, बल्कि मेरे पास आओ, मैंने कहा मैं आप पर फिदा हूँ आपके पदर बुजुर्गवार का इन्तिक़ाल हो गया। फ़रमाया – हाँ ! मैंने कहा अपनी मौत मेरे (मुराद यह

है कि बारहवीं इमाम की तरह ग़ाइब तो नहीं हुए) फ़रमाया – हाँ।

मैंने कहा फिर उनके बाद हमारा इमाम कौन है, फ़रमाया – अगर खुदा तुम्हारी हिदायत चाहेगा तो हिदायत कर देगा मैंने कहा अब्दुल्लाह का खयाल है कि अपने बाप के कायम मुक़ाम वह है। फ़रमाया – अब्दुल्लाह चाहते है कि अल्लाह की इबादत न करें। (काफ़िर हो जायें क्योंकि इमाम बरहक़ का ना मानना कुफ़्र है।)

मैंने कहा फिर हमारा इमाम हज़रत के बाद कौन है फ़रमाया अगर ख़ुदा तुम्हारी हिदायत करना चाहेगा तो कर देगा। मैंने कहा क्या वह आप हैं फ़रमाया – नहीं। मैं खुद नहीं कहता ! अल्लाह अल्ललाह कैसा खतरनाक दौर था कि अगर ज़बान से कहते कि मैं इमाम हूँ और यह ख़बर बादशाह तक पहुँच जाती तो वह क़त्ल करा देता। मैंने दिल में कहा–मामला साफ न हुआ। फिर मैंने कहा–क्या। आपका कोई इमाम आपसे बालातर है फ़रमाया नहीं।

मेरे दिल में ऐसी बात पैदा हुई जिसको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता और वह हज़रत की अज़मत व हैबत का असर था मेरे दिल पर उससे ज्यादा था जितना उनके वालिद की ख़िदम में हाज़िर होने पर मेरे दिल पर होता था।

फिर मैंने कहा – मैं आपसे उसी तरह सवाल करना चाहता हूँ तरह आपके वालिद माजिद से पूछा करता था।

फ़रमाया – पूछो आगाह किये जाओगे मगर किसी पर ज़ाहिर न करना अगर ज़ाहिर कर दिया तो उसका नतीजा क़त्ल है मैंने सवालात किये। पस मैंने देखा कि हज़रत इल्म के ऐसे दरिया हैं जिसका जोर कम नहीं होता।

मैंने कहा–आपके और आपके आबाव अजदाद के शिया गुमराही में पड़े हुए हैं उनसे अपनी इमामत को बयान कीजिए। और उनको अपनी तरफ बुलाइये और यह काम मैं खुफिया अन्जाम दूंगा। फ़रमाया जिनमें सलाहियत हिदायत पाओ उनसे बयान कर देना और उनसे भी पोशीदा रखने का अहद ले लेना अगर उन्होंने ज़ाहिर कर दिया तो मेरा ज़बह होना यक़ीनी है इशारह किया अपने खल्क़ की तरफ।

मैं हज़रत के पास से चला आया अबू जाफर अहवल से मिला। उन्होंने कहा क्या सूरत पेश आयीं मैंने कहा बहम्द अल्लाह हिदायत हासिल हुई फिर तमाम क़िस्सा उनसे बयान किया।

हश्शाम ने कहा फिर हमने मुलाक़ात की फज़ील और अबू बसीर से उन्होंने खुलवत की इमाम अलैहिस्सलाम से सुना हज़रत के कलाम को और उनसे सवालात किये और उनकी इमामत पर पूरा पूरा यक़ीन हो गया फिर हम बहुत से लोगों से मिले। पस जो कोई हज़रत के पास गया उसने आप की इमामत का इक़रार कर लिया। सिवाये अम्मार साहाती के और उसके असहाब के और अब्दुल्लाह का यह हाल रहा कि बहुत कम लोग उनके पास जाते थे ये सूरत देखकर उन्होंने कहा – लोग जाहिल हो गये हैं और यह भी उनसे बयान किया गया कि हश्शाम लोगों को तुम्हारे पास आने से रोकते हैं उन्होंने कहा कुछ लोग मदीने में मेरे मारने के लिये बिठा दिये गये हैं।

**मर्जिया** : वह फ़िर्क़ा है जो ईमान को महज़ इल्म मा जाअ बिन्नबी तक महदूद रखते हैं और अमल को दाख़िल ईमान नहीं जानते ख़्वाह अ़मल दिल से हो। जैसे तसदीक़ बा

अ़मल बिलअवकान हो वह अफ़राद ईमान में कुव्वत व ज़अ़फ़ का कोई फ़र्क़ नहीं करते, बद से बद आदमी ईमानी मर्तबा में जिबरईली के बराबर जानते हैं और अमीरुलमोमिनीन (अ०) को चौथे नम्बर पर ख़लीफ़ा मानते हैं।

**क़दरिया** : वह फ़िर्क़ा है जो बन्दे को बिल इस्तिक़लाल अपने अफ़आ़ल पर क़ादिर मानते हैं ये अक़ीदे में जबरिया फ़िरक़े की ज़िद हैं शिया उन दोनों के दरमियान हैं।

**ज़ैदिया** : ये इमामत ज़ैद बिन अली बिन अल्हुसैन के क़ायल हैं और इज्तिहाद और ख़ुरूज बिल्सैफ़ को शर्ते इमामत मानते हैं।

**मुअ़तज़िला** : मुर्तकिब ज़िना वग़ैरह को ईमान से ख़ारिज जानते हैं ख़्वाह वह गुनाह बे इस्रार हो या बा इस्रार बे तोबा मरने वाले को जहन्नमी जानते हैं।

**ख़वारिज** : हुक्म ग़ैर अल्लाह को अगर्चे अजरूए इल्म हो शिर्क जानते हैं ये जमाअ़त सफ़फ़ैन में हज़रत अ़ली से (अ०) इस लिये अलाहिदा हुई कि आप (अ०) हकमैन के फ़ैसले पर क्यों राज़ी हुए।

8. रावी कहता है कि हसन बिन अब्दुल्लाह मेरे चचा का बेटा ज़ाहिद था और अपने ज़माने के तमाम लोगों से ज़्यादा आ़बिद, उस मोहम्मद बिन फ़लां वाकिफ़ी का कहना है – मेरो एक चचाज़ाद भाई था, जिसका नाम हसन बिन अब्दुल्लाह था वह बहुत ही पारसा और अपने ज़माने में बहुत बड़ा इबादतगुज़ार था। बादशाह भी उसकी दीनी तलाश व कोशिश की बिना पर ख़ौफ़ज़दा रहता था और जब भी बादशाह के सामने जाने का इत्तफ़ाक़ होता तो सख़्त लहजे में वअ़ज़ व नसीहत, अम्र बिलमारूफ़ और बनी अनल्मुन्कर

करता और बादशाह भी उसकी नेकी की बिना पर उसे तहम्मुल करता, वह उसी हालत पर बाक़ी था कि इत्तफ़ाकन एक दिन इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये जबकि वह भी मस्जिद में था, आपने इशारे से अपने पास बुलाया वह आया आपने फ़रमाया ऐ अबू अली तेरी सिफ़त मुझे बहुत पसन्द है और मैं इससे खुश हूँ मगर ये कि तेरे पास मअ़रफ़त नहीं है, लिहाज़ा तू मअ़रफ़त हासिल कर। उसने कहा – मैं आप पर फ़िदा हो जाऊँ, मअ़रफ़त क्या है? आपने फ़रमाया जाओ दीन को समझो और हदीसें हासिल करो, वह कहता है – किन लोगों से? आप ने फ़रमाया मदीने के फ़ुक़हा से, फिर हदीस मेरे पास लाओ। रावी कहता है – कि वह गया और हदीसें याददाश्त कीं और आपकी ख़िदमत में आकर हदीसें सुनाई। इमाम ने सारी हदीसें बातिल क़रार दीं (यानी दरजए एतबार से गिरी हुई) फिर आपने फ़रमाया जाओ और मअ़रफ़त हासिल करो वह मर्द अपने दीन का बहुत ख़याल रखता था और हमेशा इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम के इन्तज़ार में रहता कि आपे से इस्तफ़ादा करे कि एक दिन आप बाग़ की तरफ़ जा रहे थे कि इन्तज़ारे राह हज़रत का सामना हुआ, वह कहता है मैं आप पर फ़िदा हो जाऊं मैं अल्लाह के सामने आप पर एहतजाज करूंगा। मअ़रफ़त की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाइये। रावी कहता है कि इमाम (अ०) ने अमीरुलमोमिनीन अलैहिस्सलाम के हालात बताए और जो भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के गुज़रा उससे बाख़बर किया और दो मर्दों (अबूबकर व उमर) के बारे में आगाह फ़रमाया उसने भी उन तमाम बातों को कुबूल किया फिर कहा है कि अमीरुलमोमिनीन अलैहिस्सलाम

के बाद इमाम कौन है आप ने फ़रमाया इमामुलहसन अलैहिस्सलाम। उनके बाद इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम यहां तक कि अपनी मंज़िल पर पहुंच कर ख़ामोश हो गये। रावी कहता है कि फिर उस मर्द ने कहा – मैं आप पर कुरबान। इस वक़्त इमाम कौन है? आपने फ़रमाया अगर मैं बाख़बर करूं तो तू कुबूल करेगा? वह कहता है हां मैं आप पर फ़िदा आपने फ़रमाया इस वक़्त मैं इमाम हूं। वह कहता है – आपकी इमामत के लिए कोई मुअजज़ा पेश कीजिए ताकि मैं इस्तदलाल करूं? फ़रमाया उसी दरख़्त के पास जाओ और इशारा फ़रमाया एक दरख़्त उम्मे ग़ीलान की तरफ़ और उस दरख़्त से कहो मूसा इब्ने जाफ़र तुमसे कहते हैं आओ। वह कहता है और दरख़्त के क़रीब गया और मैंने देखा ज़मीन शिगाफ़्ता हुई और वह दरख़्त हज़रत के सामने आकर खड़ा हो गया फिर इमाम आलीमक़ाम ने इशारा किया तो वह दरख़्त दोबारा पलट गया। रावी कहता है वह आंहज़रत की इमामत का इक़रार किया और ख़ामोशी इख़्तियार की और इबादत में मसरूफ़ हो गया उसके बाद किसी ने उसको कलाम या गुफ़्तगू करते हुए नहीं देखा।

मुहम्मद बिन यहया और अलमदीन मुहम्मद बिन अलहसन से और उन्होंने इब्राहीम बिन हश्शाम से उस हदीस को उसी मतन के साथ नक़ल किया है।

9. मुहम्मद बिन अबी अल्लाम कहता है कि यहया बिन अकरम जो सायरा का क़ाज़ी था जिसको मैंने आज़माया, मुनाज़िरा किया, गुफ़्तगू की, उससे मुलाक़ातें कीं और उलूम आले मुहम्मद (स0) के बारे में सवालात भी किये उन मराहिल के बाद मैंने सुना कि वह कहता है कि एक दिन मस्जिदे

नबवी में दाखिल हुआ और मेम्बरे रसूल का तवाफ़ किया उसी दौरान मैंने देखा कि मुहम्मद बिन अली रिज़ा अलैहिस्सलाम (इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम) भी मसरूफ़े तवाफ़ हैं पस कुछ मसायल जो मेरे ज़हन में थे उनके बारे में आपका मुनाज़रा किया आप ने सारे जवाब दिये। पस मैंने आंहज़रत से अर्ज़ किया – क़सम ख़ुदा की कि आपसे एक सवाल करना चाहता हूं लेकिन मुझे शर्म आती है, आपने मुझ से फ़रमाया क़ब्ल इसके कि तू मुझसे सवाल करे मैं तुझको बाख़बर करता हूं, तू इमाम के बारे में पूछना चाहता हैं, मैंने अर्ज़ किया बाख़ुदा मेरा सवाल यही था। पस आपने फ़रमाया मैं हूं इमाम। मैंने अर्ज़ की इमाम की पहचान क्या है? इमाम आलीमक़ाम के दस्ते मुबारक में असा था वह गोया हुआ और ज़बान से ज़बानी कहने लगा यही मेरे मौला इस ज़माने के इमाम हैं और यही हुज्जते ख़ुदा हैं।

10. हुसैन बिन उमर बिन यज़ीद कहता है मैं इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैं उस ज़माने में मज़हब वाकिफ़िया रखता था (यानी उसका अक़ीदा था कि इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं और वही मेहदी मौऊद हैं) मेरे बाप ने इमाम मूसा काज़िम (अ0) से सात सवाल किये थे छः के जवाब उन्होंने दिये सातवें के जवाब से रुक गये। मैंने दिल में कहा, मैं वही मसअ़ले पूछता हूं जो मेरे बाप ने उनके बाप से पूछे थे अगर वही जवाब दिये जो उनके बाप ने दिया था तो उनकी इमामत की दलील होगी पस सवाल किया। उन्होंने वही जवाब दिया जो मेरे बाप को उनके बाप ने दिया था उन्होंने जवाब में एक वाव या एक ये के भी ज़्यादती न की और सातवें सवाल के जवाब

में रुक गये। मेरे वालिद ने कहा था कि मैं रोज़े क़यामत आप पर एहतिजाज करूंगा क्योंकि आप का यह गुमान है कि अब्दुल्लाह (जो आपके बड़े भाई थे) इमाम नहीं हैं तो (इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम) ने मेरे वालिद की गर्दन में हाथ डालकर फ़रमाया – हां सही है रोज़े क़यामत पेशे ख़ुदा मुझ पर एहतेजाज करो इस मसअले में जो भी गुनाह होगा वह मेरी गर्दन पर।

पस जब मैं आंहज़रत (इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम) से रुख़सत होने लगा तो आपने फ़रमाया हमारे शियों में से कोई भी ऐसा नहीं है जो बलाओं में मुब्तिला हो या बीमार व आज़ार हो और उस बला व मर्ज़ पर सब्र व शकीहाई इख़्तियार करे मगर ये कि अल्लाह उस (शिया) को हज़ार शहीद का अज्र देता है तो मैंने सोचा कि इस वक़्त इन बातों का क्या मतलब? (क्योंकि मौज़ू कुछ और था) मगर जब मैं सफ़र के लिये निकला अभी आधा रास्ता तै किया था कि मैं एक मर्ज़ (अर्कुलमदयनी)[1] में मुब्तिला हो गया ज़िसकी वजह से मुझे बहुत दुश्वारी का सामना करना पड़ा जब आइन्दा साल मैं हज पर गया तो इमाम की ख़िदमत में पहुंचा और अभी मेरा दर्द कुछ बाक़ी था मैंने आंहज़रत से अपने दर्द की शिकायत की और अर्ज़ किया मेरी जान आप पर कुर्बान मेरे पैरों पर कोई दुआ पढ़ दीजिए यह कहकर मैंने अपने पैरों को आपके सामने फैलाया। तो आपने फ़रमाया इस पैर की वजह से कुछ नहीं है तुम अपना सही पैर दिखाओ तो मैंने अपना दूसरा पैर फैलाया तो आंहज़रत ने उस पर दुआ दम की। जब मैं बाहर आया तो थोड़ी देर में एक रग पैर से निकली जिसके ख़ारिज होने का दर्द बहुत ही कम था।

[1] अर्क़ मदयनी शायद यह मर्ज़ हिन्दुस्तान में बनाम अर्कुन्निसा मशहूर है।

11. इब्ने क़ियामल्वुस्ता (जो मज़हब वाक़िफ़िया पर था) कहता है – मैं इमाम अली बिन मूसा अलरज़ा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुंचा और मैंने अर्ज़ किया– आया (एक वक़्त में) दो इमाम हो सकते हैं? फ़रमाया– हरगिज़ नहीं मगर ये कि उनमें से एक सामित (ख़ामोश) हो। मैंने अर्ज़ किया मगर आपके साथ इमाम सामित (ख़ामोश) नहीं है (यह वह ज़माना था कि जब इमाम अबू जाफ़र (इमाम मुहम्मद तक़ी) अलैहिस्सलाम पैदा नहीं हुए थे)। आपने मुझसे फ़रमाया– बख़ुदा, ख़ुदा मुझसे एक ऐसा फरज़न्द वजूद में लायेगा कि जिसके ज़रिए हक़ को उस के अहल के साथ उसके सही मक़ाम तक पहुंचाये और बातिल को उसके अहल के साथ नाबूद करे। एक साल बाद इमाम अबू जाफ़र (मुहम्मद तक़ी) की विलादत हुई तो इब्ने क़ियामा से कहा गया– क्या ये निशानी तुझे क़ायल करने को काफ़ी नहीं है?तो इब्ने क़ियामा ने कहा–क़सम ख़ुदा की यह बहुत बड़ी निशानी (दलील) है लेकिन क्या करूं इस अम्र में कि जो इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अपने फ़रज़न्द के बारे में फ़रमाया है।

## तौज़ीह

इब्ने क़यामा का इशारा उस हदीस की तरफ़ है जिसको किसी ने नक़ल किया है बरिवायत यहया बिन अल्क़ासिम कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को फ़रमाते सुना, मिन्ना समानियता मुहद्दिसून साबअहुमुल क़ायम। अहम में मुहद्दिस (जिससे फ़रिश्ता कलाम करे) आठ हैं (मअ इमाम मूसा काज़िम (अ0) सात और एक जनाबे फ़ातिमा

(स0) और उनका सातवां क़ायम होगा) उससे वाक़िफ़िया फ़िरक़े वालों ने ये नतीजा निकाला कि इमामत इमाम मूसा काज़िम पर ख़त्म हो गई और मेहदीए आख़िरुज़्ज़मा वही हैं लेकिन उन्होंने इस हदीस का मतलब ग़लत समझा है अव्वल तो इस हदीस की सेहत में कलाम है क्योंकि रावी शख़्स वाहिद है और अगर सही भी मान लिया जाये तो उससे मुराद ये है कि रसूले खुदा (स0) से लेकर इमाम काज़िम अलैहिस्सलाम तक आठ मुहद्दिस हुए। उनके सातवें यानी बसिलसिला मुहद्दिसीन इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम हैं चुनान्चे वह इस वक़्त अम्रे इमामत पर फ़ाइज़ थे और ये मुस्लिम है कि हर इमाम अपने वक़्त में क़ायम आले मुहम्मद (स0) होता है यानी दीन उससे क़ायम रहता है इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम के मुतअ़ल्लिक़ नुसूसे जुदागाना हैं। पस वाक़िफ़िया का सिलसिलए इमामत को इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम पर ख़त्म कर देना ग़लत है। क्योंकि उनके बाद के अइम्मा के मुतअ़ल्लिक़ बकसरत अहादीस मौजूद हैं।

12. रावी कहता है कि मैं खरासां में आया और मैं मज़हब वाक़िफ़िया रखता था मेरे साथ कुछ सामान था जिसमें कुछ छींट के क़िस्म का कपड़ा भी था जिसका मुझे इल्म न था और न ये पता था कि किस गठरी में है जब मक़ामे मरू में पहुंचा तो एक मकान में उतरा एक शख़्स मदनी जो मरू का रहने वाला बाशिन्दा था मेरे पास आया।

और मुझसे कहने लगा इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने कहा है कि जो क़लमकार कपड़ा तेरे पास है मुझे भेज दे, मैं ने कहा मेरे आने की ख़बर हज़रत को कैसे हुई, हालांकि मैं अभी आया हूं और मेरे पास छींट की क़िस्म का कोई कपड़ा

भी नहीं, वह लौट कर आया और कहने लगा। हज़रत ने फ़रमाया है तेरे पास है और फ़लां जगह है और वहां गठरी में बंधा हुआ है मैंने तलाश किया तो एक गठरी में सबसे नीचे उसे पाया। पस मैंने उसको हज़रत के पास भेज दिया।

13. अब्दुल्लाह बिन मुग़ैरह कहता है मैं वाकिफ़िया मज़हब रखता था इसी हालत में मैंने हज किया। जब मैं मक्का पहुंचा तो अपने मज़हब के बारे में मेरे दिल के अन्दर एक शक पैदा हुआ। पस मैं मक़ामे मुल्तज़िम (ख़ान–ए–काबा में दरवाज़ा और रुकन यमानी के दर्मियान यहां लिबासे काबा को पकड़कर लोग दुआ करते हैं) में आया और काबा के पर्दे को पकड़ कर दुआ करने लगा। ख़ुदावन्दा तू मेरी तलब और मेरे इरादे को जानता है पस मुझे हिदायत कर बेहतरीन दीन की तरफ़, मेरे दिल में ये बात पैदा हुई कि मैं इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम के पास जाऊं पस मैं मदीने आया और हज़रत के दरवाज़े पर पहुंचा। गुलाम से कहा अपने आक़ा से कह दे एक शख़्स अहले ईराक़ से आया है मैंने हज़रत की आवाज़ सुनी, ऐ अब्दुल्लाह बिन मुग़ैरह अन्दर आ। मैं अन्दर आया तो हज़रत ने मुझे देखकर फ़रमाया। ख़ुदा ने तुझे अपने दीन की तरफ़ हिदायत की। मैंने कहा मैं गवाही देता हूं कि आप ख़ुदा की हुज्जत हैं और उसकी मख़लूक़ पर उसके अमीन हैं।

14. रावी कहता है अब्दुल्लाह बिन हुलैल ने बयान किया कि वह अब्दुल्लाह अफ़तह की इमामत का क़ायल था वह सामरा गया। वहां से आया तो अपने साबिक़ा अक़ीदे को छोड़कर आया। मैंने उसका सबब पूछा। उसने कहा मैंने अपने आपको तैयार किया। इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम

से सवाल करने पर पस हज़रत मुझे एक तंग रास्ते पर मिल गये। जब मेरे मक़ाबिल हुए तो हज़रत ने अपने मुंह से कोई चीज़ मेरी तरफ़ फेंकी जो मेरे सीने पर लगी वह एक झिल्ली थी जिस पर लिखा था वह (अब्दुल्लह अफ़तह) न यहां है और न वह इमाम है।

15. रावी कहता है कि उम्मे असलम एक रोज़ रसूल (स0) के पास आई जबकि आप (स0) की बारी ख़ान-ए-उम्मे सलमा में थी। उनसे आंहज़रत के मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया। उन्होंने कहा किसी ज़रूरत से बाहर तशरीफ़ ले गये हैं अभी आये जाते हैं उसने इन्तिज़ार किया। हज़रत तशरीफ़ ले आये। उम्मे असलम ने कहा। ऐ अल्लाह के रसूल (स0) मैंने आसमानी किताबों में पढ़ा है मुझे मा.लूम है हर नबी व वसी के मुतअ़ल्लिक़, मूसा (अ0) के वसी ज़िन्दगी में हारून थे और मरने के बाद यूशुअ ऐसे हुए ऐसे ही ईसा के वसी हुये। पस या रसूलुल्लाह (स0) आपके वसी कौन हुए। फ़रमाया मेरा वसी मेरी ज़िन्दगी में और मेरे मरने के बाद एक ही है ऐ उम्मे असलम, जो कोई मेरा सा काम करके दिखाए वही मेरा वसी है फिर आपने ज़मीन पर से एक संगरेज़ा उठाया और उसे अपनी चुटकी में लेकर दबाया और आटे की तरह बारीक कर दिया फिर उसे गूंधा और उस पर अपनी अंगूठी से मुहर लगा कर फ़रमाया जो कोई मेरी तरह ऐसा काम करे वही मेरा वसी है मेरी ज़िन्दगी में और मेरे मरने के बाद।

फिर मैं हज़रत के पास चली आई। अमीरुलमोमिनीन की ख़िदमत में आई और उनसे कहा क्या आप वसीए रसूल (स0) हैं फ़रमाया हां फिर आप (स0) ने एक संगरेज़ा लेकर उसे चुटकी से आटे की तरह बारीक किया फिर उसे गूंधा

और फिर अपनी अंगूठी से उस पर मोहर लगा दी और मुझसे कहा जो कोई मेरी तरह ऐसा करे वह मेरा वसी है फिर मैं इमाम हसन (अ0) के पास आई। वह लड़के थे मैंने कहा क्या आप अपने बाप के वसी हैं फ़रमाया – हां ऐ उम्मे असलम, फिर उन्होंने कंकरी उठाकर वैसा ही किया जैसा हज़रत रसूले ख़ुदा और हज़रत अ़ली ने किया था। मैं वहां से इमाम हुसैन[अ0] के पास आई। वह बहुत ही सग़ीरुल्हसन थे मैंने कहा क्या आप अपने भाई के वसी हैं फ़रमाया हां ऐ उम्मे असलम कंकरी ला। पस उन्होंने भी वही करके दिखाया। उम्मे असलम की उम्र इतनी ज़्यादा हुई कि वह हज़रत अली बिन अल्हुसैन से मिली मदीना वापस आने के बाद उनसे कहा। क्या आप अपने बाप के वसी हैं फरमाया हां और उन्होंने वही करके दिखाया। अल्लाह का दुरूद व सलाम हो उन पर।

16. ज़ैद बिन अली एक रोज़ इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम के पास अहले कूफ़ा के कुछ ख़ुतूत लेकर आये। जिसमें उन्होंने ज़ैद को अपनी तरफ़ आने की दावत दी थी और लिखा था कि लोग उनकी मदद के लिये जमा हैं और ख़ुरूज करने की तरग़ीब दी थी इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया उन ख़ुतूत की इब्तिदा उन्होंने की है या तुमने जो लिखा था और उनको अपनी तरफ़ बुलाया था या उसका जवाब है उन्होंने कहा इसकी इब्तिदा उन्होंने ही की है हमारे हक़ को और रसूलुल्लाह से हमारी क़ुराबत को पहचानते हुए और इस लिये कि उन्होंने किताबे ख़ुदा में हमारी मौदत के रुजूब को और हमारी इताअत को फ़र्ज़ पाया और इस लिये कि उन्होंने हमारी परेशान हाली, तंगदस्ती और हुकूमत के मज़ालिम को देखा है।

इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – इताअत तो अल्लाह की तरफ़ से फ़र्ज़ की हुई है और यह वह तरीक़ा है कि जो अव्वलीन के लिये था और यही आख़िरीन के लिये है और इताअ़त तो हम में से सिर्फ एक के लिये है अल्बत्ता मुवदत सबके लिए है और अम्रे खुदा जारी होता है उसके औलिया में बिल्तिसाल हुक्म के साथ (हज़रत अली (अ0) से बारहवें इमाम तक) और ये कि उनकी तरफ रुजूअ फैसल शुदा है और एक यक़ीनी अम्र है और एक वक़्ते मालूम तक उसकी मुद्दत मुईन है।

कहीं ऐसा न हो कि ये लोग जो ख़ुदा की रुबूबियत पर यक़ीन नहीं रखते तुम्हें बेवकूफ़ बनायें (चूंकि तुम इमाम मन्सूसुल्लाह न होते हुए खुरूज का इरादा रखते हो लिहाज़ा) ये लोग तुम को अज़ाबे इलाही से नहीं बचा सकते। पस जल्दी न करो। अल्लाह तआला बन्दों की जल्दी करने पर जल्दी नहीं करता। और तुम अल्लाह पर सबक़त न करो वर्ना मुसीबत तुमको आजिज़ बना देगी और गिरा देगी ये सुनकर ज़ैद को गुस्सा आया और कहने लगे वह इमाम नहीं हो सकता। जो घर में पर्दे छोड़कर बैठे और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह से किनाराकश हो बल्कि इमाम वह है जो हुदूदे इस्लाम से दुश्मनों को रोके अल्लाह की राह में डट कर जेहाद करे और जिहाद करे और रअयत से ज़ालिमों को दफ़ा करे और अपने हरम की हिफ़ाज़त करे इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – ऐ भाई जिस चीज़ (इमामत की तरफ़ तुम अपने को निस्बत दे रहे हो उसके मुतअ़ल्लिक़ कोई गवाही तुम्हारे पास किताबे ख़ुदा से या तरीक़–ए–रसूल (स0) से है या ज़मान–ए–साबिक़ की कोई मिसाल ऐसी दे सकते हो

जिससे मालूम हो कि तलवार चलाए बग़ैर कोई इमाम नहीं होता या उलूमे दीन से जाहिल इमाम हो सकता है खुदा ने बाज़ चीज़ों को हलाल किया है। बाज़ को हराम, उसी ने फ़राएज़ बताये हैं उसी ने मिसालें क़ायम की हैं और तरीक़े बनाए हैं हमको उन उमूर में दख़ल नहीं कि वह अपनी तरफ़ जो चाहे कर लें) खुदा ने अपने अम्र पर क़ायम रहने वाला कोई इमाम ऐसा नहीं बनाया जो ताअ़त के फ़राएज़ में शक व शुबा रखता हो और वह किसी अम्र में वक़्त से पहले सबक़त करने लगे और जिहाद का वक़्त आने से पहले जिहाद पर तैयार हो जाए।

खुदा ने फ़रमाया है कि एहराम की हालत में शिकार न करो, तो आया शिकार का क़त्ल ज़्यादा बुरा है या उस नफ़्से इन्सानी का जिसकी हुरमत अल्लाह ने रखी है और क़त्ल हराम क़रार दिया है (यानी नावक़्त जब खुदा ने शिकार करने की इजाज़त नहीं दी तो आदमियों के क़त्ल का तो ज़िक्र ही किया।

हर शै का एक महल होता है फ़रमाता है जब तुम एहराम खोल दो तो शिकार कर लो पहले जिसकी मुमानिअत थी अब उसकी इजाज़त हो गयी।) और खुदा ने फ़रमाया कि तर्क न करो हुरमत को साहबे एहतराम मक़ामात की और न हुरमत वाले महीनों की (शव्वाल, ज़ीक़अ़दा, ज़िलहिज्जा और मुहर्रम) खुदा ने बारह महीने रखे हैं उनमें चार को साहबे हुरमत क़रार दिया है उनमें जंग करने से मना किया है।) और फ़रमाया कि उन चार महीनों में रूए ज़मीन की सैर करो और ये समझ लो कि तुम अल्लाह को आजिज़ करने वाले नहीं।

फिर अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमाया—जब यह हुरमत कि महीने गुजर जायें तो मुशरकीन को जहां पाओ कत्ल करो। मतलब यह है कि हर काम का एक वक्त होता है। ऐ जैद तुम बे मौका, बे हुक्म खुदा के जिहाद के लिए खड़े हो रहे हो।

खुदा ने कत्ले मुशरकीन का एक वक्त मुअय्यन फ़रमाया है और फ़रमाया है कि इद्दए वफात में औरत से अक्द न करो जब तक उसकी मुद्दत खत्म न हो जाये। पस खुदा ने हर शय के लिए एक महल करार दिया है और हर अम्र के लिए एक मुद्दत है।

पस अगर तुम्हारे पास अपने उस इरादे के मुताल्लिक़ खुदा की तरफ से कोई दलील है और तुम्हें उस अम्र में अपनी सदाकत का यकीन है और तुम्हारा मामला वाजेह है तो ठीक है जो करना चाहते हो करो वरना ऐसे अम्र का क़स्द न करो। और उस सल्तनत को खत्म करने की कोशिश न करो जिनका नसीब अभी दुनिया से खत्म न हुआ (यानि सल्तनत बनी उमय्या) और उनकी मुद्दत हुकूमत अभी आखिर नहीं हुई और उनके जवाल का वक्त अभी नहीं आया।) पस जब उनकी मुद्दते खत्म हो जायेगी और दुनिया से उनका रिज्क उठ जायेगा और मुद्दते सल्तनत अपने आखिरी नुक्ते पर पहुंच जायेगी और यह उनकी फजीलत और बाकायदा इन्तजाम क़ा सिलसिला खत्म हो जायेगा और रईयत और बादशाह दोनो को अल्लाह जिल्लत व हिकारत में मुब्तिला कर देगा।

मैं पनाह मांगता हूं खुदा से उस इमाम के बारे में जो वक़्त की ज़रूरत को नहीं समझता और जो इतना जाहिल हो

कि उसकी रिआया अपने बादशाह से ज्यादा आलिम हो। ऐ भाई क्या तुम जिन्दा करना चाहते हो उन लोगो के तरीके हुकूमत को जिन्होंने आयाते खुदा का इन्कार किया और उसके रसूल (स0) कि न फरमानी की और बगैर खुदा की हिदायत के अपनी ख्वाहिशों की पैरवी की और दावा–ए–खिलाफत किया बगैर किसी खुदाई दलील के और बगैर हुक्म रसूल (स0) के मैं खुदा से पनाह मांगता हूं उस अम्र में कि ऐ भाई कल तुमको सूली दी जाये किनासा में, यह फरमा कर आपकी आंखे डबडबा आयीं और आंसू जारी हो गये। फिर फ़रमाया अल्लाह ही फैसला करने वाला है हमारे और उन लोगों के दरमियान जिन्होंने हमारी परदा दरी की और हमारे हक से इन्कार किया और हमारे भेद का इफ्शा किया और निसबत दी हमको हमारे जद के ग़ैर से और हमारे बारे में उन बातों को बयान किया जो हमारे दिल में न थी।

17 : रावी कहता है कि हम ह़जरत अली इब्नुल हुसैन (स0) की पोती खदीजा के पास उनकी भांजी की ताजियत के लिए आए। हमने उनके पास अब्दुल्लाह इब्नुल हुसैन अलैहिस्सलाम के फरजन्द मूसा को देखा। जो औरतों के करीब एक गोशे में बैठे थे हमने ताजियत की घरवालो से, फिर हम मूसा के पास आये उन्होंने दुख्तरा बी लश्कर से जो मरसिया गो थी–कहा–मरसिया पढ़ो। उसने यह शेर पढ़े

गिनो मरने वालो को रसूल अल्लाह (स0) "हमजा अब्बास–अली (स0) जो खैर पर थे, फिर जाफर फिर अकील फिर अइम्मा अहलेबैत

मूसा ने कहा तूने खूब शेर पढ़े और हमको खुश किया और पढ़ उसने दो शेर और पढ़े

हमही में मुत्तक़ियो के इमाम मोहम्म्द (स0) थे और हम में हमजा थे और मुहज़्ज़ब जाफर, हममे अली (स0) थे रसूल (स0) के दामाद पाक व पाकीजा।

हम उनके पास रात आने तक ठहरे, खदीजा ने कहा मैंने अपने चचा मोहम्मद बिन अली अलैहिस्सलाम से सुना है कि उन्होंने फ़रमाया है औरतों को मातम में नोहे की जरूरत है ताकि वह रोएं न कि तर्ब में लाने वाले अश्आर की और जब रात आये तो मलायका को ऐसे नोहे से (अश्आर) अजीयत न दो,

फिर हम वहां से निकल आये और सुबह ही फिर खदीजा के पास आये। हमने उनसे जिक्र किया इमाम जाफर सा़दिक अलैहिस्सलाम का मकान छोड़कर उस मकान में आने का–मूसा ने कहा यह दारूस्सरका यानि चुराया हुआ घर है। खदीजा ने कहा कि यह सब किया कराया है हमारे महदी साहब का यानि मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह इब्नुल हुसैन का जो अपने आप को महदी बनाये हुये थे ये जवाब था मिजाहिया की बात का। (इमाम जाफर सादिक[अ0] जिस घर में रहते थे यह घर उसका एक जुज़ था। अब्दुल्लाह महज के फ़र्ज़न्द मोहम्मद ने जो मुददई महदवीयत थे अदालत दीवानी से उस मकान को इमाम के मकान से जुदा करा लिया और खदीजा को आरियतन रहने के लिए दे दिया था)।

मूसा बिन अब्दुल्लाह ने कहा – मैं तुमको एक अजीब बात सुनाता हूँ – जब मेरे बाप ने मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह की इमामत के मामले को उठाया तो अपने असहाब को जमा करके फ़रमाया – इस मामले में बगैर इमाम जाफर सा़दिक अलैह सलाम के मेरे लिए कामयाबी नहीं हो सकती दरआन्हालेकि

मेरे ऊपर तकिया किए हुए थे हम उनसे घर के बाहर मिले जबकि वह मस्जिद की तरफ जा रहे थे मेरे वालिद ने उनको ठहरा लिया और बातचीत शुरू की। उन्होंने फ़रमाया – ऐसी गुफ्तगू की यह जगह नहीं। इन्शाअल्लाह हम फिर मिलगे मेरे वालिद खुश व खुर्रम वहां से लौटे और दूसरे या तीसरे रोज हम फिर चले और हजरत के पास आये। मेरे बाप मेरे साथ उनकी खिदमत में हाजिर हुये फिर बातचीत शुरू हुयी। मेरे बांप ने कहा कि आप जानते है कि बलहाज सिन में आप से बड़ा हूँ बल्कि तमाम खानदान में मुझसे बड़ा कोई नहीं, लेकिन खुदा ने आपको वह फजीलत दी है जो कौम के किसी एक फर्द को नहीं मिली, मैं आप के पास पूरे एतमाद के साथ आया हूँ। क्योंकि मैं आपकी नेकी और ईसार को खूब जानता हूँ उम्मीद है कि आप मेरी बात मान लेंगे आपके असहाब में से किसी ने इख्तिलाफ नहीं किया और कुरैश वगैरह में से दो शख्स भी ऐसे नहीं जो मुखालिफ हो।

इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – जब आप मेरे गैर को मुझसे ज्यादा इताअत वाला पाते हैं तो आप को मेरी जरूरत ही क्या है बाखुदा आप जानते है कि मैं सेहरा में जाकर रहने का इरादा रखता हूँ और पूरी कोशिश उसके लिए करता हूँ पस आप भी अपने नफ्स पर जफा व मशक्कत उठाये और मैं तो हज करने का इरादा रखता हूँ और उसको मैं अपने नफ्स पर बड़ी मशक्क़त व तकान व कोशिश के बाद हासिल करूंगा आप मेरे ग़ैर को तलाश कीजिए और उस अम्र के बारे में उनसे सवाल कीजिए और उनसे यह न बताइये कि आप मेरे पास आये थे।

उन्होंने कहा कि लोगो की गरदनें आप की तरफ उठी

हुयी है अगर आप ने मेरी बात मान ली तो फिर कोई मेरी मुखालिफत न करेगा मैं वादा करता हूँ कि आप को न तो जंग की तकलीफ दी जायेगी और न किसी ऐसे अम्र की जो आपकी तबियत के खिलाफ हो उसी अस्ना में कुछ लोग आ गये और सिलसिला–ए–कलाम मुन्क़तअ हो गया। उसके बाद मेरे बाप ने कहा – आप ने क्या फैसला किया। फ़रमाया – हम फिर इन्शा अल्लाह मिलेंगे उन्होंने कहा – कि आपको मेरी ख्वाहिश मन्जूर नहीं। फ़रमाया – इन्शाअल्लाह तुम्हारी इस्लाह की तुम्हारी ख्वाहिश की मुताबिक कोई सूरत निकाली जायेगी।

फिर मेरे बाद अपने घर आ गये और उन्होंने अपने बेटे मोहम्मद (नफ्से जकिया) के पास पैगाम भेजा वह जहनियता के पहाड़ पर जिसे अस्कर कहते है मुकीम थे यह मुकाम मदीना से दो रात के फासले पर है उनको खुशखबरी दी और बताया कि इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम से तुम्हारे मामले में कामयाबी हासिल कर ली है तीन दिन के बाद हम बाप बेटे फिर इमाम अलैहिस्सलाम के दरवाजे पर आये और उससे पहले जब हम आते थे तो कोई रूकावट न होती थी। अब दरबान ने रोका फिर हमारे लिए इजाजत हासिल की और हम अन्दर आये। मैं हुजरे के एक गोशे में बैठ गया और मेरे वालिद हजरत के करीब बैठे और कहने लगे मैं आप (स0) पर फिदा हूं आप के पास उम्मीदों से पूरा आया हूं। और मुझे उम्मीद है कि मेरी हाजत आप से जरूर पूरी होगी।

इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – ऐ मेरे चचा जाद भाई मैं तुमको पनाह में देता हूं अल्लाह की। उस अम्र के मुतालिक जिस पर गौर फिक्र करने में तुम रातें गुज़ार रहे हो

और डर रहा हूं उस बात से की उस अम्र में आप को शर से ताल्लुक न हो जाय। उसके बाद उनके दरमियान तुर्श गुफ्तगू हुई और मेरे बाप को जो न कहना चाहिए था वह कह गुजरे। उन्होंने कहा – अम्र` इमामत में किसी वजह से इमाम हुसैन (स0) को इमाम हसन पर तरजीह हुई। (यानि क्या वजह कि इमामत का सिलसिला बजाय इमाम हसन (स0) के इमाम हुसैन (स0) की औलाद की तरफ मुन्तकिल हुआ। इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – अल्लाह की रहमत नाजिल हो इमाम हसन (स0) और इमाम हुसैन (स0) अलैहिस्सलाम पर)।

और तुमने यह बात क्यों कही – उन्होंने कहा इसलिए कि अजरूवे इन्साफ इमामत बड़े भाई की औलाद में चलनी चाहिए थी इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – खुदा वन्दे आलम ने वही की हजरते रसूले खुदा को।

खुदा ने अपने रसूल (स0) की तरफ जो चाहा – वही की। उसकी मखलूक में और किसी को कोई हुक्म नहीं दिया गया और हजरत मोहम्मद मुस्तफा (स0) ने अली अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया – जैसा मुनासिब जानो, उन्होंने वहीं किया जो उनको हुक्म दिया गया था और हम उस बारे में वहीं कहते है जो रसूले खुदा ने कहा। रसूल (स0) की अजमत शान और हजरत अली की तसदीक के लिहाज से (यानि हम हुक्मे रसूल और अमले अली के खिलाफ इस मामले में कुछ नहीं कह सकते। अगर अम्र इमामते हुसैन बलहाज बुजुर्गी सिन होता या अम्रे वसीयत दोनो भाइयों की औलाद मे मुन्तकिल करने के लिए होता तो इमाम हुसैन जरूर ऐसा करते और हमारे नजदीक इमाम हुसैन उस तोहमत से बरी

है कि वह बेहुक्मे खुदा – इमामत को अपने लिए मख़सूस कर लेते। उन्होंने ऐसे अम्र से रूगरदानी और दुनिया से रूखसत हुये और उनके हुक्म दिया गया था वह उन्होंने पूरा किया। वह आपके जद और अम थे अज तरफ मादरेजद और अज तरफ पदरेअम)।

अगर तुम उनके लिए कलमा खैर कहो तो तुम्हारे लिए यही जेबा है और अगर उनकी शान में हिर्ज़ा सरायी की तो अल्लाह तुम्हें बख्शे ऐ मेरे इब्ने अम। मेरी इताअत करो। मेरा कलाम सुनो, पस क़सम है उस जात की जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। मैं कोताही नहीं कर रहा हूं नसीहत करने में और हिर्स है तुम्हारी इसलाह की। लेकिन मैं क्या करूं तुमको ऐसा करते नहीं देख पा रहा हूं। देखिये हुक्म खुदा का कोई रद्द करने वाला नहीं। मेरे बाप यह सुनकर खुश हुये इमाम ने कहा खुदा की कसम आप जानते है कि आप का बेटा मोहम्मद, (जिसको आप इमाम बनाना चाहते है) भैंगा अक्शफ व अख़जर है वह अश्जा के बन्द पर पानी के बहाव की जगह कत्ल किया जायेगा।

## तौजीह

अक्शफ से मुराद यह है कि सर के अगले हिस्से पर बाल न हो। ऐसे को अरब वाले मनहूस जानते थे। अख़ज़र से मुराद सब्ज चश्म, सदह से मुराद वह बन्द है जो दरिया पर पत्थरों से पानी की रोक के लिए बना दिया जाय। अशजा पदर कबीले का नाम जिससे वह बन्द मनसूब था मीले पानी के बहाव की जगह।

मेरे बाप ने कहा – वल्लाह वह ऐसा नहीं है खुदा की कसम खुदा उसके दुश्मनों से बदला लेगा दिन का दिन में

साअत का साअत में और साल का साल में और अल्लाह खड़ा करेगा लोगों को तमाम औलादे अबू तालिब के खून का बदला लेने के लिए (उसके बाद अब्दुल्लाह ने अखतल शायर का एक शेर पढ़ा जिसका मतन में जिक्र नहीं)।

इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – खुदा तुम्हारे गुनाह बख्शे तुमने मुझे यह शेर पढ़ कर डराया। हालांकि उसका मजमून हमारे साहब यानि तुम्हीं से मुतालिक है (शेर का मजमून यह है कि बकरी को भेड़िये के सामने जाने से रोको)।

तुम्हारे नफ्स में खलक्तो में ऐसी आरजू को पैदा करके तुमको गुमराही में डाल दिया है और तुम्हारे बेटे की हुकूमत मदीने से आगे न बढेगी और उसकी पूरी जद्दोजेहद के बाद तायफ (कोहे ओहद) से आगे न जायेगी जिस अम्र से चारेहकार नहीं वह तो होकर ही रहेगा। पस अल्लाह से डरो और अपने नफ्स पर रहम करो और अपने बाप की औलाद पर तरस खाओ।

वल्लाह मैं तुम्हारे बेटे को बच्चे कबिक से ज्यादा शूम व मनहूस जानता हूं। असलाबे आबा ने अरहामे निसा में उससे ज्यादा मनहूस नुत्फा नहीं डाला। वल्लाह वो मकतूल होगा। सदह अशजअ में पानी के बहाव की जगह, वल्लाह गोया जमीन पर पिछड़ा हुआ है उसका लिबास उतार लिया गया है और उसके दोनो पैरों के दरमियान ईंट रख दी गई है (ताकि शर्मगाह खुली रहे)।

और उस लड़के को जो मेरी गुफ्तगू सुन रहा है कोई फायदा न पहुंचेगा मूसा बिन अब्दुल्लाह ने कहा – हजरत का यह इशारा मेरी तरफ था। फिर फ़रमाया यह खुरूज करेगा अपने भाई मोहम्मद के साथ और शिकस्त खायेगा

उसका साथी (मोहम्मद) कत्ल किया जायेगा। फिर यह खुरूज करेगा दूसरे झण्डे के साथ (इब्राहिम बिन अब्दुल्लाह के साथ)।

पस उनका सरदार कत्ल किया जायेगा और उसका लश्कर तितर बितर हो जायेगा पस मेरी बात मानो और बनी अब्बास से ईमान तलब करो और यह जानते है कि यह बेल मुण्ढे चढ़ने वाली नहीं, और आपको जानना चाहिए कि आपका बेटा जो अहवल (भैंगा) सब्जचश्म और अकसफ है यह सदह अशजअ मे उसके पानी के बहाव की जगह कत्ल कर दिया जायेगा।

मूसा ने कहा यह सुनकर मेरे बाप यह कहते हुये उठ खड़े हुए खुदा तुम्हारी मदद से हमें बेपरवाह बना देगा और तुम जरूर बतौर खुद हमारी तरफ लौटोगे या खुदा तुमको और तुम्हारे गैर को बेअख्तियार इस तरफ लायेगा तुम ने यह तरीका अख्तियार करके अपने गैर की इमदाद को हमसे रोका है और यह तुम्हारा इन्कार उनके लिए रूक जाने का एक जरिया बन जायेगा।

फ़रमाया – इमाम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह जानता है कि मेरा इरादा महज तुमको नसीहत व हिदायत करने का था और हमारा फ़र्ज़ तो कोशिश ही करना है (आगे तुम जानो और तुम्हारा काम) यह सुनकर मेरे बाप गुस्से में उठे और अपनी रिदा का दामन तैश में जोर से झटका। इमाम अलैहिस्सलाम उनके करीब आये और फ़रमाया – मैंने तुम्हारे चचा (इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैह सलाम) और मां की तरफ से तुम्हारे मामू से यह फिक़रा सुना है कि तुम और तुम्हारे बाप की औलाद अनकरीब कत्ल कर दी जायेगी।

अगर तुम मेरी बात मान लो और उस बला को हुस्ने

तकदीर से टाल सकते हो तो टाल दो, कसम उस जात की जिस के सिवा कोई माबूद नहीं वह जाहिर व बातिन का जानने वाला रहमान व रहीम और अपनी मखलूक से आला मर्तबा वाला है मैं दोस्त रखता हूं उस बात को कि फिदा करूं तुम पर अपना वह बेटा जो मेरे नजदीक और मेरे अहले बैत के नजदीक ज्यादा महबूब है (मुराद इस्माईल) तुम मेरी बराबरी किसी से नहीं कर सकते। पस यह खयाल मत करो कि मैं तुम्हें धोखा दे रहा हूं और खिलाफ़े हक बात कर रहा हूं।

मेरे बाप वहां से गुस्से में भरे हुये और अफसोस करते हुये उठ आये उस वाकये को बीस रोजे या कुछ कमोबेश गुजरे होगे कि अबू जाफर मंसूर बादशाह के लोग आये और उन्होंने गिरफ्तार किया मेरे बाप को और मेरे चचो में सुलेमान बिन हसन, हसन बिन हसन, इब्राहिम बिन हसन, दाऊद बिन हसन, अली बिन हसन, सुलेमान बिन दाऊद बिन हसन और अली बिन इब्राहिम बिन हसन, हसन बिन जाफर इब्ने हसन, तबा तबाई इब्राहिम बिन इस्माईल बिन हसन और अब्दुल्लाह बिन दाऊद को और उन्होंने उन सब को जंजीरों से जकड़ लिया और ऐसी महमिलों में बिठाया जिनमें कोई गद्दा न था। खाली लकड़ियां थीं वे उन्हें गिरफ्तार करके मदीना के मकामे मुसल्ला तक ले आये ताकि लोग उनकी शमातत करें।

पस लोगों ने अपने को उनसे बचाया और उनके हाल पर लोगों के दिल कुढ रहे थे फिर वहां से चलकर मस्जिदे नबवी के उस दरवाजे पर आये जिस को बाबे जिबरईल कहते है इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम इस तरह तशरीफ लाये कि आप (स0) कि रदा का बेश्तर हिस्सा

जमीन पर था फिर बाब मस्जिद से आप अन्दूररूने मस्जिद आये और जो लोग वहाँ जमा थे उनसे फ़रमाया – तीन बार – ऐ गिरोह अन्सार! कि तुमने रसूल अल्लाह (स0) से इसका अहद किया था। इस पर बैअत की थी (तुमने रसूल (स0) कि बैत तोड़कर अईम्मा जलालत की बैअत की और उनके जुल्मों सितम जो औलाद रसूल (स0) पर हो रहे है उनको खामोशी से देख रहे हो) खुदा तुम पर लानत करे। वल्लाह मैं उनकी इज्जत का चाहने वाला था मगर उनके न मानने से मैं मगलूब हो गया यह फरमा कर हजरत वहां से चले, दरआंहालेकि एक जूता आप रसूल (स0) के हाथ में था (और एक पैर में यानि इन्तेहाई इज़्तेराबी हालत में)।

एक जूते में अपना पैर दाखिल किया और दूसरा हाथ में था और आप की रिदा का बेश्तर हिस्सा जमीन पर खिच रहा था। फिर हजरत अपने घर पर आये और उस गम में बीस रोज तक मुब्तिलाए बुखार रहे और रात दिन गर ये फरमाते थे यहाँ तक कि हमें आपकी मौत का खौफ होने लगा। यह खदीजा का बयान था।

18 : जाफरी का बयान है मैंने मूसा बिन अब्दुल्लाह इब्नुल हसन से सुना कि जब वो अपने खानदान के साथ ऊँटों पर थे और इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम मस्जिद से निकल कर उस ऊँट की तरफ बढ़े जिस पर अब्दुल्लाह बिन हसन सवार थे चाहते थे कि उनसे कुछ बात करें। उनको सख्ती से रोका गया और एक सिपाही ने यह कह कर हटा दिया कि इनसे अलग रहो। अल्लाह बहुत जल्द तुमको और तुम्हारे अलावा दूसरों को गिरफ्तार करेगा जो खलीफा के मुखालिफ है उसके बाद वह लोग उन सब कैदियों को

लेकर कूचों में दाखिल हुए इमाम अलैहिस्सलाम लौट आये अभी जन्नतुलबकीअ तक न पहुंचे थे कि वो सिपाही बला में मुबतिला हुआ। ऊँट ने उसको कुचल दिया। वह वहीं मर कर रह गया और वह लोग कैदियों को लेकर बगदाद की तरफ चल दिए।

कुछ मुद्दत हम मुन्तजिरे अहवाल रहे फिर मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह (जो कैदियों में शामिल न थे) आये और उन्होंने खबर दी कि उनके बाप और चचा कत्ल कर दिए गए उनको मन्सूर बादशाह ने कत्ल किया। सिवाय हसन बिन जाफर – तबा तबाई व अली बिन इब्राहिम व सुलेमान बिन दाऊद व अब्दुल्लाह बिन दाऊद के उसके बाद मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने जाहिर होकर लोगों को अपनी बैअत की दावत दी। मूसा का बयान है कि अव्वल बैअत करने वालों में मैं तीन में का तीसरा था और लोगों ने पक्की बैअत न की, किसी कुरैशी ने इख्तिलाफ किया न अन्सारी ने, और न अरबी ने और मशविरा दिया मोहम्मद को ईसा बिन जैद बिन अली बिल हुसैन ने और वह उनके लश्कर के अफसर थे।

उन्होंने मशविरा दिया कि आप लोगों को अपने रिश्तेदारों के पास बैअत के लिए भेजे, अगर आपने नरमी से काम लिया तो वह क़ुबूल न करेंगे लिहाजा सख्ती से काम लीजिए। और उनका मामला मेरे सुपुर्द कीजिए। मोहम्मद ने कहा – मैंने अख्तियार दिया जो चाहो करो। उसने कहा – पहले उनके सरदार और बुजुर्ग यानि इमाम जाफर सादिक के पास भेजिये। जब आप उन पर सख्ती करेंगे तो लोग समझ जायेगे कि तुम उनके साथ वैसा ही बरताव करोगे जैसा अबू अब्दिुल्लाह (इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम के साथ किया है)।

मूसा कहता है कि थोड़ी देर के बाद मूसा व ईसा,

इमाम अलैहिस्सलाम के पास आये और कहने लगे – आप मोहम्मद की बैअत कर लीजिए, जान की सलामती इसी में है। आपने मोहम्मद को मुखातिब करके कहा – क्या तुमने हजरत रसूले खुदा के बाद और नबुवत पैदा कर ली। मोहम्मद ने कहा नहीं, मगर आपकी बैअत करनी है ताकि आपकी जान महफूज रहे और आपकी औलाद भी और आपको लड़ने की तकलीफ न दी जायेगी।

हजरत ने फ़रमाया – न मुझे किसी से लड़ना है और न मुझमें कुव्वते जंग है। जो कुछ मुझे कहना था तुम्हारे बाप से कह चुका हूं मैंने उस मुसीबत से जो उनको घेरे हुए थी डराया था। मगर मुक़द्दरात के सामने डराना क्या काम देता है मेरे भतीजे! तुम उस काम के लिए जवानों को लो और बूढ़ों को छोड़ दो। मोहम्मद ने कहा बेलहाज सिन मेरे और आपके दरमियान कोई फक्र नहीं, हजरत ने फ़रमाया – मैं तुमसे न झगड़ना चाहता हूं और न मुकाबले में आना चाहता हूं और न जिस काम के लिए तुम उठे हो। उसमें पेशकदमी करना चाहता हूं, मोहम्मद ने कहा – आपको अब बगैर बैअत के छुटकारा नहीं। हजरत ने फ़रमाया न मेरी तुमसे कोई ख्वाहिश है और न लड़ने का इरादा है। बल्कि मैं उस शहर से निकल कर जंग में जाने का इरादा रखता हूं लेकिन यह अम्र मुझे रोक रहा है और मेरे ऊपर यहां से जाना गरां भी है।

मेरे अहलो अयाल बार बार मुझसे ब मिन्नत वज़ारी कह चुके हैं कि बराये कस्बे मआश (जराअत) यहां से बाहर निकलूं मगर मेरा जोफ माने है खुदा के लिए मुझपर रहम करो और मुझसे रुगरदानी करो ताकि हम तुम्हारी बेअदबी से तकलीफ न उठायें।

मोहम्मद ने कहा – ऐ अबू अब्दिल्लाह वल्लाह मन्सूर दवानेक़ी मर गया (अब जमाना मेरी हुकूमत का है) फ़रमाया – अगर बिल्फ़र्ज़ वह मर गया है तो तुम मेरे साथ क्या करोगे उन्होंने कहा – मैं तुम्हारी शान बढ़ाना चाहता हूँ फ़रमाया जो तुम इरादा रखते हो वह पूरा न होगा खुदा की कसम मन्सूरे दवानेक़ी नहीं मरा उसकी मौत नींद की सी मौंत है यानि ये खबर गलत है।

मोहम्मद ने कहा वल्लाह आपको मेरी बैअत करना होगी चाहे बाखुशी, या बकराहत, करने में आपकी तारीफ़ न होगी पस हजरत ने सख्ती से इन्कार किया। मोहम्मद ने कैद करने का हुक्म दिया। ईसा बिन जैद ने कहा – कैदखाना खराब है अभी उसमें ताला नहीं लग सकता मुझे डर है कि यह कैदखाने से भाग न जाये यह सुनकर इमाम अलैहिस्सलाम हंसे और फ़रमाया – लाहौल वलाकुव्वत इलाबिल्ला हिल्अलियुलअज़ीम क्या तुम मुझे कैद करना ही चाहते हो। उसने कहा है –कसम है उस जात की जिसने मोहम्मद को नबुवत देकर हमें इज्जत बख्शी, मैं तुमको जरूर कैद करूंगा और तुमपर सख्ती रवा रखूंगा। ईसा बिन जैद ने कहा – उनको मुख्बार में कैद करो। इस वक्त वही ज्यादा मजबूत घर है इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – मैं जो कुछ कहूंगा उसकी तसदीक हो जायेगी। ईसा बिन जैद ने कहा – अगर अब आप कुछ बोले तो मैं आपका मुंह तोड़ दूंगा। हजरत ने फ़रमाया – ऐ शोम कबूद चश्म में गोया देख रहा हूं कि तू अपने को छिपाने के लिए (होने वाली जंग में) सुराख ढूढं रहा है और तू उन लोगो में नहीं कि दो लश्करों के टकराते वक्त तेरी ज़िरायत काबिले जिक्र हो। तू ऐसा बुजदिल है कि कोई

ताली बजाये तो तू तेज रफ्तार ऊँट की तरह भाग खड़ा हो। मोहम्मद ने आपके इन्कार को बहुत बुरा जाना।

और उसने हज़रत को कैद कर दिया और हुक्म दिया कि इन पर हर तरह की सख्ती रवा रखी जाये। हजरत ने फ़रमाया – खुदा की कसम गोया मैं उस वक्त को देख रहा हूं कि तू सदह अश्जा से निकल कर उसके रूदखाने में आ रहा है और तुझ पर एक सवार ने हमला किया है जिसके हाथ में एक नेज़ा है आधा सफेद और आधा सियाह वह सफेद पेशानी वाले कस्त घोड़े पर सवार होगा वह तेरे ऊपर नेजा मारेगा मगर उससे तुझे ज़रर न पहुंचेगा तू उसके घोडे के दिमाग पर नेजा मारेगा और तू उसको गिरा देगा। फिर हमला करेगा तुझपर एक दूसरा आदमी जो बरामद होगा। कूच–ए–आलेअम्मार व यलीन (नाम कबीला) से उसके डूबे हुये गेसू होंगे जो उसके खुद के नीचे से जाहिर होगे और मूछों के बाल घने होगे वहीं तेरा क़ातिल होगा खुदा उसकी बोसीदा हड्डियों पर रहम न करें (उसका नाम हमीद बिन कहता था)।

मोहम्मद ने कहा – ऐ अबू अब्दिल्लाह आपने यह हिसाब लगाने में गलती की है (यानि अगर कुरान से इस्तिबात किया है तो खता की है)। उसके बाद सराकी बिन सल्ख अमहूत ने हजरत की पुश्त पर हाथ मारा और हजरत को कैदखाने में बन्द कर दिया और उनका और उनके रिश्तेदारों का जिन्होंने मोहम्मद के साथ खुरूज न किया था। तमाम माल जब्त कर लिया। उसके बाद इस्माईल बिन अब्दुल्लाह बिन जाफर अबी तालिब के साथ पहुंचे। यह मर्देबुजुर्ग और जईफ थे एक आंख उनकी जाती रही थी और पैरों की

ताकत भी उनकी ज़ायल हो गयी थी लोगों के सहारे चलते थे उनसे बैत तलब की गयी उन्होंने कहा बिरादर ज़ादे मैं तो बूढ़ा हूं, कमजोर हूं, तुम्हारी नेकी और मदद का मोहताज हूं।

उसने कहा – तुमको बैअत जरूर करना होगी उन्होंने कहा मेरी बैअत से तुमको क्या फायदा होगा। मैं तुम्हारे लश्कर के एक कारआमद सिपाही की जगह को तंग बना दूंगा। यानि बेहतर यह है कि मेरी बजाय किसी कारआमद सिपाही को रखो।

उसने कहा बगैर बैअत तुम्हारे लिए चारेहकार नहीं और उसने सख्त कलामी की। इस्माईल ने कहा अच्छा तो जाफर बिन मोहम्मद अलैहिस्सलाम को बुलाओ ताकि हम सब मिलकर तुम्हारी बैत करें। पस इमाम सलाम को बुलाया। इस्माईल ने उनसे कहा – मैं आप पर फिदा हूं अगर मुनासिब हो तो आप उस शख्स का अन्जामे कार बयान कर दे शायद ये हमसे बाज रहे फ़रमाया – मैंने पक्का इरादा कर लिया है कि उस शख्स से कलाम न करूंगा। मेरे बारे में जो उसका दिल चाहे करें।

इस्माईल ने कहा – मैं आपको खुदा की कसम देकर पूछता हूं कि क्या आपको याद है कि मैं आपके पदरेबुर्जुगवार मोहम्मद बिन अली की खिदमत में एक रोज दो कपड़े जर्द रंग के पहने हुए आया था। हजरत ने देर तक मुझको देखा और रोने लगे। मैंने कहा आप क्यों रो रहे है फ़रमाया – तुम्हारा मुस्तकबिल खयाल करके रो रहा हूं तुम बुढ़ापे में अबस कत्ल किए जाओगे तुम्हारे खून की शिकायत तक न की जा सकेगी।

मैंने कहा ऐसा कब होगा – फ़रमाया जब तुमको

बातिल की तरफ बुलाया जायेगा और तुम उसे इन्कार कर दोगे और उस वक्त तुम देखोगे भैंगे और कौम के मनहूस तरीन इन्सान को औलाद हसन (स0) से कि वह मिम्बरे रसूल (स0) पर चढ़ेगा और अपनी इमामत की तरफ लोगों को बुलायेगा और अपना नाम रखेगा अपने असली नाम के अलावा (यानि लोगों में अपना नाम नफ्से जकिया रखेगा)।

पस ताजा करना उस रोज अपने ईमान को और लिखना अपनी वसीयत – पस तुम या तो उसी रोज कत्ल किए जाओगे या दूसरे रोज इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – हाँ ये बात मुझे याद है कसम है रब्बे काबा की ये माह रमजान के बहुत कम रोजे रख पाएगा पस मैं तुमको खुदा के सुपुर्द करता हूं ऐ अबुल हसन और दुआ करता हूं कि तुम्हारी मुसीबत में सब्र करने पर खुदा हमको बड़ा अज्र दे।

और आपकी औलाद को आपका अच्छा जांनशीन बनाये फिर इन्ना लिल्लाहे वइन्ना इलैहे राजेऊन, फ़रमाया उसके बाद इस्माईल को वहां से उठा ले गये और इमाम अलैहिस्सलाम को कैदखाने में ले गये। मूसा बिन अब्दुल्लाह कहता है कि एक रात गुजरी थी कि इस्माईल के भतीजे माविया बिन अब्दुल्लाह बिन जाफर की औलाद आयी और उन्होंने इस्माईल को लात, घूंसों से इतना मारा कि वह मर गये। फिर मोहम्मद ने किसी को इमाम अलैहिस्सलाम के पास भेजा। उसने उनको रिहा कर दिया।

उसके बाद चन्द रोज तवक़्कुफ रहा यहां तककि हमने माह रमजान का चांद देखा। नागाह हमें खबर मिली कि ईसा बिन मूसा (मन्सूर अब्बासी के चचा) ने चढ़ाई की है यह सुनकर मोहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह ने अपने लश्कर के अगले

हिस्से का सरदार यजीद बिन माविया बिन अब्दुल्लाह बिन जाफर को मोअय्यन किया। और ईसा बिन मूसा ने अपने लश्कर के सरदार बनाये औलाद हसन बिन जैद इब्ने हसन व कासिम व मोहम्मद बिन जैद व अली बिन इब्राहिम को जो हसन बिन जैद के बेटे थे यजीद बिन माविया ने शिकस्त खायी और ईसा बिन मूसा मदीने आया और मदीने में किश्त व खून हुआ। ईसा को ज़बाब पर आकर ठहरा। मूसा बिन अब्दुल्लाह कहते है पस अब्बासी लश्कर के स्थियाहपोश सिपाही हमारे पीछे से आये और मोहम्मद ने मए अपने असहाब के खुरूंज किया। बाजार तक पहुंचा और अपने लश्कर को वहां पहुंचा कर अपने घर की तरफ़ लौटा। फिर आया और मस्जिद तुर्ब (मोली) फरोशा तक पहुंचा वहां देखा न कोई स्थियाहपोश (अब्बासी सिपाही) और न सफेदपोश (मोहम्मद का सिपाही) वह आगे बढ़कर कबीला फजारा घाटी तक पहुंचा और नीचे आया। जहां कबीला हज़ील था। वहां से अश्जा के बन्द पर आया। नागाह हस्ब पेशीनगोई इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम, एक सवार उसके पीछे से आया हजील के कूचे से निकल कर और मोहम्मद के नेजा मारा। लेकिन यह वार कारगर न हुआ। फिर मोहम्मद ने हमला किया और अपनी तलवार उसके घोड़े के सिर पर मारी, सवार ही ने नेजा मारा। वह मोहम्मद की जिरह में रह गया और कोई न नुकसान न पहुंचा। वह सवार चूंकि घोड़े के जख्मी होने से पियादा हो गया था लिहाजा मोहम्मद ने उस पर झुककर वार किया और उसको आजिज कर दिया।

अभी मोहम्मद मुतवज्जे था उस सवार की तरफ की हमीद बिन कत्बा ने कूचा अम्मार से निकल कर मोहम्मद पर

हमला किया और ऐसा नेजा मारा कि उसकी सिनान बदन मोहम्मद में दर आयी और नेजा टूट गया। मोहम्मद ने हमीद पर हमला किया। हमीद ने टूटू नेजे की तरफ जड़ से हमला किया और मोहम्मद को जमीन पर गिरा कर मारा और बेबस करके कत्ल कर दिया और सर काट लिया और उसके बाद अब्बासी लश्कर हर तरफ से सिमट आया और मदीना को घेर लिया बहुत से लोग वहां से जिला वतन हो कर और शहरों को चले गये।

मूसा बिन अब्दुल्लाह का बयान है कि मैं वहां से अपने भाई इब्राहिम बिन अब्दुल्लाह के पास पहुंचा। वहां मैंने ईसा बिन जैद को सुराख में छिपा हुआ पाया। मैंने इब्राहीम को मोहम्मद की गलत तदबीर से आगाह किया (कि वह अपने लश्कर को छोड़ कर तन्हा निकल खड़ा हुआ) फिर हमने इब्राहीम के साथ खुरूज किया। वह भी कत्ल कर दिए गए। खुदा उस पर रहम करे।

फिर अपने होंठ फटे भाई अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद के साथ सिंध में चला गया बहाले परेशान उस हाल में लौटा कि शहरों की रिहाईश मेरे ऊपर तंग थी बादशाह का खौफ मुझपर गालिब था हजरत इमाम जाफ़र सादिक अलैह सलाम का कौल मुझे याद आया। मैं खलीफा के पास गया जबकि वह हज के अयाम में काबे के दीवार के साये में खुतबा सुना रहा था मेरी उसे इत्तिला न थी मैं मिमबर के नीचे खड़ा हुआ और मैंने कहा अगर मुझे जान की अमान दी जाये तो मैं एक अच्छी बात आपसे बयान करूं। उसने कहा अमान है। बताओ वह क्या है मैंने कहा मैं आपको मूसा बिन अब्दुल्लाह बिन हसन का पता बताता हूं। उसने कहा अच्छा तेरे लिए

अमान है मैंने कहा पक्का वादा कीजिए। ग़रज़ मैंने उससे अहद लिया। फिर कहा – मूसा बिन अब्दुल्लाह मैं ही हूं।

उसने कहा ऐसा है तो तेरी इज्जत की जायेगी और इनाम दिया जायेगा मैंने कहा आप अपने खानदान में से किसी के हवाले मुझे कर दीजिए ताकि वह मेरे हालात से आपको इत्तिला देता रहे उसने कहा जिसकी तरफ चाहता हो बयान कर। मैंने अब्बास बिन मोहम्मद आपके चचा, अब्बास ने कहा मुझे तेरी जरूरत नहीं, मैंने कहा मुझे तो हैं अमीरूल मोमिनीन के हक का वास्ता आप कुबूल कर लें पस उसने खुश व नाखुश कुबूल कर लिया।

फिर मेहंदी ने कहा तुम्हें यहां पहचानता कौन है और उसके पास हमारे असहाब या उनके अकसर लोग मौजूद थे मैंने कहा यह हसन बिन जैद मुझे पहचानते है। उन्होंने कहा बेशक ऐ अमीरूल मोमिनीन जितनी मुद्दत यह हिन्दुस्तान में रहे गोया हमसे ग़ायब नहीं थे। मैंने मेंहदी से कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन – इस मुकाम की खबर मुझे उस शख्स के बाप ने दी थी और मैंने इशारा किया मूसा बिन जाफ़र[अ0] की तरफ, मूसा बिन अब्दुल्लाह ने कहा – इस वक्त मैंने हस्ब मसलेहत इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम पर एक झूठ बोला। मैंने मेंहदी से कहा कि उन्होंने तुमको सलाम कहा है और यह फ़रमाया वह इमाम (मेंहदी) आदिल और सखी है।

पस मेंहदी ने हुक्म दिया। मूसा बिन जाफर के लिए पांच हजार दीनार के लिए उसमें से इमाम मूसा काजिम (स0) ने मुझे दो हजार दीनार दिये और मेंहदी ने इमाम मूसा काजिम के असहाब को भी रकूम दे और मुझे भी और मुझे ज्यादा दिया। इस तरह कि उसने हुक्म दिया कि जहां कही

औलाद इमाम मोहम्मद बाकर का जिक्र हो तो कहो – खुदा की रहमत हो उन पर और मलाईका और हामेलाने अर्श और किरामे कातिबीन का दुरूद हो उनपर बिलखुसूस इमाम जाफर पर तक सबसे बेहतर, और इमाम मूसा बिन जाफर ने बेहतरीन बदला दिया। अल्लाह के बाद मैं उनका गुलाम हूं।

इब्राहीम जाफ़री से मरवी है कि बयान किया मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुफज्जिल, गुलाम अब्दुल्लाह बिन जाफर बिन अबीतालिब[अ०] ने कि जब खुरूज किया हुसैन बिन अली[अ०] मकतूल फ़तह ने तो वह मदीना आये और इमाम मूसा काजिम आलैहिस्सलाम को बुलाकर अपनी बैअत की दावत दी आपने फ़रमाया – ऐ मेरे चचा जात भाई मुझे इस अम्र की तकलीफ न दो जिसकी तकलीफ तुम्हारे चचा जात (मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह) ने तुम्हारे चचा इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को दी थी ऐसा न हो कि मेरी जबान से ऐसी बात निकले जिसे मैं कहना नहीं चाहता जिस तरह इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम को वो कहना पड़ा था जिसे वह नहीं चाहते थे। हुसैन ने कहा – मैंने तो एक अम्र आपके सामने पेश किया था अगर आप चाहे मंजूर कर ले, चाहे रद्द कर दे मैं कोई तर्अरूज़ न करूंगा। अल्लाह मेरा मददगार है फिर हजरत को रूखसत किया। वक्ते रूखसत आपने फ़रमाया – ऐ भाई तुम कत्ल कर दिये जाओगे पस खूब जम कर लड़ो (जितने दुश्मन मारे जायें अच्छा है) यह लोग फासिक है ईमान को जाहिर करते है और शिर्क को छिपाते है इन्ना लिल्लाहे वइन्ना इलैहे राजिऊन, मैं तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द करता हूं कि तुम हमारे खानदान के हो। उसके बाद हुसैन ने खुरूज किया और फिर जो कुछ हुआ। वो हुआ जैसा

इमाम ने फ़रमाया था – सबके सब कत्ल हो गये।

## तौजीह

हुसैन बिन अली इब्नुल हसन इब्नुल हसन बिन अबी तालिब (स0) ने जीकादा 169 हिजरी में बजमानए खिलाफत हादी बिन मेंहदी अब्बासी मक्का में खुरूज किया और वहां से मदीना आये। जैद यह फिरके से ताल्लुक रखते थे। अलवी सादात कि एक जमात के साथ मक्के की तरफ बढ़े जब मक्के के नजदीक मुकाम फख पर पहुंचे तो अब्बासी लश्कर मुकाबिल आया। उन्होंने ईमान का पैगाम भेजा। ताकि बाद में हीले से कत्ल कर दे हुसैन ने कहा हमको तुम्हारी अमान दरकार नहीं। हम डटकर लड़ेगे चुनाचे उन्होंने अपने खानदान वालों और नासिरों के साथ सख्त मुकाबला किया और आखिर शिकस्त हुयी, हुसैन का सर काट कर हादी के पास ले गये उस गिरोह के मकतूल तीन दिन तक बेदफन पड़े रहे। सहरायी दरिन्दों ने उनका गोश्त खाया। किताब मोजुमल बलदान में इमाम मोहम्मद तकी अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि आप ने फ़रमाया कि वाकेए कर्बला के बाद वाफिख से ज्यादा दर्दनाक वाकेआ कोई न था।

19 : अब्दुल्लाह बिन हसन ने एक खत में इमाम मूसा काजिम अलैहिस्सलाम को लिखा, जिस तरह मैं अपने नफ्स को अल्लाह से डरने की हिदायत करता हूं तुमको भी करता हूं अल्लाह की यह हिदायत जिस तरह अव्वलीन के लिए थी उसी तरह आखिरीन के लिए भी है मुझे एक दीनदार मोअतबर आदमी ने खबर दी है कि तुम अपनी इमामत के इजहार का शौक रखते हो बावजूद यह कि खुदा ने अपनी मदद को तुमसे रोककर तुम्हें जलील बना दिया है और तुमने

रूख न डाला मेरी इमामत की उम्मत में जो मुआफिक रजाऐ इलाही है तुमने हमारी इमामत के बारे में पोशीदा तौर पर इस तरह मुखालिफत की है जिस तरह तुम्हारे बाप ने की थी तुमसे पहले और हमेशा से तुम उस चीज के दावेदार हो जो तुम्हारे लिए मुअय्यन नहीं। तुमने अपनी आरजूओं को उस चीज के लिए फैला रखा है जो अल्लाह तआला ने तुमको अता नहीं की। तुम ख्वाहिशों में फंसकर गुमराह हो गये और मैं तुमको उस चीज से डराता हूं जिससे खुद अल्लाह ने तुमको डराया है।

इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने जवाब में लिखा यह खत मूसा बिन जाफ़र[अ०] और अली रिज़ा[अ०] (बहैसियत वली अहद आपने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम को भी शामिल कर लिया) कि तरफ जो खुजूअ व खुशअ और इताअत में बराबर के शरीक है यहिया बिन अब्दुल्लाह के लिए है।

अम्मा बाद मैं तुमको और अपने नफ्स को अल्लाह से डराता हूं और तुमको आगाह करता हूं उस दर्दनाक अजाब, सख्त एताब और उसके पूरे पूरे इन्तेकाम से और तुझको और अपने नफ्स को वसीयत करता हूं अल्लाह के तकवा की जो जीनत कलाम है और उसकी नेमतों को कायम रखता है। तुम्हारा खत आया जिसमें तुमने लिखा है कि मैं मुदई इमामत हूं और मुझसे पहले मेरे बाप थे उसकी गवाहियां लोग देते है उनसे पूछो मुझसे तो दावा न सुना होगा (लोगो से पूछो कि वह हक की गवाही देते है या बातिल की।)

दुनिया के हिर्स और उसकी तलब ने लोगों के लिए आखिरत का कोई मकसद बाकी ही नहीं रखा। दुनिया ही के मकासिब व एजाज उनके लिए रह गये और तुमने लिखा है

कि मैं लोगों को रोक रहा हूं कि मेरी ख्वाहिश है उस चीज की तरफ जो तुम्हारे पास है (यानि माल व मताअ और हुकूमत) हालांकि तुम्हारे गिरोह में दाखिल होने से मुझे नहीं रोका, मगर उसी चीज ने जिसमे तुम फंसे हुए हो।

अगर मैं उस चीज की तरफ रागिब होता तो यह कमजोरी होती सुन्नत रसूल पर कायम रहने में न कि कमी बसीरत की वजह से बुरहाने इलाही में लेकिन खुदा ने इंसानो को मखलूत पैदा किया है जो मुखतलिफ है तबा है और बेगाना है आदाब में (अगर तुम मुद्दईये इमामत हो) तो तुम्हारे इल्म की जांच के लिए दो लफ्जों के माने पूछता हूं। एतरफ तुम्हारे बदन में है और सहलह इंसान में क्या चीज है।

(इन दो लफ्जों का जिक्र कुतुब नात में नहीं है। गालिबन एतरफ से मुराद वह निशान है जो आदमी के शाना या सिर या किसी जगह होता है जिसका रंग मुर्ग की कलगी की तरह सुर्ख होता है जो मनहूस समझा जाता है। सहलह वह निशान है जो आइमा हदिया के शाने पर होता है और मोहर की तरह उसका असर गोश्त के अन्दर तक होता है।)

इसका जवाब दो। फिर अम्रे मजकूर के बारे में लिखना है मैं तुमको खलीफा की मुखालिफत से बचाना चाहता हूं और तुमको रगबत दिलाता हूं उसकी नेकी हासिल करने और उसकी इताअत की तरफ और उससे अमान चाहो। कब्ल उसके कि तुम उसके पंजे में फंसो और हर तरफ से तुम्हारी गर्दन में रस्सी बंधे और हर तरफ से अपने लिए राहत तलब करो और कोई कोशिश न करो यहां तक कि खुदा तुम पर अपना एहसान करें और खलीफा को तुम पर मेहरबान करें। खुदा उसको बाकी रखें ताकि तुमको ईमान दे और रसूल

(स0) के रिश्तेदारों की हिफाजत करें। सलाम हो तालिब हिदायत पर वही कहती है अजाब उसके लिए जिसने तकजीब की और रूगरदानी की। जाफरी ने कहा – हजरत का यह खत हारून के हाथ लग गया उसने पढ़ कर कहा लोगों ने ख्वाहम ख्वाह मूसा बिन जाफर पर तोहमत लगायी।



## इक्यासिवां बाब

## कराहियतित्तौक़ीत नही इमाम महदी अ० के ज़हूर का वक्त मोअय्यन करने की

1 : अबू हमज़ा समाली से मरवी है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम को कहते सुना कि ऐ साबित (नाम अबू हमजा) अल्लाह ने हमारे और शियों के लिए फराखी और हुकूमत अइम्मा का जमाना 70 हिजरी को मुअय्यन किया था चूंकि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम शहीद कर दिये गये लिहाजा खुदा का गजब नाजिल हुआ मुशरेकीन अहले जमीन पर, पस ताखैर की उन मुशेरिकों की रूसवाई के लिए 140 हिजरी तक, पस हमने बयान किया तुमसे अपने असरार को, तुमने नश्र कर दिया हमारी बातों को और खोल दिया हमारे भेदों को, उसके बाद खुदा ने कोई वक्त मुअय्यन न किया और अल्लाह जो चाहता है मिटाता है और जो चाहता है बरकरार रखता है अबू हमजा ने कहा, मैंने यह हदीस इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम से बयान किया आपने फ़रमाया ऐसा ही है।

### तौजीह

अल्लामा मजलिसी अलैहिर्रहमा ने उस हदीस के

मुताल्लिक़ अपनी किताब मिरअतुल उकूल में जो तहकीक फरमायी है उसका खुलासा यह है यह हदीस सही है शेख़ ने किताबुल गैबत में और कमालुददीन सुदूक़ मे भी ऐसा ही है। रावी ने कहा – मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से कहा कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि 70 हिजरी तक का जमाना बला व मुसीबत का है उसके बाद सुकून व इत्मिनान होगा व हमारे शियों को) अबू हमजा ने कहा 70 हिजरी तो गुजर चुके। उसके बाद हमने इत्मिनान देखा नहीं। इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। ऐ साबितअल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने जुहूरे हक़ के लिए वक्त मुकर्रर किया था और अइम्मा अस्ना अशर में से किसी इमाम के अहद में बातिल पर उसका गलबा जाहिर किया था न कि 70 हिजरी में बारहवें इमाम का जहूर, यह अम्र अमूर बदाइया में से है और 70 हिजरी से इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का ताल्लुक इस तरह होगा जबकि मेरा वली जैद, वाकेए कर्बला की छेड़छाड़ की इब्तिदा क्यों न की इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने अपने हक की तलब का सिलसिला चन्द साल पहले शुरू कर दिया था और इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम की वली अहदी क़ा जिक्र 140 हिजरी में है यह मैं (अल्लाम मजलिसी) कहता हूं कि तवारीख मशहूरा के लिहाज से यह हिसाब ठीक नहीं बैठता। क्योंकि शहादत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम 61 हिजरी में हुई और इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम खुरासान तशरीफ ले गये 600 हिजरी हां इस सूरत में यह सही होगा जबकि उन सनीन का ताल्लुक इब्तिदाये तारीख बेअसत से हो न कि वक्ते हिजरत से, खुरूज हुसैन का दरहकीकत आगाज हुआ था माविया के मरने से चन्द साल पहले क्योंकि अहले कूफां

ने मरासिलत शुरू कर दी थी इस जमाने में दूसरे वाकेए के मुताल्लिक़ इशारा है खुरूजे जैद बिन अली के मुतालिक जो 122 हिजरी में हुआ। अगर इब्तिदाये बेअसत से लिया जाये तो यह जमाना 135 साल होता है और यह जमाना करीब होता है इस जमाने के जिसका जिक्र हदीस में है अगर वह फतह पा लेते तो यकीनन आले मोहम्मद (स0) को खुश करने का वादा पूरा करते और वाजेह बात यह है कि हदीस में यह इशारा है कि हुकूमत बनी उमय्या के खत्म होने या कमजोर पड़ जाने या अबू मुसलेह खुरासानी के गलबे की तरफ उसने चन्द खत इमाम जाफर सादिक (स0) को हजरत की बैअत करने के मुताल्लिक़ लिखे लेकिन बमसालेह कसीर आपने कुबूल न किया यह सबब हुआ अम्रे इमामत में उनकी तरफ रूजू करने का। लेकिन शियों से चूंकि कित्माने अम्र में कोताही हुई और इमाम की पूरी पैरवी न हो सकी, लिहाजा हुकूमत के मामले में ताख़ीरे वाकेअ हुई सफाह अब्बासी की बैअत 132 हिजरी में हुई और मरू में अबू मुस्लिम का दाखिला और खिलाफत की बैअत लेना 130 हिजरी में था और खुरूज अबू मुस्लिम खुरासां की तरफ 128 हिजरी में था और यह सब साल मुवाफिके हिजरत है अगर उनको बेअसत रसूल (स0) से लिया जाये तो हदीस में बयान करदा सिनीन से पूरी पूरी मुवाफिक़त हो जाती है।

और अगर सिने हिजरी नबी मुराद हो जैसा कि मशहूर है तो यह इशारा होगा मुख्तार के जहूर की तरफ क्योंकि उनका इरादा इस्तेसाल नबी अमिया का था और हक को अपने मरकज की तरफ लौटने का वह 67 हिजरी में कत्ल किये गये और दूसरा अम्र यानि 140 हिजरी वाला तो यह

इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम की इमामत के जुहूर के मुताल्लिक़ होगा और उनके शियों के मशरिक़ व मग़रिब में फैल जाने के मुताल्लिक़ और उनके अकारिब की एक जमाअत का खुरूज खुल्फाये अब्बासिया पर। उस खबर की सेहत के लिए ऐसे अमूर के जहूर को तलाश करने की जरूरत नहीं और न 70 हिजरी को शहादत हुसैन (स0) से मुवाफिक करने की क्योंकि यह बयान है तकदीरात मकनूना का जिनका ताल्लुक लौह महवद इस बात से यह और उन तग़य्युरात से जो इनमें वाकेअ हो अगरचे उनकी कैफियत व ज़ेहत मालूम न हो और क़हा गया है कि यह बयान बतौरे इस्तेआर–ए–तम्सीला हैं और मकसूद यह है कि अगर इल्मेइलाही में कत्ल हुसैन (स0) इस वक्त में न होता तो अम्र फराखी को 70 हिजरी में जाहिर करता और अगर इसके इल्म में शियों का असरारे खुफिया बयान करना न होता तो उसके दो चन्द मुद्दत में जाहिर करता। "बदा का मसला पहले बयान हो चुका है"।

**साहबे साफी शारेह उसूलेकाफी** :– इस हदीस की तौजीअ में लिखते है कि 70 हिजरी जमानए इमामत जैनुल आब्दीन अलैहिस्सलाम है उसी जमाने में अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने मक्के में दावा–ए–खिलाफत किया था और मरवान बिन अल हकम ने शाम में चूंकि बाहमी कश्मकश और हुकूमत को उन दिनों इसतिक़लाल ना था लिहाजा उस दौर में इमाम और उनके शियों को फिल्जुमला इत्मिनान नसीब हो गया था अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने खबर दी है उसकी, इस लिये लफ़्जे अरखा बालफ्ज़ नकरह जिक्र फ़रमाया है अबू हमजा के ख्याल में यह खबर जहूर इमाम मेंहदी थी। हालांकि

ऐसा न था और शहादत इमाम हुसैन (स0) 61 हिजरी में 70 हिजरी से पहले हुई, रहा 140 हिजरी का वाकेआ तो यह जमाना हुकूमते मन्सूरे दवानेकी का था और इब्तिदा में उनकी हुकूमत को इसतिक़लाल न था इमाम और उनके शियों को उस वक्त फराग़त और इत्मिनान हासिल हो गया था यह वह वक्त था कि मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने खुरूज किया था और मन्सूर अपना कसर बनाने के बाद और बगदाद को बसाने की फिक्र में था। 140 हिजरी कब्ल वफात इमाम मोहम्मद बाकर अलैहिस्सलाम और कब्ले वफात इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम क्योंकि इमाम जाफर सादिक (स0) की वफात 148 हिजरी में हुई है और यह हदीस कब्ल 140 हिजरी सादिर हुई, पस इस किस्म की अहादीस बतौर इस्तेआरे–ए–सीलिया हैं। मुराद यह है कि वक्ते जुहूर दौलते आले मोहम्मद मालूम नहीं, इस कदर मालूम है कि अगर कत्ल हुसैन न होता तो यह जुहूर 70 हिजरी में होता और अगर शिया असरार इमामत फाश न करते तो 140 हिजरी में होता। बहरहाल हदीस मजकूर का ताल्लुक शियों के फिलजुमला इत्मिनान हासिल करने से है न कि जुहूरे हज़रते हुज्जत से।

2 : रावी कहता है कि मैं इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाजिर था कि मोहर्रम आया और उसने कहा मुझे बताइये उस अम्र के मुताल्लिक जिसका हम इन्तेजार कर रहे है कि वह कब होगा। हजरत ने फ़रमाया – ऐ मोहर्रम जिन्होंने वक्त मुकर्रर किया वो झूठे है और हलाकत पायी जल्दी करने वालों ने, निजात पायी – कज़ा व कद्र तसलीम करने वालों ने।

3 : रावी ने इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम से

कायमे आले मोहम्मद के मुताल्लिक़ सवाल किया। हजरत ने फ़रमाया – झूठे है वक्त मुकर्रर करने वाले। हम अहले बैत कोई वक्त मुकर्रर नहीं करते।

4 : कायम आले मोहम्मद (स0) के मुताल्लिक़ हम अहले बैत (स0) कोई वक्त मुकर्रर नहीं करते।

5 : रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से कहा–क्या जहूर इमाम मेंहदी (स0) के लिए कोई वक्त है फ़रमाया झूठे है (बगैर वही अपनी तरफ से) वक्त मुकर्रर करने वाले झूठे है मूसा अलैहिस्सलाम जो अपने रब की तरफ से कोहे तूर पर जाने लगे और अपनी कौम से (अजरूवे जन) तीस दिन के बाद लौटने का वादा किया। जब खुदा ने तीस के ऊपर दस और बढ़ा दिये तो उनकी कौम ने कहा मूसा (स0) ने हमसे वादा खिलाफी की और फिर उन्होंने जो कुछ किया। (गऊ साला परस्त हो गये) पस जब हमसे कोई हदीस (अजरूवे जन) बयान कर दे और तुमसे कहे इन्शाअल्लाह ऐसा होगा और वह उसी तौर से हो जाये तो कहो अल्लाह ने सच कर दिखाया और अगर कोई बात कही और वैसा न हो तो कहो अल्लाह उसको रास्ते पर लाये (क्योंकि गैब नहीं जानता मगर अल्लाह) इस सूरत में तुमको दोहरा सवाब मिलेगा (अव्वल बसबब ईमान बिलगैब जो मुश्तरक है दोनों अक़वाल एक दूसरे अइम्मा हुदा की इमामत पर ईमान जो मुख्तस है कौले दोम से क्योंकि उस सूरत में भी खुदा के आलिमुल गैब होने पर एतिक़ाद होता है।)

## तौजीह

अल्लामा मजलिसी अलैहिर्रहमा मिरातुल उकूल में तहरीर फरमाते हैं कि अखबार दो किस्म के है एक की उसके

मुन्ज़ीरात में कोई तग़य्युर न हो पस तुमसे हमको कतई हुक्म मालूम हो जाता है उस इल्म की बिना पर उस खबर में तग़य्युर न होगा जैसे वह अखबार जो सफात बारी तआला से मुताल्लिक़ है या कायनात में जो हो चुका उनके मुताल्लिक़ या जैसे अल्लाह मोमिन को सवाब देता है दूसरे वह जिसमें तग़य्युर जायज है मसलेहत या शर्त के बदल जाने से जैसे आइन्दा हवादिस की खबरें हां अगर कोई खबर ऐसी मिल जाये जिससे मालूम हो कि खबर दी गई है वह नहीं बदलेगी तो उस वक्त जरूर हमको कतई हुक्म मालूम होगा उस तरह गुज़िश्ता हदीस से जो इश्काल पैदा होता है वह दफा हो गया मूसा अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ जो उस हदीस में जिक्र है तो सूरह बक़र में खुदाए तआला फरमाता है वइज़ वअदना मूसा अरबईना लैलतन और सूरह आराफ में है वअदना मूसा सलासीना लैलतन वअतमम्ना अल्अख़ मुफ़स्सेरीन का इसमें इख्तिलाफ है कहा गया है कि मूसा को जो खबर दी गई थी वह चालीस दिन की थी और खुदा ने तीस दिन कहे उस पर दस ज्यादा किए तो उसकी सूरत यह थी कि तीस दिन रोजे रखने और इबादत करने के लिए करार दिए थे और दस रोज थे मुनाजात के लिए ताकि तौरेत मिलें चुनांचे उन्ही दस दिन में तौरेत मिली और यह भी मुफस्सरीन ने लिखा है कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी कौम से कहा था मैं तीस दिन बाद आऊंगा ताकि वह ज्यादा परेशान न हो और आसानी से यह जमाना बगैर उनके गुजार दे उसके बाद दस और ज्यादा कर दिए उससे वादा खिलाफी तो नहीं हुई क्योंकि जो वादा तीस दिन का था वह तो पहले ही पूरा हो गया क्योंकि वह कौम से हस्ब वादा तीस दिन रह गये

इस किस्म की बहुत सारी खबरें हमारे यहां भी है और मुखालिफीन के यहां भी यह अखबार बदा यह कहलाते है जिनमें खुदा अपनी मसलेहत से तग़य्युर कर देता है मीक़ात की मियाद वाकियतन चालीस दिन ही थी मूसा अलैह सलाम ने जो पहले तीस दिन कहे बाद को दस और ज्यादा किए तो उससे मकसूद कौम का इम्तिहान था या ये कि खुदा ने वादा किया चालीस दिन का और हुक्म दिया मूसा अलैह सलाम को कि वह कौम से मुद्दत बयान करें जो लौहे महव इस बात में है पस इमाम अलैह सलाम ने यह दलील दी उस बात की कि जायज है यह कि हम कायम आल मोहम्मद (स0) की बाबत जो खबर देते है उसका ताल्लुक लौहे महव इस बात से होता है और इल्म इलाही में मशरूत बशरूत होता है पस अल्लाह भी सच्चा और अल्लाह की तरफ से खबर देने वाला भी सच्चा।

6 : हसन बिन अली बिन यकतीन ने अपने भाई हुसैन से उसने अपने बाप अली बिन यकतीन से रवायत की है कि मुझसे इमाम मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि हमारे शिया खुशहाल होंगे अपनी आरजूओं 200 हिजरी में यकतीन ने अपने बेटे अली बिन यकतीन से कहा यह क्या बात है कि हमसे कहा गया था कि अब्बासी सल्तनत फलां साल में होगी लेकिन जहूर मेंहदी इस साल न हुआ। हुसैन ने कहा जो कुछ हमसे तुमसे कहा गया। उसका मख़रिज अइम्माऐ हुदा एक ही है मगर यह कि तुम्हारा मामला मौजूद था पस तुमको हासिल हो गया और जैसा कहा गया था वैसा हुआ। हमारा मामला हाजिर न था। पस हम मशगूल रखे गये आरजुओं से)।

अगर हमसे और तुमसे कह दिया जाता कि यह अम्र

(जहूर इमाम मेंहदी स0) नहीं होगा। मगर 200 या 300 साल बाद तो लोगों के दिल सख्त हो जाते तो अवामुन्नास इस्लाम से पलट जाते इसलिए उन्होंने कहा कि जहूर जल्द होगा और उसका वक्त करीब है कि लोगों की तालीफ कल्ब हो और खुशी उनसे करीब रहें।

## तौजीह

इस हदीस से यह शुबह न रहे कि जहूर इमाम मेंहदी अलैहिस्सलाम से मुताल्लिक लोगों को जल्द और करीब कहकर धोखे में रखा गया। कुरान मजीद में कयामत के मुतालिक ऐसा ज़ज़्बा है सही वक्त नहीं बताया गया लेकिन जल्द आने वाली और करीब होने वाली कहा गया है। जैसे (कयामत करीब होगी) हालांकि अब तक नहीं आयी यह हदीसे नबवी है। असा अनयकून करीबन या बैना यदैइस्साअत। जिस तरह करीबे क़यामत का इजहार तखवीफ के लिए है उसी तरह ज़हूरे हजरत हुज्जत का करीब कहना तशवीस के लिए है यरूना बईदा व नराह करीबन (लोग जहूर को दूर समझते है और हम करीब)।

7 : रावी ने इमाम जाफर सादिक अलैह सलाम से हुकूमत बनी अब्बास का जिक्र करते हुए कहा कि रोज ब रोज तरक्की कर रही है और इमाम मेंहदी अलैहिस्सलाम का जहूर नहीं होता, फ़रमाया लोग उस मामले में अपनी हलाकत का बाएस हो रहे है अल्लाह तआला बन्दो की तरह जल्दी नहीं करता उस जहूर के लिए एक वक्त है कि उससे घड़ी भर भी आगे न हो न घड़ी भर पीछे।



## बयासीवां बाब

# तम्हीस व इम्तेहान—खुदा का मोमिनीन से अम्र ग़ैर खालिस को जुदा करना और इम्तेहान लेना

1 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने कि बाद कत्ले उस्मान जब अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम की बैअत की गयी तो आप मिम्बर पर तशरीफ ले गये और खुतबे में फ़रमाया कि तुम्हारी तकलीफ लौट आयी। उसी तरह जैसे कि वह रोज़े बेअसत तुम्हारी तरफ पलटी थी यानि उस जमात को जो बातिल ताबेअ अहले जलालत थे इस्लाम हकीकी की दावत दी जाती है कसम उस जांत की जिसने अपने नबी को हक पर भेजा तुम्हारे दिलो में शैतानी वसवसे डाले जायेगे और तुम्हारे आमाल को इस तरह छाना जायेगा जैसे छलनी से आटा। यहां तक अहद रसूल (स0) में बलहाज इमान जो तुमसे पस्त (जैसे अज्म) वह निहायत ऊंची सबकत करने वाले होगे और जो अहद रसूल में बलहाज इमान बहुत आगे थे (अरब) वह पस्त हो जायेगे, मैंने किसी ऐसी बादशाहत को नहीं छिपाया जो बाद रसूल (स0) हुई और न मैंने कोई झूठ बोला।

2 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 से सुना कि वाए हो सरकशाने अरब पर उस मामले में जो नजदीक है (सरकशान अरब का हलाकू के लश्कर से कत्ल होना, बगदाद में या नबी उमया की शिकस्त अब्बासियों के हाथ से) मैंने कहा कायम आले मोहम्मद (स0) के साथ अरब

के कितने लोग होगे फ़रमाया – थोड़े से, मैंने कहा लोग कहते है ज्यादा होगे फ़रमाया – उनको खरे खोटे से जुदा किया जायेगा उनमें अच्छे बुरे की तमीज की जायेगी उनको छाना जायेगा इस तरह की एक बड़ी तादाद खोटो की निकल जायेगी।

3 : मन्सूर से मरवी है कि फ़रमाया – इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने, ऐ मन्सूर इमाम मेंहदी अ० का जहूर होगा। लोगो के मायूस हो जाने के बाद, कसम खुदा की उनके दरमियान तमीज की जायेगी खरे को खोटे से जुदा किया जायेगा और उनको इस तरह निखारा जायेगा जैसे कोठाली में सोने को तपा कर मैल को दूर किया जाता है।

4 : क्या लोग यह समझते है कि उनको छोड़ दिया गया है उस बात पर कि वह कह रहे है कि हम ईमान लाये है हालांकि क्या उनका इम्तिहान नहीं लिया जायेगा। फिर इमाम ने फ़रमाया फित्ना क्या चीज है तो रावी ने कहा – मैं आप (स०) पर फिदा हूं, यह फित्ना दीन में है। इमाम ने फ़रमाया, अब अजमाइश की जायेगी जैसे सोने को कसौटी पर परखा जाना है फिर उसमें से खालिस निकाला जाता है।

5 : फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० ने कि हमारी बात जब लोगों के सामने होती है लोगों के दिल उससे दूर रहना चाहते है क्योंकि उसमें पैरवी ज़न नहीं, पस जो लोग उसे मान ले उनसे तो और ज्यादा बयान करो और जो न माने उन्हें छोड़ दो क्योंकि जरूरी है कि अजमाइश होता कि पता चल जाये बात्नी खोट का और गैर जिन्स के दाखिले का ताकि अलग हो जाये जो कमाल जेर की दुनिंया से शिगाफ़ी करता है और उस जांच पड़ताल के बाद बाकी रह

जाते हम और हमारे शिया।

6 : रावी कहता है मैं और हारिस मुग़ीरह दोनों अपने असहाब के दरम्यिान बैठे बातचीत कर रहे थे और इमाम जाफर सादिक अ0 हमारा मुकालमा सुन रहे थे। फ़रमाया तुम क्या गुफ्तगूं कर रहे हो वह तुम्हारे ख्याल से दूर है जिस अम्र की तरफ तुम्हारी आंखें लगी हुई है यह न होगा जब तक कि खरा खोटे से जुदा न हो जाये और खुदा की कसम ये न होगा उस वक्त तक शकी और सईद जुदा न हो जाये।



## तिरासीवां बाब

# मारफ़ते इमाम में तक़द्दुम व तअख़्ख़ुर से नुकसान नहीं

1 : ज़ुरारह से मरवी है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने फ़रमाया – इमाम को पहचान। जब तुमने पहचान लिया तो तक़द्दुम व तअख़्ख़ुर कोई नुक़सान न देगा।

2 : फुजैल ने आयत यौम नदऊ के मुताल्लिक़ इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 से सवाल किया। फ़रमाया – ऐ फुजैल अपने इमाम को पहचानो जब तुमने पहचान लिया तो उस मार्फत में तकदीम व ताख़ीर कोई नुकसान न देगा और जिसने इमाम को पहचान लिया और मर गया इसके कब्ल की अपने साहबे अम्र के पास जाये तो उसका मर्तबा वही होगा जो इमाम के लश्कर में होने वाले का है बल्कि उसका जो हाल इमाम के नीचे हुआ वह बाज असहाब ने कहा है बल्कि उसकी सी मन्जिलत हासिल होगी जो रसूल अल्लाह

के साथ मअरके में शरीक हुए।

3 : अबू बसीर से मरवी है मैंने इमाम जाफ़र सादिक अ0 से कहा – मैं आप पर फिदा हूं कुशादगी व अमन (वक्ते जुहूर हज़रते हुज्जत) का वह कब आयगा। फ़रमाया– ऐ अबू बशीर ! क्या तुम भी उन लोगो में से हो जो तालिबे दुनिया हैं जिसने मार्फत इमाम हासिल कर ली तो उसको इमाम के खुरूज के इन्तजार में खुशी व मार्फत हासिल होती है।

4 : अबू बसीर ने इमाम जाफर सादिक अ0 से सवाल किया। दरआन्हालेकि मैं सुन रहा था (बयान रावी) आया आपके खयाल में कायमे आले मोहम्मद (स0) को पालूंगा। फ़रमाया – ऐ अबू बसीर ! क्या तुम अपने इमाम को नहीं पहचानते। उन्होंने कहा कि खुदा की कसम वह आप है और इमाम का हाथ पकड़ लिया। फ़रमाया – ऐ अबू बसीर सवाब में कोई फक्र नहीं। अगर तुम तलवार हमाईल किये हुए उन कायम के साये में हो (या आपकी मेरी खिदमत हो)।

5 : रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाकर अ0 से सुना कि जो उस हालत में मर गया कि उसका कोई इमाम नहीं, वह कुफ्र की मौत मरा। और जो उस हालत में मरा कि उसने अपने इमाम को न पहचाना तो तक़दीम व ताख़ीर उसके लिए मफर नहीं और जो उस हाल में कि और जो अपने इमाम का आरिफ था तो वह उसके बराबर है जो कायमे आले मोहम्मद (स0) के खेमे में हो।

6 : फ़रमाया इमाम मोहम्मद (स0) बाकर अ0 ने कि जो कोई हमारे अम्र के इन्तिजार में मर जाये उसके लिये कोई नुकसान रसां बात नहीं अगर वो न मेरे खेमे इमाम मेंहदी में या उनके लश्कर में रह कर।

7 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ० ने अलामते इमाम को पहचानो, जब पहचान लिया तो तक़दीम व ताख़ीर में कोई नुकसान नहीं फ़रमाया अल्लाह तआला ने रोजे कयामत हम हर गिरोह को उसके इमाम के साथ बुलायेंगे। जिसने अपने इमाम को पहचान लिया वह उसकी तरह है जो इमामे मुन्तज़र के खेमे में हो।



## चौरासीवां बाब

## ना अहलवा दावाए इमामत कुल अइम्मा या बाज़ का मुन्किर और जो ना अहल में इमाम साबित करे

1 : रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाकर अ० से कहा कि क्या मतलब है इस आयत का – और रोज़े कयामत तुम देखोगे उन लोगों को जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला कि उनके चेहरे काले होंगे। फ़रमाया –उससे मुराद यह है कि जो कहे। मैं इमाम हूं हालांकि वह इमाम नहीं है। मैंने कहा चाहे वह अलवी हो। फ़रमाया हां चाहे वह अलवी हो मैंने कहा चाहे वह अली अ० का बेटा हो। फ़रमाया हां चाहे वह ऐसा ही हो।

2 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ० ने जिसने दावाए इमामत किया – दरआन्हालेकि वह उसके अहल से नहीं तो वह काफिर है।

3 : रावी कहता है कि मैंने इमाम जाफर सादिक अ०

से इस आयत का मतलब पूछा। रोजे क़यामत तुम देखोगे उन लोगों को जिन्होंने अल्लाह तक झूठ बोला। अल्अख – फ़रमाया इससे मुराद वह शख्स है जो अपने को इमाम समझते है। दरआन्हालेकि वह इमाम नहीं है। मैंने कहा अगरचे वह फातिमी व अलवी हो। फ़रमाया हां, फ़रमाया हां चाहे वह फातिमी व अलवा ही क्यों न हो।

4 : फ़रमाया – सादिक़े आले मोहम्मद ने तीन शख्सों से रोजे कयामत खुदा कलाम न करेगा और न उनका तजकिया करेगा और उनके लिए दर्दनाक अजाब होगा अव्वल वह कि जिसने दावा इमामत किया हालांकि वह खुदा की तरफ से इमाम नहीं, दूसरे जिसने इमाम मन्सूस मिनल्लाह से इन्कार किया। तीसरे वह जिसने इन दोनो के लिए आखिरत में कोई हिस्सा करार दिया।

5 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ० ने जो ना अहल अम्रे इमामत का दावा करेगा खुदा उसकी उम्र को इस दुनिया में वबाल बना देगा।

6 : अबू अब्दुल्लाह अ० ने फ़रमाया – जिसने अपने को इमाम मन्सूस मिनल्लाह का शरीक करार दिया। दरआन्हालेकि खुदा की तरफ से उसके लिए इमामत नहीं तो उसने अपने आपको खुदा का शरीक करार दिया।

7 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक अ० से कहा – एक शख्स ने मुझसे कहा – अइम्मा में से आखिर वाले की मार्फत हासिल कर लो अव्वल वाले की मार्फत हासिल न करना। नुकसान न देगा। हज़रत ने कहा – खुदा की लानत हो उस पर, मैं उससे दुश्मनी रखता हूं और उसको नहीं पहचानता। वह बगैर अव्वल के मार्फत हासिल

कर सकता है।

8 : रावी कहता है मैंने इमाम मूसा काजिम अ0 से पूछा, अइम्मा अ0 के मुताल्लिक़ फ़रमाया – जिसने जिन्दा इमामों में से एक का भी इंकार किया। उसने सब मरे हुए से इंकार किया।

9 : रावी कहता है मैंने इमाम मूसा काजिम अ0 से इस आयत के मायने पूछे, जब उन्होंने बदकारी की। तो कहा हमने अपने आबा को उसी पर पाया है। खुदा ने उनको इसका हुक्म दिया था। ऐ रसूल (स0) उनसे कहो – अल्लाह तआला बदकारियों का हुक्म नहीं देता क्या तुम अल्लाह के मुताल्लिक़ वह कहते हो जो तुम नहीं जानते। हजरत ने फ़रमाया – क्या तुमने किसी को यह गुमान कहते सुना है कि अल्लाह ने जिनां, शराब को भी यह उस किस्म के दीगर मोहर्रमात का हुक्म दिया है। मैंने कहा नहीं। फ़रमाया – फिर यह फाहशा (बुराई) किया है जिसका अल्लाह ने उनको हुक्म दिया है मैंने कहा अल्लाह और उसका वली बेहतर जानता है फ़रमाया यह आइमा जोर से मुतालिक है जिन्होंने दावा किया कि खुदा ने उनको एक कौम का इमाम बनाया है खुदा ने उसकी तरदीद की है और बताया कि वह झूठे है इसी का नाम फाहशा है।

10 : रावी कहता है मैंने इमाम मूसा काजिम अ0 से सवाल किया उस आयत के मुताल्लिक, मेरे रब ने जाहिरी और बातिनी तमाम फवाहिश को हराम कर दिया। हजरत ने फ़रमाया – कुरान में जाहिर व बातिन दो चीजें, कुरान में वह तमाम चीजें जो हराम की गई है जाहिरी सूरत में है और बातिन में मुराद अइम्मए जो रहे और जिन चीजें के हलाल

होने का जिक्र कुरान में है वह जाहिरी सूरत है बातिन में से मुराद आइमा हक है।

## तौजीह

मुराद यह है कि जिना, शराब व केमार वगैरह के जिमन में नहीं की गई है अइम्मा जोर की पैरवी से क्योंकि उनका इत्तेबा करके उन चीजो से इजतिनाब कोई फायदा न देगा और जिनको खुदा ने अपनी किताब में हलाल किया है बज़ाहिर कुरान है और बातिन उसका पैरवी अइम्मा बरहक़ है कि बगैर उनकी पैरवी के उमूर हलाल का इक्तिसाब करना मुफीद नहीं।

11 : इमाम मोहम्मद बाकिर अ० से पूछा रावी ने पूछा कि इस आयत से क्या मुराद है कुछ लोग ऐसे है जो लोगो को अल्लाह का शरीक करार देते है और उनसे ऐसी ही शदीद मोहब्बत रखते है। जैसी अल्लाह से रखनी चाहिए तो हजरत ने फ़रमाया – खुदा की कसम उन्होंने ऐसे लोगो को इमाम बनाया जो उनके अलावा है जिनको खुदा ने लोगो का इमाम बनाया है इसीलिए खुदा ने कहा है – अगर तुम देखो उन लोगो को जिन्होंने जुल्म किया कि वह मुब्तिलाए अजाबे इलाही है। कुव्वत तो तमाम अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह सख्त अजाब देने वाला है जब बेजारी का इजहार करेगे वह लोग जिनका इतिबा किया गया था उनसे जो इत्तिबा करने वाले थे और वह अजाब देखेगे और मदद के असबाब कता हो जायेगे और पैरवी करने वाले कहेगे अगर हम फिर दुनिया की तरफ लौटा दिये जाये तो हम उनसे इसी तरह बेजार होगें जैसे यह हमसे हुए। उसी तरह अल्लाह उनको हिसरात में रखेगा और वह जहन्नम से

निकलने वाले नहीं। इमाम अ० ने फ़रमाया – ऐ जाबिर ये जालिम अइम्मा और उनके ताबईन है।

12 : रावी कहता है – मैंने अबू अब्दिल्लाह अ० को कहते सुना कि तीन आदमियों की तरफ खुदा रोजे कयामत नजर न करेगा और न गुनाहों से पाक करेगा और उनके लिए दर्दनाक अजाब है अव्वल वह जिसने दावये इमामत किया और कहा कि वह खुदा की तरफ से है दूसरे वह जिसने इमाम मन्सूस मिनल्लाह से इन्कार किया, तीसरे जिसने दावा किया कि इन दोनो के लिए इस्लाम में हिस्सा है।



## पच्चासीवां बाब

## उसके बारे में जिसने बग़ैर इमाम मन्सूस मिनल्लाह इबादत खुदा की

1 : रावी कहता है इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया आयत उससे ज्यादा कौन गुमराह होगा जो अल्लाह की हिदायत के बगैर अपनी ख्वाहिश की पैरवी करें। फ़रमाया इससे मुराद यह है कि अपना दीन अपनी राय से बना ले। बगैर मन्सूस मिनल्लाह अइम्मा की हिदायत के।

2 : रावी कहता है कि इमाम मोहम्मब बाकि़र अ० ने फ़रमाया जो शख्स बगैर मन्सूस मिनल्लाह इमाम के इबादत खुदा करता है और अपने नफ्स को ताअब में डालता है उसकी कोशिश गैर मकबूल है और गुमराह और मुतहीर है। खुदा उसकी अमाल का दुश्मन है उसकी मिसाल उस बकरी की सी है जो अपने चरवाहे और गुले से अलग हो गयी हो

और दिनभर सर गरदां व परेशान फिरी हो जब रात आयी तो उसने एक गुले को एक दूसरे चरवाहे के साथ देखा वह उस गुले के साथ हो गयी धोखे से यह समझकर कि यह उसका ग़ल्ला है रात को उन्हीं के साथ थान पर रही सुबह को जब चरवाहा अपने ग़ल्ले को लेकर चला तो उसने उसको अपने ग़ल्ले से अलग कर दिया। अब वह हैरान होकर अपने ग़ल्ले को ढूढ़ने लगी उसने एक बकरी को उसके चरवाहे के साथ देखा वह उसकी तरफ़ मुड़ी और उसने धोखा खाया। चरवाहा चीख़ा की अपने चरवाहे और ग़ल्ले के पास जा। तो अपने चरवाहे और ग़ल्ले से अलग होकर हैरान व सरगरदां है अब वह परेशान और खौफजदा थी। कहां था उसका चरवाहा – कि उसे चरागाह ले जाये या उसके मकाम तक पहुंचाये। उसी इश्ना में एक भेडिये ने उस पर हमला कर दिया और उसे चीर–फाड़ डाला। वल्लाह – उसी तरह ऐ मोहम्मद, उस कुव्वत में वह शख्स है। जिसका खुदा की तरफ से कोई इमाम न हो। जो जाहिर व आदिल हो तो वह गुमराह व हैरान व परेशान रहेगा और अगर उस हालत में मर जायगा तो फिर कुफ्र व निफाक की मौत मरेगा ऐ मोहम्मद (नाम रावी) आइमा जोर और उनके ताबईन, दीनेइलाही से अलग है। वह खुद भी गुमराह हुए और दूसरो को भी गुमराह किया। जो अमल वह करते है वह उस राख की मानिन्द है जिसे तेज आंधी का झोंका उड़ा के ले जाये वह जो कुछ कर चुके। अब उन अमाल में से किसी पर उनका काबू नहीं और यह सबसे बुरी गुमराही है।

3 : अबी याजूर से मरवी है मैंने इमाम जाफर सादिक अ0 से कहा – मैं लोगों से मिलता रहता हूं पस मुझे बड़ा

ताज्जुब हुआ उन लोगों पर जो आपको दोस्त नहीं लगते। बल्कि फलां फलां को दोस्त रखते है लेकिन उनमें अमानत है सदाकत है और वफा है बरखिलाफ उसके आपके दोस्तों को देखता हूँ कि न उनमें अमानत है और न वफा व सिदक, यह सुनकर इमाम अ० उठकर बैठ गये और मेरी तरफ खशमनाक होकर आये और फ़रमाया नहीं है कोई दीन उसका जो कुर्बे खुदा हासिल करना चाहे वलायत इमाम जाबिर के साथ और नहीं है एताबं व अजाब उसके लिए जो कुरबते ईजदी हासिल करें मंसूस मिनल्लाह इमाम आदिल की विलायत से मैंने कहा क्या उनके लिए दीन और इनके लिए एताब नहीं। फ़रमाया – हां उनके लिए दीन और उनके लिए एताब नहीं।

फिर फ़रमाया क्या तुमने खुदा का यह कौल नहीं सुना—अल्लाह उनका वली है जो इमान लाये है वह उनको निकालता है तारीकियों से नूर की तरफ (यानि गुनाहों की तारीकियो से तौबा और मग़फ़िरत के नूर की तरफ, बसबब उनकी मोहब्बत के, हर इमाम आदिल से जो मिनजानिब अल्लाह हो) और फिर फ़रमाया – जो लोग काफिर है उनके लिए और या शयातीन है जो उनको नूर से जुल्मात की तरफ ले जाते है (मुराद यह है कि वह थे नूरे इस्लाम में लेकिन चूंकि उन्होंने ऐसे इमाम जालिम को दोस्त रखा जो अल्लाह की तरफ से नहीं है तो उनकी मोहब्बत की बिना पर वह नूर इस्लाम से निकल कर जुल्मते कुफ्र में आ गये पस खुदा ने वाजिब कर दिया दोजख को उन पर कुफ्फार के साथ पस वह जहन्नुमी है उसमें हमेशा रहेगे।

4 : फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० ने कि ख़ुदा के

कलाम से ऐसा मफहूम होता है कि जो इस्लाम में दाखिल है उनमें से हर उस रईयत पर अजाब करूगां जिसने इबादत की हो हर ऐसे इमाम के तहत विलायत जो ज़ालिम हो और अल्लाह की तरफ़ से न हो अगरचे उस रइयत के आमाल कितने ही नेक और परहेज़गार न हों और बख़्श दूंगा हर मुसलमान को जो इबादत करेगा उस इमाम के तहत जो आदिल हो और मिनजानिब अल्लाह हो अगरचे उस मुसलमान के आमाल कितने ही ख़राब क्यों न हो।

5 : इमाम जाफर सादिक अ0 ने फ़रमाया – खुदा नहीं हया करता अजाब देने से उस गिरोह को जो इबादत करें तहत विलायत व मोहब्बत इमाम जाबिर चाहे उसके आमाल कितने ही नेक हों और हया करता है अजाब देने में उस गिरोह को जो इबादत करें इमाम मंसूस मिनल्लाह की मोहब्बत के साथ चाहे उसके आमाल कैसे ही खराब हो।



## छियासीवां बाब

# जो शख़्स बग़ैर मारफ़ते इमाम मन्सूस मिनल्लाह मर गया

1 : रावी कहता है कि एक दिन हजरत अबू अब्दिल्लाह अ0 ने फ़रमाया कि रसूल अल्लाह स0 ने फ़रमाया है कि जो कोई उस हालत में मर गया कि उसका कोई इमाम न था तो वह कुफ्र की मौत मरा। मैंने कहा क्या रसूल अल्लाह स0 ने ऐसा फ़रमाया है फ़रमाया – हां खुदा की कसम मैंने कहा – हर वह शख्स जिसका इमाम न हो ऐसी ही मौत मरेगा फ़रमाया – हां।

2 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक अ० से उस कौले रसूल का मतलब पूछा। जो उस हालत में मरा कि उसका कोई इमाम न था तो वह जाहिलियत की मौत मरा। मैंने कहा आजकल मरने वाला ऐसा ही है। फ़रमाया – हां।

3 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक अ० से कहा – क्या जो उस हालत में मर गया कि उसने अपने इमाम जमाना को नहीं पहचाना तो वह कुफ्र की मौत मरेगा। फ़रमाया – हां। मैंने कहा – जिहालत की मौत या जाहिलियत की मौत, बगैर मार्फत इमाम, फ़रमाया कुफ्र व निफाक व ज़लालत की मौत।

4 : रावी कहता है फ़रमाया ! अब्दिल्लाह अ० ने जिसने अल्लाह की इबादत की बगैर इमामे बरहक से सुनते हुए तो अल्लाह उसको पकडेगा जरूर उसके एनाद की वजह से और जिसने दावा किया सुनने का बगैर उस दरवाजे के जिसको अल्लाह ने उसके लिए खोला है तो वह मुशरिक है और यह दरवाजा अमीन है खुदा के छुपे हुए राज़ों को। (मुराद इमाम)



## सत्तासीवां बाब

## इसके बारे में जिसने अहले बैत को पहचाना और जिसने इन्कार किया

1 : रावी कहता है मैंने सुना इमाम रिज़ा अ० से कि अली बिन अब्दुल्लाह बिन हुसैन बिन अली बिन अल हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब (जो बड़े आलिम व जाहिद और मुकद्दस थे) उनकी बीवी और औलाद अहले जन्नत से है

फिर फ़रमाया जिसने औलाद अली व फातिमा की मार्फत हासिल की वह आम लोगों की तरह नहीं है।

2 : मैंने इमाम रिज़ा अ0 से कहा—मुझे बताइए औलाद फातिमा (स0) में से जो शख्स आपसे एनाद रखता है और आपके हक़ का आरिफ़ नहीं क्या वह अज़ाब में लोगों के बराबर है फ़रमाया—हज़रत अली बिन हुसैन[अ0] ने फ़रमाया—उसको दूना अजाब होगा।

3 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 से कहा – इंकार करने वाला अम्रे इमामत का बनी हाशिम से हो या ग़ैर बनी हाशिम से क्या अजाब में बराबर है फ़रमाया मुन्किर (न दानिस्ता इंकार करने वाला) न कहो जाहिद (दानिस्ता इंकार करने वाला) कहो बनी हाशिम वगैरह बनी हाशिम में मैंने फिक्र की। तो यूसुफ[अ0] के बारे में यह बात याद आयी। यूसुफ ने पहचान लिया और वह न पहचाने।

4 : मैंने इमाम रिज़ा अ0 से पूछा – क्या अम्रे इमामत का इंकार करने वाला आप में से हो या गैर दोनों बराबर हैं फ़रमाया जो हममें से होगा उस मुन्किर का दोहरा गुनाह होगा और जो नेकी करने वाला होगा उसकी नेकियां दोहरी होगी।



## अठ्ठासीवां बाब

# वक़्ते वफ़ाते इमाम अ० लोगों पर क्या वाजिब है

1 : मैंने इमाम जाफर सादिक अ0 से कहा – जब इमाम के मरने का वक्त आये तो लोगों को क्या करना चाहिए फ़रमाया – खुदा फरमाता है क्यों नहीं अहले ईमान में से

कुछ लोग निकलते है कि व अक्ल व दानिश (इल्मे फिकह) हासिल करें और जब लौटे तो अपनी कौम को डराये ताकि वह गुनाहों से बचे। फ़रमाया – इमाम ने वह लोग माजूर है। जब तक तलाश में रहे और दूसरा माजूर है जब तक पहला गिरोह हुसूले फिकह के बाद अपने असहाब की तरफ न लौटे (मतलब यह है कि तलाश इमाम में बगरज़े हुसूले इल्म मोमिनो में से कुछ लोगो को निकलना चाहिए)

2 : रावी कहता है मैंने हजरत अबू अब्दिल्लाह से पूछा– उस आम रवायत के मुताल्लिक़ कि जो उस हालत में मर गया कि उसने अपने ज़माने के इमाम को न पहचाना व जाहिलियत की मौत मरा। मैंने कहा क्या यह हक है – फ़रमाया बेशक, मैंने कहा अगर इमाम मर जाये और एक शख्स खुरासान में हो वह उसके वसी का इल्म नहीं रखता और उस तक पहुंच सकता है तो वह क्या है। फ़रमाया – अगर नहीं पहुंच सकता तो इमाम की वफात के बाद उनका वसी हुज्जत होगा इन लोगों पर जो उसके शहर में मौजूद हो और जो मौजूद नहीं उनको चाहिए। जिस वक्त खबर मिले खिदमते इमाम में हाजिर हो जैसा कि खुदा फरमाता है। क्यों नही अहले ईमान में से कुछ लोग निकलते कि वह इल्मे फिकह हासिल करें और जब लौटे तो अपनी कौम को डराये ताकि वह गुनाहों से बचे।

मैंने कहा कुछ फ़र्ज़ कीजिए। चले भी और वह इमाम तक पहुंचने और इल्म हासिल होने से पहले हलाक हो गये तो, फ़रमाया खुदा फरमाता है जो अपने घर से खुदा और रसूल (स0) की तरफ हिजरत करने को निकले और उनको राह में मौत आ गयी तो उनका अज्र अल्लाह पर है।

मैंने कहा फ़र्ज़ कीजिए वह शहर में पहुंच भी गया। लेकिन या तो आपका दरवाजा बन्द पाया, दर पर परदा पड़ा हुआ पाया, और कोई आप तक पहुंचाने वाला भी नहीं, फिर क्या होगा – कैसे पहचानोगे। फ़रमाया–अल्लाह की नाजिल की हुई किताब से, मैंने कहा खुदा ने क्या फ़रमाया है। फ़रमाया यह सवाल तुमने पहले भी किया था। मैंने कहा-- हां। उसके बाद वह आयत बयान की जो अली<sup>अ०</sup> के बारे में नाजिल हुई और हसन<sup>अ०</sup> व हुसैन<sup>अ०</sup> के बारे में जो रसूल अल्लाह<sup>स०</sup> ने फ़रमाया और उन चीजों का जिक्र किया जो अली<sup>अ०</sup> से मख्सूस थी और जो वसीयते रसूल अल्लाह<sup>स०</sup> ने उनके मुताल्लिक़ फरमायी और उनको अपना जानशीन मुक़र्रर किया और जो मसाएब उन पर नाजिल होने वाले थे और हज़रत अली<sup>अ०</sup> का इमाम हसन<sup>अ०</sup> के मुतालिक वसीयत करना और इमाम हुसैन<sup>अ०</sup> का। उसको इस आयत के तहत कुबूल करना बाज रिश्तेदार बाज़ से बेहतर है। खुदा की किताब में।

मैंने कहा लोग कलाम करते है। इमामते इमाम मोहम्मद बाक़िर<sup>अ०</sup> मे और कहते है कि इमामत क्यों न कर तजावुज कर गई उस शख्स से जो इमाम मोहम्मद बाक़िर<sup>अ०</sup> के बाप की औलाद में सबसे बड़ा था और क्यों पहुंची उसकी तरफ जो सिन में छोटे थे।

हज़रत ने फ़रमाया इमाम की शिनाख्त तीन चीजों से होती है जो उसके गैर में नहीं होती अव्वल यह कि वह अपने कब्ल इमाम की तरह अपने जमाने के तमाम लोगों से अफजल व आला होता है दूसरे साबिक इमाम की वसीयत होती है तीसरे उसके पास रसूल अल्लाह के हथियार होते है और उसके मुतालिक वसीयत होती है यह सब मेरे लिए है

उस में मेरा किसी से झगड़ा नहीं।

मैंने कहा यह चीजें तो खौफ़े सुल्तान से ढकी छिपी है फ़रमाया – यह चीजें छिपने वाली नहीं क्योंकि उसकी हुज्जत जाहिर होने का पता और बातों से चल जाता है।

मेरे पदरे बुर्जुगवार ने यह चीजें मेरे सुपुर्द कर दी है जबकि उनकी मौत का वक्त आया तो मुझसे फ़रमाया – मेरे लिए गवाहों को बुलाओ। मैंने कुरैश के चार गवाह बुलाये जिनमें अब्दुल्ला बिन उमर का गुलाम नाफे भी था। हजरत ने उनसे फ़रमाया – लिखो वो कि वसीयत में कहा था उसके मुताल्लिक यांकूब ने अपने बेटों को की ऐ मेरे फ़र्ज़न्द वल्लाह तुम्हारे लिए दीन को इन्तिखाब कर लिया है। पस मुसलमान रह कर ही मरना। मोहम्मद बिन अली ने वसीयत की अपने बेटे जाफर बिन मोहम्मद[स०] को और उन्हें हुक्म दिया है कि उस चादर का कफन दे जिसमें मैं जुमे की नमाज पढ़ा करता था और मेरा ही इमामा बांधे और मरबा कब्र बनाये और चार अंगुश्त ऊंचा करें। फिर फ़रमाया उस वसीयतनामे को लपेट दो और गवाहों से कहा अब तुम चले जाओ। अल्लाह तुम पर रहम करे। मैंने कहा–जब वह लोग चले गये। ऐ बाबाजान ऐसा आपने क्यों किया और उस वसीयत पर गवाही क्यों ली। फ़रमाया–मैंने उसे बुरा समझा कि मेरे बाद लोग तुम पर गलबा हासिल करें और कहें कि उनके लिए कोई वसीयत नहीं की, पस मैंने चाहा कि यह तुम्हारे लिए हुज्जत हो जाये। पस जो कोई शहर (मदीना) में वारिद हो उसे दरयाफ्त करना चाहिए कि फलां ने अपना वसी किसको बनाया। मैंने कहा अगर वसीयत में चन्द आदमियों को शरीक कर लिया हो तो क्या हो। फ़रमाया–उनसे आयातें मोहकमात

के मुताल्लिक़ सवालात किये जाये। अम्रे हक वाजेह हो जायेगा।

3 : रावी ने कहा इमाम जाफर सादिक अ० से अल्लाह आपकी हिफाजत करें हमें आपकी अलालत की खबर मिली है और हम आपकी मौत से डरते है लिहाजा आगाह कीजिए या तालीम दीजिये कि आपके बाद इमाम कौन होगा। फ़रमाया– अली अ० आयाते कुरआनी के आलिम थे और इल्म मिरास में चलता है अगर कोई आलिम मरता है तो उसकी जगह उसी जैसा इल्म रखने वाला दूसरा आ जाता है या जैसा अल्लाह चाहता है। मैंने कहा क्या ये हो सकता है कि जब आलिम मर जाये तो लोग उसके बाद वाले को न पहचाने। फ़रमाया इस शहर (मदीना) वाले के लिए मार्फत इमाम उसी वक्त जरूरी है लेकिन दूर के शहर वालों के लिए वक्त होगा बाकदर उनकी मसाफत के खुदा फरमाता है मोमिनों के लिए यह मुनासिब नहीं है कि वह सब के सब निकल खड़े हो बल्कि उनकी एक जमाअत इल्मेदीन हासिल करने के लिए क्यों नहीं निकलती ताकि वह तहसीले इल्म के बाद लोगों को डराये जब उनके पास लौट कर आये ताकि वह गुनाह से डरे।

मैंने कहा अगर उस कोशिश के दरमियान मर जाये। फ़रमाया वह उस शख़्स की तरह होगा जो हिजरत करके अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल (स0) की तरफ निकले और राह में उसे मौत आ जाये तो उसका अज्र अल्लाह पर है मैंने कहा जो लोग इमाम के शहर में पहुंच जाये तो वह किस तरह पहचाने। फ़रमाया – इमाम के सकीना व वकार और उसकी हैबत से।



## नवासीवां बाब

# इमाम कब जानता है कि इमामत उसकी तरफ आई

1 : रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा[अ०] से कहा – मैं आप[अ०] पर फिदा हूं जो खुलूस मुझे आप[अ०] के वालिद और आप से है आप उससे वाकिफ़ है मैं क़सम खाता हूँ हक्के रसूल[स०] और तमाम अईम्मा के हक की, आप जो राज़ मुझसे बयान करेंगे मैं उसको किसी से न कहूंगा। मैं आप[अ०] से दरयाफ्त करता हूं कि आप[अ०] के वालिद इमाम मूसा काज़िम[अ०] जिन्दा है या मर गये फ़रमाया वल्लाह उनका इन्तेकाल हो गया। मैंने कहा आप[अ०] के शिया (वाक़फ़िया फिरक़े वाले) कहते है कि उनमें चार नबियों की सुन्नत है (यूसुफ़[अ०]), मूसा[अ०], हज़रत और ईसा[अ०] जो गैब है यानि उनका अकीदा है कि इमाम मूसा काज़िम[अ०] मरे नहीं बल्कि जिन्दा है और गैब है) कसम उस जात की। जिसके सिवा कोई माबूद नहीं वह मर गये। मैंने कहा गायब हो गये है या मर गये। फ़रमाया – मर गये। मैंने कहा शायद अजरूवे तक़य्या कह रहे है। फ़रमाया – सुबहान अल्लाह (यानि ऐसा नहीं)।

मैंने कहा तो उन्होंने आपके लिए वसीयत की है फ़रमाया हां – मैंने कहा तो आप इमाम है। फ़रमाया – हां।

2 : रावी कहता है कि मैंने इमाम रिज़ा अ० से कहा कि एक शख्स (अब्बास बरादर इमाम रिज़ा अ0) ने आप (स0) के भाई इब्राहिम से कहा। तुम्हारे बाप जिन्दा है पस आप जानते है उस अम्र को जिसे वह नहीं जानता। यानि आपको अपने बाप की जिन्दगी का उनसे ज्यादा इल्म है फ़रमाया सुबहान

अल्लाह रसूल अल्लाह मर जाये और मूसा न मरे (तुम्हारे ख्याल में यह बात आती है) वल्लाह रसूल (स0) अल्लाह की तरह वह भी मर गये और जब से नबी की रूह कब्ज हुई यह सिलसिला जारी रहा। खुदा ने एहसान किया उस दीन पर औलाद आजम से (यानि सलमान जो ईरानी थे वह तो पुरखुलूस ईमान लाये और रूगरदानी की उन लोगो ने जो क़राबतदाराने रसूल (स0) थे (अब्बास वगैरह) और यह सिलसिला चलता ही रहा। खुदा ने उनको ईमान अता किया और उनको बाज रखा।

मैंने माह ज़िलहिज में उस इब्राहिम का कर्ज अदा किया (और उसको कर्जख्वाहों की सख्ती से निजात दी) ऐसी हालत में जबकि वह तैयार हो गया था अपनी औरतों को तलाक देने और अपने गुलामों को फरोख्त करने पर। लेकिन तुमने सुना है कि यूसूफ के भाइयों ने उनके साथ क्या किया (यानि मैंने तो उनके साथ यह एहसान किया और उन्होंने मेरी इमामत से इंकार का यह बहाना तराशा कि मेरे वालिद कही मौत से इंकार करो ताकि मेरे जानशीन होने का सवाल ही न रहे।

3 : वशा ने कहा – मैंने इमाम रिज़ा^अ0 से कहा – कि लोग आपसे वफात इमाम मूसा काज़िम^अ0 की रवायत करते है एक शख़्स ने बयान किया कि आपको वफात का हाल सईद से जो बग़दाद से आया था मालूम हुआ था।

फ़रमाया – मैं तो सईद के आने से पहले ही खबर वफात सुना चुका था रावी कहता है कि मैंने हजरत को फरमाते सुना कि मैंने उम्मे फ़रवा बिक्ते इसहाक क़ो माहे रजब में इमाम मूसा काज़िम अ0 की वफात के दिन ही खबर

दे दी थी। मैंने कहा आपको मौत का हाल मालूम हो गया था। फ़रमाया हां, मैंने कहा सईद के आने के पहले। फ़रमाया– हां।

4 : मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से कहा–मुझे बताइए कि इमाम को कब पता चलता है कि वह इमाम हुआ जबकि उसको यह खबर मालूम होती है कि इमाम सादिक मर गया या मौत का वक्त ही मालूम हो जाता है। फ़रमाया– मौत के वक्त ही। मैंने कहा – कैसे ? फ़रमाया अल्लाह उसको इल्हाम करता है।

5 : रावी कहता है कि मैंने रोजे़ वफात इमाम मोहम्मद तकी अ० (जो बगदाद में फौत हुए) इमाम अली नकी अ० को कहते सुना – इन्ना लिल्लाहे वईन्ना इलैहे राजेऊन, इमाम मोहम्मद तकी का इन्तकाल हो गया। मैंने कहा आपको कैसे मालूम हुआ। फ़रमाया मेरे दिल में ऐसी रिक्कत और रूजू इलल्लाह पैदा हुई। जिसकी मार्फत मुझे न थी।

6 : मुसाफिर कहता है कि जब इमाम मूसा काजिम अ० को बजब्र बगदाद ले जा रहा था तो उन्होंने इमाम रिज़ा अ० को हुक्म दिया कि वह हर रात जब तक मेरे मरने की खबर न आये। मेरे घर के दरवाजे पर सोया करें। मुसाफिर कहता है – हम हर रोज रात को दहलीज में उनके लिए फर्श बिछा देते थे वह इशा के बाद आते और सो रहे थे और अपने घर चले जाते। यह सूरत चार साल तक रही। एक रात आने में ताखैर हुई। हमने फर्श बिछा दिया। लेकिन हस्ब मामूल न आये। सब घर वाले मुजतर्द परेशान थे और उसको एक अजीम मुसीबत समझा कि यह ताखीर हुई क्यों। जब दूसरा दिन हुआ तो आये और घर के अन्दर दाखिल हुए। और उम्मे अहमद से कहा – जो चीज मेरे बाप ने तुम्हारे पास अमानत

रखी है वह मुझे दे दो।

यह सुनकर वह रोने लगी। मुंह पर तमाचे मारे और गिरेबान फाड़ दिया। और कहने लगी। वल्लाह मेरा आका मर गया। हजरत ने फ़रमाया जबान से कुछ न कहो और कुछ जाहिर न करो, जबतक हाकिम मदीना के पास सरकारी तौर पर इत्तिला न आ जायें पस उम्मे अहमद ने दो हजार या चार हजार दीनार से भरी थैली निकाली और हजरत को दी और हजरत के सिवा किसी और को न दी और कहा – इमाम मूसा काजिम ने कहा था कि मेरे और उनके दरम्यिान एक राज है उम्मे अहमद इमाम मूसा काजिम के नजदीक अजीज व गिरामी थीं। हजरत ने उनसे कहा – उस अमानत की हिफ़ाज़त करो। अपने पास रखो और मेरे मरने तक किसी को उस पर मुत्तिला न करना। जब मैं मर जाऊ तो मेरी औलाद में से जो कोई तुम्हारे पास आये और तुमसे मांगे तो उसे दे देना और समझ लेना कि मैं मर गया। पस मेरे पास मेरे आका के मरने की अलामत आ गई पस हजरत ने वह अमानत ले ली और घर वालों से कहा उसे अपने पास महफूज रखें यहां तक की हज़रत के मरने की बाकायदा खबर आ जाये यह सुनकर हज़रत चले गये। पस मैय्यत के मुतालिक कोई खबर हमें सुबह तक मालूम न हुई। चन्द ही रोज गुजरे थे कि सरकारी डाक में मरने की ख़बर आयी हमने हिसाब लगाया और वक्त की जांच की तो वह वहीं वक्त था जो इमाम रज़ा अलेह सलाम के रात को सोने के लिए न आने का था और उम्मे अहमद से अमानत लेने का।



## नव्वेवां बाब

# हालात अइम्मा अ० बलिहाज़े सिन

1 : रावी कहता है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से पूछा—क्या ईसा बिन मरियम अ० ने जब महद में कलाम किया तो अपने अहले ज़माना पर हुज्जत खुदा थे। फ़रमाया बेशक वह नबी और हुज्जते खुदा थे रसूल न थे। क्या तुमने उनका कौल न सुना। मैं अल्लाह का बन्दा हूं मुझे किताब दी है और नबी बनाया है और मुझे मुबारक करार दिया है जहां कहीं भी रहूं और मुझे हिदायत की है कि जब तक मैं जिन्दा रहूं, नमाज पढ़ूं और जकात दूं। मैंने कहा उस हालत में वह जनाबे जकरिया पर हुज्जत खुदा थे जबकि गहवारा में थे। फ़रमाया—ईसा उस हालत में लोगों के लिए अल्लाह की आयत थे और रहमत थे अल्लाह की तरफ़ से मरियम के लिए जब उन्होंने कलाम किया और मरियम की तरफ से उनकी बराअत पेश की। वह नबी और हुज्जत थे उस शख़्स के लिए जिसने उनका कलाम सुना उस हाल में, उसके बाद हजरत ईसा ख़ामोश हो गये और दो साल तक कोई कलाम न किया।

ईसा[अ०] के दो साल ख़ामोश रहने के जमाने में ज़करिया[अ०] लोगों पर हुज्जते खुदा थे उनके मरने के बाद किताब वह हिकमत के वारिस उनके बेटे यहिया[अ०] हुये दरआन्हालेकि वह कमसिन थे जब ईसा[अ०] सात साल के हो गये तो उन्होंने कलाम किया नबुवत व रिसालत के बारे में जबकि खुदा ने उन पर वही की। पस ईसा[अ०] हुज्जत थे यहिया[अ०] पर और तमाम लोगों पर और ऐ अबू खालिद जमीन बगैर हुज्जते खुदा के एक दिन भी खाली नहीं रहती, जबसे खुदा ने आदम को

पैदा किया और रूए जमीन पर उन्हें साकिन किया। मैंने कहा मैं आप पर फिदा हूं क्या अली अ0 खुदा और रसूल (स0) की तरफ से उस उम्मत पर खुदा की हुज्जत थे हयाते रसूल (स0) में फ़रमाया जबसे कि रसूल (स0) ने अपना कायम मकाम बनाया और लोगों को उनकी इताअत का हुक्म दिया।

मैंने कहा क्या हयात रसूले[स0] में और बादे वफात लोगों पर अताअत अली वाजिब थी फ़रमाया – हां। लेकिन साकित रहे और अम्र व नहीं इलाही में रसूल[स0] की मौजूदगी में कोई बात न की। रसूल अल्लाह[स0] की इताअत उनकी जिन्दगी में तमाम उम्मत पर जिस तरह वाजिब थी उसी तरह अली पर थी और बादे वफाते रसूल[स0] तमाम लोगो पर खुदा और रसूल[स0] की तरफ से अली[अ0] की इताअत वाजिब थी और अली हकीम व अलीम थे।

2 : रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा[अ0] से कहा – क़ब्ल इमाम मोहम्मद तक़ी[अ0] की पैदाइश के हमने आपसे आपके जानशीन के मुताल्लिक़ सवाल किया था तो आपने फ़रमाया था कि खुदा मुझे लड़का देगा चुनांचे खुदा ने दे दिया। जिससे हमारी आंखे ठण्डी हुई पस खुदा आपकी मौत का दिन न दिखाये लेकिन अगर ऐसा हो तो आपका जानशीन कौन होगा। हज़रत ने अपने हाथ से इमाम मोहम्मद तक़ी[अ0] की तरफ इशारा किया वो सामने खड़े थे। मैंने कहा यह तो अभी तीन ही बरस के हैं फ़रमाया–कमसिनी मानेए इमामत नहीं। ईसा[अ0] तीन ही साल के थे की हुज्जते खुदा करार पाये।

3 : रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद तक़ी[अ0] से कहा कि लोग आप[अ0] की कमसिनी की वजह से चेमी गोइयां कर रहे है खुदा ने वही की दाऊद[अ0] को कि वह सुलेमान[अ0] को

अपना खलीफा बनाये दरआन्हालेकि वह बच्चे थे और बकरियां चराते थे बनी इस्राईल के आबिदो और आलिमों ने उससे इंकार किया। खुदा ने दाऊद अ० को वही की कि उन मोतरिज़ों से एक लाठी लो, और एक सुलेमान से लो और दोनों को एक घर में रख दो और कौम की मोहर लगा दो। दूसरे रोज देखो जिसकी लाठी में पत्ते लगे हो और फल भी हो वही खलीफा है दाऊद अ० ने उसकी खबर कौम को दी वह राज़ी हो गयी और उस खुदायी फैसले को मान लिया।

4 : अबू बसीर कहते है – मैं हज़रत इमाम जाफर सादिक़[अ०] की खिदमत में आया। एक पांच साला लड़का मेरी उंगली पकड़े हुए था जो बालिग न था। हजरत ने फ़रमाया क्या जवाब होगा। तुम्हारा – जब लोग तुम पर हुज्जत लाएगे इसी उम्र के मुताल्लिक़ (इशारा है हजरत हुज्जत के मुताल्लिक़ जो पांच साल की उम्र में गायब हुए)

5: रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से दरयाफ़्त किया इमाम के मुताल्लिक़ आप[अ०] ने फ़रमाया – इमाम सात वर्ष से भी कम उम्र का होता है। फ़रमाया हां पांच साल से भी कम। यह रवायत की अली बिन महज़ियार ने 221 हिजरी में।

6 : रावी कहता है – मैं ख़ुरासान में इमाम[अ०] के पास ठहरा हुआ था। मैंने कहा – ऐ मेरे सरदार अगर आप का इन्तेकाल हो जाये तो हमारा इमाम कौन होगा। फ़रमाया – मेरा बेटा अबू जाफर (गोया रावी की नजर में इमाम मोहम्मद तकी[अ०] कमसिनी की वजह से काबिले इमामत न थे) हज़रत ने फ़रमाया – खुदा ने ईसा[अ०] को रसूल व नबी बनाया ऐसे सिन में जो अबू जाफर के सिन भी कम थे।

7 : अली बिन असबात में कहा जब इमाम तकी अ० मेरे पास आये तो मैंने उनके सरापा पर नजर डाली ताकि मैं मिस्र में अपने असहाब से आपके कदो कामत बयान करूं हजरत ने मुझसे फ़रमाया – ऐ अली खुदा ने इमामत में भी वहीं हुज्जत रखी है जो नबुवत में है उसने फ़रमाया है हमने उसको हुकूमत बचपन में दे दी और जब पूरी कुव्वत को पहुंचा और चालीस बरस का हुआ। पस बचपन में देना जायज है जिस तरह चालीस बरस बाद (हजरत का मतलब यह है कि नबुवत या इमामत का इन्हेसार किसी सिन पर नहीं, यहिया बचपन में नबी हुए। यूसूफ चालीस साल बाद।

8 : मैंने इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] से कहा कि लोग आप[अ०] की कमसिनी की वजह से आपकी इमामत से इन्कार करते है फ़रमाया क्या वह उस कौलेखुदा से इंकार करते है उसने अपने नबी से फ़रमाया – तुम लोगों से कह दो कि मैं और मेरा पीर व – खुदा की बशीरत के साथ बुलाते है यहीं मेरा रास्ता है पस खुदा की क़सम अली[अ०] ने नौ साल की उम्र में पैरवीये रसूल[स०] की थी और अब मैं भी नौ साल का हूं।



## इक्यान्नवेवां बाब

## इमाम को गस्ले मय्यत इमाम ही देता है

1 : रावी कहता है कि मैंने इमाम रिज़ा[अ०] से कहा कि वाकफिया फिरका वाले जो इमाम मूसा[अ०] की मौत के क़ायल नहीं यह दलील पेश करते है कि तुम कहते हो कि इमाम को ग़ुस्ल नहीं देता मगर इमाम लेकिन मूसा काज़िम[अ०] को तो किसी इमाम ने गुस्ल देना बयान नहीं किया। लिहाज़ा वह

नहीं मरे। फ़रमाया – उन्होंने कैसे जाना कि इमाम मूसा काज़िम[अ०] को गुस्ल नहीं दिया गया है आख़िर तुमने उनसे क्या कहा। मैंने उनसे कहा – अगर मेरा इमाम यह कहे कि उनको अर्श के नीचे गुस्ल दिया गया तो सच है। फ़रमाया यह नहीं। मैंने कहा – फिर क्या कहूं। फ़रमाया उनसे कहो मैं (इमाम) ने उनको गुस्ल दिया है। मैंने कहा मैं यही कहूंगा कि आपने उनको गुस्ल दिया फ़रमाया–हां। (मुअतबर रवायत यह है कि इमाम[अ०] बाएजाज बगदाद पहुंचे और गुस्ल दिया।)

2 : मैंने इमाम रिज़ा[अ०] से सवाल किया कि इमाम को इमाम गुस्ल देता है। फ़रमाया – तुम उनसे कहो मैंने इमाम मूसा काज़िम[अ०] को गुस्ल दिया है मैंने कहा मैं यही कहूंगा कि आपने गुस्ल दिया है फ़रमाया, हां। मैंने इमाम रिज़ा[अ०] से सवाल किया, क्या इमाम को इमाम गुस्ल देता है फ़रमाया यह सुन्नत मूसा[अ०] (यानि यह तरीका जमाना मूसा[अ०] से चला आ रहा है मन्सूख नहीं हुआ। उन्होंने वादीए तह में अपने वसी को गुस्ल दिया।

3 : मैंने इमाम रिज़ा अलैह सलाम से कहा – इमाम को इमाम गुस्ल देता है जो मुन्किर है वह जानते है कि वहां गुस्ल के लिए कौन हाजिर था वह थे (मलायकाए रहमत) जो गायब होने वालो (मलायकाए अजाब से) बेहतर है यह वहीं है जो आये थे यूसूफ के पास कुंए में जबकि उनके मां बाप और घरवाले मौजूद न थे। यानि इमाम मूसा काज़िम[अ०] को मैंने गुस्ल दिया मदीना में और जिबरईल[अ०] ने बग़दाद में। लफ्ज इमाम आम है फरिश्ते पर भी इतलाक होता है।)



## बान्नवेवां बाब

# मवालीदुल्अइम्मा

1 : अबू बसीर से मरवी है कि हमने इमाम जाफर सादिक अ० के साथ सफरे हज किया। जिस साल उनके फ़र्ज़न्द इमाम मूसा काजिम अ० पैदा हुए। जब हम मुकाम अबुवा में पैदा हुए जब हम मकामे अबवा में उतरे और सुबह का नाश्ता जो उम्दा भी था और मिकदार में ज्यादा भी, हमसे सबके सामने रखा गया तो हमीदा (स०) (मादरे इमाम मूसा काजिम अ०) का कासिद आया और कहा – हमीदा कहती है क्या आप (स०) ने आलिम गुरबत में मुझे भुला दिया। मैं वह आसार पा रही हूं जो मैं वक्ते वलादत पाया करती हूं आपने हुक्म दिया था कि उस लड़के की वलादत में मुझे बेखबर न रखना यह सुनकर इमाम अ० उठ खड़े हुए और उस आदमी के साथ चले गये जब वापस आये तो असहाब ने कहा – खुदा आपको खुश रखे हमीदा ने आपको क्यों बुलाया था? फ़रमाया – खुदा ने उनको सही सालिम रखा और मुझे वह लड़का अता फ़रमाया जो उसकी मखलूक में सबसे बेहतर है और हमीदी ने मुझे ऐसे अम्र की खबर दी जिसे उन्होंने समझा मैं नहीं जानता हालांकि मैं उनसे ज्यादा जानता हूं। मैंने कहा – हमीदा ने क्या बात बतायी फ़रमाया। उन्होंने कहा – जब वह बतन से जुदा हुए तो अपने दोनो हाथ जमीन पर रखे और सर आसमान की तरफ उठाया। मैंने हमीदा खातून से कहा यह अलामत है रसूल और उसके बाद के वसी की। मैंने कहा वह क्या अलामत है जिसका ताल्लुक रसूल (स0) और वसीये रसूल से है फ़रमाया जब वह रात आयी जिसमें मेरे

परदादा का नुत्फा कायम हुआ तो एक आने वाला (फरिश्ता) एक प्याला में ऐसा शरबत लेकर आया। जो पानी से ज्यादा रकीक मस्का से ज्यादा नरम, शहद से ज्यादा मीठा और बर्फ से ज्यादा ठण्डा था और दूध से ज्यादा सफेद, वह उनको पिलाया और जमा का हुक्म दिया। पस उन्होंने ऐसा किया तो मेरे जद का नुत्फा करार पाया।

जब वह रात आयी जिसमे मेरे बाप का नुत्फा करार पाया तो आने वाला (फरिश्ता) मेरे दादा के पास आया जिस तरह परदादा के पास आया था और उनको वही पिलाया जो परदादा को पिलाया था और वही हुक्म दिया। पस उन्होंने जिमाअ किया और मेरे बाप का नुत्फा करार पाया, और जब वह रात आयी जिसमे मेरा नुत्फा करार पाया और मेरे बाप को भी वही सूरत पेश आयी और जब मेरे बेटे के हमल का वक्त आया तो यही सूरत मेरे लिए पेश आयी। मैंने भी ऐसा ही किया। मैं खुश हुआ कि खुदा मुझे बेटा देगा। पस मैंने जमा किया मेरे उस बेटे का हमल करार पाया, पस यह तुम्हारा इमाम है।

इमाम के इस्तिक़रारे हमल की यह सूरत होती है जैसा कि मैंने बयान किया। जब नुत्फा करार पाता है तो वह रहम में चार माह साकिन रहता है फिर उसमे रूह पड़ जाती है फिर खुदा हिवान नामे फरिश्ते को भेजता है वह उसके दाहिने बाजू पर यह आयत लिखता है अजरूवे सिदक़ व अदल का कलमा तमाम होगा। खुदा के कलमात को कोई तब्दील करने वाला नहीं वसमीअ व अलीम है।

और जब मां के पेट से बाहर आता है तो अपने हाथ जमीन पर रखता है और अपना सर आसमान क़ी तरफ

उठाता है जब हाथ जमीन पर रखता है तो कब्जे में करता है हर उस इल्म को जो खुदा ने नाजिल किया है आसमान से जमीन पर और जब आसमान की तरफ सर उठाता है तो रब्बुल इज्जत खुदा की तरफ से एक मुनादी उफुके आला से उसका और उसके बाप का नाम लेकर निदा करता है ऐ फलां बिन फलां तू अम्र` दीन में साबित कदम रह ताकि तुझे साबित कदम रखा जाय। मैंने तुझे कारअजीम के लिए खल्क किया है तू मेरी मखलूक का खुलासा है मेरे इसरार का अमीन है मेरे इल्म का खजाना है मेरी वही का अमीन है और जमीन पर मेरा खलीफा है।

मैंने तेरे लिए और तुझसे मोहब्बत करने वालों के लिए अपनी मोहब्बत को वाजिब किया और अपनी जन्नत को अता किया।

और मैंने अपना जवार उसके लिए जायज किया। कसम है अपने इज्जत व जलाल की जो तुझसे अदावत रखेगा उसे सख्त अजाब दूंगा अगरचे दुनिया में मैंने उसे फारिगुल बाली दी है। जब मुनादी की यह आवाज रूक जायेगी तो वह जवाब देगा मैं गवाही देता हूं गवाही दी अल्लाह ने उस अम्र की कि नहीं है कोई माबूद मगर वह और मलायका और साहेबान इल्म ने गवाही दी कि वो वाहिद व यकता है और अदल करने वाला है उसके सिवा कोई माबूद नहीं वह अजीज व हकीम है।

जब वह यह कहेगा तो खुदा उसको इल्मे अव्वलीन व आख़ेरीन अता फरमायेगा और शबे कद्र में जियारते रूह का मुस्तहक होगा। मैंने कहा—मैं आप पर फिदा हूं क्या— जिबरईल रूह नहीं है फ़रमाया—जिबरईल मलायका से है और रूह

Presented by: https://jafrilibrary.com

मखलूक अजीम है जिसका मर्तबा मलायका से ज्यादा है क्या खुदा ने नहीं फ़रमाया–नाजिल होते है मलाईका और रूह (यानि अगर मलायका और रूह जुदा–जुदा न होते तो उनको अलाहिदा जिक्र न किया जाता।)

2 : इमाम जाफर सादिक अ० ने फ़रमाया – अल्लाह तआला जब किसी इमाम को पैदा करना चाहता है तो फरिश्ते को हुक्म देता है कि वह तहत अर्श से पानी ले जाकर उसे पिलाये। इस तरह इमाम को उससे पैदा करता है इमाम चालीस दिन बाद इस तरह शिकम मादर में रहता है कि वह किसी की आवाज नहीं सुनता उसके बाद वह कलाम सुनने लगता है जब वह पैदा होता है तो यहीं फरिश्ता उसकी दोनों आंखों के दरम्यािन लिखता तम्त कलमतो रब्बिक अलख जब पहला इमाम मर जाता है तो मौजूदा इमाम के लिए नूर का एक मिनारा बुलन्द किया जाता है जिससे वह आमाले ख्लाईक को देखता है और अपनी मखलूक पर अल्लाह तआला उसके वजूद से हुज्जत तमाम करता है।

3 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ० ने जब अल्लाह इरादा करता है कि इमाम से इमाम को पैदा करें और फरिश्ते को भेजता है वह तहत अर्श से पानी लाकर पिलाता है इमाम रहमे मादर में चालीस रोज तक कोई कलाम नहीं सुनता। उसके बाद सुनता है जब पैदा होता है तो खुदा उसी फरिश्ते को भेजता है जिसने पानी पिलाया था वह उसके दाहिने बाजू पर लिखता है आया तम्मत कलमतो रब्बिक अलख जब वह साहबे अम्र इमामत बनता है तो खुदा हर शहर में उसके लिए एक मिनारा नूर पैदा करता है जिसके जरिए से लोगों के आमाल को देखता है।

4 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अ0 ने इमाम अपनी मां के पेट में कलाम सुनता है और जब पैदा होता है तो उसके दोनों शानों पर लिखता है आयात–तम्मत कलमतो रब्बिक अलख जब अम्रे इमामत उसकी तरफ मुन्तिकल होता है तो खुदा उसके लिए उमूदे नूर पैदा करता है जिससे वह हर शहर के लोगों का अमल देखता है।

5: अबू इसहाक बिन जाफर ने कहा कि मैंने अपने पदरे बुजुर्गवार इमाम जाफर सादिक अ0 को फरमाते सुना कि इमामों की मांऐ हामेला होती हैं तो उनको एक क़िस्म की सुस्ती ग़शी से मिलती जुलती लाहिक़ होती है अगर नुत्फा दिन में करार पाता है तो पूरे दिन रहती है और अगर रात में इस्तिक़रार होता है तो तमाम रात। फिर वह ख्वाब में एक मर्द को देखती है जो बशारत देता है एक अलीम व हलीम लड़के की। पस उससे हामला खुश होती है और जब ख्वाब से बेदार होती है तो उसे घर के दाहिनी तरफ से एक आवाज सुनाई देती है तुमको अलीम व हलीम लड़के की बशारत हो। अब वह अपने बदन में हल्कापन महसूस करती है और पहलू व शिकम में कुशादगी महसूस करती है जब नौ माह गुजर जाते है तो अपने घर में शदीद झटका महसूस करती है जिसे वह देखती है और सिवाय बाप के और कोई नहीं देखता। जब उसको जनती है तो बैठकर अल्लाह उसके बदन में कुशादगी पैदा करता है और इमाम सीधा पैदा होता है जमीन पर आने के बाद घूम जाता है और किबले से मुनहरिफ नहीं होता चाहे किसी तरफ हो उसका रूख हो।

फिर तीन बार छींकता है और अपनी उंगुली से हम्दे इलाही का इशारा करता है वह मशरूर व मखतून पैदा होता

है और उसके चार दांत ऊपर के हिस्से में होते है और दो दांत इधर उधर और ऐसे ही छः दांत नीचे होते है और उसके सामने का हिस्सा निखरे सोने की तरह चमकता है दिन में पैदा हो या रात में और जब अम्बिया पैदा होते है तो यही सूरत उनके लिए होती है और औसिया और अम्बिया का करीबी ताल्लुक है।

6 : हमारे बहुत से असहाब ने बयान किया कि इमाम के मुताल्लिक कलाम न करो क्योंकि इमाम बतन मादर में कलाम करता है और जब पैदा होता है तो फरिश्ता उसकी दोनों आंखों के दरमियान लिखता है आयात तम्म्त कलमतो रब्बिक अलख जब ओहदए इमामत पर फ़ायज़ होता है तो हर शहर में उसके लिए एक नूरानी मिनार बुलन्द किया जाता है जिसके जरिए से वह लोगों के आमाल को देखता है।

7 : रावी यूनुस कहता है मैंने इमाम रिज़ा[अ0] से कहा अक्सर लोग उमूद के बारें में सवाल किया करते है। फ़रमाया– ऐ यूनुस! तुमने क्या समझा कि तुम यह समझते हो कि वह सतून लोहे का है जो तुम्हारे इमाम के लिए बुलन्द किया जाता है। मैंने कहा मैं कुछ नहीं जानता। फ़रमाया – वह एक फरिश्ता होता है जो हर शहर पर मुत्तअय्यन होता है जिसके जरिए से खुदा हर शहर के आमाल को बुलन्द करता है जिसको इमाम देखता है। यह सुनकर इब्ने फुजैल ने हजरत के सर को बोसा दिया और कहा – ऐ अबू मोहम्मद (स0)! अल्लाह आप पर रहम करें और आप हमेशा ऐसी अहादीस बयान करते रहें जिनसे हमें खुशी हासिल हो।

8 : इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया – इमाम की बारह अलामतें है अव्वल यह कि वह पाक व ताहिर पैदा होता

है। खतना किया हुआ होता है जब शिकम मादर से निकलता है तो अपनी हथेलियां जमीन पर रखता है और बुलन्द आवाज से कलमा शहादतैन पढ़ता है जुनुब नहीं होता – न वह जम्हाई लेता है न अंगड़ाई। वह आगे से जिस तरह दिखता है उसी तरह पीछे से दिखता है उसके फुजले में मुश्क की सी बू होती है और जमीन उसकी जिम्मेदार होती है कि उसे छिपा ले और निगल जाये और जब वह ज़िरहे रसूल (स0) पहने तो उसके जिस्म पर ठीक हो और अगर उसका गैर पहने तो चाहे लम्बा हो या पस्त उसे ज्यादा हुआ और जब तक वह जिन्दा रहता है फरिश्ता उससे कलाम करता है।



## तिरान्नवेवां बाब

# अइम्मा अ० के अब्दान, अरवाह व कुलूब की खिलक़त

1 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक (स0) ने हमारी खिलक़त इल्लीईन से है और हमारी रूह की खिलक़त उसके माफौक और शियों की अरवाह की खिलक़त इल्लीईन से है। और उनके अजसाद की खिलक़त दूसरी चीज से है और यही वजह है कि उनके और हमारे दरम्यिान कुरबत है और उनके कुलूब हमारी तरफ मायल हैं।

2 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ0 ने कि अल्लाह ने हमको अपने नूर अजमत से पैदा किया। फिर हमारी सूरत बनायी उस तीनते मखजूना से जो तहते अर्श थी पस उस

नूर को इसमें साकिन किया और हम खुदा के एक मखलूक और नूरानी बशर बन गये जिस चीज से हम पैदा हुए और किसी मखलूक को उसने हिस्सा नहीं मिला और हमारी तीनत से हमारी शियों की अरवाह खल्क हुई और उनके बदन इस तीनते मखजूना से खल्क हुए जो तीनत के असफल में थी सिवाय अम्बिया के किसी को उस तीनत में हिस्सा नहीं मिला इसी लिए हम और वह एक है और बाकी लोग तो जहन्नम का ईंधन है।

3 : अमीरूल मोमिनीन अ० ने फ़रमाया – अर्शे इलाही के पास एक नहर है और अर्शे इलाही के नजदीक एक नूर है जिसने उस नहर को रौशन बनाया और इस नहर के दोनों तरफ दो रूहें ख़ल्क़ फरमायी है। रूहुलकुदुस और रूह मिन अम्र ही और खुदा ने दस तीनत खल्क फरमायी है पांच जन्नत से है और पांच जमीन से है फिर आपने दोनों की तफ्सीर बयान की और फ़रमाया जो कोई नबी या फरिश्ता उसके बाद पैदा हुआ उसमे दोनों रूहों में से एक रूह डाली जाती है और इसी एक रूह से नबी बनाया जाता है और रावी कहता है मैंने इमाम मूसा काजिम अ० से पूछा – जबल से क्या मुराद है फ़रमाया हम अहले बैत से गैर की ख़िलक़त जुदा है खुदा ने हमारी खिलक़त दसो तीनत से की है और हममे दोनो रूहे फूंकी है और उनको पूरी पाकीजगी अता की है अबू सामत ने रवायत की है कि जन्नत की पांच मिट्टी से मुराद जन्नते अद्न, जन्नते नईम, जन्नतुल मावा, जन्नतुल फिरदौस और जन्नतुल खुल्द है और तीनत अर्ज से मुराद मक्का, मदीना, कूफा बैतुल मुकद्दस और जायद (कर्बला) है।

4 : अबू हमज़ा समाली से मरवी है – मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से सुना कि खुदा ने हमे इल्लीईन से पैदा

किया है और हमारे शियों के कुलूब को उसी मिट्टी से पैदा किया है जिससे हमको पैदा किया और दूसरी मिट्टी से यही वजह है कि उनके दिल हमारी तरफ माईल है क्योंकि वह हमारी मिट्टी से बने है फिर यह आयत तिलावत की। नेकों की किताब इल्लीईन में है और तुम क्या जानो। इल्लीईन क्या है वह किताब मरकूम हैं जिसके गवाह मुकर्रब लोग है और हमारे दुश्मन सिज्जीन से पैदा किए गये है और उनके मुरीदो के दिल उन्हीं की मिट्टी से और बदन और मिट्टी से है, इसीलिए उनके दिल उनकी तरफ मायल है फिर यह आयत पढ़ी किताब फुज्जार सिज्जीन में है और तुम क्या जानों सिज्जीन क्या है वह किताबे मरकूम है।



## चौरान्नवेवां बाब

# तस्लीम व फ़ज़ीलते मुस्लेमीन

1 : सदीर से मरवी है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से कहा कि आप[अ०] के दोस्त बलेहाज़ अकायद मुख्तलिफ है और एक दूसरे से बेजार है फरमाया तुम्हारा उससे क्या मतलब है लोग बलेहाज़ तकलीफ तीन तरह की है अव्वल वह है जो मार्फत अइम्मा रखते है दूसरे वह है कि इन उमूर को कुबूल करते हैं जो इनसे वारिद है तीसरे वह है जो इनसे रूगरदानी करते है उनसे इख्तिलाफ रखते है।

2 : फरमाया अबू अब्दिल्लाह[अ०] ने कि अगर कोई कौम खुदाये वाहदा लाशरीक की इबादत करें और नमाज़ पढ़े और ज़कात दे और खाने काबा का हज करें और माहे रमज़ान के रोजे रखे। फिर कहे – जो कुछ उसके अल्लाह और उसके

रसूल (स0) ने तदबीर की है उसके खिलाफ उन्होंने क्यों न किया। यानि फ़ेल खुदा और रसूल (स0) पर एतराज करें या उसके दिल में भी उस किस्म का ख्याल गुजरे तो वह मुशरिक है फिर यह आयत तिलावत फरमाई। तेरे रब की कसम – वह ईमान न लायेगे जब तक ऐ रसूल (स0) तुमको अपने ज़ाती इख्तिलाफात में हुक्म करार न दे और फिर तुम्हारे फैसले से अपने दिलों में कोई तंगी महसूस न करें और तुम्हारे फैसले को पूरी तरह तसलीम न कर ले। "फिर हजरत ने फ़रमाया – तुम्हारे ऊपर खुदा और रसूल (स0) के अहकाम का तसलीम करना वाजिब है।

3 : रावी कहता है – मैंने हजरत अबू अब्दिल्लाह से कहा – हमारे करीब एक शख्स है जिसका नाम कुलीब है आपकी जो बात उससे बयान की जाती है वह कहता है मैंने तसलीम किया। इसलिये हमने उसका नाम कुलीब तसलीम रख दिया है फ़रमाया उस पर रहम करो। तुम जानते हो तसलीम क्या है हम खामोश हो गये फ़रमाया – वह कौले खुदा के सामने फरौतनी व आजिज़ी करता है खुदा फरमाता है जो लोग ईमान लाये और अमले सालेह किये और अपने रब के सामने फरौतनी की।

4 : फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने जो कोई नेक काम करेगा हम उसकी नेकी को ज्यादा करेगे इस आयत के मुताल्लिक़ की उसमें इक़्तिराफ़ से मुराद है हमारी बात को तसलीम करना और हमारे कौल की तसदीक़ करना। और हम पर झूठ न बोलना।

5 : फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ0] ने कि आया कद अफ्लहल मोमिनून के मुताल्लिक़ क्या जानते हो। वह

मोमिन कौन है रावी ने कहा – आप (स0) बेहतर जानते है। फ़रमाया – फ़लाह पाने वाले वह मोमिन है जो हमारी अहादीस को तसलीम करने वाले है यह तसलीम करने वाले नुजबा कहलाते है पस मोमिन ग़रीब है यानि अपने असली वतन से दूर उनकी तदाद कम है वह यहां बेगानों में जिदंगी बसर करते है पस खुशखबरी जन्नत की उन गुरबा के लिए।

6 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैह सलाम ने जो कोई खुश होना चाहता है उस पर की उसका ईमान कामिल हो तो उसको चाहिए कि आले मोहम्मद (स0) के तमाम अकवाल के मुताल्लिक़ मेरा कौल कुबूल करें ख्वाह वह पोशीदा हो या जाहिर और वह की जो मुझ तक तुमसे पहुंचाना है और वह मुझ तक नहीं पहुंचा।

7 : इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ0] ने फ़रमाया – अल्लाह ने अपनी किताब में अमीरूल मोमिनीन[अ0] से खिताब किया है रावी कहता है – मैंने पूछा कहां फ़रमाया सूरह निसा की उस आयत में अगर वह लोग जिन्होंने अपने नफ्सों पर जुल्म किया है तेरे पास आये अल्लाह से इस्तिग़फार करें और रसूल (स0) भी उसके लिए इस्तिग़फार करें तो वह अल्लाह को तौबा कुबूल न करने वाला और रहम करने वाला पायेगे। कसम है तेरे रब की वह ईमान न लायेगे जब तक अपने निजी मामलात में ऐ रसूल (स0) तुझे अपना हकम न बना ले उन मामलात में जिनका अहद किया है अगर खुदा मोहम्मद को मार दे तो यह अम्र ख़िलाफ़त को बनी हाशिम में न आने देगें और उससे अपने नफ्सों में कोई तंगी न पाएगे। इस अम्र में कि जो तूने उनके मुताल्लिक़ फैसला कर दिया है और दिल तंग होगें उससे जो तूने फैसला किया है क़त्ल या अफ्व

और यह कि तेरे हुक्म पूरी तरह माने।

8 : अबू बशीर ने इमाम जाफर सादिक अ0 से उस आयत के मुताल्लिक़ पूछा – वह लोग बात को सुनते है और जो अच्छी होती है उसकी पैरवी करते हैं फ़रमाया ये वह लोग है जो अहादीस आले मोहम्मद (स0) को तसलीम करते है और जो सुनते है उसमें कमी करते है न ज्यादती। जो उन्होंने सुना वही बयान किया।



## पच्चानवेवां बाब

## जब लोग आमाले हज से फारिग़ हों तो उन पर वाजिब है कि इमाम की खिदमत में हाजिर हों और मसाएले दीन मालम करें और उनकी मोहब्बत व विलायत का इजहार करें

1 : रावी कहता है इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने लोगो को काबे के गिर्दतवाफ करते देखा। फ़रमाया यह लोग जाहिलयत में भी इसी तरह तवाफ किया करते थे उन्हें हुक्म दिया गया है कि काबे का तवाफ करके हमारे पास आये और अपनी वलायत व मोहब्बत हमारे लिए जाहिर करें और अपनी नुसरत को हम पर पेश करें तब उनका हज कुबूल होगा) फिर यह आयत पढ़ी (इब्राहिम (स0) ने खानए काबा बनाते वक्त खुदा से दुआ की। लोगों का दिल मेरी जुर्रियत की तरफ झुका देना यानि उनके दिलों में मोहब्बत दे देना।

2 : सदीर ने रवायत की है की मैंने इमाम मोहम्मद बाकर अ० से सुना – जबकि मैं खानए काबा से निकल रहा था वह दाखिल हो रहे थे मेरा हाथ पकड़कर काबे के सामने आये और फ़रमाया – ऐ सदीर लोगों को हुक्म दिया गया है कि इन पत्थरों के पास आये और तवाफ करें फिर हमारे पास आये और अपनी मोहब्बत का इजहार करें। खुदा फरमाता है मैं गुनाहों का बख्शने वाला हूं उसका जो तौबा करें और अमले सालेह करें और हिदायात याफ्ता हो। फिर अपने दाहिने हाथ से अपने सीने की तरफ इशारा करके फ़रमाया – हमारी विलायत की तरफ आये फिर फ़रमाया – ऐ सदीर मैं तुमको दिखाऊं दीन खुदा से रोकने वाले को, फिर अबू हनीफा और सुफियान सूरी की तरफ देख कर फ़रमाया – कि जमाने में ये है मस्जिदों में बैठते है फ़रमाया – ये है दीन खुदा से रोकने वाले, बगैर अल्लाह और किताबे मुबीन की हिदायत के। यह अखाबिस जब अपने घरों में बैठते है तो लोग इनके गिर्द जमा हो जाते है लेकिन यह इनको न खुदा के मुताल्लिक़ कोई खबर देते है न रसूल के मुताल्लिक़।

3 : इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने जब लोगों को मक्का में मुनासिके हज बजा लाते देखा तो फ़रमाया ये लोग भी जमानए जाहिलयत की तरह अमल करने वाले है खुदा की कसम सिर्फ इसी का हुक्म इनको नहीं दिया गया। बल्कि यह हुक्म दिया गया है कि वह अपने नफ्सों की कसाफत दूर करें अपनी नजरों को वफा करें हमारे पास आये, हमारी मोहब्बत का ऐलान करें और अपनी नुसरत को हमारे लिए पेश करें।



## छियान्नवेवां बाब

# मलायका अइम्मा अ० के घर में आते हैं उनके फ़र्श पर क़दम रखते हैं और उनके पास ख़बरे लाते हैं

1 : रावी कहता है मैं दिन और रात में एक बार से ज्यादा नहीं खाया करता था इमाम जाफर सादिक अ० की खिदमत में ऐसे वक्त में जाता जब दस्तरखान उठ गया हो और हजरत के सामने खाने का सामान न हो। एक बार जो मैं हजरत की खिदमत में आया तो आपने दस्तरखान बिछवाया और मैंने हजरत के साथ खाया लेकिन मुझे कोई तकलीफ न हुई। लेकिन अगर किसी और के साथ खा लेता तो बेचैन रहता और नफख की वजह से नींद न आती। इसकी खबर मैंने हजरत को दी। फ़रमाया – ऐ अबू सब्बार तुम खाते हो उन लोगों का खाना जो खुदा के नेक बन्दे है मलाईका उनकी फर्श पर आकर उनसे मुसाफा करते है मैंने कहा क्या वह आप पर जाहिर होते है यह सुनकर हजरत इमाम अ० ने अपने एक लड़के के सर पर हाथ फेरा और फ़रमाया वह हमारे बच्चों पर हमसे ज्यादा मेहरबानी करते हैं।

## तौजीह

बाब दोम की एक हदीस में बताया गया है कि अइम्मा मलायका को नहीं देखते। और इस हदीस से साबित होता है कि देखते है अल्लामा मजलिसी अलैहिर्रहमा ने मिरातुल उकूल में तहरीर फ़रमाया है कि यहां मुराद यह है कि फरिश्ते

को असली सूरत में नहीं देखते।

2 : रावी कहता है मुझसे इमाम जाफर सादिक अ0 ने फ़रमाया – ऐ हुसैन! और अपना हाथ घर के एक तकिये पर मार कर कहा – यह है वह जिस पर मलायका ने देर तक तकिया किया है और बसा औकात हमने उनके परों के रेजों को चुना है।

3 : अबू हमजा समाली से मरवी है कि मैं हजरत अली बिन हुसैन की खिदमत में हारिज़ हुआ कुछ देर मुझे बाहर रूकना पड़ा। फिर मैं अन्दर दाखिल हुआ देखा कि हजरत कोई चीज चुन रहे है और परदे के अन्दर हाथ से उनको दे रहे है जो घर में है मैंने कहा यह क्या चीज आप चुन रहे है फ़रमाया ये मलायका के परों के रेशे है उनके जाने के बाद जब हम खलवत में होते है तो इनको जमा करके अतफाल के लिए तावीज बनाते है। मैंने कहा हुजूर क्या वो आप के पास आते है फ़रमाया हम अपनी तकियों से हरकत नहीं कर पाते कि वह आ जाते है।

4 : रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा[अ0] से सुना कि जो फरिश्ते जमीन पर किसी अम्र के लिए उतरता है वह इमाम वक्त के पास जरूर आता है और उस अम्र को उसके सामने पेश करता है खुदा की तरफ से मलायका इमामे वक्त के पास आते जाते रहते है।



## सत्तानवेवां बाब

# जिन अइम्मा अ० के पास आते हैं उन से अहकामे दीन दरयाफ़्त करते हैं और उन के काम अन्जाम देते हैं

1 : सादुल अश्काफ से मरवी है कि मैं एक दिन इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] की ख़िदमत में आया। हजरत ने फ़रमाया ठहर जाओ इतनी देर गुजरी कि मेरे ऊपर धूप आ गयी और मैं इधर उधर सायों में अपने आप को बिठाता रहा। थोड़ी देर बाद एक कौम मेरी तरफ से गुजरी। गोया वह लाउमरी में जर्द रंग टिड्डियों की तरह थे उन पर चादरें पड़ी थी इबादत में उनको इन्तिहाई कमंजोर बना दिया था उस कौम के हुस्ने सूरत में मुझे अपनी हालत से गाफिल बना दिया था जब मैं हज़रत के पास आया तो आपने फ़रमाया – मैंने तुमको तकलीफ दी। मैंने कहा मैं तो सब तकलीफ़ भूल गया इन लोगों की अच्छी सूरत देखकर जो मेरी तरफ़ से गुजरे टिड्डियों की तरह उनके पीले रंग थे और इबादत ने उनको लाग़र बना दिया था फ़रमाया वह तुम्हारे भाई मोमिन थे मैंने कहा वह आप[अ०] के पास आते है फ़रमाया – हां। आते है हमसे मसायले दीन और हराम व हलाल को दरयाफ्त करते है।

2 : रावी कहता है कि हम इमाम जाफर सादिक अ० के दरवाजे पर थे कि हमारी तरफ से एक कौम गुजरी, जाटो की सूरत की अजारे पहने और चादरे ओढ़े। पस हमने इमाम से उनके मुताल्लिक़ पूछा। फ़रमाया यह तुम्हारे भाई है कौमे

ज़िन से।

3 : सादुल अशकाफ रावी है कि मैं इमाम मोहम्मद बाक़िर<sup>अ०</sup> के दरवाजे पर आया और इज़्ने दुखूल चाहा। नागाह कुछ ऊंट कतारों में नजर आये और आवाजें बुलन्द हुई फिर कुछ लोग जाटों से मुसाबा सरों पर इमामा बांधे निकले। जब मैं ख़िदमते इमाम में आया तो आपने कहा—आज आपने इज़्न में बड़ी ताखीर की और मैंने एक कौम को निकलते हुए देखा जो इमामे बांधे हुए थे मैंने उनको न पहचाना। फ़रमाया ऐ साद क्या तुमने नहीं समझा कि वह कौन थे। मैंने कहा नहीं – फ़रमाया, वह तुम्हारे भाई कौम ज़िन से थे जो हमारे पास अपने हराम व हलाल और दीनी मसायल को पूछने आये थे।

4 : सदीरूस्सैर॰ से रवायत है कि इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने कुछ जरूरतों के लिए मदीना भेजा। मैं मक्के से चला। जब दर्राह रूहा पहुंचा। तो मैं अपने ऊंट पर था कि एक आदमी को कपड़ों में लिपटा हुआ देखा मैंने गुमान किया कि शायद वह प्यासा है मैंने तरफेआब उसकी तरफ बढ़ाया। उसने कहा मुझे इसकी जरूरत नहीं, उसने मुझे तहरीर दिखाई जिसकी मोहर ताजा थी मैंने मोहर पर नजर डाली तो वह इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] की मोहर थी मैंने उससे कहा। तुमने इस तहरीर वाले से कब मुलाकात की थी उसने कहा – अभी इस तहरीर में कुछ बातें है जिनके मुताल्लिक तुझे हुक्म दिया गया है उसके बाद वह शख्स मेरी नजरों से गायब हो गया। मैं इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] के पास आया और उनसे बयान किया कि एक शख्स मेरे पास आपकी तहरीर लाया। जिस पर आपकी ताजा मोहर थी फ़रमाया – ऐ सदीर हमारे कुछ खिदमतगार जिन्हें जब जल्दी का कोई काम होता

है तो हम उनको भेजते है।

एक और रवायत में है कि हजरत ने फ़रमाया – हमारे पैरो जिन्न भी इसी तरह है जैसे इंसान, जब हम चाहते है तो उनको भी किसी काम के लिए भेज देते है।

5 : रावी कहता है कि हकीमा बिन्ते इमाम मूसा काजिम अ0 ने बयान किया कि मैंने इमाम रिज़ा[अ0] को लकड़ी की टाल के दरवाजे पर खड़ा देखा। आप किसी से बातचीत कर रहे थे मगर मुखातिब नजर न आता था। मैंने कहा आप किससे बात कर रहे है फ़रमाया ये आमिर ज़हज़ानी है। मुझसे कुछ पूछ रहा है और शिकायत कर रहा है मैंने कहा – मैं उसका कलाम भी सुनना चाहती हूं फ़रमाया – अगर तुमने सुना तो एक साल तक तुमको बुखार आएगा। मैंने कहा – मैं तो सुनना ही चाहती हूं। फ़रमाया – अच्छा सुनो। मैंने बुलबुल की सी बारीक आवाज सुनी और मुझे बुखार आया जो एक साल तक रहा।

6 : जाबिर ने इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ0] से रवायत की है कि एक रोज़ अमीरूल मोमिनीन[अ0] मिमबर पर खुतबा पढ़ रहे थे। कि एक अज़दहा मस्जिद की एक दरवाजे से आता दिखाई दिया। लोगों ने उसको मार डालने का इरादा किया। अमीरूल मोमिनीन[अ0] ने रोका लोग रूक गये अज़दहा सीधा मिमबर के पास आया। अमीरूल मोमिनीन[अ0] पर सलाम किया – हज़रत ने उसको ठहर जाने का इशारा किया। यहां तक कि हज़रत खुतबे से फ़ारिग़ हों जब फ़ारिग़ हुए तो वह आगे बढ़ा। आपने पूछा तू कौन है उसने कहा कि मैं अम्र बिन उस्मान आपका ख़लीफा हूं क़ौमे जिन्न पर। मेरा बाप मर गया है और वसीयत की कि मैं आपके पास आऊं आपकी

राय मालूम करूं। पस आपका मेरे लिए क्या हुक्म है। हजरत ने फ़रमाया – मैं तुझे अल्लाह से डरने की हिदायत करता हूं और तू अपने बाप का कायम मुकाम बनकर अपनी कौम को हुकूमत कर तू उन पर मेरा ख़लीफ़ा है। पस वह हज़रत से रूख़सत होकर चला गया और क़ौमे जिन्न मे हज़रत का खलीफा करार पाया। मैंने कहा क्या उमरू पर यह वाजिब था कि वह आपके पास आए। फ़रमाया – हां।

7 : रावी कहता है मैं और जाबिर बिन यजीद जाफी सफर हज पर एक ही ऊँट पर थे जब हम मदीना पहुंचे तो जाबिर इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० से मिलने गये जब वहां से लौटकर आये तो खुश व खुर्रम थे जब हम मंजिले अखीर जा पर पहुंचे तो इतनी ही दूर है जैसे मक्का मुकर्रमा से मंजिल फैद, मदीना की तरफ जुमे का दिन था। हमने नमाज जोहर पढ़ी और जब ऊंट पर बैठ कर चलने लगे तो एक शख्स बड़े लम्बे कद का आया जिसके पास एक खत था जो उसने जाबिर को दिया। जाबिर ने लेकर उसे चूमा और आंखों से लगाया। यह खत इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० का था जिस पर ताजा मोहर लगी हुई थी जाबिर ने उससे पूछा। तुम इमाम के पास से कब चले थे। उसने कहा – अभी–अभी (यह कासिद कौम जिन्न से था) जाबिर ने कहा – कब्ल नमाज या बाद नमाज उसने कहा बाद नमाज जाबिर ने मोहर तोड़ी और खत पढ़ने लगा। उसके चेहरे से परेशानी का इजहार हो रहा था उसने खत को अपने पास रख लिया। उसके बाद मैंने उसको हंसते हुए और खुश होते फिर न देखा उसके बाद हम कूफा की तरफ चले। जब कूफा पहुंचे तो मैंने अपने मुकाम पर रात बसर की। जब सुबह हुई तो मैं जाबिर को

सलाम करने के लिए गया। मैंने उसको इस हाल में देखा कि उसके गले में एक थैला लटका है और लकड़ी पर सवार है औरक ह रहा है मन्सूर बिन जमहूर को मैं देख रहा हूं। ऐसा अमीर जिसपर किसी का हुक्म नहीं और इसी मजमून के कुछ इश्आर पढ़ रहा था उसने मुझे देखा और मैंने उसको। लेकिन उसने मुझसे कुछ कहा नहीं और न मैंने कोई बात की।

मैं इस हाल में उन्हें देखकर रोने लगा। मेरे पास और जाबिर के पास बहुत से लड़के और बड़े जमा हो गए और लोग कह रहे थे जाबिर दीवाने हो गए वह इसी हाल में कूफा के महल्ला रहबा में पहुंचे और लड़को और आदमियों के साथ इधर उधर घूमने लगे चन्द रोज न गुजरे थे कि हशाम बिन अब्दिल मलिक ने वालीए कूफा को लिखा कि जाबिर को तलाश करो और कत्ल करके उसका सर मेरे पास भेज दो। उसने अपने दरबारियों से पूछा यह जाबिर कौन है उन्होंने कहा यह शख्स साहिबे इल्म व फज़ल है आलिम हदीस है और हाज़ी है लेकिन मजनू हो गया है कूफा के मोहल्ला रहबा में लकड़ी के घोड़े पे सवार लड़कों के साथ खेलता कूदता है हाकिम कूफा यह सुनकर बगर्ज तस्दीक रहबा में पहुंचा तो देखा वह बच्चें के साथ अपने लकड़ी के घोड़े पे सवार लड़को के साथ खेल रहे है यह देख कर उसने कहा – खुदा का शुक्र है कि उसने मुझे इनके कत्ल से बचा लिया। चन्द रोज न गुजरे थे कि मन्सूर अब्बासी (गालिबन कातिब ने इब्ने जमहूर गलती से लिखा है) कूफा में दाखिल हुआ और उसने वहीं किया जो जाबिर ने कहा था।



## अठान्नवेवां बाब

# अइम्मा अ० अपनी हुकूमत में दाऊद व सुलेमान अ० की तरह बग़ैर बय्यिना के फ़ैसला करते हैं

1: अबू उबैदा से मरवी है कि जब इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 का इन्तेकाल हुआ तो मैं मौजूद था। हम इस तरह मुतरदि्द थे जैसे वह बकरी जिसका चरवाहा न हो। और हमसे सालिम इब्ने अबी हफ्सा ने मुलाकात की वह मुझसे कहने लगा। अब तुम्हारा इमाम कौन है मैंने कहा – आले मोहम्मद के इमाम, उसने कहा – तुम खुद भी हलाक हुए और दूसरों को भी हलाक किया। क्या तुमने नहीं सुना कि इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 फ़रमाया करते थे कि जो कोई ऐसी हालत में मर गया कि उसका कोई इमाम नहीं तो वह कुफ्र की मौत मरा। मैंने कहा अपनी जान की कसम जरूर ऐसा ही है और उससे पहले भी। वह दो तीन मर्तबा ऐसा कह चुका था मैं इमाम जाफर सादिक अ0 के खिदमत में आया और अर्ज की सालिम ऐसा ऐसा कहता है फ़रमाया – ऐ अबू उबैदा हममे से जो कोई मरता है तो जरूर अपने बाद ऐसे शख्स को जरूर छोड़ता है जो उसी की मसल अमल करने वाला हो और उसी की सी सीरत रखता हो। उसी की तरह खुदा की तरफ बुलाने वाला हो। ऐ अबू उबैदा! जो दाऊद को खुदा ने अता किया था। उसके पाने में सुलेमान के लिए कोई चीज मानेअ नहीं हुई फिर फ़रमाया – ऐ अबू

उबैदा जब कायम आले मोहम्मद (स0) का जहूर होगा तो वह दाऊद सुलेमान अ0 की तरह बगैर गवाह लिए मुकदमात का फैसला करेगे।

2 : रावी कहता है मि मैंने इमाम जाफर सादिक अ0 से सुना कि जब तक दुनिया चलती रहेगी एक शख्स मुझसे उसके खातमे से पहले जाहिर होगा जो आले दाऊद की तरह हुकूमत करेगा उसे मुकदमात के फैसले में गवाह की जरूरत न होगी वह हर शख्स को उसका हक देगा।

3 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक अ0 से कहा कि जब आप किसी क़ज़िये का फैसला करते है तो कैसे करते है फ़रमाया – हुक्मे खुदा से उसी तरह जैसे दाऊद अ0 करते थे जब कोई ऐसा मामला सामने आता है जिसका इल्म हमको न हो तो रूहुलकुदस हमको बता देती है।

4: रावी कहता है मैंने अली बिन हुसैन से पूछा कि आप (स0) किस तरह फैसला करते है फ़रमाया – आले दाऊद की तरह, और जब हम किसी चीज से आजिज होते है तो रूहुलकुदस के जरिए बता दिया जाता है।

5 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक अ0 से पूछा कि अइम्मा की मंजिलत क्या है फ़रमाया वही जो जुल्करनैन की है या यूशाअ की या आसिफ वजीर सुलेमान की। रावी ने कहा आप कज़ा का फैसला कैसे करते है फ़रमाया जो हुक्म अल्लाह होता है उसके मुताबिक और आले दाऊद के मुताबिक और मोहम्मद मुस्तफा (स0) के फैसले के मुताबिक और हमारी तल्कीन रूहुलकुदूस से होती है।



## निन्यान्वेवां बाब

# आले मो० अ० सर चश्मए इल्म है जिससे लोग सैराब होते हैं

1 : रावी कहता है – मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० से सुना, आप (स०) के पास कुछ लोग कूफा के बैठे हुए थे मुझे ताज्जुब है उन लोगो पर जो यह कहते है कि उन्होंने कुल इल्म हासिल किया रसूल अल्लाह (स०) से और उस पर अमल किया और हिदायत पायी और आनहज़रत (स०) के अहलेबैत (स०) ने उनका इल्म हासिल न किया। दरआन्हालेकि हम हज़रत के अहले बैत (स०) और उनकी ज़ुर्रियत है हमारे घरों में वही नाजिल हुई और लोगों को इल्म हमारे घर से हासिल हुआ। क्या वह यह समझते है कि उन्होंने तो इल्म हासिल किया और हिदायत पायी और हम जाहिल रहे और गुमराह हुए। यह अम्र मुहाल है।

2 : रावी कहता है मंजिले साअलबीर पर एक शख्स इमाम हुसैन अ० से मिला जबकि आप (स०) कर्बला जा रहे थे जब वह हजरत (स०) के पास आया तो सलाम किया। हज़रत ने पूछा तुम किस शहर के रहने वाले हो। उसने कहा– मैं कूफा का बाशिन्दा हूं फ़रमाया – ऐ कूफ़ी भाई अगर तुम मुझे मदीना में मिलता तो मैं तुझको अपने घर में जिबरईल का वह निशान और मेरे जद पर वहीं आने की जगह दिखाता। ऐ मर्द कूफ़ी लोगों ने हमारे सर चश्मे इल्म से सैराबी हासिल की। पस क्योंकर मुमकिन है कि वह़ तो

आलिम हो जाए और हम जाहिल रहे यह नहीं हो सकता।

□ □ □

## सौवां बाब

# जो अम्रे हक़ लोगों के पास है वह इनको अ० से मिला है और जो उनसे नहीं वह बातिल है

1 : रावी कहता है मैंने सुना इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० से कि नहीं है किसी के पास हक और सवाब और न किसी में हुक्म खुदा के मुताबिक हक का फैसला किया मगर यह की हम अहलेबैत (स0) ही से उसको मिला है और जब ऐसे अमूर उनसे शाये हो तो उनमें जो मबनी बरखता होगे वह उनकी तरफ से होगे और जो मबनी बरसवाब होगे वह अली[अ०] की तरफ से होगे।

2 : जुरारा से मरवी है कि इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] से सुना जबकि एक मर्द कोफी ने अमीरूल मोमिनीन[अ०] के उस कौल के मुताल्लिक सवाल किया। जो चाहो मुझसे पूछ लो, पस जो तुम मुझसे पूछोगे मैं उसके मुताल्लिक तुमको खबर दूगां फ़रमाया – जिसके पास जो इल्म है वह अमीरूल मोमिनीन ही से उसको हासिल हुआ है लोग जिधर चाहे चले जाये वल्लाह जो कुछ निकला है यहां से निकला है और इशारा किया अपने घर की तरफ।

3 : रावी कहता है कि इमाम बाक़िर[अ०] ने सलमा और हुक्म से फ़रमाया कि मशरिक हो या मगरिब, जहां कहीं इल्म

सही पाया जायगा वह हम अहले बैत (स0) ही से लोगों को मिला होगा।

4 : रावी कहता है कि इमाम जाफर सादिक अ0 ने फ़रमाया कि हुक्म उन लोगो में से है जिनके बारे में खुदा ने फ़रमाया कुछ लोग कहते है कि हम अल्लाह पर और रोज कयामत पर ईमान ले आए है हालांकि वह मोमिन नहीं है हुक्म मशरिक में हो या मगरिब में हो वल्लाह नहीं पहुंचेगा इल्म उसको मगर हम अहले बैत से जिन पर जिबरईल नाजिल हुए।

5 : खुदा की कसम इल्म हासिल नहीं होगा। इल्ला अहले बैत (स0) नबुवत, जिनके ऊपर जिबरईल नाजिल हुए।

6 : सईद मखरूदमी से मरवी है कि मैं इमाम जाफर सादिक अ0 के पास बैठा था कि आबाद बिन कसीर आबिद बसरा और इब्ने शरीह फक़ीहे मक्का भी आ गये उस वक्त आपकी खिदमत में मैमून गुलाम इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 भी मौजूद था। आबाद बिन कसीर ने हजरत से पूछा – रसूल अल्लाह को कितने पारचों में कफन दिया गया। आपने फ़रमाया – तीन कपड़ों में दो सिहारा (एक किस्म का कपड़ा) एक जसरा (नाम एक कपड़े का) चूंकि चादर कम थी इसलिए दो कपड़े और शामिल किए गए। आबाद बिन कसीर ने उसको न माना। हजरत ने फ़रमाया मरियम के लिए जिस दरख्त से खुरमें गिरे थे वह अजवा खुरमा था और यह तुख्म आसमान से उतरा था पस फ़र्क़ है उस दरख्त के खुरमों में जो उसके तुख़्म से उगा हो और उस दरख्त के खुरमों में जो गिरे हुए खुरमे की गुठली से पैदा हुए कि उसमे सिर्फ रंग ही

होता है आबाद ने सरीह से कहा यह मिसाल हमारी समझ में तो नहीं आयी। बिन सरीह ने कहा – उस गुलाम से पूछो यानि मैमून से, जब उससे पूछा तो मैमून ने कहा क्या तुम नहीं समझे हजरत ने क्या फ़रमाया। उसने कहा नहीं मैमून ने कहा – हजरत ने यह मिसाल दी है अपने नफ्स से और तुम्हें बताया है कि मैं औलाद से हूं और यह कि हमारे पास इल्मे रसूल (स0) है जो हमसे लिया है वह सवाब है और जो हमारे गैर से लिया जाए वह लुक़ात है यानि नीचे गिरा हुआ और चुना हुआ।



## एक सौ एकवां बाब

# कलाम अइम्मा अ० मुश्किल और निहायत मुश्किल है

1 : जाबिर से मरवी है कि रसूल अल्लाह ने फ़रमाया कि हदीसे आले मोहम्मद मुश्किल से मुश्किल तर है (क्योंकि इसमे ज़न व कयास को दखल नहीं) पस उस पर नहीं ईमान लाएगा मगर मलके मुक़र्रब या नबी मुरसल या वह बन्दा मोमिन जिसके ईमाने क़ल्ब का इम्तिहान खुदा ने ले लिया हो। अगर कोई हदीस आल मोहम्मद तुम्हारे सामने आए और उससे तुम्हारे कुलूब में नरमी और शनासाई हो तो उसे कुबूल कर लो और उससे दिलगिरफ्तगी हो और अजनबी सी मालूम हो तो उसको अल्लाह और रसूल (स0) और आलिम आले मोहम्मद (स0) के अकवाल की तरफ रूजू करो (यानि उनके मुवाफिक हो तो मान लो) जहन्नुमी है वह शख़्स जो तुमसे

कोई हदीस ऐसी बयान करें जो आले मोहम्मद (स0) से मुताल्लिक़ नहीं, ऐसा नहीं है वल्लाह ऐसा नहीं है कि उनसे गलत हदीस बयान की जाए और उनकी सही हदीस से इंकार कुफ्र है।

2 : इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 से मनकूल है कि रावी ने बयान किया कि एक दिन मैंने इमाम जैनुल आब्दीन अ0 से तक़य्या के बारे में दरयाफ्त किया। आप (स0) ने फ़रमाया, अगर अबू जर जान जाते कि सलमान के दिल में क्या है तो उनको कत्ल कर देते दरआन्हालेकि रसूल अल्लाह ने उनके दरमियान भाईचारा भी कायम कर दिया था तमाम लोगो का जिक्र ही किया है बेशक उल्मा का इल्म सअब व मुसतसअब है नहीं बरदाश्त कर सकता। उसको मगर नबीये मुरसल या मुक़र्रब या वह मर्दे मोमिन जिसके कल्ब का खुदा ने इम्तिहान ले किया हो, सलमान उल्मा में से थे और वह हम अहले बैत में से थे इसी लिए उनकी निसबत ओल्मा से है।

मजकूरह बाला दो हदीसो के मुताल्लिक़ अल्लामा मजलिसी ने मिराअतुलउकूल में तहरीर फ़रमाया है।

साअब से मुराद वह चीज जो फी नफ्सेही दुश्वार हो और मुसतसअब से वह है जिसको लोग दुश्वार समझें।

## तौजीह

इस हदीस के मुताल्लिक हमारी हदीस सअब व मुत्साअब है जिसका तहमल नहीं करता। मलके मुक़र्रब या नबीये मुरसल या वह मर्द मोमिन है जिसके ईमान का अल्लाह ने इम्तिहान कर लिया है बसायेरूद्दरजात में अमीरे कूफ़ी से रवायत की गई है कि अल्लाह क़ी तारीफ नहीं की जा सकती, रसूल की तारीफ नहीं की जा सकती, मोमिन की

तारीफ नहीं की जा सकती पस जो कोई उनकी हदीस बरदाश्त करेगा उसने गोया उनकी हद कायम की। उसने उनका वस्फ़ किया और जिसने उनके कमाल की तारीफ की उसने गोया उनका अहाता कर लिया और उनसे जयादा आलिम बन गया और अमीर ने कहा कि हम उनके मासवां से कतई ताल्लुक करके उन्हीं की बात पर इत्तिफा करते है और यह भी कहा कि उनकी अहादीस का हमल हर शख्स पर दुश्वार है साअब वहीं है जिस पर कोई काबू न पाये और अगर पाये तो वह साअब नहीं होगी।

यह रवायत मुफज़्जल, इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० ने फ़रमाया – हमारी हदीस साअब व ज़कवान व मुसतसअब अजवद है नहीं बरदाश्त करता उसको मगर मुक़र्रिब फ़रिश्ता या नबीये मुरसल वह मोमिन जिसके ईमान का खुदा ने इम्तिहान कर लिया हो साअब वह है जिस पर काबू न हो और मुत्साअब वह है जिसको देखकर भागा जाय ज़कवान से मुराद ज़कावत मोमिनीन है और अजवद वह है कि न ताल्लुक हो इंसान का अपने सामने या पीछे की चीज से। खुदा ने फ़रमाया है – नज़ल–अहसन–अलहदीस और अहसन हदीस हमारी हदीस है कि मख़लूक़ में कोई उसकी कमाले अम्र का तहमिल नहीं कर सकता और न उस काबिल होता है कि उसकी हदबन्दी कर सके क्योंकि जो ऐसा करेगा तो उससे बड़ा साबित हो जाएगा हमारे अइम्मा के अहादीस ने अक्सर ऐसी है जिनमे अजीब असरार बयान किए गये है और नवदिर अहवाल पर मुश्तमिल है और उनके मौजिज़ात के हामिल है और उनमें दक़ीक़ मसायल है हद और मिआद और कज़ा व कद्र वगैरह के मुताल्लिक़ आम लोग कि अक्लें उनकी समझने

से कासिर है और उनकी गहराईयों तक नहीं जा सकते और चूंकि उनकी नज़र ज़ाहिर पर होती है लिहाज़ा और घबरा जाते है और अहले बिदअत की गलत बयानियों में आकर गुमराह हो जाते है और बजाए अइम्मा हक के अइम्मा बातिल की तरफ रूजू करने लगते है लेकिन जो लोग मोमिनीन कामिलीन हैं उन असरार व गवामिज तक रसाई हासिल करके उनका तहम्मुल करते हैं और उनको अपने सीने में महफूज रखते है। जौहरी ने कहा है कि जब कोई हदीस मासूम समझ में न् आये और दिलगिरफ्ता हो तो कुरान और मोहम्मद (स0) और आले मोहम्मद (स0) की अहादीस से उसका हल तलाश करो जहां हमारी फहम की रसाई न हो और जो मसायल हमारी हद व अक्ल से बाहर हो तो उसके मुताल्लिक़ अइम्मा हक से सवाल करो व तुम्हें समझा देंगे जिससे तुम्हारा कलबी इजतिरार दूर हो जाएगा इसी तरह इस आयत की वलालत है .व लौ रूद्दूहो इलर्रसूले अलख़ और बसायर में है कि वह शकी हलाक होगा बावजूद यह जानने के की यह हदीस मासूम है उसे इंकार कर दे। उससे इंकार करने वाला काफिर होगा और कुफ्र से मुराद यहां मुकाबिल कमाले ईमान है और ईमान से तसलीमे ताम है यानि कौले मासूम को पूरी तरह तसलीम करना।

बसायर में है कि सुफियान बिन समत ने इमाम जाफर सादिक अ0 से कहा– अगर एक शख्स आप (स0) की तरफ से हमारी तरफ आए और हमको एक ऐसे अम्र अजीम की खबर दे जिससे हमारे सीनों में तंगी पैदा हो और हम उसकी तकजीब कर दें। तो क्या यह दुरूस्त होगा। हजरत ने फ़रमाया – क्या वह हमारी हदीस कह कर बयान करता है

फ़रमाया – जी हां, फ़रमाया – कया वह दिन को रात और रात को दिन कहता है मैंने कहा – ऐसा तो नहीं है आंप (स0) ने फ़रमाया – तो इस बात को हमसे पहले पूछो। अगर वे पूछे ही तुमने तकजीब कर दी तो गोया हमारी तकजीब की।

सुदूक अलैहिर्रहमा ने सिल में बअस्नादे सही अबू बसीर से रवायत की है कि इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया मत झुठलाओ उस हदीस को जो तुमसे कोई मरजिया या कादरिया या खारजी हमारी तरफ मन्सूब करके बयान करें। क्योंकि तुम क्या जानो कि शायद उसमें कोई बात हक हो ऐसी सूरत में तुम अल्लाह को झुठलाओगे, यानि महज अपनी राय से तकज़ीब न करनी चाहिए तावकतिया उसके ततबीत आयात और अखबार मुत्वातेरह से न करली जाये। फ़र्क़ है रद्देख़बर उसकी तकजीब में और उसके कुबूल करने और उस पर अमल करने में, माफी अलअखबार में है कि रसूल अल्लाह (स0) ने फ़रमाया – एक शख़्स अपने फर्श पर तकिया लगाए बैठा हुआ और मेरी तकजीब करें। लोगों ने पूछा – या रसूल अल्लाह (स0) वह कौन है जो आप (स0) की तकजीब करता है फ़रमाया यह वह है कि जो मेरी हदीस सुनकर कहता है। रसूल अल्लाह (स0) ने ऐसा कभी नहीं कहा। पस जो मेरी हदीस तुम तक पहुंचे। अगर वह मुवाफिक हक है तो मेरी और मुवाफिके हक नहीं है तो मेरी नहीं। मैं हक के खिलाफ कभी नहीं कहूंगा।

हदीसे दोम अल्लामा मजलिसी अलैहिर्रहमा ने मिरअतुल उकूल में उस हदीस के सिलसिले में फरमाते है :

क़लबे सलमान (रजि0) से मुराद यह है कि उनके दिल में जो मरातिब मार्फत अल्लाह व रसूल (स0) और अइम्मा

(स0) के मुताल्लिक है और अगर सलमान (रजि0) उनमें से कुछ जाहिर कर देते तो लोग उसका तहम्मुल न करते और झूठ और अरतेदाद पर महमूल करते और उनके उलूम और आमाल अजबिया को सहर समझकर उनके कत्ल पर आमादा हो जाते या उनका ऐलान व इफ्शा करते तो कत्ल सलमान का सबब बन जाते और अगर अबूजर से बयान करते और पोशीदा रखने पर ज़ोर देते तो अबूजर शिद्दत सबर से मर जाते या हिफाजत की ताब ना लाकर ज़ाहिर कर बैठते और इस सूरत में लोग उनके कत्ल पर आमादा हो जाते और उनकी फ़ज़ीलत से इंकार करते। चुनांचा अल्लामा कशई ने बारवायत जाबिर इमाम जाफर सादिक अ0 से रवायत की है कि एक रोज अबूजर सलमान से मिलने आये सलमान उस वक्त हांड़ी पका रहे थे बातों के दरम्यिान चूल्हे पर से हांड़ी उलट गई। लेकिन उसमें से न शोरबा गिरा और न जो उसके अन्दर अबूजर को यह देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ। सलमान ने उस हांड़ी को उठाकर फिर चूल्हे पर चढ़ा दिया और बातें करने लगे हांड़ी फिर लौट गई और उसमे से कुछ न गिरा। अबूजर वहां से खौफजदा होकर निकल आये। दरवाजे में अमीरूल मोमिनीन से मुलाकात हुई। आप (स0) ने उनकी परेशानी देखकर फ़रमाया – ऐ अबूजर तुम सलमान के पास से क्यों उठ आये और तुम परेशान क्यों हो। अबूजर ने कहा मैंने ऐसा ऐसा देखा है मुझे ताज्जुब हुआ। हजरत ने फ़रमाया – ऐ अबूजर तुमसे वह सब बयान कर दे जो वह जानते है तो तुम घबरा कर कह दोगे अल्लाह कातिल सलमान पर रहम करें। ऐ अबूजर सलमान रूवे जमीन पर बाब अल्लाह है जिन लोगों ने उनको पहचान लिया वह मोमिन है और जिन्होंने

उनकी फजीलत का इंकार किया वह काफिर है सलमान हम अहले बैत से है।

मरवी है कि सलमान ने एक खुतबे में कहा मुझे इल्मे कसीर दिया गया है। अगर मैं तुमको वह सब बता दूं जो मैं जानता हूं तो एक गिरोह मुझे मजंनू कहने लगेगा और एक गिरोह कहेगा खुदा कातिल सलमान पर रहम करें।

हकीकत यह है कि जो इल्म पोशीदा है उसका हासिल होना बड़ा दुश्वार है उस तक पहुंचने से बड़े बड़े उल्मा कासिर रहे है जाहिलों का तो जिक्र ही क्या। इसी लिए जवाहिरे शरूअ से जमहूर को मुखातिब किया गया है और बिल इजमाल बातों से उसका ताल्लुक है न कि असरार व गवामिज से। इसलिए कि उन अमूर के और इदराक से उनका भार उठाने के लिए उनके हौसले तंग है। चूंकि अवाम जाहिर व बातिन दोनों की गुजाइश नहीं रखते। लिहाजा वह मुखालिफत करने लगते है और इंकार करके काफिर हो जाते है और साहबान इशरार इलाही को कत्ल कर डालते है।

किसी ने लिखा है कि रसूल अल्लाह सल्लम ने फ़रमाया अगर तुम अपना इल्म मिकदाद पर पेश करो तो वह काफिर हो जाये और ऐ मिकदाद अगर तुम सलमान पर पेश करो तो वह काफिर हो जाये यानि हर एक की इल्मी ताकत और असरार की खुसूसियत जुदागाना है दूसरे को उसका इल्म नहीं।

3 : फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने हमारी हदीस साअब व मुत्साअब है। नहीं बरदाश्त करते मगर उसको रोशन सीने और रास्ती पसन्ददिल और अच्छे अखलाक वाले। अल्लाह तआला ने हमारे शियों से उसी तरह अहद लिया ज़िस तरह

नबी आदम से रोजे अलस्त अहद लिया था। पस जिसने हमारे अहद को पूरा किया। खुदा ने उसको जन्नत देने का वादा पूरा किया और जिसने हमसे बुग्ज़ रखा और हमारा हक अदा न किया तो वह जहन्नुम की आग में हमेशा हमेशा रहेगा।

4 : रावी कहता है कि मैंने इमाम अली नकी अ0 को एक खत लिखा और उसमें इमाम जाफर सादिक अ0 की उस हदीस के मायने पूछे, हमारी हदीस का मुतहम्मिल नहीं हो सकता, मलके मुक़र्रब और न नबीये मुरसल और न वह मोमिन जिसके ईमान का इम्तिहान खुदा ने लिया हो (यह सवाल उस बिना पर किया गया कि साबेक़ा हदीस में यह बयान किया गया था कि हमारी हदीस का मुतहहम्मिल नहीं हो सकता। मगर मलके मुतहाम्मिल नबीये मुरसल और मोमिन कामिल। इस हदीस में है कि यह लोग भी मुतहम्मिल नहीं हो सकते बयान में यह तजाद क्यों है) इमाम जाफ़र सादिक अ0 के उस बयान के मुताल्लिक़ इमाम अली नकी अलैह सलाम ने तहरीर फ़रमाया कि सादिक आले मोहम्मद (स0) ने फ़रमाया है कि फरिश्ते भी दूसरे फरिश्ते से कहे और नबी बगैर दूसरे नबी से कहे और मोमिन बगैर दूसरे मोमिन से कहे न रहेगा (यानि जब ऐसे कामिल ईमान और नफ्सों पर काबू रखने वाले बगैर कहे नहीं रह सकते तो आम लोग तो उन अस्रारे मख्फ़िया और वदीआत अलैह का तहम्मुल क़तई कर ही नहीं सकते और जो हमारी बात उनकी समझ में न आएगी तो वह जरूर हमारी तकजीब करेगे।

5 : अबू बसीर से मरवी है कि फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ0 ने हमारे पास एक भेद है खुदा के भेदों से और

एक इल्म है खुदा के इल्म से, वल्लाह उसका तहम्मुल नहीं कर सकता मलके मुक़र्रब नबीये मुरसल या वह मोमिन जिसके ईमान का इम्तिहान अल्लाह ने ले लिया हो। वल्लाह उसकी तकलीफ हमारे सिवा खुदा ने किसी को नहीं दी और न हमारे गैर ने उसके साथ इबादत की, हमारे पास सिर्रे इलाही और इल्म इलाही है। खुदा ने उसकी तबलीग का हुक्म दिया है पस जिस अम्र की तबलीग का हुक्म दिया गया था हमने उसकी तबलीग की लेकिन हमने उसके लिए मुनासिब जगह न पायी और न ऐसे अहल लोग पाये जो हमारी तालीम के मुतहम्मिल हो सकते। यहां तक कि खुदा ने ऐ ऐसी कौम को पैदा किया। जिनकी ख़िलक़त उसी तीनत से हुई थी जो मोहम्मद (स0) व आले मोहम्मद (स0) और उनकी जुर्रियत की थी और बनाया उनको उस नूर से जिससे मोहम्मद व आले मोहम्मद (स0) को पैदा किया था और अपनी रहमत से उनकी खिलक़त ने वहीं किया जो किया था मोहम्मद (स0) और उनकी जुर्रियत के साथ। पस जिस अम्र की तबलीग का हमको हुक्म दिया गया था हमने उनको तबलीग की उन्होंने उसे कुबूल किया और उसके मुतहम्मिल हुए पस हमसे उनको जो तालीम हासिल हुई वह उसे कुबूल करते और मुतहम्मिल होते रहे इस तरह हमारा जिक्र उन तक पहुंचा और उनके दिल हमारी मार्फत और हमारी हदीस की तरफ माईल हुए अगर वह इस तरह पैदा न किए गए होते तो ऐसा न होता। वल्लाह वह हमारी हदीस का तहम्मुल न कर पाते। फिर फ़रमाया – खुदा ने एक ऐसी कौम को पैदा किया जो मुस्तहक जहन्नुम थे और हमे उन पर तबलीग करने का हुक्म

दिया गया। जैसे कि पहले गिरोह के लिए हुक्म दिया गया था हमने तबलीग की तो वह उससे दिलगिरफ्ता हुए और उनके कुलूब ने कुबूल करने से नफरत की और हमारी तरफ रद्द कर दिया उसका तहम्मुल न कर सके और उन्होंने हमारी हदीस को झुठलाया और हमारे लिए कहा यह जादूगर और झूठे है खुदा ने उनके दिलो पर मोहर लगा दी और हमारी तालीम को भूल गये फिर खुदा ने बाज हक बातें उनकी जबान पर जारी कर दी वह उनको बयान कर गए दरआन्हालेकि उनके कुलूब इंकार कर रहे थे और यह इसलिए हुआ कि उस सूरत में औलिया खुदा और अहले इताअत के लिए एतराज का दफईया हुआ अगर ऐसा न होता तो रूवे जमीन पर अल्लाह की इबादत न होती। फिर हमको हुक्म दिया गया कि अपनी तालीम से उनसे रोके और पोशीदा रखे फिर हजरत ने अपना हाथ उठाया और रोये और फ़रमाया – खुदा वन्दा यह मोमिन लोग बहुत कम है इनकी जिन्दगी हमारी सी जिन्दगी और उनकी मौत हमारी सी मौत करार दें और दुश्मनो को उन पर मुसल्लत न कर, यह अम्र हमारे लिए दर्दनाक होगा अगर तूने उनकी वजह से हमें दर्दनाक किया तो जमीन पर तेरी इबादत फिर कभी न होगी और दुरूदो सलाम हो मोहम्मद (स0) व आले मोहम्मद (स0) पर।



## एक सौ दोवां बाब

# उम्मत को नबी का हुक्म अइम्मए मुस्लेमीन से खुलूस रखने और उनकी जमाअत में इस्तिक़लाल से रहने में और यह कि वह कौन है

1 : रावी कहता है मैंने हजरत इमाम जाफर सादिक अ० से सुना कि हजरत रसूले खुदा ने मस्जिद हनीफ में एक खुतबा पढ़ा और उसमे फ़रमाया नेमत देगा या खुश रखेगा अल्लाह उस बन्दे को जिसने मेरे कौल को सुना और याद रखा और हिफ्ज़ कर लिया और पहुंचाया उस शख्स तक जिसने उसको नहीं सुना। बहुत से फ़िक़्ह जानने वाले ऐसे है जो दर हकीकत फक़ीह नहीं और बहुत फ़िक़्ह वाले ऐसे है जो नकल करते है ऐसे लोगों से जो उनसे ज्यादा जानने वाले है यानि आईमा अलैह सलाम तीन सूरते है जिनमे दिल के अन्दर खोट नहीं पायी जाती और शहादत को राह नहीं होती। अव्वल उस मर्द मुस्लिम का दिल जिसका अम्ल खालिस अल्लाह के लिए हो और अइम्मए मुस्लिमीन से खुलूस रखता हो और उनकी जमात में मुस्तक़िल्लन शामिल रहें क्योंकि अइम्मए मुस्लिमीन के लिए अपनी रिआया में इन्तेजामे मआश करना है उनके लिए जो ताबेदार हो और मुसलमान आपस में भाई–भाई है और उनका खून बराबर है और जो इनमे पस्त दरजे के है यानि फ़ोक़रा है उनकी माआश का इन्तेजाम दूसरे मुसलमान भाईयों पर है इब्ने याफ़ूर ने भी

ऐसी ही रवायत की है और इतना ज्यादा किया है कि वह मुसलमान मददगार हो। मुखालिफों के मुकाबिल और यह कि रसूल अल्लाह ने यह खुतबा हुज्जतुल विदाअ में मना की मस्जिद हनीफ में बयान फ़रमाया।

2 : मक्का के एक कुरैशी ने सुफियान सूरी से कहा – मुझे जाफर बिन मोहम्मद (स0) के पास ले चलिए। सुफियान कहता है मैं हजरत के पास ले गया। हजरत उस वक्त घोड़े पर सवार हो चुके थे मैंने कहा – ऐ अबू अब्दिल्लाह मुझसे वह हदीस बयान कीजिए जो रसूल अल्लाह ने अपने खुतबे में मस्जिद हनीफ में बयान फरमायी थी हजरत ने फ़रमाया – अब तो मैं एक जरूरत के लिए जा रहा हूं जब लौटूगां तो तुमसे बयान कर दूंगा। सुफियान ने कहा वास्ता कराबते रसूल का आप अभी बयान फरमा दीजिए। हजरत सवारी से उतर पड़े। सुफियान ने कहा – ज़रा ठहरिये ताकि कागज व दवात ले लें ताकि लिख लिया जाए। जब यह चीजें आ गई तो फ़रमाया – लिखो 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' मस्जिदे हनीफ में रसूल अल्लाह ने अपने खुतबे में फ़रमाया बोहजत व मसर्रत अता करेगा खुदा अपने उस वन्दे को जो मेरी बात सुनें, उसे याद रखे और महफूज रखें और पहुंचा दे उन लोगों तक जिन तक नहीं पहुंची 'लोगों जो तुममे उस वक्त मौजूद है वह उनको पहुंचा दें जो मौजूद नहीं आगाह हो कि बहुत से आलिमे दीन ऐसे है जो हकीकतन आलिम नहीं और बहुत से इल्म वाले ऐसे है जो रूजू करते है उस शख्स की तरफ जो उनसे ज्यादा आलिम है तीन बातें है जिनसे मर्द मुस्लिम का दिल बेगानगी नहीं करता। अव्वल खुदा की इबादत में

इख्लास अमल, दूसरे अइम्मा मुस्लिमीन से खुलूस, तीसरे उनकी जमाअत में रहना, अपने ऊपर लाजिम करना। क्योंकि अपनी मतीअ रिआया के लिए मआश मुहैय्या करने कि उन पर जिम्मेदारी है। मोमिनीन आपस में एक दूसरे के भाई–भाई है उनके खून बराबर है वह मद्दगार है मुखालिफों के मुकाबिल और जिम्मेदार है अपने से पस्त दर्जे वालों यानि फुक़रा के लिए कोशिश करने के। सुफियान ने लिखकर हजरत को दिखला भी दिया। उसके बाद हजरत सवार होकर तशरीफ ले गये रावी कहता है मैं और अबू सुफियान जब रास्ते में थे तो उसने मुझसे कहा – जरा ठहरो ताकि हम इस हदीस पर गौर करें। मैंने कहा वल्लाह हजरत अबू अब्दिल्लाह ने तेरी गर्दन पर ऐसा बोझ रख दिया है जिसको तू कभी नहीं उतार सकता। उसने कहा वह क्या। मैंने कहा वहीं तीन बातें – अल्लाह से खुलूस अम्ल, उसे तू खैर हम जानते है, दूसरे अइम्मए मुस्लिमीन से खुलूस, बता ये कौन है जिनसे खालिस इरादत व मोहब्बत रखना हम पर वाजिब है क्या उनसे मुराद माविया व यजीद व मरवान है ? उनकी गवाही हमारे नजदीक जायज नहीं। (क्योंकि यह आदिल नहीं) न इनके पीछे नमाज पढ़ना जायज है, तीसरे उनकी जमात में शामिल रहना, तो यह कौन सी जमात है क्या यह मरजिया फिरका की जमात है जो यह कहते है कि जो नमाज नहीं पढ़ता या रोजे नहीं रखता और गुसल जनाबत नहीं करता, और काबे को ढाये और अपनी मां से निकाह करें तो भी ईमान में जिबरईल व मिकाईल के बराबर होगा या कादरिया जमाअत मुराद है जो कहते है। जो अल्लाह चाहता है वह नहीं होता और जो शैतान चाहता

है वह होता है या हरवरी जमात है जो अली बिन अबी तालिब पर तबर्रा करती है और उनके कुफ्र की गवाही देती है या जहन्नुमी जमात है जो कहती है कि ईमान सिर्फ अल्लाह की मार्फत का नाम है उसके सिवा और कुछ नहीं। उसने कहा – यह तुमने अजीब बात कहीं। और यह बताओ शिया लोग क्या कहते है। मैंने कहा वह कहते है कि अली बिन अबी तालिब ऐसे इमाम है जिनसे खालिस मोहब्बत रखना वाजिब है और उनकी जमात में जो अहले बैत है शामिल रहना जरूरी है यह सुनकर उसने उस तहरीर को मुझसे ले लिया चाक कर डाला और मुझसे कहने लगा इसका जिक्र किसी से न करना।

3 : फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद अ० ने जिसने मुसलमानों ने एक बालिश्त बराबर भी जुदाई डाली उसने अपनी गर्दन से इस्लाम की रस्सी निकाल फेंकी।

4 : फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने जिसने जमाअत मुस्लिमीन में तफरका डाला और ईमान के मुआहिदों को तोड़ दिया तो खुदा के सामने मजज़ूम होकर आएगा।



## एक सौ तीनवां बाब

## रिआया पर क्या हक़्क़े इमाम वाजिब है और इमाम पर रिआया का हक़

1 : अबू हमजा से मरवी है कि मैंने इमाम जाफर सादिक अ० से सवाल किया कि इमाम का हक लोगों पर क्या

है? फ़रमाया लोग उसका कलाम सुनें और इताअत करें और रिआया का हक इमाम पर यह है कि वह माले गनीमत वगैरह अपनी रईयत में मसावी तकसीम करें और अदल करें और जब इमाम ऐसा हो तो कोई खौफ नहीं कि कोई यहां जाये व वहां जाये मज़हबे मुख्तलेफ़ा की जलालत का कोई असर न होगा।

2 : अबू हमजा ने इमाम मोहम्मद बाकिर अ० से रवायत की है जिसमें है कि चार मर्तबा आप (स०) ने फ़रमाया हाकज़ा यानि चाहे मुखालिफत सामने से हो या पीछे से दाहिनी तरफ से हो या बांयी तरफ से।

3 : इमाम जाफर सादिक अ० से मरवी है अमीरूल मोमिनीन अ० ने फ़रमाया – अपने वालियान अम्र से खयानत न करो और अपने रहनुमाओं से नाइंसाफी न करो और अपने इमामों से जाहिल न रहो और अपनी रस्सी से जुदा न रहो वरना सुस्त पड़ जाओगे और तुम्हारी हवा खेजी हो जाएगी तुम्हारे उमूर की बुनियाद उसी पर होनी चाहिए और उसी तरीके से कायम रहो। काश तुम देखते इस अजाब को जो तुममे से उन मरने वालों ने देखा जिन्होंने मुखालिफत की उस अम्र की। जिसकी तरफ अइम्मा अ० तुमको बुलाते है और अलबत्ता मुनाफिको के जिहाद की तरफ निकलने में जल्दी करते। लेकिन जो उन्होंने देखा वो तुम्हारी नजरों से पोशीदा है और वक्त करीब है कि यह परदा तुम्हारी आंखों के सामने से हट जाये।

4 : फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक अ० ने कि जिबराईल ने नबी स० को ख़बरे मर्ग दी। दरआन्हालेकि हुजूर तंदरूस्त थे। और कोई तकलीफ आपको न थी हजरत ने नमाज

जमाअत के लिए निदा और मुहाजिरीन व अन्सार को हुक्म दिया कि बदन पर हथियार सज़ा कर आये। लश्कर ओसामा में शामिल होने के लिए) लोग जमा हो गए आप मिमबर पर तशरीफ़ ले गये और अपने मरने की खबर लोगों को सुनाई। फिर फ़रमाया मैं अल्लाह की याद दिलाता हूं अपने उस वली को जो मेरे बाद होगा कि वह कोई काम न करें बल्कि यह कि मुसलमान की जमाअत पर रहम करें उनके बड़ों की इज्जत करें, कमजोरों पर रहम करें और उनके आलिमों को साहिबे वकार जाने। उनकों कोई नुकसान न पहुंचाये जिससे वह जलील हो और उन्हें मोहताज न बनाये कि वह काफिर हो जाये और अपना दरवाजा उन पर बन्द न करें।

पस इस सूरत में क़वी लोग जईफों को खा जायेगे और उनकी बुनियाद न उखाड़ो। उन्हें जिहाद पर भेजकर इस सूरत में मेरी उम्मत की नस्ल मुन्कता हो जाएगी फिर फ़रमाया – मैंने तब्लीग कर दी और समझा दिया। गवाह रहना और इमाम जाफर सादिक अ0 ने फ़रमाया वे आखिरी कलाम था जो रसूल अल्लाह ने मिम्बर पर किया।

5 : रावी कहता है कि अमीरूल मोमिनीन (स0) के पास शहद और अन्जीर हम्दान व हलवान से आये। आप (स0) ने ओरफा (वह लोग जिन्हे शहर के लोगों का पता रहता है) को हुक्म दिया कि यतीमों को लाएं जब वह आये तो आप (स0) ने उनको शहद की मशकों के दहानों पर बिठा दिया ताकि वह शहद को चाटे और दूसरे लोगो को प्यालों में भरभर कर दिया। लोगों ने कहा – ऐ अमीरूल मोमिनीन इनको चाटने के लिए क्यों इजाजत दी। फ़रमाया इमाम यतीमों का बाप होता है यह उन बच्चों के बाप की रिआयत से चाट रहे है

यानि अगर इनके बाप के पास शहद आता तो वह इसी तरह बेतकल्लुफी से चाटते।

6 : इमाम जाफर सादिक अ० से मरवी है कि हजरत रसूले खुदा ने फ़रमाया कि मैं हर मोमिन के नफ्स से आला हूँ और मेरे बाद अली आला है किसी ने पूछा इसके क्या माने है हजरत ने फ़रमाया – रसूल अल्लाह ने फ़रमाया है जो शख्स कर्जा छोड़ कर मरे या रिआया बे मआश छोड़े तो उसका बार मेरे ऊपर है और जो कोई माल छोड़े तो उसका मालिक उसके वोरसा होगे पस ऐसा शख्स जिसको माल बेसवब न होने के अपने ऊपर काबू न हो और वह दूसरे का मोहताज हो और अपने अहलो अयाल के नफ्के का कफ़ील न हो तो नबी और अमीरूल मोमिनीन अ० और उनके बाद में होने वाले इमाम उनके कफील होगे इस तरह वह लोगों के नफ्सों से आला होगे रसूल (स०) का यही कौल आम यहूदियों के इस्लाम लाने का सवब बना। वह खुद भी ईमान लाएं और उनके अहलो अयाल भी।

7 : इमाम जाफर सादिक अ० ने फ़रमाया कि रसूल अल्लाह ने फ़रमाया जो कोई मोमिन या मुस्लिम मर जाये और वह अपने ऊपर कर्जा छोड़ जाये बशर्त ताकि वह कर्जा लगुयात व फुजूल खर्ची में न हुआ हो तो इमाम का फ़र्ज़ है कि उसको अदा कर दे और अगर अदा न करेगा तो इसका गुनाह उस पर होगा। खुदा फरमाता है कि सदकात के मुसतहक फकरा व मसाकीन है। पस चूंकि वह मोमिन मकरूज है लिहाजा इमाम के पास इसका हिस्सा है उसको देना चाहिए और अगर उसको रोक लेगा तो गुनाहगार होगा।

8 : इमाम मोहम्मद बाकिर अ० से मरवी है कि रसूल

अल्लाह (स0) ने फ़रमाया – इमामत की सलाहियत नहीं रखता। मगर वह शख्स जिसमें तीन खसलते हो अव्वल परहेजगारी जो उसे बचाए गुनाह करने से दूसरे हल्म जिससे वह अपने गुस्से पर काबू पाएं तीसरे लोगों पर अच्छी हुकूमत करें और अपने मुताल्लेक़ीन से इस तरह मिले जैसे बाप अपनी औलाद से मिलता है और दूसरी रवायत में है कि इस तरह बरताव करें जैसे मेहरबान बाप अपनी रिआया से।

9 : रावी माविया बिन हकीम कहता है। मैंने मुलाकात की एक मर्द तबरिस्तानी से जिसे मोहम्मद कहते थे उसने बयान किया कि मुझसे बयान किया इमाम रिज़ा अ0 ने अगर गैर बातिल उमूर में कोई मकरूज है या उससे कर्ज तलब किया गया (तदय्यन इस्तदान में शक का ताल्लुक माविया से है कि उसने उन दो लफ्जों में कौन सा लफ्ज सुना था) तो उसे एक साल की मोहलत दी जाएगी अगर उस मुद्दत में वह अदा करने के काबिल हो जाये तो खुद दे। वर्ना इमाम यह कर्जा बैतुल माल से चुकाऐगा।



## एक सौ चारवां बाब

# तमाम रूए ज़मीन का मालिक इमाम है

1 : फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने – मैं हजरत अली (स0) की एक तहरीर में देखा कि जमीन अल्लाह की है वह अपने बन्दों में जिसे चाहता हैं मालिक बना देता है और अच्छा अन्जान मुत्तक़ियों के लिए है मुझे और मेरे अहले बैत को अल्लाह ने जमीन का मालिक बनाया है। हम मुत्तकी है

और जमीन सब हमारे लिए है। मुसलमानों में जो कोई जमीन हासिल करें वह उसको आबाद करें। तो उसको चाहिए कि मेरे अहले बैत में से जो इमाम हो उसको खिराज (टैक्स व लगान) दे और बाकी को खुद खाये पीये लेकिन अगर मरने के बाद छोड़ जाये या उसको तबाह व बरबाद कर दे और एक दूसरा मुसलमान उस पर काबिज होकर अजसरे नवा से आबाद करें तो वह उससे ज्यादा मुसतहक है जिसने उसे छोड़ दिया था उस मालिक को चाहिए कि मेरे अहले बैत में से जो इमाम हो उसे खिराज अदा करें बाकी वह खाये। यहां तक कि कायमे आले मोहम्मद (स0) जिहाद बिस्सैफ़ करें और जमीन को एहाता करें और मुशरिको और काफिरों को निकाल बाहर करें जैसा कि रसूल अल्लाह (स0) ने जजीरतुल अरब से निकाल बाहर किया था अलबत्ता जो इमलाख हमारे शियों के कब्जे में होगी उनको उन्हीं के कब्जों में रखा जायगा।

2 : रावी कहता है कि इमाम ने फ़रमाया – दुनिया व माफ़ीहा अल्लाह के लिए है और उसके रसूल के लिए है पस जो किसी हिस्से जमीन पर गालिब हुआ उसको चाहिए– अल्लाह से डरें और उसका हक अदा करें और अपने भाईयों के साथ नेकी करें और जो ऐसा नहीं करेगा तो अल्लाह और उसका रसूल (स0) और हम उससे अलग है।

3 : उमर बिन यजीद से मरवी है कि मैंने मसमां को मदीना में कहते सुना कि मैं इस साल कुछ माल इमाम जाफर सादिक अ0 के पास ले गया आप (स0) ने उसे रद्द कर दिया। मैंने पूछा क्यों किया। उसने हजरत से कहा – मैं बहरीन में गोताखोरी पर मामूर हुआ और वहां से मैंने चार लाख

दरहम के मोती हासिल किए जिसका खुम्स अस्सी हजार दरहम आपकी खिदम में लाया हूं मैंने उस अम्र को बुरा समझा कि जो आपका हक है उसे रोकूं और रूगरदानी करूं। जबकि अल्लाह तआला ने हमारे अमवाल में उस हक को मुकर्रर फ़रमाया है। आपने फ़रमाया– क्या जमीन और उसकी पैदावार में हमारा हक बस खम्स ही है ऐ अबू सय्यार तमाम रूए जमीन हमारे लिए है।

जो कुछ उन जमीनों से पैदा हो वह सब हमारे लिए है। मैंने कहा मैं कुल माल हाजिर कर दूं। फ़रमाया – ऐ अबू सय्यार हमने उसको तुम्हारे लिए पाक करार दिया और हलाल व जायज किया उसको अपने माल में शामिल कर लो। हमारे शियों के पास जो कुछ अज कसम जमीन है वह उनके लिए हलाल है जबतक क़ायमे आले मोहम्मद का जहूर हो वह दुश्मानों से जमीन को निकाल लेगे और उनको जिल्लत से बाहर कर देगे उमर बिन यजीद कहता है अबू सय्यार ने कहा – मेरे सिवा हलाल खाने वाले जमीनों की पैदावार से और उनके हामिलो में कोई नहीं हां सिर्फ वो लोग जिनके लिए अइम्मा ने हलाल करार दिया है।

4 : अबू बसीर से मरवी है कि मैंने इमाम जाफर सादिक अ0 से पूछा – क्या इमाम पर भीं जकात है फ़रमाया – ऐ अबू मोहम्मद तुमने औरों का कयास हम पर किया। क्या तुम नहीं जानते कि दुनिया व आखिरत इमाम की है वह जहां चाहता है उसको रखता है और जिसको चाहता दे डालता है यह अल्लाह की तरफ से इमाम के लिए जायज है ऐ अबू मोहम्मद! इमाम नहीं गुजारता कोई ऐसी रात कि उसकी

गर्दन पर कोई ऐसा हक हो जिसके मुताल्लिक उससे सवाल किया जाये।

5 : रावी कहता है मैंने हजरत अबू अब्दिल्लाह से पूछा – इस जमीन पर आपका क्या हक है ? यह सुनकर हजरत मुस्कुराए। फ़रमाया – अल्लाह ने जिबरईल को उस हुक्म की तामील को भेजा वह अपने पैर को जमीन पर मारकर आठ नहरें बहा दें उनमें ज्यादा मशहूर यह है सैहान व ज़ैहान यह बल्ख में है खुशू यह दरिया बर्फ पोश है महरान (दरियाए सिन्ध) गंगा जो हिन्दुस्तान में है नील मिस्र में है और दजला और फरात और हर वह जगह जहां से लोग बगैर डोल व रस्सी के सैराब होते है या डोल या रस्सी के जरिए से, पस वह पानी हमारा है और जो हमारा है वह हमारे शियों का है हमारे दुश्मन का इसमें कोई हक नहीं। मगर गासिब बनकर हमारा दोस्त मालिक है जो उसके और इसके दरम्यिान है यानि माबैन जमीन व आसमान, फिर यह आयत पढ़ी। इन लोगों से कह दो जो इस दुनिया में ईमान लाएं है और इनका हक छीना गया है) रोज़े क़यामत सब ख़ास इनका होगा।

6 : रावी कहता है – मैंने इमाम अली नक़ी अ० को लिखा – हमसे बयान किया गया है कि दुनिया में सिवाय खुम्स के रसूल (स०) का और कोई हक नहीं हजरत इमाम (स०) ने जवाब में लिखा कि इस दुनिया में जो कुछ है रसूल अल्लाह (स०) का है।

7 : फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० ने कि जब खुदा ने आदम को पैदा किया तो तमाम रूवे जमीन का उनको मालिक बना दिया। पस जो कुछ आदम के लिए था वह सब

हजरत रसूल खुदा (स0) के लिए है और जो आला हजरत (स0) के लिए है वह सब अइम्मा आले मोहम्मद (स0) के लिए है।

8 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ0 ने कि जमीन पर जिबरईल ने पांच दरिया पैदा की है। जिनसे फरात व दजला व नील व मेहरान व नहर बल्ख फूट निकले। पस यह सब और जहां से लोग पानी पीते है इमाम के लिए है और वह समुंदर जो दुनिया को घेरे हुए है इमाम का है।

सरीह बिन रबी से मरवी है कि इब्ने अबी अमीर हश्शाम बिन हकम की बराबर किसी को नहीं जानता था और किसी दिन उसके पास आने से नहीं रूकता था फिर क़तए ताल्लुक कर लिया और उसका मुखालिफ हो गया और उसका सबब यह हुआ कि अबू मालिक खजरमी हश्शाम का खास आदमी था उसके और अबी अमीर के दरम्यिान अम्रे इमामत में झगड़ा पैदा हो गया। इब्ने अबी अमीर कहता था कि रूवे जमीन की हर शैय का मालिक इमाम है वह इन सब से आला है जो मालिके ज़मीन बने हुए है और अबू मालिक कहता था ऐसा नहीं है जिस चीज का जो मालिक है वो उसी का है सिवाय उसके जिसका हुक्म खुदा ने इमाम के लिए दिया है। जैसे मालेफ़ै, खुम्स और गनीमत, यह चीजें बेशक इमाम की है इसे अख्तियार है जिस तरह चाहे तसर्रूफ करें। आखिर दोनों इस पर राजी हो गए कि हश्शाम से दरयाफ्त करें चुनांचे वह दोनों इनके पास आए। हश्शाम ने इब्ने मालिक के कौल से मुवाफ़िकत की। इस पर इब्ने अबी अमीर को गुस्सा आया और हश्शाम से उसके बाद मिलना जुलना तर्क कर दिया।



## एक सौ पांचवां बाब

# जब इमाम वलीये अम्र हो तो उसकी सीरत और तआम व लिबास

1 : फ़रमाया – अमीरूल मोमिनीन अ० ने खुदा ने मुझे खल्क का इमाम बनाया पस मेरे लिए एक मिकदार मोअय्यन कर दी है खाने पीने और पहनने की। जईफ और कमजोर आदमियों के तरह ताकि फकीर मेरे फकीर की पैरवी करें और गनी उससे सरकशी न करे।

2 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक अ० से एक दिन कहा कि मुझे ख़याल आया। बनी अब्बास की हुकूमत व दौलत व ऐश व इशरत का। मैंने दिल में कहा – अगर यह हुकूमत आपके लिए होती तो हम भी ऐश से जिंदगी बसर करते। हजरत ने फ़रमाया वाये हो तुम पर ऐ मुअल्ला अगर ऐसा होता तो हम रातों को इबादत करते और दिनों में लोगों की खबर गीरी का काम अंजाम देते मोटा कपड़ा पहनते, घटिया किस्म का खाना, खाते, खुदा ने हमें उस दौलत से दूर रखा यह जुल्म नेमत बन गया है हमारे लिए (इस नेमत वाले अपने जुल्म की बाएस अजाबे इलाही में गिरफ्तार होंगे)।

3 : आसिम इब्ने जियाद के मुतालिक उसके भाई रबीअ बिन जियाद ने अमीरूल मोमिनीन से यह शिकायत की कि उसने मोटे कपड़े का लिबास पहना है और नरम कपड़ा पहनना तर्क कर दिया है उसके बाल बच्चे और उसका बाप तारिके दुनिया होने की बिना पर सख्त परेशान है हजरत ने फ़रमाया – वासिम को मेरे पास लाओ। जब वह आया तो

आप (स0) के चेहरे पर आसार गजब नुमायां हुए हजरत ने फ़रमाया – तुझे अपने अहलो अयाल से शर्म नहीं आती, क्या तुझे अपनी औलाद पर रहम नहीं आता। जिस खुदा ने पाकीजा चीजों को तेरे लिए हलाल कर दिया है क्या तू उसके इस्तेमाल को बुरा जानेगा खुदा के नजदीक तेरा यह अमल सुस्त व जईफ है।

ऐ आसिम क्या खुदा यह नहीं फरमाता – और जमीन को हमने लोगों के लिए मेवे और खजूर जिनके खुशू पर गिलाफ होते है। पैदा किए क्या खुदा यह नहीं फरमाता कि दो दरिया (खारी और मीठे) मिलते हैं और उनके दरमियान एक रोक है जिससे वह एक दूसरे की तरफ नहीं बढते तांकि फ़रमाया उनके अन्दर मोती और मूंगे निकलते हैं पस लोगों खुदा के लिए खुदा की नेअमतों का अमली तौर पर काम में लाना उससे ज्यादा महबूबे खुदा है,सिर्फ जबानी जिक्र करने और उनके इस्तेमाल से इज्तिनाब करने से। लेकिन जिक्र भी करना चाहिए जैसा की फरमाता है अपने रब की नेअमत का जिक्र करो। आसिम ने कहा–ऐ अमीरूल मोमिनीन फिर आप (स0) क्यों कमतर किस्म का लिबास पहनते हैं। फ़रमाया वाये हो तुझ पर। खुदा ने आइमा अदल पर फ़र्ज़ किया है कि वह अपने नफ्सों को गरीब लोगों जैसा नफ्स बनायें ताकि फकीर अपने फकर के सदमें से हलाक न हो। आसिम ने अपनी गुदड़ी उतार डाली और नर्म लिबास पहन लिया।

4. रावी कहता है मैं इमाम जाफर सादिक अ0 की खिदमत में हाजिर था। एक शख्स ने सवाल किया हजरत अली तो बहुत घटिया लिबास पहने थे यानि चार दिरहम क़ीमत की कमीज और आप क़ीमती लिबास पहने पहनते हैं।

फ़रमाया – अली अ० ऐसा लिबास इस जमाने में पहनते थे जब वह बुरा न समझा जाता था क्यों सही मायने में इस्लामी हुकूमत थी) अगर ऐसा लिबास इस जमाने में पहनते तो हर तरफ से मुजम्मत होने लगती जब हमारे कायम जहूर फरमायेंगे तो हजरत अली का सा लिबास पहने होंगे और उन्हीं की सीरत पर आमिल होंगे।



## एक सौ छ:वां बाब

# नादिर

1 : रावी कहता है एक दिन इमाम को छींक आयी। मैंने पूछा–जब इमाम को छींक आये तो कहना चाहिए फ़रमाया–यूं कहें – अल्लाह का तुम पर दुरूद हो।

2 : रावी कहता है कि एक शख़्स ने इमाम जाफर सादिक अ० से सवाल कियहा – कि क़ायम आले मोहम्मद (स०) को अमीरूल मोमिनीन कह सकते हैं। फ़रमाया – नहीं यह नाम अल्लाह ने अमीरूल मोमिनीन का रखा है उससे पहले यह नाम और किसी का नहीं हुआ और आप (स०) के बाद इस नाम से मौसूम न होगा। मगर काफिर मैंने कहा – फिर कायम आले मोहम्मद (स०) के लिए क्या कहें। फ़रमाया– अस्सलाम अलैक, या बकीयतुल्लाह। फिर यह आयत पढ़ी बक़ीयतुल्लाह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम ईमान लाने कवाले हो।

3 : मोमिनीन का तोशा इल्म है।

4 : जाबिर ने इमाम जाफर सादिक अ0 से पूछा – हजरत अली का नाम अमीरूल मोमिनीन क्यों हुआ। फ़रमाया किताब खुदा में यूंही है फिर आप (स0) ने यह आयत पढ़ी जब खुदा ने नबी आदम की पुशतों से उनकी औलाद को निकाला है।

## तौज़ीह

कुरआन में अमीरूल मोमिनीन का लफ्ज नहीं है पस या तो यह जामिऊल–कुरआन ने हज़फ कर दिया है या फिर यह मजमून हदीसे कुदसी है।



## एक सौ सातवां बाब

# विलायत के मुताल्लिक़ निकात व लताएफ

1 : रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 से कहा – मुझे बतायें उस आयत के मुताल्लिक़ नाज़िल किया रूहुल अमीन ने तेरे कल्ब पर, ताकि तू साफ अरबी जबान में लोगों को डराये। फ़रमाया यह अमीरूल मोमिनीन की विलायत के बारे में है।

2 : फ़रमाया – इमाम जाफर सादिक अ0 ने आया "हमने अमानत को आसमान व ज़मीन और पहाड़ो पर पेश किया। उन्होंने उसके उठाने से इंकार कर दिया और उससे डर गये और इंसान ने उसे उठा लिया। दरआन्हा लेकि वह बड़ा ज़ालिम और जाहिल है। फ़रमाया यह अमानत वलायते

अमीरूल मोमिनीन (स0) है।

3 : रावी ने कहा यह जो लोग हम पर ईमान लाये। और उन्होंने अपने ईमान को जुल्म के साथ मखलूत नहीं किया। क्या मतलब है इमाम जाफर सादिक अ0 से पूछा। फ़रमाया– उससे मुराद यह है कि जो लोग ईमान लाये उस वलायत पर जो रसूल (स0) लेकर आये और उससे अपने ईमान को फलां फ़लां की विलायत से मखलूत न किया। क्योंकि वह जुल्म से मखलूत हुई है।

4 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक अ0 से उस आयत के मुताल्लिक़ पूछा। तुममें से कुछ मोमिन हैं और कुछ काफिर, फ़रमाया – खुदा मार्फत कराये, उनके ईमान की हमारी वलायात से, और उससे इंकार करने वालों की, जिस रोज़ उनसे अहद लिया था जबकि वह सल्बे आदम में बसूरत ज़र्रा थे।

5 : फ़रमाया इमाम रिज़ा अ0 ने आयह यूफूना बिन्नज़र के मुताल्लिक़ मुराद यह है कि उनसे हमारी वलायत का अहद लिया गया।

6 : इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया – अगर वह तौरेत व इंजील पर क़ायम रहते और उस पर जो उनके रब की तरफ से उन पर नाज़िल किया गया है (तो यह उनके लिए बेहतर होता) फ़रमाया – उससे मुराद विलायत है।

7 : आयह कुल ला असतलकुम के मुताल्लिक इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया कि यह अज्र हम अइम्मा की मोहब्बत है जो ज़विलकुरबा रसूल (स0) हैं।

8 : अबू बसीर से मरवी है कि इमाम जाफर सादिक अ0

ने आयत मनयुतिइल्लाह व रसूलह के मुताल्लिक़ फ़रमाया (उससे मुराद वलायते अली अ० और उनके बाद दीगर अइम्मा की वलायत) पस उसको पूरी – पूरी कामयाबी हुई। यह आयत इस तरह नाज़िल हुई थी।

9 : रावी ने अइम्मा की इसनाद से बयान किया है कि आयह "तुम्हारे लिये जायज नहीं है कि रसूल अल्लाह (स0) को अज़ीयत दो (अली और अइम्मा के बारे में) जैसे अज़ीयत दी थी मूसा (स0) को उम्मते मूसा (स0) ने (गोसाला परस्ती में वसी मूसा (स0) हारून की नसीहत पर अमल न करके) पस बरी है अल्लाह उस चीज से जो उन्होंने बयान किया।

10 : रावी कहता है कि इमाम से सवाल किया किसी ने उस आयत के मुतालिक जिसने इत्तिबा किया मेरी हिदायत का वह गुमराह न हुआ।" इमाम ने फ़रमाया मुराद यह है कि जिसने आइमा के हुक्म पर अमल किया और उनकी इताअत को न छोड़ा और गुमराह न हुआ।

11 : रावी ने आयह कसम खाता हूं मैं उस शहर की दरआन्हा लेकि तुम उसमे चलते फिरते हो और कसम है एक बाप की और बेटे की। इमाम से दरयाफ्त किया। फ़रमाया वालिद से मुराद है अमीरूल मोमिनीन और मावल्द से मुराद है अइम्मा अलैहिस्सलाम

12 : आयत "जान लो जो माले गनीमत तुमको मिले तो उसका पांचवा हिस्सा अल्लाह व रसूल और जविलकुरबा का है" के मुताल्लिक़ इमाम से सवाल किया गया। फ़रमाया जविलकुरबा से मुराद है अमीरूल मोमिनीन और दीगर अइम्मा।

13 : रावी कहता है कि मैंने इमाम जाफर सादिक अ0

से आयत – हमने एक उम्मत ऐसी पैदा की है जो हक की हिदायत करते है और अदल से काम लेते है। फ़रमाया – वह अइम्मा है।

14 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक अ0 से आयत –"वह, वो है जिसने तुझ पर किताब को नाजिल किया। उसमें कुछ आयाते मोहकमात है और वहीं असल किताब है।" फ़रमाया – उससे मुराद है अल्लाह अमीरूल मोमिनीन और अइम्मा है और बाकी मुत्शाबिहात हैं। फ़रमाया – उनसे मुराद फलां फलां और जिन लोगों के दिलों में कज़ी है उससे मुराद हैं उनके असहाब व दोस्त। जो मुत्शाबिहात का इत्बा करते है। फितना की ख्वाहिश करते है और उसकी तावील करने के लिए।

और नहीं जानते उसकी तावील, मगर अल्लाह और रासेखूनफिलइल्म और उससे मुराद अमीरूल मोमिनीन और दीगर अइम्मा।

15 : फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने आयत– क्या – तुमने यह गुमान किया है कि तुम यूंही छोड़ दिये जाओगे। अल्लाह ने अभी उन लोगों को मुमताज नहीं किया। जिन्होंने तुम में से जिहाद किया है और खुदा और उसके रसूल और मोमिनीन के सिवा और किसी को अपना राजदार नहीं बनाया (यानि अमीरूल मोमिनीन अलैह सलाम और उन लोगों ने अइम्मा के सिवा किसी को राजदार नहीं बनाया।

16 : फ़रमाया – इमाम जाफर सादिक अ0 ने आयत– अगर वह कुफ्फार व मुशरिकीन सुलह की तरफ मायल हों तो तुम उनसे सुलह कर लो। रावी कहता है मैंने पूछा सल्म क्या

है फ़रमाया– हमारे अम्र में दाखिल होना।

17 : आयत – तुम जरूर एक मुसीबत से दूसरी मुसीबत में फंसोगे।" के मुताल्लिक़ इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया – क्या उम्मत अपने नबी के बाद फलां–फलां फलां के फन्दे में फंस कर एक मुसीबत के बाद दूसरी मुसीबत में नहीं फंसी।

18 : रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा अ0 से आयत– हमने अपने कौल का इत्तेसाल कर दिया है ताकि वह नसीहत हासिल करें। फ़रमाया वह एक इमाम से दूसरे इमाम तक का सिलसिला है।

19 : आयत "कहो हम ईमान लाये अल्लाह पर, और जो हमपर नाजिल किया गया है।" फ़रमाया– उससे मुराद है अली (स0) व फातिमा (स0), हसन (स0) व हुसैन (स0) और जारी हुआ यह अम्र बाद में अइम्मा अ0 के लिए फिर खुदा की तरफ से रूजू होता है यह कौल लोगों की तरफ फ़रमाया अगर वह लोग ईमान लायें उसी तरह जैसे तुम ईमान लाये यानि अली (स0) व फातिमा (स0), हसन (स0) व हुसैन (स0) और दीगर अइम्मा अ0 तो वह याफ्ता होगे और अगर उन्होंने रूगरदानी की तो ये बदबख्ती और तफरका परदाजी होगी।

20 : आयत – इन्ना औलियान्नास अलख के मुताल्लिक़ इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया वल्लज़ीना आमनू से मुराद अइम्मा अ0 है और वह लोग जिन्होंने उनका इत्तेबा किया।

21 : इमाम जाफर सादिक अ0 ने आयत व अवहिया

अलख के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि मन बलग़ा से मुराद यह है कि आले मोहम्मद (स0) से हर जमाने में एक इमाम हो जो लोगों को अजाबे खुदा से उसी तरह डराये जैसे रसूल खुदा ने डराया था।

22 : आयत, और हमने अहद लिया आदम से पहले ही, पस वो भूल गये और हमने उनमें अज्म न पाया के मुताल्लिक़ इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया वह अहद था मोहम्मद और उनके बाद वाले अइम्मा के मुताल्लिक़ आदम ने उसको तर्क किया और उनमें अज़्म न पाया गया (यानि मोहम्मद और आले मोहम्मद के तवस्सुल को तर्क किया। बाद में उनके तवस्सुल से दुआ मांगी) और ऊलुल्अज़्म इसलिए अम्बिया को कहा कि उन्होंने हजरत रसूल (स0) खुदा और उनके औसिया और इमाम मेंहदी और उनकी सीरत के मुताल्लिक जो अहद किया था उसपर कायम रहें और इकरार किया।

23 : इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने आयत लकद अहदना के मुताल्लिक फ़रमाया कि वह कलेमात थे मोहम्मद (स0) व अली (अ0) व फातिमा (स0) और हसन (अ0) व हुसैन (स0) और उन अइम्मा के मुताल्लिक़ जो उनकी जुर्रियत से होने वाले थे आदम उनको भूल गये वल्लाह मोहम्मद (स0) पर यूंही नुजूले आयत हुआ।

24 : आयत – ऐ रसूल मजबूती से कायम रहो उस पर जो तुम्हें वही की गई है कि तुम सिराते मुस्तकीम पर हो।" इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया है कि खुदा ने फ़रमाया कि ऐ रसूल तुम वलायत अली पर कायम रहो और अली सिराते मुस्तकीम है।

25 : आयत "बुरा है जो उन्होंने खरीदा अपने नफ्सों के लिए बई तौर की इन्कार किया उस चीज से जो अल्लाह ने तुमपर नाजिल की। उसके मुताल्लिक़ इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया कि अली के बारे में जो नाजिल किया गया था सरकशी से लोगों ने उसे इंकार कर दिया।

26 : रावी कहता है इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने आयत अगर तुम शक में हो जो हमने अपने बन्दे पर नाजिल किया है (अली (स0) के बारें में) तो तुम उसकी मिसल एक सूरह लाओ।

27 : फ़रमाया – इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने कि जिबरईल रसूल पर यह आयत लेकर नाजिल हुए। ऐ वह लोग जिनको किताब दी गई है ईमान लाओ उसपर जो हमने नाजिल की है (अली के बारें में) बसूरत नूरे मुबीन।

28 : फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने, अगर वह करते जिसकी उन्हें नसीहत दी गई है (अली के बारें में) तो यह उनके लिए बेहतर होता।

29 : फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने उस आयत के मुताल्लिक़ – ऐ ईमान लाने वालों, सबके सब इस्लाम में दाखिल हो जाओ और शैतान की पैरवी न करों। वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। यह आयत हमारी विलायत के मुताल्लिक़ है।

30 : फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने आयत– उन्होंने हयात दुनिया को अख्तियार किया (हमारे दुश्मनों से मोहब्बत करके) और आखिरत बेहतर और बाकी रहने वाली है उससे मुराद वलायत अमीरूल मोमिनीन (स0) है यही इब्राहिम (स0) और मूसा (स0) के सहीफों में था।

31 : फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० ने उसके मुताल्लिक– जब लाये तुम्हारे पास (मोहम्मद) वह चीज जिसकी ख्वाहिश तुम्हारे नफ्स न करते थे (मोहब्बत अली (स०)) तो तुमने तकब्बुर किया और एक फरीक को (आले मोहम्मद (स०) से) तुमने झुठलाया। और एक फरीक को तुमने कत्ल किया।

32 : इमाम रिज़ा अ० ने उस आयत के मुताल्लिक़ फ़रमाया– दुश्वार हुआ मुशरिकीन पर (अम्र वलायत अली) जिसकी तरफ तुमने बुलाया। (ऐ मोहम्मद (स०) किताब में ऐसा ही लिखा हुआ है।)

33 : फ़रमाया – अबू अब्दिल्लाह अ० ने आयत– हम्द है उस खुदा के लिए जिसने हमें हिदायत की, अगर खुदा हिदायत न करता तो हम हिदायत न पाते। "के मुताल्लिक़ फ़रमाया जब कयामत का दिन होगा तो बुलाया जायगा नबी व अमीरूल मोमिनीन और उन अईम्मा को जो उनकी औलाद से है और उन लोगों के सामने लाया जायगा। पस उनके शिया कहेगे। हम्द है उस खुदा के लिए, जिसने दीन हक की हिदायत की। अगर खुदा हमको हिदायत न करता तो हम हिदायत न पाते। यानि खुदा ने हमको वलायत अमीरूल मोमिनीन और दीगर अइम्मा की तरफ हिदायत की।

34 : आयत – लोग तुम से बड़ी खबर के मुताल्लिक़ पूछते है, इमाम जाफर सादिक अ० ने फ़रमाया – नबइल अज़ीम से मुराद वलायते अली है मैंने सवाल किया। विलायत खुदा मुराद नहीं। फ़रमाया वलायत अमीरूल मोमिनीन मुराद है।

## तौजीह

उसका मतलब यह है कि रसूल अल्लाह के बाद अमीरूल मोमिनीन को वली मानना जरूरी है क्योंकि अहकाम

खुदा व रसूल (स0) की मार्फत और उन पर अमल बेदूँ विलायत अली को तसलीम किये मुमकिन नहीं होगा विलायत अमीरूल मोमिनीन को तसलीम करना, खुदा की वलायत को तसलीम करना है क्योंकि जो शख्स अपने शहर के हाकिम की हुकूमत को तसलीम नहीं करता। वह दर हकीकत बादशाहे हुकूमत की हुकूमत को तसलीम नहीं करता।

35 : आयत – ऐ रसूल (स0) दीन हनीफ पर साबित कदम रहो। के मुतालिक इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया– उससे मुराद विलायत है।

36 : अबू अब्दिल्लाह अ0 ने आयत हम रोज़े कयामत अदल की तराजुऐं रखेंगे।" के मुताल्लिक़ फ़रमाया– यह अम्बिया और औसियाए अम्बिया हैं।

## तौजीह

रोज़े कयामत जो मीजान नस्ब की जाएगी वह दुनिया की तराजू जैसी न होगी हर शय के तौलने की एक जुदागाना मीजान होती है लकड़ी के तौलने की तराजू और है गल्ला तौलने की और है और सोना चांदी तौलने की और, बाल जैसी चीजों को तौलने की मीजान अलग है अगर बुखार तौलना है तो उसकी मीजान थर्मामीटर है अगर किसी शेर का वजन मालूम करना है तो उसकी मिजान अल्फाज है और अगर किसी की बहादुरी या सखावत तौलनी है तो रूस्तम व हातिम की बहादुरी व सखावत को मिजान बनाया जायगा। पस इसी तरह किसी उम्मत के आमाल की जांच उस उम्मत के नबी के अमाल को सामने रखकर होगी आन हज़रत के उम्मत के आमाल की जांच हजरत अली और दीगर आईमा के आमाल से होगी क्योंकि उनका हर अमल, अमले रसूल (स0) है

इसीलिए रसूल अल्लाह (स0) सल्लम ने फ़रमाया है या अली अन्तामिजान आमाल वाअंता सिरातल मुस्तक़ीम।

37 : रावी कहता है मैंने हजरत अब्दिल्लाह से उस आयत के मुताल्लिक़ पूछा या तो उस कुरान के आलावा दूसरा कुरान लाओ या उसको बदल दो। फ़रमाया इमाम ने कि लोगों ने इसके जवाब में कहा कि ऐ रसूल ! अली (स0) को बदल दो (हमें तो अदावत उन्हीं से है)।

38 : रावी कहता है मैंने हजरत अबू अब्दिल्लाह से उस आयत की तफसीर पूछी (जन्नत वाले दोजखियों से पूछेगे तुम्हें दोजख की तरफ क्या चीज ले आयी। वह कहेगे हम नमाज गुजार न थे आप (स0) ने फ़रमाया – इससे मुराद यह है कि हम उन आईमा के पैरू न थे जिनकी शान में यह आयत है नेकी की तरफ सबकत करने वाले, सबकत ही करने वाले है और वही खुदा के मकर्विब है क्या तुम नहीं देखते कि घुड़दौड़ में साबिक (अगले घोड़े को) साबिक कहते है और उससे पीछे वाले को मुसल्ली कहा जाता है पस मुराद यह है कि वह कहेगे कि हम साबिकीन के पैरू न थे।

39 : आयत – अगर वो सही रास्ते पर रहते तो हम उनको आबे खुशगवार से सेराब करते यानि उनके दिलों में ईमान भर देते।" के मुताल्लिक इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया – कि तरीके से मुराद है अली अ0 और उनके औसिया की विलायत।

40 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक अ0 से आयत, वह लोग जिन्होंने कहा – हमारा रब अल्लाह है और फिर वो उस कौल पर साबित कदम भी रहें, के मुताल्लिक़ दरयाफ्त किया गया। आपने फ़रमाया – साबित क़दम रहें एक

इमाम के बाद दूसरे इमाम की वलायत पर। उन पर मलायका नाजिल होकर कहते है। तुम न खौफ करो न हुज़्न तुम बशारत दिये जाते हो उस जन्नत की। जिसका तुमसे वादा किया गया था।

41 : आयत – मैं तुमको एक की नसीहत करता हूं" के मुताल्लिक़ इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० ने फ़रमाया – उस एक से मुराद विलायते अली अ० है।

42 : आयत "जो लोग ईमान लाये और फिर काफिर हो गये। और फिर ईमान लाये और फिर कुफ्र को ज्यादा किया तो उनकी तौबा हरगिज कुबूल न होगी। इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने फ़रमाया – यह आयत फलां फला के बारें में नाजिल हुई है पहले तो वह नबी पर ईमान लाये फिर जब विलायत को उन पर पेश किया गया तो मुन्किर हो गये नबी ने फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूं उसका अली मौला है तो ईमान लाए और अमीरूल मोमिनीन की बैत कर ली। लेकिन रसूल के मरने के बाद फिर गये और बैत का इकरार न किया। फिर बैअते अली करने वालों की पकड़ धकड़ करने पर अपने कुफ्र को और बढ़ा लिया। लिहाजा ईमान का कोई हिस्सा उनमें बाकी न रहा।

43 : फ़रमाया – इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने उस आयत के मुताल्लिक़ जो लोग हिदायत के ज़ाहिर होने के बाद रूगरदानी कर गये फलां व फला (उन्होंने तर्क वलायत अमीरूल मोमिनीन करके ईमान से रूगरदानी की।) रावी कहता है मैंने कहा सूरह मोहम्मद में उसके बाद यह आयत है कि इन्होंने कहा – उन लोगों ने जिन्होंने खुदा के नाजिल करदा हुक्म से कराहत की। हम इताअत करेंगे। बाज अम्र में

इमाम ने फ़रमाया – यह नाजिल हुई है उन दोनों के बारे में और उनके ताबईन के बारे में और जिबरईल अमीन रसूल पर यह आयत इस तरह ले कर आये थे। उन लोगों ने करांहत जाहिर की उस अम्र से जो खुदा ने अपने रसूल (स0) पर (अली के बारे में) नाजिल किया था उन्होंने बुलाया बनी उमय्या को अपना वादा पूरा करने के लिए ताकि बाद नबी इमामत हमारी तरफ न आए। उन्होंने खुमुस से कोई चीज हमको न दी और कहा – अगर हम उनको खुमुस देगे तो फिर वह किसी चीज के मोहताज न रहेगे और अम्रे इमामत को अपने तरफ आने की परवाह न करेगे उन्होंने कहा हम तुम्हारे बाज हुक्म की इताअत करेगे और वह ये कि हम अहले बैत को खम्स में से कुछ न देगे यहीं मतलब है उस आयत का उन्होंने अम्र मंजिल मिनलल्लाह से कराहत की और वह अम्र था विलायत अली का फ़र्ज़ करना। अबू उबैदा उस वक्त उनके साथ था और उनका कातिब था खुदा ने यह आयत नाजिल की (जुखरूफ) उन्होंने अपनी हुकूमत को मजबूत किया। हम भी उनके लिए दाखिला जहन्नुम को मजबूत करने वाले है वह जो कुछ सरगोशियां करते है हम उनको सुनने वाले है।

44 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ0 ने सूरह हज की उस आयत के मुताल्लिक़। "वह जिसने इरादा किया उसने इलहाद व जुल्म का।" फ़रमाया – यह उन्हीं लोगों के बारे में है जो काबे में आकर बैठे और मुआहिदा किया। आपस में कि हम इन्कार करेगे। उन तमाम आयत का जो नाजिल हुई है अली के बारें में पस यकीनन उन्होंने खानेकाबा में उस इंकार से जुल्म किया। रसूल और उनके वली पर और

हलाकत हो जालिम कौम के लिए।

45 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ0 ने आयह, अनकरीब तुम जान लोगे कि खुली गुमराही में कौन है। ऐ झूटों के गिरोह तुमको मैंने विलायत अली की अपने बाद आने की खबर दी थी (अब खुली गुमराही में कौन है) के मुताल्लिक यह आयत उस मजमून के साथ नाजिल हुई थी और आयह "तुमने पेचीदा किया और एराज किया" के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि जिस अम्र का तुम्हें हुक्म दिया गया था तुमने उसे धर लपेटा और उससे रूगरदानी की। बेशक अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उससे खबरदार है और आयह – जिन लोगों ने इंकार किया है।" के मुताल्लिक इमाम ने फ़रमाया वलायत अमीरूल मोमिनीन से उनके सख्त अजाब है (दुनिया में) और जो कुछ अमल किया है उन्होंने हम उसका बदला (आखिरत में) देंगे।

46 : फ़रमाया हजरत अबू अब्दिल्लाह (सूरः मोमिन) उस आयत के मुतालिक, यह इसलिए है कि जब अकेले खुदा को पुकारा जाता था तो तुम इंकार करते थे कि उसमें वहदहू के बाद अहलिल्विलाया भी था।

47 : इमाम जाफर सादिक अ0 ने फ़रमाया कि यह आयत यूं नाजिल हुई थी जब एक सायल ने सवाल किया। ऐसे अजाब का जो वाकया होने वाला था (वलायत अली (स0) के) मुन्किरों पर, और जिसका कोई दफ़ा करने वाला न था इमाम ने फ़रमाया – वल्लाह रसूल (स0) पर यह इसी तरह यानि बेविलायते अली के साथ नाजिल हुई थी।

48 : सूरः अज़ज़ारियात की आयत के मुताल्लिक़ (ऐ अहले मक्का) तुम लोग मुखतलिफ बेजोड़ बातों में पड़े हो

जिससे वही फ़ेरा जाएगा जो गुमराह होगा इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया – यह आयत – यूं नाज़िल हुई थी कि कौल मुखतलिफ के बाद था अम्र` वलायत अली (स0) और यह भी फ़रमाया जो अम्र वलायत से फ़िरा – वह जन्नत से फिरा।

49 : फ़रमाया – इमाम जाफर सादिक अ0 ने सूरः बलद कि उस आयत के मुताल्लिक़ फिर वह घाटी पर से क्यों नहीं गुजरा और तुम क्या जानो वह घाटी क्या है गर्दन का अजाद कर देना।" इमाम अ0 ने फ़रमाया – फक़्को रक़बा से मुराद है। वलायते अमीरूल मोमिनीन।

## तौजीह

पूरी आयत यह है अलम नज़अल लहू अलख (क्या हमने उसे दोनों आंखे और ज़बान और दोनों लब नहीं दिये (जरूर दिये) और उसको अच्छी बुरी दोनों राहें भी दिखा दी। फिर वह घाटी पर से होकर क्यों नहीं गुजरा और तुमको क्या मालूम कि घाटी क्या है। किसी की गर्दन का (गुलामी या कर्ज़ से आजाद करना या भूख के दिन रिश्तेदार, यतीम या खाकसार मोहताज को खाना खिलाना) जाहिर मायने तो यही है जो ऊपर दिये गये है लेकिन बातिनी मायने यह है कि उन आयत में कुरैश के मुनाफिकों का बयान है कि उन्होंने रसूल की इताअत को दिल से न माना और बाद रसूल तलब हुकूमत में बहुत सा माल सर्फ किया। खुदा ने उनको दो आंखे दी थी कि वो शवाहिद अक़लिया रूबू बियत पर नजर करके गुमराही से बचते दूसरों को बचाते और जबान और होंठ दिये ताकि वह हादी–ए–ज़माना से सवाल करके अपने शुबहात दूर करते और कुरान की आयत का मतलब दरयाफ्त

करते। पस वह उस घाटी से क्यों न गुजरे। यानि वलायत अमीरूल मोमिनीन से क्यों गुरेज़ की और लोगों की गर्दन को नार जहन्नुम से क्यों न आजाद कराया और जो लोग इल्म के भूखे थे या उन लोगों को ज़ालिम हुक्काम से परेशान हाल थे क्यों न बचाया।

50 : फ़रमाया – इमाम जाफर सादिक अ० ने उस आयत के मुताल्लिक़। "बशारत दे दो – उन लोगों को जो ईमान लायें कि उनके लिए सच्चाई का कदम है उनके रब के नजदीक (सूरह यूनुस) यानि वलायते अमीरूल मोमिनीन को तसलीम कर लेने में उन्होंने राहे रास्त पर अपना कदम रखा। खुदा ने फ़रमाया है को नवामअ सादिक़ीन यानि अमीरूल मोमिनीन और अइम्मा ताहिरीन के साथ हो गये वह राहे रास्त पर गामज़न हो गये।

51 : फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० ने "उन दोनो झगड़ा करने वालों ने अपने रब के बारें में झगड़ा किया। तो जिन लोगों ने इंकार किया (वलायत अली (स०) से) उनके लिए आग का लिबास है।"

## तौजीह

सूरः हज की यह आयत है जिसमें उस अम्र का बयान है कि झगड़ा करने वाले दो गिरोह है एक गिरोह उस अकीदे का है कि अल्लाह इस दुनिया में मोमिनों की मदद करता है ऐसे इमाम से जो आलिम हो। अहकामे इलाही और आखिरत का सवाब उसी इमाम की तसदीक पर मुनहसिर है और दूसरा गिरोह वह है जिसका अकीदा है कि रसूल (स०) के बाद उम्मत में इजतिहाद के सिवा कुछ नहीं। यह नज़ा दरहकीकत अपने रब के अम्र में है यह गिरोह चूंकि बहुक्मे खुदा और रसूल

(स0) जो वलायत अली के लिए है उसका मुन्किर है लिहाजा उसके जिस्म के मुताबिक जहन्नुम का लिबास कतअ किया जायेगा।

52 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ0 ने कि उस आयत में वलायत से मुराद वलायते अमीरूल मोमिनीन (स0) है।

53 : फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ0 ने उस आयत के बारें में यह अल्लाह की जीनत है और अल्लाह से बेहतर (ईमान की) जीनत देने वाला कौन है (सूरह बक़र) की अल्लाह ने जीनत दी है मोमिनीन को वलायत के साथ रोज़े मिसाक़ आलमे ज़रर में।

54 : फ़रमाया – अबू अब्दिल्लाह अ0 ने (सूरः नूह) पालने वाले मुझे और मेरे वालिदैन को बख़्श और जो मोमिन होकर मेरे घर में दाखिल हो यानि जो वलायत में दाखिल हुआ वह बैत अम्बिया अ0 में दाखिल हुआ और आयत इन्नमा युरीदुल्लाह अल्ख के मुतालिक फ़रमाया कि अहले बैत से मुराद है आइमा अलैह 'सलाम और जो कोई उनकी वलायत में दाखिल हुआ वह नबी के घर में दाखिल हुआ।

55 : रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा अ0 से पूछा – क्या मतलब है उस आयत का – कि (हिदायत पाना) अल्लाह के फज़्ल व रहमत से है और चाहे खुश होने वाले उससे खुश हो और वो बेहतर है उस चीज से जिसे यह लोग जमा करते है। इमाम ने फ़रमाया कि विलायते मोहम्मद व आले मोहम्मद बेहतर है उस चीज से जिसे यह लोग जमा करते है अपनी दुनिया के लिए।

56 : रावी कहता है कि मैं और इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 हमसफर थे। राह में जब शब आई तो मुझसे फ़रमाया

कुरान पढ़ो कि यह शब जुमा है मैंने सूरह दुखान शुरू की जब उस आयत पर पहुंचा – हक व बातिल के फैसले के दिन इन शब के लिए वादा की जगह होगी वो ऐसा दिन होगा कि आका अपने गुलाम से वफ़ा जरूर न कर सकेगा और सिवाय उन लोगों के जिनपर अल्लाह रहम करें किसी की मदद न की जायगी।" हजरत ने फ़रमाया वह लोग जिन पर रहम किया जायेगा वल्लाह हम है (अल्लाह ने हमारा ही इसतसना किया है बेशक हम अपने ताबईन से वफ़ा जरूर कर सकेगे।

57 : फ़रमाया – हजरत अबू अब्दिल्लाह अ0 ने जब आयत (महफूज रखता है महफूज रखने वाला कान) तो हजरत रसूले खुदा ने फ़रमाया – ऐ अली (स0) वह तुम्हारा कान हैं।

58 : फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाकि़र अ0 ने कि जिबरईल (स0) हजरत रसूले खुदा पर यह आयत इस तरह लेकर नाजिल हुये थे जिन लोगों ने (आले मोहम्मद (स0) का हक गसब किया) उन्होंने बदल दिया उस बात को जो उनसे कही गई थी एक दूसरी बात से पस हमने उन लोगों पर (जिन्होंने आले मोहम्मद (स0) का हक ले लिया था आसमान से इसलिए अजाब नाज़िल किया कि वह बदकार थे।

59 : फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाकि़र अ0 ने जिबरईल उस आयत को इस तरह लेकर नाजिल हुये। जिन लोगों ने जुल्म किया (आले मोहम्मद (स0) के हक पर) खुदा उन्हें नही बख्शेगा और वह सिवाय जहन्नुम के रास्ते के और कोई रास्ता उनको न दिखाएंगा वह यहां हमेशा रहेगे ये अल्लाह का आसान है।

फिर फ़रमाया – ऐ लोगों ! रसूल तुम्हारे रब की तरफ

से (वलायत अली के बारे में) हक बात लेकर आया है पस ईमान लाओ कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है और अगर (वलायत) से इंकार करोगे तो बेशक जो कुछ आसमान और जमीन में है वह सब खुदा का है।

60 : फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने यह आयत इस तरह नाजिल हुई थी अगर वह अमल करते उस अम्र पर जो (अली के बारें में) उनको बताया गया है तो उनके लिए बेहतर होता।

61 : रावी कहता है मैंने अबू अब्दिल्लाह अ0 से उस आयत के मुताल्लिक़ पूछा – मेरे ऊपर यह कुरान वही किया गया है ताकि मैं तुमको उसे सुना कर अजाबे खुदा से डराऊं और वह भी डराए जो उसकी तबलीग पर मामूर हो। यानि आले मोहम्मद में से इमाम होता कि वह भी कुरान सुनाकर उसी तरह डराये जिस तरह रसूल डराते थे।

62 : एक शख्स ने इमाम जाफर सादिक अ0 के सामने यह आयत पढ़ी। "अमल करो (लेकिन यह समझते हुए) अल्लाह तुम्हारे अमल को देखता है और उसका रसूल (स0) और मखसूस मोमिनीन, आप समझ गये कि मोमिनीन से यह आम मोमिनों को समझा है फ़रमाया तूने जो समझा है वह गलत है मोमिन के दो मायने है एक ईमान लाने वाला और दूसरे लोगों को गलत फतवा वगैरह से ईमान दिलाने वाला, और हम वह है जिनको खुदा ने गलती से महफूज रखा है यानि अल्लाह और रसूल (स0) के साथ, आम लोग रुयते अमाले खलायक के गवाह इस दुनिया में कैसे हो सकते है जब कि खुदा ने उनमें यह ताकत नहीं दी, यह रुयत तो सिर्फ़ ऐसे ही लोगों से मुताल्लिक़ हो सकती है जो साहबे असमत

हो और दुनिया का हर पर्दा उनके आंखों के सामने से हटा हुआ हो और वह सिवाय अइम्मा मासूमीन अ0 के दूसरे लोग नहीं कर सकते।

63 : फ़रमाया – इमाम जाफर सादिक अ0 ने कुरान में तो यह आयत यूं है हाज़ा सिरात अला मुस्तक़ीम लेकिन आयत का नुजूल हुआ हाजा सिरात अलिय्यिन मुस्तकीम।

64 : इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिबरईल – यह आयत इस तरह लेकर नाजिल हुये। पस इंकार किया लोगों ने (वलायत अली (स0)) से पूरा पूरा इंकार जिबरईल ने फ़रमाया – यह आयत यूं नाजिल हुई, हक तुम्हारे रब की तरफ से है (वलायत अली में) जिसका दिल चाहे ईमान ले आये और जिसका दिल चाहे काफिर हो जाये। हमने जालिमीन (आले मोहम्मद (स0)) के लिए जहन्नुम की आग तैयार कर रखी है।

65 : फ़रमाया – इमाम रिज़ा अ0 ने उस आयत के मुताल्लिक मसजिद अल्लाह की है पस अल्लाह के साथ और किसी को न बुलाओं

## तौजीह

अल्लामा मजलिसी अलैहिर्रहमामिरअतुल उकूल में फरमाते है उस हदीस के मजमून के मुताल्लिक़ अखबार कसीरह वारिद हुये है मोहम्मद बिन अब्बास ने बअसनाद खुद इमाम मूसा काज़िम अ0 से उस आयत के मुताल्लिक़ रवायत की है कि मैं अपने वालिद को फरमाते सुना, हममे औसिया व अइम्मा (स0) एक के बाद दूसरा है लिहाजा तुम उनके गैर को न बुलाओ वर्ना तुम ऐसे ही हो जाओगे जैसे वो लोग अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारे। अली इब्ने इब्राहिम

ने अपनी तफसीर में इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से उस आयत के मुताल्लिक रवायत की है कि मसाजिद से मुराद अइम्मा अ० है मैं कहता हूं मुफसिरों ने उन मसाजिद के मुताल्लिक़ जिनका ज़िक्र उस आयत में है इख्तिलाफ किया है बाज ने कहा है मुराद वो मकामात हैं जो इबादत के लिए बनाये गये है उस पर बाज़ अहादीस वह है। बाज़ ने कहा है मुराद मसाजिद सब्आ हैं (सात मस्जिदें) जिनमें सजदा किया जाता है बाज़ ने कहा है उससे मुराद नमाज़े है उन अहादीस में जो तावील वारिद हुयी है उसकी दो सूरते है यह कि हजराते अइम्मा के बुयूत व शवाहिद है। खुदा ने उनको महले सुजूद यानि खुजूअ व तजल्लुले इताअत और इनकियाद करार दिया है उस सूरत में तामीम हो गयी है यानि तमाम मकामाते मुकद्देसा मुराद होगे यह जिक्र अशराफ अफराद के बयान के लिए है दूसरे मसाजिद से मुराद अइम्मा अ० है या मसाजिद से नबुवत मानो यह मुराद है और उनके अहल ही हकीकतन अहले मसाजिद है जैसा कि खुदा ने फ़रमाया है इन्नमा यामुरूह मसाजिदिल्लाह मनआमना बिल्लाहिल अल्ख पस लातदऊ मअल्लाह अहदन के माने ये होगे कि खलीफा अल्लाह के साथ और किसी को न बुलाओ। क्योंकि उनका पुकारना या याद करना दरहकीकत अल्लाह को पुकारना है और उनके गैर को पुकारना या बुलाना शिर्क है उसका सबूत यह है कि उनका अमल अल्लाह का अमल है यह आयत इन्नल्लज़ीना युबा येऊनका इन्नमा युबायेऊनल्लाह। (ऐ रसूल जो तुमसे बैत करते है दरहकीकत वो अल्लाह बैत करते है।)

66 : इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० ने आयत ज़ैल के मुताल्लिक़ फ़रमाया – "ऐ रसूल कह दो कि यह मेरा रास्ता है

मैं दानिशमन्दी के साथ अल्लाह की तरफ बुलाता हूं। मैं भी और जो मेरा पैरू है वो भी। उससे मुराद हजरते रसूले खुदा और अमीरूल मोमिनीन और बाद में आने वाले उनके औसिया है।

67 : रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 से सूरह ज़ारियात की उस आयत के मुताल्लिक़ पूछा – हमने उस फिरके से मोमिनीन को (अज़ाब नाजिल करने से पहले) निकाल दिया और हमने वहां एक मुसलमान के घर के सिवा और कोई घर न पाया। फ़रमाया हजरत ने कि उस उम्मत में उसकी नज़र आले मोहम्मद है जिनके घर के सिवा और कोई घर हिदायते खल्क के लिए दुनिया में नहीं।

68 : फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने सूरह मुल्क की उस आयत के मुताल्लिक़ कि जब उन्होंने (अज़ाब को) देखा करीब तो काफ़िरों के चेहरे बिगड़ गये। उनसे कहा गया ये वही है जिसके तुम ख्वास्तगार थे।" फ़रमाया कि यह आयत अमीरूल मोमिनीन और उन लोगों के असहाब के बारें में है जिन्होंने किया जो कुछ किया। जब यह रोज कयामत अमीरूल मोमिनीन को सबसे ज्यादा आला और काबिल गिब्ता मकामात पर देखेगे तो उनके चेहरे बिगड़ जायेगे उनसे कहा जायगा यही है वह जिनके लक़ब से तुम पुकारे जाते थे यानि लोग तुमको अमीरूल मोमिनीन कहते थे और तुमने अपने लिए यह नाम रख छोड़ा था।

69 : सूरः बुरूज की उस आयत के मुताल्लिक़ शाहिद व मशहूद (गवाह और जिसकी गवाही दी जाये) इमाम जाफर सादिक अ0 ने फ़रमाया कि शाहिद से मुराद अमीरूल मोमिनीन है और मशहूद से मुराद हजरत रसूल (स0) खुदा।

70 : सूरः आराफ की उस आयत के मुतालिक इमाम

रिज़ा अ० ने फ़रमाया–पस एक ऐलान करने वाले ने उनके दरम्यिान ऐलान किया कि बेशक अल्लाह की लानत जालिमों पर है उसमें मोज्ज़िन से मुराद है अमीरूल मोमिनीन।

71 : इमाम जाफर सादिक अ० ने सूरः हज की उस आयत के मुताल्लिक़ – "उनकी रहनुमाई की गई क़ौल पाक व पाक़ीजा की तरफ। और वह हिदायत किये गये सतूदह सिरात की तरफ।" फ़रमाया उन हिदायत याफ्ता लोगों से मुराद है हमज़ा व जाफ़र व उबैदा व सलमान व अबूज़र और मिक़दाद बिन असवद और अम्मार उनकी रहनुमाई की गई अमीरूल मोमिनीन[अ०] की तरफ़।

और सूरह हुजरात की उस आयत के मुताल्लिक फ़रमाया– खुदा ने ईमान की मोहब्बत तुम्हारे दिलों में डाली और तुम्हारे दिलों की ज़ीनत बनाया (मुराद ईमान से अमीरूल मोमिनीन है) और बुरा कऱार दिया तुम्हारे लिए कुफ्र व फिस्क व इसियां को। उससे मुराद है फलां फलां फलां।

72 : इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० ने सूरः अहकाफ़ की उस आयत के मुताल्लिक़ फ़रमाया – लाओ तुम मे से पहले की किताब और इलमी आसार अगर तुम सच्चे हो।" इसमे किताब से मुराद है तौरेत और इंजील और आसार इलमिया से मुराद है औसियाये अम्बिया अ० का इल्म।

73 : हजरत इमाम रिज़ा अ० ने फ़रमाया – जब रसूल अल्लाह सल्लम ने ख्वाब में बनी तीम व अदी व बनी उमय्या को अपने मिम्बर पर चढ़ते देखा तो हज़रत को अज़्तेराब लाहिक़ हुआ। अल्लाह ताला ने उनकी तसल्ली के लिए आयत नाज़िल की। जब हमने मलायका को सज़दे का हुक्म दिया तो उन्होंने सज़दा कर लिया। मगर इबलीस ने इंकार

कर दिया। फिर वही की ऐ मोहम्मद (स0) मैंने हुक्म दिया था। मगर मेरी अताअत न की गई तुम गमग़ीन न हो इसी तरह जब तुम अपने वसी के बारे में हुक्म दोगे तो तुम्हारी भी इताअत न की जायेगी।

74 : आयत "तुम में से काफ़िर भी है और तुम मे से मोमिन भी, फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ0 ने जब कि सब लोग सुलबे आदम में थे खुदा ने मार्फ़त करायी हमारी मवालात की पस बाज़ ने कुबूल कर लिया और बाज़ ने इंकार कर दिया।

रावी कहता है मैंने आयत – अतीउल्लाह और अतीउर्रसूल (अल्लाह की इताअत करो और उसके रसूल की इताअत करो, अगर तुमने रूगरदानी की तो तुम जानो हमारे रसूल पर तुम खुल्लम खुल्ला हमारे अहकाम का तुम तक पहुंचा देना है के मुतालिक इमाम जाफर सादिक (स0) से पूछा। फ़रमाया वल्लाह हलाक हुये वो जो तुमसे पहले थे और कायम आले मोहम्मद (स0) के जहूर तक जहन्नुमी बनेगे लोग इस बिना पर कि उन्होनें हमारी वलायत को तर्क किया और हमारे हक से इंकार कर दिया। रसूल अल्लाह दुनिया से नहीं गये मगर ऐसी सूरत में कि उस उम्मत की गर्दनों पर हमारे हक का बार रख दिया और अल्लाह सिराते मुसतक़ीम की तरफ जिसे चाहता है हिदायत करता है।

75 : सूरः हज की उस आयत के मुताल्लिक़ मुअत्तल कुआं और मुसतहकम क़स्र के मुताल्लिक़ इमाम मूसा काजिम अ0 ने फ़रमाया की मुअत्तल कुआं (जिसका पानी न लिया जाता हो) से मुराद इमाम सामित है (यानि जिसका ज़माना इमामत शुरू नहीं हुआ। और कस़्र मुशय्यद से मुराद इमामे

नातिक़ (जिसका इमामत का ज़माना हो)।

76 : सूरः जुमा की उस आयत के मुताल्लिक़ ऐ रसूल! अल्लाह ने वही की तुम्हारी तरफ और उन लोगों की तरफ जो तुमसे पहले थे अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा अमल अकारत कर दिया जायगा।" इमाम जाफर सादिक अ० ने फ़रमाया कि मुराद यह है कि अगर तुमने शिर्क किया वलायत में उसके गैर को। बस अल्लाह ही की इबादत करो और उसके शुक्रगुज़ार बन्दो में से हो जाओ। यानि अल्लाह ही की इबादत उसकी इताअत में करो और मैंने जो तुम्हारे बाजू को तुम्हारे भाई और इब्ने अम्म के जरिए मजबूत बना दिया है तो उसका शुक्र अदा करो।

77 : इमाम जाफर सादिक अ० ने अपने वालिद और दादा से सूरह नहल की उस आयत की मुताल्लिक, वह नेअमते खुदा पहचानते है फिर उससे इंकार करते है, रवायत की है कि जब आयत इन्नमा वलीयोकुमुल्लाह अलख नाजिल हुई तो मस्जिदे मदीना में असहाब रसूल (स०) जमा हुये और एक दूसरे से कहने लगे उस आयत के बारें में क्या कहते हो एक ने कहा कि अगर इस आयत से इंकर करते है तो सब ही से इंकार करना पड़ेगा और अगर ईमान लाते है तो हमारे लिए जिल्लत है कि अली इब्ने अबीतालिब को हम पर मुसल्लत कर दिया गया है और कहा हम जानते है कि मोहम्मद (स०) सच्चे है लेकिन हम अली की इताअत न करोगे जिसका हुक्म दिया गया है उसके बाद यह आयत नाजिल हुई वो अल्लाह की नेअमत को पहचानने के बाद इंकार कर देते है पहचानते है वलायते अली को और उसी वलायत का इन्कार करते है।

78 : सूरः फुरकान की उस आयत के मुताल्लिक, वो जमीन पर दबे दबे चलते है इमाम मोहम्मद बाकर अलैह सलाम ने फ़रमाया है वह औसियाये रसूल (स0) है जो दुश्मनों के खौफ से ऐसा करते है।

79 : असबग़ बिन नबाता ने अमीरूल मोमिनीन से सूरह लुकमान की उस आयत के मुताल्लिक, शुक्र करो मेरा और अपने वालिदैन और बाज़गश्त मेरी ही तरफ है फ़रमाया वो वालिदैन जिनका शुक्र अल्लाह ने वाजिब किया है वह वो है जिन्होंने इल्म को दिया और हिकमत का वारिस बनाया अल्लाह ने उन दोनों की इताअत का हुक्म दिया है फिर फ़रमाया – बाज़गश्त मेरी तरफ है। पस ये मिसरा लिल्अल्लाह दलील है उन्हीं वालिदैन की तरफ फिर आपने कलाम का रूख बदला इब्ने हतमता और उसके साथी की तरफ और फिर फ़रमाया हुक्म है खासोआम के लिए अगर वो शिर्क बिल्लाह की तरफ तुझे ले जाना चाहे तो उनकी इताअत न कर और उनकी बात न सुन, फिर वालिदैन के मुताल्लिक़ फ़रमाया – दुनिया में उनके साथ रहो और अच्छा बर्ताव उनके साथ करो। खुदा ने उनकी फजीलत को इस तरह जाहिर किया और हुक्म दिया कि उन दोनों के (इल्मो हिकमत देने वाले) रास्ते के तरफ लोगों को बुलाओ और इत्तेबा करो उसके रास्ते का जो मेरी तरफ रूजू करें। तुम्हारी बाज़गश्त मेरी तरफ है। उसके बाद (इमाम ने फ़रमाया) मेरी तरफ।

पस अल्लाह से डरो, और उन वालिदैन का जो तुमको इल्मो हिकमत का दर्स देकर हिदायत करने वाले है उनकी नाफरमानी न करो अगर वह राजी हो गये तो अल्लाह राज़ी है और अगर वो नाराज हुये तो फिर खुदा भी नाराज है।

खुलासा हदीस यह है कि मां बाप हकीकी सूरत में जिनकी इताअत हर हालत में फ़र्ज़ है हमारे दीनी पेशवा है।

80 : उमर बिन हरीस ने कहा – मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ0] से आयत कलमा तैय्यबा की मिसाल शजर तय्यबा की सी है जिसकी असल अपनी जगह पर कायम है और उसकी शाख आसमान पर है। "का मतलब दरयाफ्त किया। आप[अ0] ने फ़रमाया – असल से मुराद है हजरत रसूले खुदा और फरा है अमीरूल मोमिनीन और उनकी औलाद से जो अइम्मा है वह शाखें है और इल्मे अइम्मा उसका फल है और उनके शिया मोमिनीन इस दरख्त के पत्ते है जब कोई मोमिन मर जाता है तो उस दरख्त का एक पत्ता गिर जाता है।

## तौजीह

रोजे फतहे मक्का जब हजरत अली अ0 ने शाना–ए–रसूल (स0) पर खड़े हो करबुत शिकनी की तो रसूल अल्लाह ने पूछा ऐ अली तुम अपने आप को कहां पाते हो। फ़रमाया इतना बुलन्द की अगर चाहूं तो अपने हाथ से आसमान छू लू। पस ये मतलब है शाख के आसमान तक बुलन्द होने का की हजरात आइमा अलैह सलाम के मर्तबा की बुलन्दी को कोई पा नहीं सकता उनका दस्ते तर्सरूफ़ जमीन से आसमान तक है।

81 : हशाम ने इमाम जाफर सादिक अ0 से सूरः इन्आम कि उस आयत के मुतालिक पूछा, नहीं नफा देगा किसी शख्स को उसका ईमान जब तक पहले से (यानि रोज मिसाक़) ईमान न लाया हो या अपने ईमान के जरिए कसबे खैर न किया हो। इमाम ने फ़रमाया उससे मुराद है अम्बिया और औसिया बाल खुसूस अमीरूल मोमिनीन का इकरार और यह

भी फ़रमाया कि उसका ईमान बगैर उसके फायदा न देगा क्योंकि सल्ब कर लिया गया होगा।

82 : अबू हमजा ने इमाम मोहम्मद बाकिर या इमाम जाफर सादिक अ० में से किसी एक से सूरह बक़र की उस आयत की तफसीर पूछी। "हां जिसने गुनाह किया और उसकी खताओं ने उसे घेर लिया। फ़रमाया उससे मुराद यह है कि जिन लोगों ने इमामते अमीरूल मोमिनीन से इंकार किया वो लोग दोज़ख़ी है और उसमे वो हमेशा रहेगे।

83 : अबू उबैदा से मरवी है कि मैंने अबू जाफर अ० से इस्तेताअत के मायने पूछे और कदरिया के अकीदे को जिनमें अक्सर मोतज़ला है मालूम किया (इस्तेताअत से मुराद यह है कि लोग कहते है कि बन्दे का जो इरादा होता है वह इरादा–ए–इलाही के ख़िलाफ़ नहीं होता और अन्नास से मुराद कदरिया है जो कहते है कि बन्दा मुकल्लफ बेअम्र पर कादिर बल इस्तिक़लाल है काफिर ईमान की इस्तताअत रखता है खुदा की मशीयत उसके ईमान के मुताल्लिक़ होती है लेकिन मशीयत इलाही के मुताबिक वह ईमान नहीं लाता। बल्कि शैतान की मशीयत के मुताबिक उससे सदूर फाल होता है और यह अकीदा नहीं रखते कि ज़ो मसीयत खुदा होती है वही होता है और कहते है अल्लाह तौफीक पर कादिर नहीं है) यह था वो मसला जिसको सायल ने हजरते इमाम मोहम्मद बाकिर अ० के सामने पेश किया। आप ने कदरिया के इब्ताल में सूरः हूद की यह आयत बयान फरमाई– "वलैव शाआ रब्बुका लजअलन्नासा अलख़" अगर तेरा रब चाहता तो सब लोग एक ही उम्मत के होते और वो हमेशा इख्तिलाफ करते रहतें मगर वह जिन पर तेरा रब है और उसी लिए उनको पैदा किया

और तेरे रब की बात तमाम हुई और मैं जिन्नो और लोगों से जहन्नुम को भर दूंगा।) ऐ अबू उबैदा इसाबत कौल में लोगो का इख़्तिलाफ है वह ज़न व क़यास से काम लेते हुए मर्ज हलाकत में है मैंने कहा – अला मिन रहीम रब्बिक कौन है फिर फ़रमाया – जिन पर अल्लाह रहम करेगा वो शिया होगे उनको उस रहमत ही के लिए पैदा किया है और इताअते इमाम वह रहमत है जिसके बारें में उसने फ़रमाया है तुम्हारे रब की रहमत हर शय को घेरे हुए है) और इल्मे इमाम के बारें मे फरमाता है और छा गया है उसका वो इल्म जो इल्मे बारी ताला से है वह हमारे शिया है फिर खुदा ने फ़रमाया अनकरीब हम लिख लेगे उस चीज को जिससे वो बचते हैं यानि गैरे इमाम की वलायत और उसकी इताअत। फिर खुदा ने फ़रमाया वो उसको अपने पास लिखा हुआ तौरेत व इंजील में पायगे यानि जिक्र नबी व वसी ओर क़ायम आले मोहम्मद जो अम्र बिल मारूफ वनही अनिलमुनकर करने वाले है और मुनकिर वह है जो इंकार करें फज़ीलत इमाम का और उसकी उम्मत का।

और आयत – युहिल्लुलहुमुत्तय्येबात (हलाल करता है उनके लिए पाकीज़ा चीजों को) का मतलब यह है कि इल्म को उसके अहले से लिया जाय और युहर्रिमू अलैहुम अलखबाइसा का मतलब यह है कि मुखालिफत कौले इमाम और यज़ा अनहुम असरूहुम का मतलब यह है कि उनसे गुनाहों का बोझ हटा दे जो फजीलत इमाम के मार्फत से पहले था। वल्अग़ना ला अल्क़ी कानत अलैहिम से मुराद वह तौक लानत है जो उनके उस कौल के बिना पर थे कि तर्क फजीलते इमाम के खिलाफ उन्हें हुक्म नहीं दिया गया लेकिन जब उन्होंने फजीलत इमाम को पहचान लिया तो उनसे यह

बोझ गुनाहों का हटा दिया गया असर के मायने है गुनाह, फिर खुदा ने फ़रमाया – अल्लजीना आमनु बिही यानि इमाम पर ईमान लाए वअज्जरूहू वलासरूहू अल्ख यानि फिर उन्होंने इज्जत की और नुसरत की और उस नूर की पैरवी की जो उसके साथ नाजिल किया गया है तो यही लोग फलाह पाने वाले है यानि जो लोग जब्तो व तागूत की इबादत से बचे रहें और हिब्बत व तागूत फलां फलां फलां है और इबादत से मुराद उनकी इताअत व फरमां बरदारी है उनीबूइला रब्बेकुम वअसलेमु लहू यानि तुम अल्लाह की तरफ रूजू करो और उसी के फरमां बरदारी बनो, फिर खुदा ने उनकी ज़ज़ा बताई, बशारत हो उनके लिए हयात व दुनिया व आखिरत में।

और इमाम उनको बशारत देता है क़ायमे आले मोहम्मद के जहूर की और उनके दुश्मनों के कत्ल और निजात आखिरत की और हौज़े कौसर पर सादिकीन (अइम्मा) के दुरूद की।

## तौजीह

इस हदीस का खुलासा यह है कि अगर अल्लाह चाहता तो सब आदमी एक ही मजहब के होते यानि मोमिन लेकिन उसने जबर नहीं किया और अम्रे दीन को उनकी मर्जी पर छोड़ दिया। इसलिए वह अपने अकायद में मुख्तलिफ हो गये मगर जिन पर अल्लाह ने रहम किया उन्होंने इमाम बरहक की पैरवी की। काफिर का खदलान और मोमिन की तौफीक की तरफ से है और उसके अख्तियार में है लोगों के इख्तिलाफ का सबब यह है कि उन्होंने मसायल दीन में बजाये इमाम बरहक की तरफ रूजू करने के अपने जाती इज्तिहाद से काम लिया। यह इख्तिलाफ करने वाले सब जहन्नुमी है। हां जिन

पर खुदा रहम करने वाला है वह हमारे शिया है खुदा ने उनको इमाम बरहक की इताअत के लिए पैदा किया है खुदा ने इमाम के इल्म को वुसअत दी है इल्मे इमाम इल्मे इलाही से है और हर मसायल और हर हादसा जो दुनिया में रोज़े अव्वल से आख़िर दिन तक होने वाला है वह इमाम के इल्म में है पस जो लोग इत्तिबा इमामे बरहक़ करते है और उनके सिवा किसी दूसरें की पैरवी नहीं करते अल्लाह तआला उनके हसनात को नज़र में रखता है सूरह आराफ़ में है। "अल्लज़ीना यनबऊनर्रसूलन नबी अलख़"

(वह लोग जिन्होनें इत्तिबा किया (यानि बनी इसराइल) हुजूर (स0) के जहूर से पहले) रसूल का जो नबी उम्मी है और जिनका जिक्र उन्होंने अपनी किताबों तौरेत में पाया (उसमें ऐसे इमाम की तसदीक का भी हुक्म मिलेगा जो तमाम अहकामे इलाही का जानने वाला हो) यह रसूल (स0) हलाल करता है कलेमात पाक़ीज़ा और हराम करता है कलमात नापाक़ीज़ा को (बजाहिर तो ये मतलब है कि पाक चीजों को हलाल करता है और नापाक चीजों को हराम लेकिन बातिनी मायने यह है। यह इमाम बरहक की पैरवी को जायज करार देता है और इमाम मुजल की पैरवी को नाजायज, लेकिन जो बातिल को छोड़ कर रहे हक पर आ जाते है उनके गुनाह का बोझ पहले उनके सर से उतार देता है और जलालत के तौक़ से रिहाई देता है जो लोग उस पर ईमान लाये और उस रसूल की इज्जत की और उसकी मदद की और उस नूर का इत्तिबा किया जो रसूल के साथ नाज़िल हुआ यानि अमीरूल मोमिनीन और दीगर आइमा अलैह सलाम, जिनकी खिलकत एक ही नूर से है और एक ही साथ असलाब व अरहाम की तरफ

मुन्तकिल होते रहे हैं। पस वही लोग फलाह पाने वाले है।

84 : अम्मार साबाती ने कहा है – मैंने सवाल किया अबू अब्दिल्लाह अ० से उस आयत के मुताल्लिक़, जिसने पैरवी की मरज़ीए इलाही की क्या वह उसकी तरह है जिसने खुदा को गजबनाक किया। उसका ठिकाना जहन्नुम है और वह बुरी जगह है अल्लाह के नजदीक दरजात है फ़रमाया जिन लोगो ने पैरवी की मरज़ीए इलाही की वह अइम्मा है और अल्लाह ऐ अम्मार उन मोमिनों के लिए दरजात है उनकी वलायत और हमारी मार्फत की वजह से अल्लाह ताला उनके आमाल को ज्यादा करता है और उनके आला दरजात को बुलन्द करता है।

85 : फ़रमाया – इमाम जाफर सादिक अ० ने आयत "उसकी तरफ चिढ़ते हैं पाक कलमात और नेक आमाल को वह बुलन्द करता हैं और आमाले नेक हम अहले बैत की विलायत है और अपना हाथ सीने पर रख कर फ़रमाया – जिसने हमको दोस्त न रखा अल्लाह उसके अमल को बुलन्द न करेगा।

86 : फ़रमाया – इमाम जाफर सादिक अ० ने सूरह हदीद की उस आयत के मुतालिक फ़रमाया – वो तुमको अपनी रहमत के दो हिस्से बराबर के देगा।" कि किफ़्लैन से मुराद हसन व हुसैन है और फ़रमाया – खुदा तुम्हारे लिए ऐसा नूर करार देगा जिसकी रोशनी में तुम चलो फिरो तुम उसको इमाम मानो।

87 : सूरः यूनुस की इस आयत के मुताल्लिक इमाम जाफर सादिक अ० ने फ़रमाया – लोग ऐ रसूल तुमसे पूछते है क्या वह हक है इमाम ने रावी से फ़रमाया तुम अली के बारे

में क्या कहते हो। खुदा ने फ़रमाया – अपने रसूल से तुम (उन सवाल करने वालो से कह दो खुदा की कसम वलायत अली, हक है और तुम (अपने इंकार से) हमें आजिज करने वाले नहीं।

88 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक अ0 से बलद की उस आयत के मुताल्लिक़ पूछा – पस वह घाटी से क्यों न गुजरा।" फ़रमाया – जिसको खुदा ने नवाज़ा हमारी वलायत से वह घाटी से गुजर गया और हम ही वह घाटी है वो इससे गुजर गया उसने निज़ात पायी, मैं खामोश हो गया। फिर हजरत ने मुझसे फ़रमाया – क्या मैं तुम्हें ऐसी बात बताऊं जो तुम्हारे लिए बेहतर हो, दुनिया और माफ़ीहा में मैंने कहा मैं आप पर फिदा हूं जरूर बताइये। फ़रमाया – खुदा ने फ़रमाया है फक्कू रकाबा (किसी को आजाद करना) पस तमाम आदमी जहन्नुम के कंदे में सिवाय हमारे असहाब के। तुमको हमारी वलायत की वजह से नार जहन्नुम से आजाद कर दिया गया।

89 : फ़रमाया – इमाम जाफर सादिक अ0 ने आया "तुम मेरा अहद वफा करों।" वलायत अली के बारें में मैं तुम्हें जन्नत देकर अपना वादा पूरा करूगां।

90 : अबू बसीर ने रवायत की कि इमाम जाफर सादिक अ0 ने सूरह मरियम की उस आयत के मुताल्लिक़ फ़रमाया – जब हमारी रोशन आयात उन पर तिलावत की गई तो मुन्किरीन वलायत अली ने उन लोगों से कहा जो ईमान ले आये थे बताओं हम दोनों फरीक में अजरूवे मुकाम महफिल कौन अच्छा है यानि हमारी जमात भी ज्यादा है और हमारे आलिम भी बहुत है दौलत और हुकूमत भी हमारे पास है और

तुम गिनती के चन्द आदमी हो कसमपुरसी की जिन्दगी बसर कर रहे हो। तुम ही बताओ तुम दोनो में कौन बेहतर है)

हज़रत ने फ़रमाया – रसूले खुदा ने कुरैश को बुलाया और हमारी वलायत की दावत दी उन्होंने इज़हार नफरत किया और इंकार कर दिया। पस इंकार करने वाले कुरैश ने मोमिनीन से कहा – तुमने अमीरूल मोमिनीन और हम अहले बैत की वलायत का इकरार को कर लिया। लेकिन यह तो बताओ की हम दोनो फरीक में अजरूवे मुकाम और ऐश व राहत अच्छा कौन रहा और उनको ऐब लगाया।

खुदा ने उनकी तरदीद में फ़रमाया (और पहली सदियों में उनसे पहले कितनों को हलाक़ कर दिया। साबिक उम्मते) हालांकि वो साजो सामान और जाहिरी नामूद में उनसे ज्यादा थी।

मैंने उस आयत का मतलब पूछा जो कोई गुमराही में है तो खुदा उसके लिए ढील छोड़ देता है इमाम ने फ़रमाया वो लोग गुमराही में थे और अमीरूल मोमिनीन की वलायत पर इमान नहीं लाये और न हमारी वलायत का इकरार किया तो यह लोग खुद भी गुमराह हुये और दूसरों को भी गुमराह किया। पस ये अपनी गुमराही और सरकशी के बदौलत गुमराही में पड़ गये उसी हालत में मरे, खुदा ने इस तरह उनको बदतरीन मकान में पहुंचा दिया और उनके लश्कर को कमजोर बना दिया।

मैंने कहा और उस आयत का मतलब क्या है, जब वह अपनी आंखों से उस चीज को देख लेगे जिस का वादा उनसे किया गया है या अजाब या कयामत, तब उनको पता चलेगा कि बद्तरीन जगह में कौन है और किसका गिरोह कमजोर है।

फ़रमाया ये जो खुदा ने फ़रमाया है कि जो उनसे वादा किया गया है वो देखेगे उससे मुराद खुरूज कायम आले मोहम्मद है साअत से यही मुराद है वो उस वक्त जानेगे कि यही वह दिन है और कायमे आले मोहम्मद के हाथों जो उन पर खुदा की तरफ से अजाब नाज़िल होगा उसका भी पता चल जायेगा यही मतलब है उस आयत का कि वह जान लेगे कि अजरूवे बदतरीन मकाम और कमजोर गिरोह कौन है।

मैंने उस आयत का मतलब पूछा–"और अल्लाह ज्यादा करता है उन लोगों की हिदायत को। फ़रमाया – जिन्होंने कायम आले मोहम्मद का इत्तिबा किया। हजरत के खुरूज के वक़्त फिर किसी को इन्कार करते न बन पड़ेगी।

मैंने कहा उस आयत का क्या मतलब है नहीं होगे मालिके शफाअत के मगर वही लोग जिन्होंने खुदा से अहद किया होगा।

हज़रत ने फ़रमाया जिन्होंने वलायते अमीरूल मोमिनीन (स0) और उनके बाद के अइम्मा से कुरबत खुदा हासिल की। मुराद है और यहीं वह अहद है जो मिन इन्दल्लाह है।

मैंने कहा उस आयत का मतलब क्या है।' जो लोग ईमान लाए और अमले सालेह किये। खुदा अपनी मोहब्बत उनके लिए करार देगा फ़रमाया जिस दो का जिक्र खुदा ने किया है वह वलायत अमीरूल मोमिनीन हैं।

मैंने कहा उस आयत का मतलब – "हमने ऐ रसूल (स0) तेरी ज़बान पर उनको आसान कर दिया है ताकि तू मुत्तकियों को बशारत दे और झगड़ा करने वाले लोगों को उससे डरायें।

फ़रमाया – इसका मतलब यह है कि हमने रसूल की

ज़बान पर आसानी से जारी किया कुरान को जबकि आप (स0) ने रोज ग़दीर खम अपना कायम मुकाम बनाया। पस बशारत दी उसकी मोमिनीन को, और डराया उससे काफिरों को, पस किताबे खुदा ने जिनको कौम लुद्दा (झगड़ालू कौम) कहा गया है। वही मुन्किरीने वलायते अमीरूल मोमिनीन मुराद है।

फिर मैंने उस आयत के मुताल्लिक़ पूछा – "ताकि ऐ रसूल! तू उस कौम को डराये जिनके बाप दादा नहीं डराये गये और वह गफलत में पड़े हुये है।

फ़रमाया – इसका मतलब यह है कि ऐ रसूल (स0) इस कौम को डराओ जिसमें तुम हो। जैसे कि तुमसे पहले अम्बिया व मुरसलीन ने इनको डराया था मगर वो खुदा और उसके रसूल (स0) और उस वादए अजाब से ग़ाफ़िल ही रहे हालांकि उनके अक्सर पर हक़ बात वाज़ेह हो गयी थी (उन लोगों पर जिन्होंने विलायते अमीरूल मोमिनीन का और दीगर अइम्मा का इक़रार नहीं किया।)

ये लोग ईमान नहीं लायेगे" इमामते अमीरूल मोमिनीन[अ0] और उनके औसिया पर, पस जब उन्होंने इकरार न किया तो उनकी सज़ा का जिक्र खुदा ने यूं किया है "हमने उनकी गर्दनों में तौक डाल दिये है और वह ठुड्डियों तक पहुंचे हुये है कि वह अपनी गर्दने उठाये हुए है (झुका नहीं सकते) हमने एक दीवार उनके आगे बना दी है और एक इनके पीछे, फिर ऊपर से इनको ढाप दिया है तो वह अब कुछ नहीं देख सकते। यह सजा है उस बात की कि उन्होंने वलायते अमीरूल मोमिनीन और दीगर अइम्मा अ0 से इन्कार किया है यह तो दुनिया की सज़ा है (कि वह जलील हो) और आखिरत में जहन्नुम की आग उनके लिए है ही। और फ़रमाया – ऐ

मोहम्मद (स0) तुम उनको डराओ या न डराओ ईमान लाने वाले (वलायत अली पर) नहीं। फिर खुदा फरमाता है ऐ रसूल तुम तो उसी को डराओगे जो जिक्र (अमीरूल मोमिनीन की पैरवी करें और अल्लाह से डरे, गैब के मुतालिक (ऐ मोहम्मद) इसे बशारत दे दो, मगफिरत और बहुत बड़े अज्र की।

91 : रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 से उस आयत के मुताल्लिक़ सवाल किया वह चाहते है कि नूर खुदा को फूंको से बुझा दें। फ़रमाया इसका मतलब यह है कि वह अपने मुंह से नूरे वलायत अमीरूल मोमिनीन को बुझाना चाहते है।

मैंने पूछा और उस आयत का मतलब क्या है। "अल्लाह उसके नूर को पूरा कर देगा। फ़रमाया – उससे मुराद है इमामत कि तकमील जैसा कि उसने फ़रमाया है – जो लोग अल्लाह और उसके रसूल (स0) पर ईमान लाए और उस नूर पर भी जिसको हमने नाजिल किया। पस यहां नूर से मुराद इमाम है।

मैंने पूछा और उस आयत का मतलब है – अल्लाह वह है जिसने अपने रसूल (स0) को हिदायत और दीन बरहक के लिए भेजा फ़रमाया – मतलब यह है कि अपने रसूल (स0) को वलायत की वसीयत का हुक्म दिया और वलायत ही दीन हक है।

मैंने पूछा ओर उस आयत का क्या मतलब है ताकि वह दीन हक को तमाम अदियान पर गालिब कर दें। फ़रमाया – मतलब यह है कि कायम आले मोहम्मद (स0) के जहूर के वक़्त तमाम अदियान पर गालिब कर दें। खुदा फरमाता है अल्लाह उसके नूर को पूरा करने वाला है।" यानि वलायते

कायम का, अगरचे काफिर लोग वलायत अली को न पसन्द करें।

मैंने कहा यह अल्फ़ाज़ तन्ज़ील हैं फ़रमाया पहली आयत में युरदिन लेयुत्फ़ू अल्ख में तंज़ील है और दूसरी आयत लियुजहेरहू में तावील है।

मैंने कहा क्या मतलब है उस आयत का वह ईमान लाए फिर कुफ्र किया। फ़रमाया – अल्लाह तआला ने मुनाफिकीन में उन लोगों को जिन्होंने इत्तेबा न किया। खुदा के रसूल (स0) का, उनके वसी की वलायत के मुताल्लिक और खुदा ने उन लोगों को जिन्होंने वलायत वसी से इन्कार किया। मसल उन लोगों को करार दिया है जिन्होंने मोहम्मद (स0) की नबुवत से इंकार किया और कुरान में फ़रमाया– ऐ मोहम्मद! जब मुनाफिकीन तुम्हारे पास (तुम्हारे वसी के बारें में कुछ कहने) आए और कहें हम गवाही देते है कि आप (स0) अल्लाह के रसूल (स0) है और अल्लाह जानता है कि आप अल्लाह के रसूल है लेकिन अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफिकीन (वलायत अली को मानने के मुतालिक) झूठे है। अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी है इस लिए वो नहीं समझते यानि तुम्हारी नबुवत ही को नहीं समझते।

मैंने कहा इस आयत का क्या मतलब है आओ ताकि रसूल खुदा तुम्हारे लिए इस्तिग़फार करें तो हजरत ने फ़रमाया– जब उनसे कहा गया कि वलायत अली (स0) ही की तरफ रूजू करों। ताकि रसूल (स0) तुम्हारे गुनाहों के लिए खुदा से इस्तिग़फार करें तो उन्होंने सर झुका लिए, खुदा फरमाता है ऐ रसूल (स0) तुमने देखा कि वह (वलायत अली) रूगरदानी कर रहें है और वो तकब्बुर कर रहें है। फिर खुदा के कलाम

का रूख बदल कर कहा ऐ रसूल (स0) तुम उनके लिए इस्तिग़फार कर दिया न करों, अल्लाह उनको हरगिज़ न बख्शेगा। खुदा कौमे बदकार की हिदायत नहीं करता। वो कहता है ऐ रसूल यह तुम्हारे वसी के बारें में जुल्म करने वाले है।

मैंने कहा – क्या मतलब है सूरह मुल्क की उस आयत का, क्या वह शख्स जो औंधेंमुंह रास्ते चल रहा है ज्यादा हिदायतयाफ्ता है या वह जो सिरातें मुस्तकीम पर रास्ता चलता है। हजरत ने फ़रमाया ये अल्लाह ने मिसाल दी है उस शख्स की जो वलायत अली का मुन्किर हो उससे औंधेंमुंह चले और उनके अम्र से हिदायतयाफ्ता न हो और दूसरा शख्स वह है जो सिरातें मुस्तकीम पर चले और सिरातें मुस्तकीम अली है।

मैंने कहा – क्या मतलब है उस आयत का यह कौल रसूल करीम (स0) है। फ़रमाया ज़िबरईल जो खुदा की तरफ से लाए कि वलायत – अली के बारें में मैने कहा कि उस आयत का क्या मतलब है। वो किसी शायर का कलाम नहीं हैं कि तुम उस पर कम ईमान लाएं। फ़रमाया – लोगों ने कहा मोहम्मद (स0) ने अपने रब पर झूठ बोला है। खुदा ने अली के बारें में ऐसा नहीं कहा पस खुदा ने कुरान में नाजिल फ़रमाया (वलायत अली) रब्बुल आलमीन की तरफ से नाजिल हुई है अगर मोहम्मद बाज़ बातों में गलत बयानी करते है तो हमको दाहिने हाथ से पकड़ लेते फिर उनकी रेगगर्दन काट देते (अलहाक्का) फिर कलाम का रूख बदल कर कहा बेशक (वलायत अली) मुतकियों के लिए तजकिरा है (तमाम आलिमों में) और हम जानते है कि तुम मे से बाज़ झुठ़लाने वाले है

और बेशक अली के बारें में हुरमत है काफिरों के लिए और बेशक (वलायत अली) हक यकीन है। पस (ऐ मोहम्मद (स0)) तुम रब्बेअजीम के नाम की तसबीह पढ़ों, यानि फरमाता है कि अपने इस रब्बेअजीम का शुक्र करो। जिसने तुमको यह फजीलत अता की।

मैंने कहा – सूरः जिन्न की उस आयत का क्या मतलब है – "जब हमने हिदायत को सुना तो हम उस पर ईमान ले आएं।" इमाम ने फ़रमाया – मुराद ये है कि जो अपने मौला की वलायत पर ईमान ले आया। उसे न नुकसान का खौफ है न जुल्म का। मैंने कहा क्या यह अल्फ़ाज़ दाखिले तन्जील है फ़रमाया नहीं दाखिल तावील हैं। मैंने कहा क्या मतलब है उस आयत का। मैं नहीं कुदरत रखता तुम्हारे ज़रिये हिदायत पर फ़रमाया – इमाम अ0 ने कि रसूल अल्लाह ने लोगों को वलायते अली की तरफ दावत दी। कुरैश ने जमा होकर कहा – ऐ मोहम्मद आप उससे हमें माफ कर दें। हजरत ने फ़रमाया ये हुक्म अल्लाह की तरफ से है मेरी तरफ से नहीं। उन्होंने तोहमत लगायी और हजरत के पास से उठ के चले गये। इस पर खुदा ने यह आयत नाजिल की। और फ़रमाया – तुम उनसे यह भी कहो–(अगर मैं खुदा की नाफरमानी करूं) तो मुझे कौन पनाह देगा कोई भी न देगा और न मैं उसके सिवा कोई पनाह की जगह देखता हूं इल्ला बलागन मिनल्लाहे व रिसालातिही 72/23 यानि मैं खुदा की तरफ से इसका पैगाम पहुंचाने का जिम्मेदार हूं (सूरह जिन्न) मैंने कहा यह तन्ज़ील है। फ़रमाया हां– फिर खुदा ने ताकीदन ये भी फ़रमाया – जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी (वलायते अली के बारें में करेगा तो उसके लिए जहन्नुम की

आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा। मैंने कहा जब वह खुदायी वादा को पूरा होते देखेगे तो उस वक़्त जानेगें की बलेहाज़ नुसरत कौन कमज़ोर है और बलेहाज़ तादाद कौन कम है यानि यह वादा पूरा होगा हज़रते हुज्जत[अ०] और उनके अन्सार के जहूर के वक़्त।

मैंने कहा – उस आयत क़ा क्या मतलब है (मुजम्मिल) ऐ रसूल (स0) इन लोगों के कहने पर सब्र करों। फ़रमाया जो कुछ तुम्हारे बारें में क़हते है और उनको बअनवान शाइस्ता अपने से अलग रखो और (ऐ मोहम्मद) मुझे उन लोगों से जो (तुम्हारे वसी को) झुठलाते हैं निमट लेने दो और उनको थोड़ी सी मोहलत दे दो, मैंने कहा क्या ये तंजील है – फ़रमाया हां।

मैंने कहा सूरः मुदस्सिर की इस आयत का मतलब क्या है पूरी आयत यह है – जहन्नुम पर उन्नीस फरिश्ते मुईन है और हमने तो जहन्नुम का निगेहबान बस फरिश्तों को बनाया हैं और उनका ये शुमार काफ़िरों की आजमाइश के लिए मुकर्रर किया है ताकि अहले किताब (फ़ौरन) यकीन कर लें (क्योंकि उनकी किताब में ऐसा ही है) और मोमिनों का ईमान और ज्यादा हो। इमाम ने फ़रमाया – ताकि मोमिनीन यकीन कर ले कि खुदा और रसूल (स0) और रसूल (स0) का वसी का हक है। मैंने कहा इसका क्या मतलब है कि ईमान वालों का ईमान ज्यादा हो फ़रमाया – विलायत वसी से ईमान ज्यादा होगा। मैंने कहा और इसका क्या मतलब है अहले किताब और ईमान वालें शक न करें फ़रमाया – अली की विलायत में, मैंने कहा ये शक किया था। फ़रमाया ये शक अहले किताब और उन मोमिनों से जिनका जिक्र अल्लाह ने

किया है मुताल्लिक़ नहीं। क्योंकि उनकी विलायत में शक नहीं था।

मैंने कहा इसका क्या मतलब है – "नहीं है यह मगर इंसान के लिए नसीहत।" फ़रमाया – उससे मुराद विलायत अली।

मैंने कहा इस आयत से क्या मुराद है "यह एक बहुत बड़ी है। फ़रमाया – उससे मुराद विलायत हैं।

मैंने कहा इस आयत से क्या मुराद है – तुम में से जो चाहे मुकद्दम हो या मोखिर, फ़रमाया – जिसने सबकत की। हमारी विलायत की तरफ वो रोक दिया गया। जहन्नुम से और जो पीछे रहा – हमारी विलायत में वह सबसे पहले जहन्नुम में डाल दिया गया।"

मैंने पूछा – असहाब यमीन से कौन मुराद है। फ़रमाया– खुदा की क़सम वह हमारे शिया है मैंने पूछा हम नहीं थे तो मुसलेहीन से कौन मुराद हैं। फ़रमाया वह लोग जिन्होंने विलायत को वसी मोहम्मद और उनके बाद वाले औसिया की विलायत को तसलीम न किया और हम पर सलवात न भेजी। मैंने पूछा – उससे क्या मुराद है वह तजकिरा से रूगरदानी करते रहें मैंने पूछा – उससे क्या मुराद है "बेशक वह नसीहत हैं। फ़रमाया विलायत मुराद हैं।

मैंने कहा – उससे क्या मुराद है। वह नज़्र को वफ़ा करते है। फ़रमाया – नज़्र से वह मुराद है जो रोज़े मिसाक़ हमारी विलायत के मुताल्लिक़ थी।

मैंने कहा – उस आयत से क्या मुराद है हमने तुम पर कुरान को नाजिल किया। फ़रमाया – उससे तन्जील विलायत मुराद है। मैंने कहा क्या ये तंजील है। फ़रमाया हां लेकिन

बतावील यानि बयान है आयात साबेक़ा के मुताल्लिक़।

मैंने कहा उस आयत से क्या मुराद है फ़रमाया तज़किरा से मुराद है विलायत।

मैंने उस आयत के मुताल्लिक पूछा – अपनी रहमत में जिसे चाहता है दाखिल कर लेता है फ़रमाया उससे मुराद है हमारी विलायत, और खुदा ने फ़रमाया – और जालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार है क्या तुम (रावी) नहीं गौर करते कि खुदा ने फ़रमाया है कि उन्होंने हम पर जुल्म नहीं किया बल्कि उन्होंने खुद अपने ऊपर जुल्म किया है फिर फ़रमाया – अल्लाह की शान इससे बहुत अरफा व आला है कि उस पर जुल्म किया जाय जुल्म की तरफ उसको निस्बत दी जाय लेकिन खुदा ने अपने नफ्स के साथ हमको भी शामिल कर लिया है और उसने हम पर जुल्म होने को अपने ऊपर जुल्म करार दिया है और हमारी विलायत को अपनी विलायत बताया है फिर अपने नबी पर कुरान नाजिल क़िया और फ़रमाया – हमने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि उन्होंने अपने नफ्सों पर खुद जुल्म किया मैंने कहा जो आपने फ़रमाया है यह तंजील है फ़रमाया – हां।

92 : मैंने पूछा क्या मुराद है उस आयत में अजाब हो झुठलाने वालों पर। फ़रमाया – मुराद यह है कि ऐ मोहम्मद (स0) विलायत अली (स0) के बारें में जो तुम पर वही की है उसके झुठलाने वालों पर अज़ाब होगा। फिर फरमाता है क्या हमने अव्वलीन को और उनके बाद आखिरीन को हलाक नहीं किया अव्वलीन से मुराद वह लोग है जिन्होंने औसिया की इताअत में मुरसलीन को झुठलाया था और हम मुजरिमीन को ऐसी ही सजा दिया करते है फिर हजरत ने फ़रमाया –

मुजरिम से मुराद मुजरिमे आले मोहम्मद है जिन्होंने आन हजरत के वसी के साथ किया जो किया।

मैंने पूछा मुत्तकीन से कौन मुराद है। फ़रमाया – हम और हमारे शिया, हमरे अलावा दूसरे लोग मिल्लते इब्राहीम पर नहीं और वह लोग उस मिल्लत से अलग है।

मैंने कहा – सूरः निसा की उस आयत का मतलब क्या है इस रोज रूह और मलायका सफ बा सफ खड़े होंगे अल्ख।

फ़रमाया इमाम अ० ने, उससे मुराद यह है कि रोज़े क़यामत हमको कलाम करने की इजाजत होगी और हम सच बात कहने वाले होंगे।

मैंने कहा जब आप कलाम करेंगे तो क्या कहेगे फ़रमाया– हम खुदा की तहमीद व तमजीद करेगे और अपने नबी पर दुरूद भेजेगे और अपने शियों की शफ़ाअत करेगें। हमारा रब उसको रद्द न करेगा। मैंन फिर यह आयत पढ़ी – किताब फुज्जार सिज्जीन में है। फ़रमाया यह फज्जार वो लोग है जिन्होंने हके अइम्मा ग़सब किया और उन पर जुल्म रवा रखा। फिर मैंने यह आयत पढ़ी–यह है वो जिसे तुम झुठलाया करते थे फ़रमाया – जिसे वो लोग झुठलाते थे उससे मुराद है अमीरूल मोमिनीन[अ०]। मैंने कहा क्या यह तन्जील है। फ़रमाया–हां।

अबू बसीर ने इस आयत के मुताल्लिक़ इमाम जाफ़र सादिक अ० से पूछा – जिसने मेरे जिक्र से रूगरदानी की तो बेशक उसकी रोजी तंग हो गयी। फ़रमाया – उससे मुराद यह है कि वलायत अमीरूल मोमिनीन से रूगरदानी की। मैंने पूछा और इसका क्या मतलब है हम उसको

कयामत के दिन अन्धा उठायेगे। फ़रमाया–मुराद यह है कि आखिरत में वह अन्धा महशूर होगा और दुनिया में दिल का अन्धा बना रहेगा वलायत अली को न मानने की वजह से और कयामत में वो मुतहय्यर होगा और कहेगा खुदा वन्दा तूने मुझे अन्धा क्यों महशूर किया। खुदा कहेगा तूने हमारी आयत को भुलाया था। फ़रमाया इमाम ने वह आयात अइम्मा अ0 है तूने उनको छोड़ा है आज तू जहन्नुम में डाला जायेगा क्योंकि तूने अइम्मा की वलायत को तर्क किया था तूने उनके हुक्म की इताअत न की और उनकी बात को कान लगाकर सुना नहीं।

हम ऐसा ही बदला देते है उसको जो हद से बढ़े और अपने रब की आयात पर ईमान न लाए और अज़ाबे आखिरत बहुत सख्त और दाइमी है और उसने आइमा को अजरूवे अदावत तर्क किया। उनके आसार की पैरवी न की और उन्हें दोस्त न रखा। फिर मैंने यह आयत पढ़ी। अल्लाह अपने बन्दों पर मेहरबान है वह जिसको चाहता है रिज्क़ देता है फ़रमाया ये रिज्क़ वलायत अमीरूल मोमिनीन है मैंने फिर यह आयत पढ़ी। जब कोई आखिरत के फायदे को चाहता है फ़रमाया – जो वलायत अमीरूल मोमिनीन हासिल करता है हम उसके फायदे में ज्यादती कर देते है यानि उसके दीने सवाब को बढ़ा देते है और जो दीऩी फायदा चाहता है हम उसे वही देते है उसका आखिरत में कोई हिस्सा नहीं। यानि दौलत हक में कायमे आले मोहम्मद (स0) के साथ उसे कोई हिस्सा न मिलेगा।

## तौजीह

गुज़िश्ता आयात में जो तफ़सीर व तावील इमाम अ0 ने

बयान फरमायी है वो असल कुरान नहीं बल्कि उन आयात का बातिनी मफहूम है। जिस तक ज़ाहिर बीनों कि रसाई नहीं यह तो खुदा ने अपने रसूल (स0) को बताया और उनके बाद यह तफ़सीर एक इमाम ने दसूरे को बतायी। बाज़ आयात के मुताल्लिक़ सायल ने उस मफहूम को जो इमाम ने बयान किया– यह सवाल किया है कि क्या यह तनज़ील है इमाम ने फ़रमाया हां यह तनजी़ल हैं लेकिन मौजूदा कुरान में यह अलफ़ाज नहीं पस या तो यह कहा जाय कि कुरान जमा करने वालों ने उन अलफाज को साकित कर दिया हैं लेकिन फहूल उलमा का इस पर इतफाक राय है कि मौजूदा कुरान से कुछ कम नहीं हैं। लिहाजा दूसरी सूरत यह होगी कि उस मफहूम का रसूल (स0) को अलका हुआ तन्जील हुई लेकिन वो अलफाज जुज़्वे आयत नहीं थे बल्कि बतौर तफसीर या तावील के थे चूंकि रसूल (स0) ने उनको अपनी तरफ से इ़जाफा नहीं किया। लिहाजा तनज़ीली सूरत में तो रहें लेकिन आयात का जुज़ नहीं कहे जाते। वल्लाहो आलम बिस्सवाब।



## एक सौ आठवां बाब

# वह लताएफ़ कलेमात जो जामेअ रवायाते विलायत है

1 : फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने, खुदा वन्दे आलम ने हमारे शियों से हमारी वलायत का इकरार लिया है जबकि वो आलम ज़र्र में थे इसने उनसे उसी वक्त अपनी रूबूबियत और हजरत रसूल खुदा की नबुवत का भी इकरार

ले लिया था।

2 : फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने, खुदा ने अपनी मखलूक को पैदा किया। पस पहले पैदा किया– उनको जिसको वो दोस्त रखता और जिनको वो दोस्त रखता था उनको पैदा किया। तीनते जन्नत से और जिनको वो दुश्मन रखता था – उन्हें पैदा किया उस चीज से जिसे वो दोस्त न रखता था यानि उनको पैदा किया तीनते नार सें फिर इन दोनों को साये में रखा। मैंने कहा साया क्या चीज हैं क्या तुमने अपने साये को धूप में नहीं देखा वो कोई शय है लेकिन वो कोई शय नहीं हैं यानि इसकी हकीकत को जो पोशीदा हैं नहीं समझ सकते वो एक गैर मादी चीज है) फिर खुदा ने नबियों को उनके पास भेजा और उन्होंने इकरार बिल्लाह की दावत दी। जैसा कि खुदा ने फ़रमाया है अगर तुम उनसे पूछों कि तुम्हें किसने पैदा किया है वो कहेगे अल्लाह ने फिर उनको नबियों के इकरार की दावत दी गई बाज़ ने इकरार किया और बाज़ ने इन्कार किया। फिर हमारी वलायत की दावत दी गई पस जिन्होंने हमें दोस्त रखा। उन्होंने इकरार किया और जिन्होंने हमसे बग़ज़ रखा उन्होंने इंकार क़िया और वो लोग ईमान न लाए जिन्होंने अव्वल रोज ही हमारी तकज़ीब कर दी थी फिर इमाम ने फ़रमाया यह तकज़ीब वहीं हुई थी।

3 : फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अ0 ने कि हमारी वलायत हैं खुदा ने किसी नबी को नहीं भेजा मगर उसके साथ।

4 : फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने कि कोई नबी नहीं आया। मगर उसने हमारे हक की मार्फत करायी और हमारी फज़ीलत हमारे गैर पर साबित करायी।

5 : रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 से सुना कि वल्लाह आसमान में मलायका की सत्तर सफें हैं अगर तमाम अहले ज़मीन जमा होकर शुमार करना चाहे तो शुमार नहीं कर सकते ये सब तकर्रुब हासिल करते है हमारी वलायत से।

6 : फ़रमाया – इमाम रिज़ा अ0 ने कि तमाम सुहुफे अम्बिया में वलायत अली का जिक्र था खुदा ने कोई रसूल ऐसा नहीं भेजा जो नबुवते मोहम्मद (स0) और वसायत अली का मुक़िर न हो।

7 : फ़रमाया – इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 ने, खुदा ने अली को एक निशान करार दिया है अपने और अपनी मखलूक के दरमियान, जिसने उनको पहचान लिया वह मोमिन हैं जिसने इंकार किया वह काफिर है और जो इनसे जाहिल रहा वह गुमराह हैं और जिसने उनके साथ किसी और को करार दिया वह मुशरिक हैं और जो उनकी वलायत के साथ कयामत में आएगा वह दाखिले जन्नत होगा।

8 : अबू हमज़ा से मरवी है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 से सुना – अली वो दरवाजा है जिसको अल्लाह ने खोला है जो उसमें दाखिल हुआ वह मोमिन है और जो उससे खारिज़ हुआ वह काफिर है और जो न दाखिल हुआ न खारिज हुआ वह उस तबके में है जिसके मुताल्लिक खुदा ने कहा है कि उसके लिए मेरी मशियत हैं चाहे बख्शूं चाहे न बख्शूं।

9 : रावी कहता है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अ0 को फरमाते सुना, खुदा ने आलम ज़र में हमारे शियों से हमारी विलायत का अहद लिया और अपनी रूबीबियत और हजरत रसूल (स0) खुदा की नबुवत का और खुदा ने पेश किया

उम्मते मोहम्मद को मिट्टी की सूरत में दरआन्हालेकि वह साये में थे और पैदा किया उनको उस मिट्टी से जिससे आदम को पैदा किया था और हमारे शियों की रूह को। उनके अब्द के पैदा करने से दो हजार बरस पहले पैदा किया और उनको आं हजरत (स0) पर पेश किया और रसूल अल्लाह (स0) का तार्रूफ उनसे कराया और अली अ0 को भी पहचनवाया और हम अपने शियों को उनके तर्ज़े कलाम से पहचान लेते हैं।



## एक सौ नवां बाब

## अइम्मा अ० का अपने दोस्तों को पहचानना और वक्ती मसालेह के लिहाज़ से हिदायत करना

1 : इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने फ़रमाया कि एक शख्स चन्द साथियों को लेकर अमीरूल मोमिनीन[अ0] के पास आया और कहने लगा – मैं आपका दोस्त हूं अमीरूल मोमिनीन[अ0] ने फ़रमाया – तू झूठा है उसने तीन बार यही कहा कि मैं आपका दोस्त हूं अमीरूल मोमिनीन[अ0] ने फ़रमाया तू झूठा है जैसा तू कह रहा है ऐसा नहीं है खुदा ने खि़लक़ते अज़साम से दो हजार बरस पहले अरवाह को पैदा किया फिर हमारे सामने पेश किया उन लोगों को जो हमारे दोस्त थे खुदा कि कसम उनमें से मैंने तेरी रूह को नहीं देखा तू उस वक्त कहां था ये सुनकर वह चुप हो गया और हजरत

के पास न आया।

2 : इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैह सलाम ने फ़रमाया – हम हर शख़्स को देखते ही पहचान लेते है कि वो साहिबे ईमान हैं या साहिबे निफ़ाक।

3 : रावी कहता है कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ (स0) से पूछा – अल्लाह ने इमाम को वही इल्म सुर्पुद किया है जो सुलेमान बिन दाऊद के सुर्पुद था। फ़रमाया हां रावी कहता है ये मैंने इसलिए पूछा कि एक शख़्स ने इमाम अ0 से एक मसला पूछा – हजरत ने उसका जवाब दिया दूसरे ने भी वही पूछा– आपने उसको पहले जवाब से अलाहिदा जवाब दिया। तीसरे आदमी ने भी वही पूछा–आपने उसको जवाब दिया। तो वह पहले दो जवाबों से अलग था फिर यह आयत सूरः साद की तिलावत फरमायी (खुदा ने सुलेमान (स0) से कहा) यह हमारी अता है पस कुल दे दो या बगैर हिसाब के कुछ दे दो किराते अली में यूं हैं जब यह सुना तो मैंने कहा अल्लाह आपकी हिफाजत करे, जब हजरत ने उन लोगों को ये जवाब दिये तो उन्होंने इमाम को पहचाना।

## तौजीह

सूरः साद में आयत यूं है फ़मनुन औ अमसिक इसमें एत नहीं। इमाम ने जो ये फ़रमाया कि किराते अली में यही है तो उसका मतलब यहीं है कि अली (स0) ने अमसिक की तफ़सीर आत फरमायी और मुराद है बाज़ को देना और बाज़ को न देना। बिलकुल न देना मुराद नहीं।

इमाम ने फ़रमाया – सुब्हान अल्लाह खुदा का ये कौल तुमने नहीं सुना, बेशक उसमे साहिबाने फरासत के लिए निशानियां हैं उस आयत में मुतवस्सेमीं से मुराद अइम्मा हैं

और यहीं कायम रहने वाला रास्ता है और ये रास्ता हमारे इस्तिंम्बात से कभी नहीं निकलता। इमाम ने फिर फ़रमाया –इमाम जब किसी शख़्स की तरफ देखता है तो उसको पहचान लेता है और उसकी महियत से वाकिफ होता है खुदा फरमाता है और उस आयत में से ये भी हैं कि उसने आसमान व ज़मीन को पैदा किया और लोगों की मुख्तलिफ ज़बानें करार दी और मुख्तलिफ रंग अता किये, बेशक उसमें आलमीन के लिए खुदा की निशानियां हैं फ़रमाया यह लोग उलमा (अइम्मा) जो कोई कुछ बोलता हैं वो उससे पहचान लेते हैं कि ये नाजी हैं या हलाक होने वाला हैं लिहाजा उसी के लिहाज से उसको जवाब देते है।

**खत्म शुद**

# अब्बास बुक एजेन्सी

## की हिन्दी में प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

| S.No. | | Writer / Translated by | rice |
|---|---|---|---|
| १. | अनवार | मौलाना अदीब-उल-हिन्दी | १२/- |
| २. | इस्लाम के पथप्रदर्शक | आयतुल्ला-हिल-उज़्मा सैय्यद अली नक़ी२५/- | |
| ३. | बोहलोल दाना | सैय्यदा आबिदा नर्जिस | २०/- |
| ४. | खुरूजे मुख़्तार | सैय्यद मोहम्मद अली इफ़ज़ाई | १०/- |
| ५. | आदाबे ज़िन्दगी | हज़रत अली अ० की नज़र में | १०/- |
| ६. | इस्लाम और सेक्स | डॉ० मोहम्मद तक़ी अली आबिदी | ३५/- |
| ७. | इस्लाम और पर्दा | अल्लामा सैय्यद ज़ीशान हैदर जवादी | १२/- |
| ८. | मुस्लिम पर्सनल लॉ | आयतुल्लाह-हिल-उज़्मा सै० अली नक़ी नक़वी | ८/- |
| ९. | क़यामते सुग़रा | सैय्यद मो० अब्बास क़मर ज़ैदी | ३५/- |
| १०. | ज़ंजीर-ए-बार्मुदा | सैय्यद मो० अब्बास क़मर ज़ैदी | ३०/- |
| ११. | मरने के बाद क्या होगा | (शेख़ अब्बास क़ुम्मी) अनुवाद बी०एस० नक़वी | ४०/- |
| १२. | उठो खूने हुसैन का इन्तिक़ाम लो | सैय्यदा आबिदा नर्जिस | ३८/- |
| १३. | इस्लामी तालीम | (मुख़तसर तर्जुमा तहज़ीबुल इस्लाम) अल्लामा मजलिसी २०/- | |
| १४. | एलिया | हकीम सैय्यद महमूद गीलानी | १२/- |
| १५. | ओम और अली | हकीम सैय्यद महमूद गीलानी | १०/- |
| १६. | जनाबे फ़िज़्ज़ा | राहत हुसैन नासरी | १२/- |
| १७. | क़ुरआन और साइंस | डॉ० कल्बे सादिक़ साहब (बारह मजलिस अमेरिका) | ५०/- |
| १८. | नहजुल बलाग़ह | (कलामे हज़रत अली अ०) सै० हामिद रिज़वी करारवी | १७०/- |
| १९. | सच्ची कहानियां भाग - १-२ | अल्लामा मुर्तज़ा मुतहरी | ७५/- |
| २०. | तौज़ीहुल मसाएल | आयतुल्लाह सय्यद अली सीस्तानी | ६०/- |
| २१. | नज़्म-उल-अज़ा (तारीख़वार नौहे) | बदरून्निसां | ३५/- |
| २२. | हज़रत आयशा की तारीख़ी हैसियत | फ़रोग़ काज़मी | ४५/- |
| २३. | तफ़सीरे करबला | फ़रोग़ काज़मी | ७०/- |
| २४. | उसूले तरबियत | अल्लामा सै० इब्ने हसन नजफ़ी, अनु० बी०ए०नक़वी २५/- | |
| २५. | ज़िन्दगी मौत के बाद | इम्तियाज़ हैदर प्रतापगढ़ी | ३५/- |
| २६. | मजालिसे ख़्वातीन | मौलाना सै० ज़फ़र हसन अमरोही | ४५/- |
| २७. | मुझे रास्ता मिल गया | डॉ० मो० तीजानी समावी | ५०/- |
| २८. | आलमे बरज़ख़ | दसतग़ैब शीराज़ी, अनु० अब्बास इरशाद नक़वी | २५/- |
| २९. | इमाम जाफ़र-ए-सादिक़ अ० और वैज्ञानिक अविष्कार | अनु० बी०ए० नक़वी | ५०/- |
| ३०. | उसूल नमाज़ रंगीन आर्ट पेपर | मौलाना सै० जव्वाद हैदर साहिब | १२/- |
| ३१. | १०० तारीख़ी कहानियां | अनुवाद-अब्बास इरशाद नक़वी | ४०/- |
| ३२. | हज़रत अली अ० के फ़ैसले | उर्दू अनुवाद-सैय्यद मो० बाक़र नक़वी | ६०/- |
| ३३. | इस्लाम का आर्थिक विधान | सै० मो० रज़ी जंगीपुरी तर्जुमा सदफ़ जौनपुरी | ३५/- |
| ३४. | तारीख़े इस्लाम - भाग-१-४ फ़रोग़ काज़मी | अनुवाद-फेथ पब्लिशिंग सर्विसेज़ | ६५/- |
| ३५. | चौदह सितारे (हालात चौदह मासूमीन) | मौलाना नजमुल हसन करारवी अनु० अली इमाम ज़ैदी (गौहर) | १५०/- |
| ३६. | तोहफ़तुल अवाम (ज़रूरी मालूमात के साथ) | डॉ० मो० तक़ी अली आबिदी | १००/- |
| ३७. | क़ुरआने मजीद | (तर्जुमा मो० फ़रमान अली) अनु०-सै० अ०इ० ज़ैदी | १६०/- |
| ३८. | तहज़ीबुल इस्लाम | अल्लामा मजलिसी | १२०/- |
| ३९. | ताजदारे वफ़ा (हालात हज़रत अब्बास अ०स०) हसन लखनवी | | २०/- |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४०. | इरफ़ान-ए-इमामत (हालाते इमामे ज़माना) ज़फ़र अब्बास कश्मीरी | | ८०/- |
| ४१. | मौत से क़यामत तक | सै० सईद अख़्तर रिज़वी | ३५/- |
| ४२. | हज़रत अली अ० का जीवन परिचय | अनीस फ़ात्मा | २०/- |
| ४३. | मजालिसे अज़ीम | मौलाना कल्बे आबिद साहब | ३५/- |
| ४४. | बदरूल अज़ा | तारीख़वार नौहे | ४५/- |
| ४५. | नमाज़ व दीनियात | मौ० सै० फ़रमान अली साहब | ७/- |
| ४६. | क़ुरआनी किस्से | अनीस फ़ातिमा | २५/- |
| ४७. | ज़ुल्मत से निजात | जनाब आक़ाई वहीद मुहम्मदी | १०/- |
| ४८. | मोजिज़ाते हजरत अली अ० | मोहम्मद वसी खां | २७/- |
| ४९. | इमामिया नमाज़ | मौलाना सै० मनज़ूर हुसैन नक़वी | २५/- |
| ५०. | तिब्बे नबी अकरम | डॉ० सै० हैदर मेंहदी नक़वी | २५/- |
| ५१. | दोस्ती और दोस्त | आयतुल्लाहहिमउज्मा सैयद हुसैन फजलुलहदामजिल्लाहू आली | ३०/- |
| ५२. | दुनिया-ए-जवान | आयतुल्लाहहिमउज्मा सैयद हुसैन फजलुलहदामजिल्लाहू आली | ६०/- |
| ५३. | क़यामे इमाम हुसैन अ० (ग़ैर मुस्लिमों की नज़र में) हिन्दी तरजमा सैयद अब्बास इरशाद | | २५/- |
| ५४. | शहाने अवध और शीयत | अल्लामा फरोग़ काज़मी | ८०/- |
| ५५. | हिन्दुस्तान में फितनए-वहाबियत | अल्लामा फरोग़ काज़मी | ३५/- |
| ५६. | जनाबे मुख़तार | सैयद मोहम्मद जाफ़र एडवोकेट | २५/- |
| ५७. | क़ुरआन और अहलेबैत | मौलाना ताहिर जरवली मरहूम | ६०/- |
| ५८. | हो जाओ सच्चों के साथ | डॉ० मो० तीजयानी | ६५/- |
| ५९. | उसूले काफ़ी - ५ जिल्दें | शेख मो० याक़ूब कुलैनी (सेट) | २५/- |
| ६०. | ज़िकरूल अब्बास | नजमुल हसन करारवी | ६०/- |
| ६१. | ख़ाबनामा | अल्लामा मजलिसी | ३८/- |
| ६२. | इस्लामी जनरल नॉलेज | मौलाना सै० शहवार हुसैन | ४०/- |
| ६३. | इस्लाम और दहशतगर्दी | मौलाना मिर्ज़ा मोहम्मद अतहर साहब | ५०/- |
| ६४. | नमाज के ११४ नुकते | हुज्जतुल इस्लाम मोहसिन कराती | २५/- |
| ६५. | हदीसे किसा | मय ज़ियारत | ७/- |
| ६६. | जदीद फिक़ही मसाएल | आयतुल्लाह सैय्यद अली सीसतानी | ००/- |
| ६७. | इताअते रसूल | अल्लामा इरफ़ान हैदर आब्दी | ४५/- |
| ६८. | बेनाए ला एलाहा एलल्लाह | अल्लामा इरफ़ान हैदर आब्दी | ४५/- |
| ६९. | शरीअत और शीइयत | अल्लामा इरफ़ान हैदर आब्दी | ४५/- |
| ७०. | मौजिज़ा और क़ुरआन | अल्लामा ज़मीर अख़्तर नक़वी | ६०/- |
| ७१. | सियासी हरीफ़ | शाहिद ज़ईम फ़ातमी | ३०/- |
| ७२. | जवानी की हिफ़ाज़त करें | अली असग़र ज़हीरी | ३०/- |
| ७३ | बेहतरीन मनाज़िरे | अल्लामा मोहम्मद मोहम्मदी इश्तेहारदी | ६०/- |
| ७४ | मौजिज़ात हज़रत अब्बास | मोहम्मद वसी ख़ां | ३०/- |
| ७५. | सहीफ़-ए-कामेला | इमाम ज़ैनुल आबेदीन अ० की दुआओं का मजमूआ | /- |

(1) **The Holy Qur'an : 500/-** By : M.M.M. Pooya Yazdi & S.V. Mir Ahmad Ali (2) **Holy Quran M.H. Shakir : 180/-** (3) **The Leading Lights of Islam : 100/-** (4) **History of Islam : 200/-** (5) **Nahj-al-Balaghah : 150/-** By : Amiral-Mu'Minin, Ali ibn Abi Talib (a.s.) (6) **Tohfatul Awam : 50/-** By : Allama Ghulam-e-Ali Haji Naji (7) **Abu Dhar Ghafari in Islamic History : 30/-** By : S.M. Jaffar (8) **Al-Muraja'at : 150/-** By : Syed Abdul Husain Sharfuddin-al-Musavi (9) **The Caliphate : 120/-** By : Agha Muhammad Sultan Mirza (10) **40 Hadith** By : Ayatullah Khumaini (11) **Shaheed-e-Insaniyat, 120/-** By: Allama Ali Naqi Naqvi